विद्यार्थी की कलम से

॰2014॰

अणुव्रत : आचार्य तुलसी का मानवता को महान अवदान

(अणुव्रत निबंध लेखन प्रतियोगिता)

– प्रकाशक –
अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली

अनुक्रमणिका

क्र. संख्या	शीर्षक	विद्यार्थी का नाम
1.	धर्म समन्वय के प्रतिष्ठाता	साक्षी
2.	व्यक्ति नहीं अपितु संपूर्ण संस्कृति	आयुषी वर्मा
3.	सत्य के शोधक व साधक	आशीष बनर्जी
4.	अवदानों से भरा व्यक्तित्व	गौरव
5.	मानव को सही रूप में मानव बनाया	आकांक्षा ठाकुर
6.	यथार्थदर्शी व क्रांतिकारी आचार्य	अदिति शर्मा
7.	जैनाचार्य नहीं, जनाचार्य	वैष्णवी मलिक
8.	प्रेरणादायी व प्रभावी व्यक्तित्व	विनोद सैनी
9.	वैचारिक औदार्य के दुर्लभ समवाय	चंचल कौशिक
10.	नारी–चेतना के पक्षधर	आकाश पंचाल
11.	विजातीय वर्गों के बीच सेतु	समृद्धि कृष्ण कुमार
12.	उपमाओं से ऊपर व्यक्तित्व	कोमल गर्ग
13.	सर्वधर्म सद्भाव के प्रतीक पुरुष	भव्या
14.	तुलसी का जीवन एक अनुपम कहानी	प्रेक्षा जैन
15.	गांधी के बाद सबसे प्रभावी व्यक्तित्व	विवेक जैन
16.	आधुनिक युग के महर्षि	मुस्कान सुराणा
17.	चंदेरी के चाँद	कनिष्का चावला
18.	सहज, पवित्र व पारदर्शी व्यक्तित्व	जयदेव शर्मा
19.	सृजनशील चेतना के धनी	दिशा धनखड़
20.	साहित्य गगन के सूर्य	प्रतीक खेमका
21.	कुरीतियों के उन्मूलक	वर्षा शर्मा
22.	लोक शक्ति के प्रकाश पुंज	फूलवाला ध्रुवी जितेन्द्र कुमार
23.	चारों दिशाओं में गूंजती यश–गाथाएं	देवेन्द्र भोजक
24.	मानव–मूल्यों के सजग प्रहरी	प्रणीता जोशी
25.	अवदानों को अंगीकार करने का समय	रिया जैन
26.	आधुनिक भारत के सुकरात	पवन सूर्यवंशी
27.	मानवता के अनन्य उपासक	सोनाली जैन
28.	जन–जागरण की बुलंद आवाज	सुमित शर्मा
29.	मानव–कल्याण के पुरोधा	भावना विश्वकर्मा
30.	राष्ट्रीय एकता के पक्षधर	प्रज्ञा
31.	अनमोल गुणों के संप्रेषक	वारिधि चन्द्रा
32.	सच्चे अर्थों में महान युग प्रवर्तक	नकुल

33.	आचार्य तुलसी की शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक	आयुषी काकानी
34.	क्षमा–करुणा के ज्योति–कलश	मोनिका जैन
35.	धर्म क्रांति के सक्षम सूत्रधार	नेहा निर्मल
36.	सूर्य सरीखे प्रखर तेजस्वी	प्रतीक जैन
37.	अभिमान से दूर, स्वाभिमान से भरपूर	अविष्का
38.	आपसी सद्भाव के लिए सतत प्रयत्नशील	विपुल गहलोत
39.	आधुनिक भारत के महान चिंतक	प्रतिभा भूतोडिया
40.	जैनाचार्य ही नहीं, मानवतावादी संत	रोहन खुराना
41.	सृजन के साक्षात् बिम्ब	प्रतीक जैन
42.	साधना के शलाका पुरुष	संगीता. के
43.	साहसिक गाथाओं से परिपूर्ण जीवन	प्रिया सिंह
44.	गुरुता के गौरव–शिखर	हिमानी सचदेव
45.	सत्य–साधक, अहिंसा उपासक	सिमरन
46.	अहिंसा के सबसे प्रभावी व्याख्याता	शिवम मंगला
47.	नारी जागरण के उन्नायक	अवंती संतोष वाणी
48.	भाव–विभोर करने वाला व्यक्तित्व	शिवानी
49.	तेरापंथ–पथ के विस्तारक	आर्य पुरोहित
50.	अनेकान्त के विरल व्याख्याता	प्रखर सोम
51.	नैतिक क्रांति के संवाहक	आर्ची सोनी
52.	अजस्र अवदान अतुलनीय	मनन सोम
53.	शताब्दियों के दुलर्भ व्यक्तित्व	मीनल चपलोत
54.	अवदानों से उपकृत हुई मानवता	संयम जैन
55.	अवदान नहीं, वरदान	सपना सिंह
56.	नई व पुरानी पीढ़ी के बीच सेतु	अनाहिता अग्रवाल
57.	सांस्कृतिक मूल्यों के रत्नमणि	सरिता उत्तम जाधव
58.	मानव कल्याण के अविश्रांत पथिक	कोमल सिंह
59.	धर्म संघ की परम्परा के पोषक	हर्षिता दूबे
60.	अवदान, आगामी पीढ़ियां करेंगी गुणगान	बुशरा नाज

धर्म समन्वय के प्रतिष्ठाता

आचार्य श्री तुलसी एक अनुशासन प्रिय व्यक्तित्व थे। आचार्य श्री तुलसी उदारवादी धर्म गुरु थे। उनका कार्य क्षेत्र विशाल था और कार्यक्रम व्यापक थे। वे राष्ट्र के चारित्र–उन्नयन के पुरोधा थे। नैतिक जागरण के मसीहा थे। अणुव्रत के माध्यम से उन्होंने मानवीय मूल्यों की पुनः स्थापना के लिए वर्षों भगीरथ प्रयत्न किया। आज अणुव्रत विचारधारा अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जोने वाली एक ज्योति है।

कुछ व्यक्ति इतिहास की रचना करते हैं और कुछ व्यक्तियों द्वारा इतिहास निर्मित होता है। इतिहास रचने की क्षमता बहुत लोगों में हो सकती है लेकिन जीवन्त इतिहास पुरुष के रूप में वदित अभिनंदित होने वाले विरले ही होते हैं, जिनसे इतिहास निर्मित होता। इतिहास पुरुषों की अछूती पांत में जिनका नाम प्रभा स्वर कड़ी के रूप में जुड़ा है, वे हैं अध्यात्म के कल्प वृक्ष आचार्य श्री तुलसी।

वे धर्म समन्वय और भावात्मक एकता के प्रतिष्ठाता और स्वयं–भू इतिहास पुरुष थे। आचार्य श्री के कृतित्व से इतिहास समृद्ध बना और परम्पराएं प्रकाशित हो उठीं। तेरापंथ जैन धर्म के आचार्य श्री तुलसी का जन्म राजस्थान के लाडनूं क्षेत्र में कार्तिक शुक्ल 2, संवत 1971 में हुआ था। बाद में वे तेरापंथ धर्म संघ के आचार्य बने।

उनके व्यक्तित्व, कृतित्व और नेतृत्व को किसी खास फ्रेम में नहीं मढ़ा जा सकता है। वे भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक थे। प्राचीन ऋषि परम्परा के संवाहक थे। तेजो दीप्त मुख–मंडल पर ज्ञान की गरिमा और संयम की अपूर्व आभा की झलक, कमल–दल सी खिली आंखों में अदम्य विश्वास की चमक, अन्तःकरण से छलकते करुणा और क्षमा के ज्योति कलश, तेजस्विता, तपस्विता और मनस्विता के शिखर थे।

ऐसे व्यक्ति की जीवन यात्रा एक जीवन्त व्यक्तित्व की ज्योति यात्रा है। संघर्षों में अपराजेय पराक्रम और घृति, महान, सृजन धर्मिता, किसी भी व्यक्ति में छिपी प्रतिभा की परख, विकास की संभावनाओं को उजागर करने की विलक्षण क्षमता, सही समय पर सही निर्णय लेने और उसे तत्काल क्रियान्वित करने की योग्यता, कठोर आत्म संयम इन सबके सामन्जस्य ने आचार्य तुलसी के रूप में एक सतरगी एवं फौलादी व्यक्तित्व को निर्मित कर दिया। दृढ़ संकल्प, अप्रतिम नेतृत्व कौशल और जागरुक पुरुषार्थ के बूते पर उन्होंने अछूती ऊंचाईयों को छुआ।

मनुष्य परम सत्य के जितना निकट होता है, जितना अधिक संयमी होता है, वह उतना ही अधिक शक्ति का स्रोत बनता है। आचार्य श्री तुलसी का साधना केन्द्र है सत्य का साक्षात्कार और परिधि है आत्म संयम। उनका अन्तः करण पवित्र थ, दृष्टिकोण ऋजु था और विचार अनाग्रही थे। कठोर आत्म संयम उनकी स्वाभाविक जीवनशैली थी। इसलिए वे ऊर्जा के महास्रोत थे। तेरापंथ धर्म संघ की शासन प्रणाली न एक तंत्रीय है और न जनतंत्रीय। तेरापंथ संघ गुरुतंत्रीय शासन प्रणाली से संचालित है।

आचार्य श्री तुलसी एक अनुशासनप्रिय व्यक्तित्व थे। आचार्य श्री तुलसी उदारवादी धर्म गुरु थे। उनका कार्य क्षेत्र विशाल था और कार्यक्रम व्यापक थे। वे राष्ट्र के चारित्र–उन्नयन के पुरोधा थे। नैतिक जागरण के मसीहा

थे। अणुव्रत के माध्यम से उन्होंने मानवीय मूल्यों की पुनः स्थापना के लिए वर्षों भगीरथ प्रयत्न किया। आज अणुव्रत विचारधारा अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली एक ज्योति है।

भारतीय लोक चेतना में आचार्य श्री तुलसी राष्ट्र संत के रूप में प्रतिष्ठित थे तथापि उनका कृतित्व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उभरा हुआ है। आज भी आचार्य श्री तुलसी का प्रभाव अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिजों को छू रहा है। अणुविभा संस्थान के माध्यम से आचार्य श्री का संदेश विदेशों तक पहुंचा है, उसे पश्चिमी विद्वानों ने बहुत ही सराहा और अपनाया है। आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य में सम्पन्न हुए अन्तर्राष्ट्रीय शांति और अहिंसा सम्मेलनों में विभिन्न देशों के विद्वानों की भ्ज्ञारी उपस्थिति उनकी अन्तर्राष्ट्रीय प्रभावशीलता का प्रमाण है। यही कारण है कि जैन विश्व भारती के समय–समय पर जापान आदि देशों के लोग अपने–अपने दलों में प्रेक्षा–प्रशिक्षण या शोध आदि के उद्देश्य से आते रहते हैं।

आचार्य श्री तुलसी के व्यक्तित्व, वाणी और व्यवहारों में उनकी दिव्यता के दर्शन होते थे। जैन धर्म, अणुव्रत दर्शन, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान तथा अन्यान्य प्राच्य विद्या शाखाओं में शिक्षित–प्रशिक्षित नए संन्यासी और संन्यासिनी जो समण, समणी कहलाते हैं, आचार्य श्री तुलसी का संदेश लेकर अमरीका, रुस, जापान, जर्मनी आदि देशों में जाते हैं और जैन धर्म, तेरापंथ एवं आचार्य श्री तुलसी द्वारा स्थापित लोक मंगलकारी प्रवृत्तियों का परिचय देते हैं। आज समणसमणियों को विदेशों में अणुव्रत प्रेक्षा ध्यान का प्रशिक्षण देने एवं जैन दर्शन पर प्रवचन करने के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों में निमंत्रित किया जा रहा है। यह सब आचार्य श्री अलौकिक व्यक्तित्व और परम पुरुषार्थ का ही सुफल है।

उन्होंने धर्म और अध्यात्म को नए संदर्भ दिए थे, नई व्याख्या दी। विश्व मानव की सुख शांति हेतु किए जा रहे उनके लोकोत्तर प्रयत्नों ने ही उन्हें विश्व प्रतिष्ठित किया है। आचार्य श्री तुलसी का व्यक्तित्व न केवल व्यापक है बल्कि कई दृष्टियों से अद्भुत भी है। वे धर्म क्रान्ति के सूत्रधार थे। असाम्प्रदायिक धर्म के प्रवक्ता थे। उन्होंने पारंपरिक धार्मिक मूल्यों को नए सन्दर्भ दिए और उनकी वैज्ञानिक व्याख्या की। उनकी दृष्टि वैज्ञानिक थी किन्तु उसका आधार विशुद्ध आध्यात्मिक था, इसलिए वे आध्यात्मिक चेतना के सर्वश्रेष्ठ प्रतीक बने।

आचार्य श्री तुलसी का व्यक्तित्व विविधाओं का अपूर्व संगम था। वे वेश–भूषा से जैन मुनि, अणुव्रत संदेशवाहक होने से मानवता के मसीहा, धर्म क्रांति के सूत्रधार होने के कारण युग प्रवर्तक, महान दार्शनिक के रूप में आधुनिक सुकरात, सम्पूर्ण जीवजगत के साथ भावनात्मक रिश्ते कायम करने वाले करुणामय बुद्ध तथा वीतराग चेतना के प्रतीक महावीर के रूप में जन–जन के दृष्टि पटल पर रूपायित हुए।

आचार्य श्री तुलसी एक जैनाचार्य थे। तेरापंथ जैसे प्रगतिशील सम्प्रदाय का आचार्य होना तो वे स्वयं गौरव का विषय मानते थे। साथ ही उन्होंने जैन धर्म के मौलिक सिद्धांतों की युगीन अपेक्षाओं और समस्याओं के संदर्भ में वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत कर उसे जैन धर्म के रूप में सुप्रतिष्ठित किया है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उसकी उपयोगिता को सिद्ध करवाई। आचार्य श्री ने देशव्यापी पद यात्राएं कर जैन धर्म के अनुयायियों के क्षीण होते जैनत्व के संस्कारों को पुष्ट किया और अजैन समाज में भी जैन धर्म के अहिंसा, अनेकान्त, समन्वय और सह अस्तित्व जैसे तत्वों के प्रति आदर भाव जगाया था। इन सभी दृष्टियों से आचार्य श्री तुलसी को एक परम्परावादी और असम्प्रदायिक आचार्य के रूप में भी जाना–पहचाना जा सकता है।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अणुव्रत का मूल्यांकन करते हुए एक जनसभा में कहा था, ''मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता इस बात की है कि अणुव्रत आंदोलन ने देश में सार्वजनिक रूप ले लिया है। यह आंदोलन सुनहरे भविष्य का सूचक है। आगे उन्होंने कहा, ''आचार्य श्री, आप यदि मुझे कोई पद देना चाहते है तो मैं अणुव्रत के समर्थक का नहीं, अणुव्रती का पद लेना चाहूंगा।''

अणुव्रत राष्ट्र को नैतिक मूल्यों के संकट से उबारने वाला सशक्त उपक्रम है। वह सत्य की शोध और अभिव्यक्ति का सर्वमान्रु मंच है। वह सत्य से आबद्ध है, किसी सम्प्रदाय से नहीं। अणुव्रत का दृष्टिकोण सदा ही असाम्प्रदायिकता रहा है। यह एक मानवीय आचार संहिता है। इसकी संरचना में सभी सार तत्वों की अपूर्व समन्विति है। यही कारण है, सभी धर्म, जाति और वर्ग के व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के इसके साथ जुड़े हैं। उनके अवदानों की श्रृंखला बहुत विस्तरित है।

साक्षी, नौवीं
भिवानी पब्लिक स्कूल,
सैक्टर–14, भिवानी,
हरियाणा

व्यक्ति नहीं अपितु संपूर्ण संस्कृति

आचार्य तलुसी ने न केवल अणुव्रत आंदोलन की शुरूआत की अपितु इसके माध्यम से नैतिकता व सदाचार की आवाज घर–घर पहुंचाई। उनका मानना था कि व्यक्ति से समाज बनता है और समाज से देश। यदि अच्छे समाज व देश का निर्माण करना है तो सर्वप्रथम व्यक्ति को अच्छा बनना होगा।

असतो मा सदगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माअमृतं गमय अर्थात्– हे प्रभु! असत्य से सत्य, अन्धकार से प्रकाश और मृत्यु से अमरता की ओर मेरी गति हो। मनुष्य की इस प्रार्थना को प्रभु ने गुरु या आचार्य का रूप देकर स्वीकार किया जो मनुष्य को सत्य की राह पर अग्रसर कर अंधकार से बाहर निकाल कर अमरता की ओर अग्रसर करता है।

आचार्य अपने आचरण से शिक्षा देता है। आचार्य का दर्जा प्राप्त करने के लिए वंश परंपरा, समाज व स्थान महत्व नहीं रखता बल्कि आचार व व्यवहार की कुशलता ही उसे महान बनाती है।

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। भारत की मिट्टी के कण–कण में महापुरुषों के उपदेश की प्रतिध्वनियां हैं। चाणक्य, आर्यभट्ट, महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर से भारत का इतिहास विश्व में अपना विशेष स्थान रखता है। स्वर्णिम इतिहास की इसी पवित्र श्रृंखला में एक नाम है– अहिंसा के अग्रदूत, मानवता के मसीहा, अणुव्रत अनुशास्ता, युग प्रधान आचार्य तुलसी का।

यथा नाम तथा गुण–यह उक्ति आचार्य तुलसी के सन्दर्भ में सर्वथा उचित है। हिन्दू धर्म में तुलसी नामक पौधे को अत्यन्त पवित्र माना जाता है। लोग उसकी पूजा करते हैं। तुलसी एक औषधीय पौधा है जो बड़े–बड़े रोगों को निर्मूल कर देता है। इसी प्रकार आचार्य तुलसी ने अपने सत् आचरण से समाज में फैली विभिन्न विसंगतियों को दूर करने का बीड़ा उठाया।

आचार्य तुलसी का जन्म 20 अक्टूबर, 1914 में हुआ। मात्र 11 वर्ष की अल्पावस्था में आत्मकल्याण के साथ जनकल्याण का संकल्प लिया और वे तेरापंथ के अष्टम आचार्य कालूगणी के पास दीक्षित हुए, अर्थात् जैन मुनि बने। 11 वर्षों तक मेधावी छात्र के रूप में अध्ययन कर कालूगणी द्वारा 22 वर्षों की उभरती जवानी में आचार्य पद को प्राप्त हुए। उनके आचार्य काल के दूसरे दशक का प्रारंभ नवनिर्माण की कल्पना के साथ हुआ। आचार्य तुलसी 20वीं सदी के एक ऐसे महापुरुष का नाम है, जिन्होंने अपना पूरा जीवन मानवता के नैतिक उत्थान में समर्पित कर दिया। आचार्य तुलसी ने सत्यमं, शिवमं और सुन्दरम् की युगपत उपासना की है।

जैन धर्म एवं तेरापंथ सम्प्रदाय से प्रतिबद्ध होने पर भी आचार्य तुलसी का दृष्टिकोण असाम्प्रदायिक रहा है। वे कहते थे–''जैन धर्म मेरी रग–रग में, नस–नस में रमा हुआ है, किन्तु साम्प्रदायिक दृष्टि से नहीं, व्यापक दृष्टि से। क्योंकि मैं सम्प्रदाय में रहता हूं पर सम्प्रदाय मेरे दिमाग में नहीं रहता। मैं सोचता हूं मानव जाति को कुछ नहीं बहुत कुछ नया देना है, जो साम्प्रदायिक दृष्टि से नहीं दिया जा सकता। यही कारण है कि मैंने सम्प्रदाय

की सीमा को अलग रखा और धर्म की सीमा को अलग। मैं सबसे पहले मनुष्य हूं, फिर जैन हूं, फिर तेरापंथ का आचार्य हूं।''

इसी व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर आचार्य तुलसी ने असाम्प्रदायिक धर्म का आन्दोलन चलाया जो जाति, वर्ण, वर्ग, भाषा, प्रान्त एवं धर्मगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव जाति को जीवन मूल्यों के प्रति आकृष्ट कर सके। इस असाम्प्रदायिक मानव धर्म का नाम है– अणुव्रत आंदोलन।

आजादी के बाद जब आचार्य तुलसी ने देखा कि जनमानस अशांति, असंतोष और विलासी जीवन की और बढ़ रहा है, असली आजादी का आनन्द कोसों दूर चला जा रहा है तब उन्होंने सदाचार, सादगी, नैतिकता एवं आजादी के मूल ध्येय को आत्मसात करवाने के लिए अणुव्रत की शुरूआत की। अणुव्रत दर्शन व्यक्ति को नैतिक बनाने की आचार संहिता है। आचार्य तुलसी के अणुव्रत की आवाज राष्ट्रपति से लेकर गरीब की झोपड़ी तक गूंजी।

आचार्य तुलसी ने पांच महाव्रतों की कल्पना को समाज के समक्ष रखा, वे हैं–अहिंसा, सत्य, अचौर्य, बह्मचर्य और अपरिग्रह। कोई भी सामाजिक व्यक्ति इनको अपने जीवन में उतार कर अपने जीवन को उन्नत बना सकता है। अहिंसा के पालन से यह लाभ बताया कि इससे आतंकवाद की समस्या का समाधान अपने आप हो सकता है। क्योंकि इस व्रत की स्वीकृति के फलस्वरूप निरपराध मनुष्यों की हत्या सहज रूप में प्रतिबन्धित हो जाती है।

सत्य का पालन करने वाला क्रोध, लोभ, भय और हास्य के वश किसी को अहितकारी असत्य नहीं बोलता, किसी के गोपनीय रहस्य का उद्घाटन नहीं करता, किसी को गलत पथदर्शन नहीं देता। अचौर्य का सन्देश है कि कोई भी मनुष्य दूसरे के प्रति क्रूरतापूर्ण व्यवहार न करे। ब्रह्मचर्य अपने द्वारा अपने जीवन की सुरक्षा है, आत्म सुरक्षा का सहज उपाय है और उन्मुक्त भोग से बचने का प्रशिक्षण है। अपरिग्रह जिसका आशय है इच्छाओं को सीमित करना। आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है किन्तु आकांक्षाओं की पूर्ति असम्भव है। अतः आकांक्षाओं पर अंकुश इस महाव्रत के माध्यम से लगाया जा सकता है।

आचार्य तुलसी ने न केवल अणुव्रत आंदोलन की शुरूआत की अपितु इसके माध्यम से नैतिकता व सदाचार की आवाज घर–घर पहुंचाई। उनका मानना था कि व्यक्ति से समाज बनता है और समाज से देश। यदि अच्छे समाज व देश का निर्माण करना है तो सर्वप्रथम व्यक्ति को अच्छा बनना होगा। व्यक्ति के सुधरते ही समाज व देश अपने आप अच्छे बन जायेंगे।

मानवता के मसीहा गुरुदेव तुलसी ने लगभग 70 वर्ष तक संयम और त्याग का जीवन जिया और उसके महत्व को उजागर किया। भौतिकता से लिपटे विश्व की मूर्च्छा को दूर करने हेतु आध्यात्मिक संजीवनी बूटी दे कृतार्थ किया। गुरुदेव तुलसी इस धरा पर शरीर से चाहे अदृश्य हों, उनके अवदान अमर हैं जो मानवता का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

उनके अवदानों को मानव जाति कभी भुला नहीं पायेगी। उन्होंने मानव जाति को शांति, सहिष्णुता व सद्भाव का संदेश दिया तथा युवाओं का भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए शिक्षा पर विशेष बल दिया। आचार्य तुलसी मानवता के सच्चे मसीहा थे। उनके द्वारा प्रवर्तित अणुव्रतों में वर्तमान युग की अधिकांश समस्याओं का समाधान निहित है। आचार्य तुलसी एक व्यक्ति नहीं बल्कि सम्पूर्ण संस्कृति थे, जिनके मूल्य और आदर्श हमें सदैव दिशाबोध देते रहेंगे।

आयुषी वर्मा आठवीं
कमल पब्लिक सी. सै. स्कूल,
डी ब्लाक, विकासपुरी, दिल्ली

सत्य के शोधक व साधक

आज के इस भौतिकवादी युग में नैतिकता जैसे नीरस एवं अप्रासंगिक हो चुके विषय को आचार्य ने जीवंतता दी। अणुव्रत आन्दोलन की प्रासंगिकता पाश्चात्य देशों को भी अब समझ आने लगी है क्योंकि भौतिकवाद का नशा जब उतरता है तब जो कुछ शेष बचता है वह है आत्मज्ञान। अणुव्रत ही एकमात्र उजाला है जो इस अन्धकार से हमें मुक्त कर सकता है। जो हमें हमसे हमारा अपना परिचय करने का एकमात्र मार्ग है।

आचार्य श्री तुलसी हमारे समय के उन सन्तों–फकीरों के अगुआ रहे जिन्होंने इस बात को महसूस किया कि देश की आजादी को कायम रखने के लिए बहुत जरुरी है कि हमारे देश के रहने वालों का नैतिक और चारित्रिक स्तर ऊंचा हो।

इसलिए उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया और अपने साढे–सात सौ साधु–साध्वियों एवं हजारों–हजार अणुव्रत कार्यकताओं के साथ मानव समाज को उन्नत बनाने के लिए सक्रिय हुए। नैतिक मूल्यों का एक व्यवस्थित एवं अनियोजित कार्यक्रम सक्रिय हुआ। नैतिक मूल्यों का एक व्यवस्थित एवं नियोजित कार्यक्रम पिछले पांच दशक से निरन्तर चलता रहा है, यह आचार्य श्री तुलसी की अलौकिक शक्ति का परिचायक है।

इक्कीसवीं सदी में आज हम अणुव्रत आन्दोलन के भविष्य को देखते हैं तो हमें तमाम धुंधलकों के बाबजूद आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त एक प्रकाशमय भविष्य दिखाई देता है। आचार्य तुलसी अवतारी पुरुष नहीं थे और न ही उन्होंने कभी ऐसा दावा किया। वे स्वयं को एक तुच्छ मानव सेवक मानते थे और अन्तिम सांस तक मानव सेवा करते रहे।

उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन को जीवन की सतत् प्रक्रिया भर माना। वे सत्य के शोधक और साधक थे। आचार्य तुलसी की महानता, उनकी लोकप्रियता, उनके जीवन की सफलता का रहस्य उनकी सत्य और न्यायनिष्ठा में, उनकी सतत् जागरुकता में, उनके विश्व प्रेम और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना में निहित है। वे एक क्रान्तिकारी शोधक और सुधारक थे।

होश संभालते ही उन्होंने संसार को धर्म की नयी परिभाषा दी। उन्होंने मनुष्य के व्यवहार को सच्चा धर्मस्थल माना। मनुष्य का कार्यस्थल चाहे वह कार्यालय हो, खेत हो या अस्पताल, वही मनुष्यता के वास्तविक दर्शन होते हैं। आचार्य तुलसी सर्वधर्म समानता को मानने वाले थे। उनकी धर्म की परिभाषा में मनुष्य–मनुष्य में बैर के लिए स्थान नहीं था 'सर्वभूत हिताय' उनका ध्येय था।

आचार्य श्री तुलसी ने अन्याय के विरोध के लिए अहिंसक साधनों को अपनाने का समर्थन किया। आचार्य तुलसी ने हृदय परिवर्तन पर विशेष जोर दिया। उनका यह भी मानना था कि कोरे उपदेश से किसी मनोवृत्ति को नहीं बदला जा सकता है अपितु उसे यथार्थ में प्रयोग करना होगा।

उन्होंने शिक्षा–पद्धति को मूल्यपरक बनाने पर बल दिया। उनकी इस सोच से ही प्रेक्षाध्यान एवं जीवन–विज्ञान के उपक्रमों की शुरूआत हुई। इस प्रकार उन्होंने मानव समाज की बुराइयों को दूर करने के लिए सबसे पहले बुराइयों की पहचान की फिर उन्हें दूर करने के लिए आचार संहिता की संरचना की।

संसार से शोषण की प्रवृत्ति मिटाने के लिए आचार्य तुलसी ने अपरिग्रह व्रत पर जोर दिया। उन्हेंने अपरिग्रह परमो धर्मः पर अधिक बल दिया और कहा कि हमारी बढ़ी हुए आवश्यकताएं ही बड़े–बड़े असन्तोष और युद्ध की जननी है।

आचार्य तुलसी ने विसर्जन का सूत्र भी दिया। इस सूत्र ने धन के प्रति आसक्ति को कम किया है। समाज में फैली विषमता दूर करने के लिए आचार्य श्री तुलसी ने अस्पृश्यता निवारण का आन्दोलन उठाया। यही नहीं सर्वधर्म समभाव की धारणा भी दी।

आचार्य तुलसी ने नारी को अबला से सबला बनाया। जहां अन्य देशों में स्त्रियों को अपने हक के बड़े–बड़े आन्दोलन चलाने पड़े वहीं आचार्य तुलसी ने नारी को न केवल उच्चतम प्रतिष्ठा प्रदान करवाई अपितु उन्हें सम्मानजनक स्थान प्रदान किया।

आज के इस भौतिकवादी युग में नैतिकता जैसे नीरस एवं अप्रासंगिक हो चुके विषय को आचार्य ने जीवंतता दी। अणुव्रत आन्दोलन की प्रासंगिकता पाश्चात्य देशों को भी अब समझ आने लगी है क्योंकि भौतिकवाद का नशा जब उतरता है तब जो कुछ शेष बचता है वह है आत्मज्ञान। अणुव्रत ही एकमात्र उजाला है जो इस अन्धकार से हमें मुक्त कर सकता है। जो हमें हमसे हमारा अपना परिचय करने का एकमात्र मार्ग है।

आतंक, संदेह, संत्रास, अंतहीन स्पर्द्धा, कृत्रिम प्रतिष्ठा की भूख, समाज के अर्थहीन मानदंड, अभाव एवं अतिभाव, बढ़ती महत्वाकांक्षा बुरे को बुरा कहने के साहस के अभाव से ग्रस्त मानवता को त्राण देने हेतु नैतिक मूल्यों का आलोक ही जीवन को प्रकाशमय बना सकता है।

आज जब विश्व अनैतिकता, दुराचार–भ्रष्टाचार, बलात्कार की आपाधापी की परिस्थितियों से गुजर रहा है, अणुव्रत जैसी मशाल ही इस अंधकार के वातावरण में एकमात्र प्रकाश स्तम्भ सिद्ध हो रही है।

मानव का मानव के लिए जो धर्म है वह अधिक महत्वपूर्ण है। यह सिखाया आचार्य तुलसी ने । इसलिए यह निश्चत रूप से कहा जा सकता है कि मनुष्य को मानवता सिखाने वाले आंदोलनों में अणुव्रत आंदोलन आने वाली शताब्दी में एक विशिष्ट भूमिका निभाएगा और सारे संसार के मनुष्य सुखी और दुख विहीन हो सकेंगे।

आशीष बनर्जी आठवीं
टैगोर पब्लिक स्कूल, अम्बाबाड़ी,
जयपुर, राजस्थान

अवदानों से भरा व्यक्तित्व

आज विश्व में अनेक प्रकार की अशांति है आर्थिक अशांति, राजनैतिक अशांति, सामाजिक अशांति लेकिन इन सब में धर्म की अशांति बहुत व्यापक है। यद्यपि धर्म तो प्रेम व एकता का संदेश देने वाला है पर अब आदमी के मन में प्रेम नहीं है, शांति नहीं तो वह धर्म को भी झगड़े का मूल बना लेता है। इसलिए अणुव्रत की आचार–संहिता के छोटे–छोटे नियम व्यक्ति के मन में शांति पैदा करते हैं, सुधार करते हैं।

आचार्य तुलसी 20वीं सदी के एक ऐसे महापुरुष का नाम है जिन्होंने अपना पूरा जीवन मानवता के नैतिक उत्थान में समर्पित कर दिया। महापुरुष का दर्जा प्राप्त करने के लिए वंश परंपरा, समाज व स्थान महत्व नहीं रखता बल्कि आचार व व्यवहार की कुशलता ही उसे महान बनाती है। जो इस कुशलता को अपने में समेटे होते हैं, उन्हें शब्दों में बांधना कठिन होता है। परंतु यह भी सत्य है कि ऐसे व्यक्तियों को ही शब्दों में बांधने के योग्य माना जाता है। जिनके जीवन में ना तो तेज होता है और ना ही प्रवाह, उनका व्यक्तित्व शब्दों में छिपकर रह जाता है और जिनमें ये सारी विशेषताएं होती हैं। उनके व्यक्तित्व में शब्द छिपकर रह जाते हैं।

समस्या दोनों जगह है परंतु वह भिन्न–भिन्न प्रकार की है। आचार्य तुलसी को शब्दों में बांधते समय यही समस्या मुझे अनुभूत हो रही है। उनके व्यक्तित्व को शब्दों में बांधने का जितना प्रयत्न कर रहा हूं उससे कहीं ज्यादा व बाहर नजर आने लग जाता है क्योंकि उनके द्वारा प्रदत्त अनेक अवदानों से उनका व्यक्तित्व भी विस्तृत बन गया है। इसलिए मैं उनके विशाल व्यक्तित्व को लेखनी का विषय न बनाते हुए उनके एक महत्वपूर्ण एवं मानव निर्माण के अवदान अणुव्रत की ही यह चर्चा कर रहा हूं।

आजकी के बाद आचार्य तुलसी ने जब देखा कि जनमानस अशांति, असंतोष और विलासितापूर्ण जीवन की ओर बढ़ रहा है तो उससे असली आजादी का आनन्द कोसों दूर चला जा रहा है। तब उन्होंने सदाचार, सादगी, नैतिकता एवं आजादी के मूल को आत्मसात करवाने के लिए अणुव्रत आंदोलन की शुरूआत की। कृष्णमृग अभयारण्य के रूप में विख्यात ताल छापर से स्फूटित अणुव्रत रूपी चिंतन ने सरदारशहर की धरा पर आंदोलन का स्वरूप प्राप्त कर व्यक्ति, क्षेत्र, काल विशेष की सीमा से परे सार्वभौम और सर्वग्राही पहचान बना ली है। क्योंकि इसके द्वारा आज की समस्याओं का समाधान प्राप्त होता है एवं स्वस्थ समाज व देश की संरचना के लिए इसका होना आवश्यक प्रतीत हो रहा है।

आचार्य तुलसी ने न केवल अणुव्रत आंदोलन की शुरूआत की अपितु इसके माध्यम से नैतिकता व सदाचार की आवाज घर–घर पहुंचाई। उनका मानना था व्यक्ति से समाज बनता है और समाज से देश। यदि अच्छे समाज व देश का निर्माण करना है तो सर्वप्रथम व्यक्ति को अच्छा बनाना होगा। व्यक्ति के सुधरते ही समाज व देश अपने आप अच्छे बन जाएंगे। इसलिए उनके कथन के अनुसार ही अणुव्रत आंदोलन सबसे पहले व्यक्ति को स्वयं सुधारने को कहता है।

समाज व राष्ट्र के जीवन को ऊंचा उठाना है तो पहले स्वयं को उठाने की चर्चा करता है। यहां प्रश्न उपस्थित होता है कि व्यक्ति चर्चा से तो सुधारा नहीं जा सकता। उसको सुधारने की, उसके जीवन को उच्च बनाने की प्रक्रिया क्यों दी ? इस समाधान में आपको समझ लेना चाहिए कि अणुव्रत शब्द का मतलब है छोट–छोटे नियम। जब इन नियमों को समझेंगे तो आपका यह प्रश्न समाप्त हो जाएगा। अणुव्रत की एक आचार संहिता

है। इस आचार संहिता के द्वारा अशांति के दौर से गुजर रहे व्यक्ति को शांति से रहने का तरीका समझाया जाता है क्योंकि शांत व्यक्ति ही दूसरों का हृदय परिवर्तन कर सकता है।

आज विश्व में अनेक प्रकार की अशांति है आर्थिक अशांति, राजनैतिक अशांति, सामाजिक अशांति लेकिन इन सब में धर्म की अशांति बहुत व्यापक है। यद्यपि धर्म प्रेम व एकता का संदेश देने वाला है पर अब आदमी के मन में प्रेम नहीं है, शांति नहीं तो वह धर्म को भी झगड़े का मूल बना लेता है। इसलिए अणुव्रत की आचार–संहिता के छोटे–छोटे नियम व्यक्ति के मन में शांति पैदा करते हैं, सुधार करते हैं।

यहां एक तर्क उपस्थित होता है कि देश में अनेक कानून हैं। समाज की अपनी परंपराएं हैं। परिवार के अपने नियम हैं और सभी धर्मों की अपनी मर्यादाएं हैं फिर भी व्यक्ति शांत नहीं है। सुधार भी परिलक्षित नहीं हो रहा है, तब अणुव्रत की यह आचार संहिता कैसे सुधार कर सकती है ? जिस तरह कानून की पालना नहीं की जाती वैसे ही ये नियम भी एक कोने में रख दिये जाएंगे या यहां एक बात का खुलासा कर देता हूं कि जो कानून बनाया जाता है वह ऊपर से थोपा हुआ होता है या एक भय मिटाने का रास्ता आदमी को मिल जाता है तो वह कानून को तोड़ देता है। परंतु अणुव्रत के नियम थोपे नहीं जाते बल्कि उसे हृदय परिवर्तन कर सहर्ष स्वीकार करवाए जाते हैं। इसी कारण व्यक्ति में बदलाव घटित होता है और स्वस्थ व्यक्ति का निर्माण होकर समाज व राष्ट्र निर्माण की तरफ आगे बढ़ जाता है।

अणुव्रत आंदोलन का सातवां दशक चल रहा है। महसूस हो रहा है कि इसमें गति पूर्ववत् नहीं है। हम आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी वर्ष पर संकल्प करें कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के नेतृत्व में इस आंदोलन में नये प्राणों का संचार करें। इसे एक नई ऊंचाई देनी है और जन–जन में नैतिकता, ईमानदारी, भाईचारे की अलख जगानी है।

गौरव, छठी
नव भारती पब्लिक स्कूल,
दीपाली, पीतमपुरा, दिल्ली

मानव को सही रूप में मानव बनाया

आचार्य तुलसी वास्तविकता में अणुव्रत आंदोलन से भारतीय मानस की सोच एक समान करना चाहते थे ताकि वे सभी व्यक्तियों से उदार की भावना रखें। दुनिया के कई हिस्सों में बहु सांस्कृतिक समाज के विभिन्न समूहों के बीच हिंसक झड़पों की घटनाओं को देखकर विदेशों में ले जाया गया आचार्य तुलसी का यह मूल उद्देश्य था।

आचार्य तुलसी एक जैन आचार्य थे। वे अणुव्रत और जैन विश्व भारती संस्थान के संस्थापक थे। वे सौ से अधिक पुस्तकों के लेखक थे। आचार्य तुलसी को राधाकृष्णन की पुस्तक '' जीना है तो उद्देश्यों के साथ जियो'' में 15 महान व्यक्तियों में सम्मिलित किया गया था। उन्हें एक समारोह में तत्कालीन राष्ट्रपति वी.वी. गिरि द्वारा ''युग–प्रधान'' की उपाधि मिली थी। उन्हें कई पुरस्कारों से नवाजा गया।

आचार्य तुलसी श्री झूमरमल खटेड एवं बदनाजी के महान पुत्र थे। वे आठ साल की उम्र में पहली बार विद्यालय गये। आचार्य कालूगणी, तेरापंथ के आठवें आचार्य ने उनके बारे में कहा– उसके दिव्य चेहरे ने मेरे दिल को मोहित कर दिया है''। जब बाल्यावस्था में थे तब ही आचार्य कालूगणी ने इनमें प्रतिभा के बीज देखे थे। उनमें एकाग्रता, साहस, सहनशक्ति एवं बल था। वे महान आत्मा थे।

आचार्य तुलसी को यह अहसास हुआ कि भारत की स्वतंत्रता व्यर्थ है जब तक कि राष्ट्रीय चरित्र विकसित नहीं किया जाए। उनके अनुसार असली स्वतंत्रता का मतलब है 'नैतिक ऊंचाई'। अणुव्रत आंदोलन इस ही दिशा का एक प्रयोग है। मार्च 2, 1949 में उन्होंने इस आंदोलन का शुभारंभ किया। अणुव्रत का मतलब है छोटे (अणु), व्रत (व्रत)। अणुव्रत आंदोलन के साथ व्यक्ति के चरित्र और नैतिकता को विकसित करने के उद्देश्य से आचार संहिता तैयार की गई थी और लोगों के समक्ष प्रस्तुत की गई। पांच सिद्धांतों (सत्य, अहिंसा, गैर कब्जे, गैर चोरी और ब्रह्मचर्य) आचरण के इस कोड की नींव है।

इस कदम का देशभर में स्वागत किया गया। हजारों लोगों ने इसे करने के लिए अपना समर्थन दिया। नैतिक जागृति के उद्देश्य के प्रति समर्पित और राष्ट्रीय चरित्र के विकास के रूप में लोगों ने इसे स्वीकार कर लिया। आचार्य तुलसी एवं जैन तेरापंथ के साधुओं ने नंगे पांव चलकर अणुव्रत संदेश एक गांव से दूसरे गांव पहुंचाया।

अणुव्रत आंदोलन के द्वारा लोगों तक कई संदेश पहुंचे, जैसेः–
- धर्म (अध्यात्म/धर्म) पहले स्थान पर है एवं संप्रदाय दूसरे पर।
- माना कि यहां कई संप्रदाय हैं लेकिन धर्म सभी के अंतर्गत आता है।
- धर्म राजनीति से काफी अलग है। यह राजनीतिक हस्तक्षेप के अधीन नहीं होना चाहिए।
- धर्म का मूल उद्देश्य चरित्र शुद्ध करने के लिए है। इसके कर्मकांड, प्रथा माध्यमिक है।
- धर्म केवल खुशी सुनिश्चित करने का साधन नहीं है, अपितु यह वर्तमान जीवन में खुशी लाने का साधन है।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारत के प्रथम प्रधानमंत्री ने भी इस आंदोलन का समर्थन किया। मोरारजी देसाई, अनंत संयम अयांगर, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन, गुलजारी लाल नंदा आदि ने भी इस आंदोलन का समर्थन किया।

अणुव्रत आंदोलन ने भारतीयों में सर्वोच्च प्रभाव डाला। इससे भारतीयों ने एक समान रहते की प्रेरणा ली। छोटी–छोटी बातें, प्रतिज्ञा लेने से ही बड़े कदम बनते हैं। अणुव्रत इसी चीज की कोशिश है। इसने भारतीयों को छोटे–छोटे काम करने से बड़े–बड़े कामों की पूर्ति करना सिखाया है।

आचार्य तुलसी वास्तविकता में अणुव्रत आंदोलन से भारतीय मानस की सोच एक समान करना चाहते थे ताकि वे सभी व्यक्तियों से उदार की भावना रखें। दुनिया के कई हिस्सों में बहु सांस्कृतिक समाज के विभिन्न समूहों के बीच हिंसक झड़पों की घटनाओं को देखकर विदेशों में ले जाया गया आचार्य तुलसी का यह मूल उद्देश्य था।

आचार्य तुलसी एक जैन आचार्य थे जिन्होंने अणुव्रत की शुरूआत की। अणुव्रत ने भारतीयों पर बहुत अच्छा प्रभाव डाला। आचार्य तुलसी जी का उद्देश्य भारतीयों में समान भाव उत्पन्न करना था। उन्होंने मानव को सही रूप से मानव बनाया। अणुव्रत इस महान आत्मा की महान सोच का नतीजा है।

आकांक्षा ठाकुर सातवीं
इटमा विद्या निकेतन, विजय नगर, इन्दौर
मध्य प्रदेश

यथार्थदर्शी व क्रांतिकारी आचार्य

आचार्य तुलसी ने सम्प्रदाय से ऊपर उठकर मानवता के लिए अणुव्रत जैस महान अवदान देकर जन–जन में विचार और आचार क्रांति का सूत्रपात किया। आचार्य तुलसी मानवता के मसीहा थे। 'सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा' आचार्य तुलसी के इस संदेश को हम अपने जीवन में अपनाएं तो हमारे कल्याण के साथ देश का भी कल्याण होगा। आचार्य तुलसी का यह अणुव्रत गीत हमें बहुत कुछ सिखाता है।

आचार्य तुलसी एक महापुरुष थे, महान आचार्य थे, महान व्यक्तित्व के धनी थे। महत्ता के तीन रूप होते हैं : नैसर्गिक, अर्जित और आरोपित। ऐसा कहा जा सकता है आचार्य तुलसी की महत्ता नैसर्गिक थी, वे जन्म से ही महान थे। वे जनता को सुख की राह दिखाने का प्रयत्न करते। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी बीसवीं सदी के एक महापुरुष थे। उन्होंने अपने जीवन में ऐसा कुछ किया जो तेरापंथ शासन, जैन शासन और मानव जाति के लिए कल्याणकारी हुआ।

आचार्य श्री तुलसी एक यथार्थदर्शी और क्रांतिकारी धर्माचार्य थे। उन्होंने अणुव्रत के माध्यम से व्यक्ति और समाज दोनों की शुद्धि और स्वस्थता पर बल दिया। उन्होंने सोचा–जब तक व्यर्थ की रुढ़ियों के कीचड़ से मुक्ति नहीं होगी तब तक व्यक्ति शांति और संयम की दिशा में अग्रसर नहीं हो सकेगा। उन्होंने क्रांतिकारी भाषा में इस और समाज का ध्यान आकृष्ट किया। उनके वर्षों के प्रयत्न से नया मोड़ अभियान की एक सुंदर भूमिका का निर्माण हुआ।

नया मोड़ अभियान का व्यवस्थित प्रारंभ वीर भूमि मेवाड़ पर हुआ। आचार्यवर का उस समय मेवाड़ में प्रवेश रणकपुरजी होते हुए सायरा के मार्ग से हुआ। वहां मेवाड़ के श्रावक–समाज की ओर से स्वागत अभियान का विशाल और भव्य आयोजन किया गया जिसमें सभी अंचलों के हजारों श्रावकों की उपस्थिति थी। वहां सभी लोगों ने श्रद्धा भरे उद्‌गारों से आचार्यवर का स्वागत किया तथा निवेदन किया–आपका जो भी दिशा–निर्देश मिलेगा उसका हम अनुसरण करेंगे।

आचार्यवर ने अपने प्रेरणादायक उद्‌बोधन में कहा – '' पिछले वर्ष कोलकाता चातुर्मास में अभियान के लिए तेरापंथ की जन्म–भूमि मेवाड़ की इस ऐतिहासिक धरती पर आने का मैंने संकल्प किया था। लगभग तीन हजार किलोमीटर का पाद विहार करने के बाद आज मेरा वह संकल्प पूरा हो गया, बिगुल बजाया था, संदेश आज भारत में ही नहीं विदेशों में भी गूंज रहा है।

आचार्य तुलसी के उस वक्तव्य से मेवाड़ में 'नया मोड़' के अभियान का स्वर जन–जन के मुख पर गूंज उठा। सायरा के बाद जहां–जहां आचार्यवर का पदार्पण हुआ, वहां अणुव्रत के साथ 'नया मोड़' के अभियान का संदेश प्रदान किया। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत के साथ मृत्यु–भोज आदि रुढ़ियों से मुक्ति की प्रेरणा देने का निर्देश दिया। उस निर्देश के अनुसार कई लोगों ने मेवाड़ के सभी अंचलों में भ्रमण कर अणुव्रत और रुढ़ि–उन्मूलन का व्यापक कार्य किया जिससे विभिन्न जातियों और संप्रदायों के लोगों से उनका संपर्क बना। जैन–अजैन हजारों व्यक्तियों ने नशा, दुर्व्यसन और मृत्युभोज आदि कुरुढ़ियों का परित्याग किया। इससे नए मोड़ अभियान की पृष्ठभूमि निर्मित हुई।

भारत की गौरवशाली संत परंपरा के उज्ज्वल नक्षत्र थे आचार्य तुलसी। उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात कर भारतीय संस्कृति को संजीवन प्रदान किया। आचार्य तुलसी एक समुदाय के परिवेश में रहते हुए मानवतावादी छवि के मूर्तिमान आदर्श थे। उनका व्यक्तित्व तेजस्वी और कर्तव्य यशस्वी था। उनके द्वारा प्रदत्त किए गये अवदान मानव जाति के कल्याण हेतु प्रमुख थे। आचार्य तुलसी 20वीं शताब्दी के दैदीप्यमान नक्षत्र थे। उनका बहुआयामी व्यक्तित्व बेमिसाल था। वे विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। आचार्य तुलसी के अवदानों पर आज पूरी मानव जाति को नाज है।

आचार्य तुलसी ने सम्प्रदाय से ऊपर उठकर मानवता के लिए अणुव्रत जैस महान अवदान देकर जन–जन में विचार और आचार क्रांति का सूत्रपात किया। आचार्य तुलसी मानवता के मसीहा थे। 'सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा' आचार्य तुलसी के इस संदेश को हम अपने जीवन में अपनाएं तो हमारे कल्याण के साथ देश का भी कल्याण होगा। आचार्य तुलसी का यह अणुव्रत गीत हमें बहुत कुछ सिखाता है :

गूंज उठे भारत में घर–घर , तान अणुव्रत गान की,
बढ़ी साथियों, सही दिशा यह, नैतिक पुनरुत्थान की,
वन्दे सादरम्। वन्दे सादरम !

अदिति शर्मा, आठवीं
के.एम. पब्लिक स्कूल, भिवानी
हरियाणा

जैनाचार्य नहीं, जनाचार्य

आचार्य तुलसी ने सम्प्रदाय से अधिक महत्व मानवता को दिया। मानवता के उत्थान के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया। प्रसिद्ध जैनाचार्य होते हुए भी उनके कार्यक्रम संम्प्रदाय की सीमाओं से सदा ऊपर रहे। उनका दृष्टिकोण असाम्प्रदायिक था। अपने इन्हीं गुणों के कारण वे जैनाचार्य से जनाचार्य बन गए।

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। भारत की मिट्टी के कणों में महापुरुषों के उपदेशों की प्रतिध्वनियां हैं। इन महापुरुषों ने अपने जीवन आदर्श द्वारा मानवता के विकास में जो महत्वपूर्ण योगदान दिया है, वह अतुलनीय है। सत्य, अहिंसा, परोपकार, सहनशीलता, संयम, करुणा, दया आदि महान गुणों के पोषक रहे हैं हमारे पथ–प्रदर्शक, हमारे महापुरुष। इन्हीं महापुरुषों में मानवता के मसीहा आचार्य श्री तुलसी का नाम अपना विशेष स्थान रखता है।

मानवता का स्वर्णिम इतिहास रचने वाले संतों की पवित्र श्रृंखला में आचार्य तुलसी विशिष्ट स्थान रखते हैं। वे अहिंसा के अग्रदूत, मानवता के मसीहा, अणुव्रत अनुशास्ता व युग–पुरुष थे। वे देश की महान धरोहर थे, राष्ट्रसंत थे। वे राष्ट्रीय एकता के पक्षधर थे। उनका प्रकांड पांडित्य उन्हें स्वामी विवेकानन्द व डॉ. राधाकृष्णन के समान स्तर पर प्रतिष्ठित करता है। उन्होंने अपना जो परिचय दिया था, उसी से उनकी महानता का पता चलता है। उन्होंने अपना परिचय देते हुए कहा– ''मैं सबसे पहले मनुष्य हूं, फिर तेरापंथ का आचार्य हूं।''

''प्राप्त हुआ है महापुरुषों की जन्मभूमि बनने का श्रेय,
जिसकी अवनि में अवतरित हुए हैं अगणित श्रद्धेय।

आचार्य तुलसी का जम्म 20 अक्टूबर, 1914 में हुआ था। मात्र ग्यारह वर्ष की अल्पावस्था में तेरापंथ के अष्टम् आचार्य कालूगणी के पास दीक्षित हुए, अर्थात जैन मुनि बने। 11 वर्षों तक मेधावी छात्र के रूप अध्ययन कर 22 वर्ष की अवस्था में गुरु कालूगणी द्वारा आचार्य पद प्राप्त किया।

प्रथम स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त, 1947 को उन्होंने 'असली आजादी अपनाओ' का शंखनाद किया। 2 मार्च, 1949 में उन्होंने 34 वर्ष की आयु में अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत आंदोलन में हरित क्रांति, सत्याग्रह व भूदान की तरह लोकतंत्र की उज्ज्वल कल्पना निहित है।

आचार्य तुलसी का मानवता को जो महान योगदान है, वह उनके अणुव्रत आंदोलन में निहित है। अणु का अर्थ है छोटा अर्थात् छोटे–छोटे व्रतों से संकल्प शक्ति के विकास द्वारा जीवन को निर्मल करना। संयम, इच्छा–परिणाम, अनावश्यक हिंसा से विरति आदि व्रतों का पालन करना, शराब तथा मादक द्रव्यों का त्याग करना, दहेज और अन्य सामाजिक बुराइयों को छोड़ना, राजनीति को नीतियुक्त बनाना, व्यवसाय में बेईमानी न करना, मिलावट, भ्रष्टाचार, चोरी–डकैती आदि से बचाव, पर्यावरण की सुरक्षा यह सब अणुव्रत के अन्तर्गत निहित हैं।

अणुव्रत मानवीय मूल्यों की वह न्यूनतम आचार–संहिता है जिसे पालन करके कोई भी व्यक्ति चाहे किसी भी धर्म, जाति या सम्प्रदाय का हो, अर्थात् मानवता का एक वाहक बन सकता है। इसका आचार्य तुलसी उदाहरण

बने। आचार्य तुलसी अणुव्रत को अपना कर न केवल स्वयं मानवता के पोषक बने अपितु लाखों–लाख व्यक्तियों को इसके लिए प्रेरित किया। हम देखते हैं कि आज लाखों व्यक्ति अणुव्रती हैं।

आचार्य श्री तुलसी समग्र मानव मात्र के कल्याण के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे। अणुव्रत को सहज ग्रहणीय, प्रभावी व व्यावहारिक बनाने के लिए उन्होंने उसमें प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान का समावेश किया। जीवन विज्ञान शिक्षा द्वारा जीवन निर्माण की प्रेरणा देता है, जिसमें बाल्यावस्था से ही मूल्यपरक शिक्षा द्वारा संस्कारों को अन्तर की गहराइयों में पहुंचाने की क्षमता है।

आचार्य तुलसी को देश–विदेश में प्रतिष्ठा मिली। लगभग साढ़े आठ सौ साधु–साध्वियों, समण–समणियों के विशाल संगठन के वे संचालक रहे किन्तु इतने सम्मान के बाद भी उनमें अहंकार का भाव लेशमात्र भी नहीं था। यह ठीक है कि उनमें अभिमान नहीं था, लेकिन स्वाभिमान कूट–कूट कर भरा था।

आचार्य तुलसी ने सम्प्रदाय से अधिक महत्व मानवता को दिया। मानवता के उत्थान के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया। प्रसिद्ध जैनाचार्य होते हुए भी उनके कार्यक्रम सम्प्रदाय की सीमाओं से सदा ऊपर रहे। उनका दृष्टिकोण असाम्प्रदायिक था। अपने इन्हीं गुणों के कारण वे जैनाचार्य से जनाचार्य बन गए।

आचार्य तुलसी का मानवता को जो महान अवदान मिला, उसकी पुष्टि विभिन्न आचार्यों व संतों व महात्माओं द्वारा की गई है। डॉ. नरेन्द्र शर्मा ने कहा है कि आचार्य तुलसी एक महान समाज सुधारक थे जिन्होंने मानवीय संवेदनाओं को सर्वोपरि रखा तथा जीवन विज्ञान व प्रेक्षाध्यान प्रयोग भी दिये। मुनि जतन कुमार के अनुसार आचार्य तुलसी न केवल तेरापंथ के आचार्य थे, अपितु जगत के दैदीप्यमान आचार्य थे।

वास्तव में कुछ व्यक्ति इतिहास की रचना करते हैं और कुछ व्यक्तियों द्वारा इतिहास निर्मित होता है। इतिहास रचने की क्षमता बहुत लोगों में हो सकती है लेकिन जीवन इतिहास पुरुष के रूप में वंदित होने वाले विरले ही होते हैं, जिनसे इतिहास निर्मित होता है। आचार्य तुलसी भी ऐसे ही इतिहास–पुरुष थे जो अध्यात्म के कल्पवृक्ष थे। वे धर्म समवय और भावात्मक एकल के प्रतिष्ठाता थे।

आचार्य तुलसी मानवता के पुजारी थे। उन्होंने धर्म और अध्यात्म को नए संदर्भ दिए थे, नई व्याख्या दी थी। वे धर्म क्रांति के सूत्रधार थे। उन्होंने पारंपरिक धार्मिक मूल्यों को नए संदर्भ दिए थे नई व्याख्या दी थी। उनका व्यक्तित्व विविधताओं का अपूर्व संगम रहा। वे वेशभूषा से जैन मुनि, अणुव्रत संदेशवाहक होने के नाते मानवता के मसीहा, ध्यार्म–क्रांति के सूत्रधार होने के कारण युग प्रवर्तक, महान दार्शनिक के रूप में आधुनिक सुकरात, सम्पूर्ण जीव जगत भावात्मक रिश्ते कायम करने वाले करुणामय बुद्ध तथा वीतराग चेतना के प्रतीक महावीर के रूप में जन–जन के दृष्टि पटल पर रूपयित हुए।

आचार्य तुलसी ने देशव्यापी पद यात्राएं कर जैन धर्म के अनुयायियों के क्षीण होते जैनत्व के संस्कारों को पुष्ट किया और जैन समाज में भी जैन धर्म के अनेकान्त, अंहिसा और सह–अस्तित्व जैसे भावों के प्रति आदर भाव को जगाया।

आचार्य तुलसी भारतीय जन–चेतना के भले ही राष्ट्र संत के रूप में प्रतिष्ठित थे तथापि उनका प्रभाव अन्तरराष्ट्रीय क्षितिजों को छू रहा है। अणुविभा संस्थान के माध्यम से आचार्य श्री तुलसी ने अपना संदेश विदेशों तक पहुंचाया है और उसे पश्चिमी विद्वानों ने बहुत ही सराहा है। सभी धर्म, जाति और वर्ण व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के एक–दूसरे के साथ जुड़े हैं।

वैष्णवी मलिक, ग्यारहवीं
डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल
पश्चिम एन्कलेव, दिल्ली

आचार्य तुलसी कवि थे, ईश्वर के भक्त थे, समाज सुधारक थे व लोक नायक व मधुर गायक थे। उनके संगीत में खिलते हर नाजुक फूल की मुस्कान भी थी। गले की लोच और संगीत का प्रवाह अनुपम था। जब–जब भी लोक गीतों की धुनों पर संगीत गाते तो श्रोतागण झूम उठते थे। आचार्य तुलसी संगीतकार के साथ–साथ संगीत प्रेमी भी थे। प्रवचन–प्रवचन में संगीत की मधुमय धारा बहाते थे।

अणुव्रत प्रवर्तक तुलसी जी युवा क्रांति के प्रचेता थे। युवा शक्ति के संवाहक और मार्गदृष्टा थे। इसके लिए उन्हें न जाने कितने झंझावातों एवं व्यवधानों से गुजरना पड़ा, आंतरिक और बाह्य अनगिनत संघर्षों को झेलना पड़ा पर उन्होंने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। बयासी वर्ष की अवस्था में भी वह नित्य नये स्वप्न देखते और अणुव्रत आंदोलन के साथ अंहिसा और नैतिक मूल्यों की अलख जगाने को तत्पर थे। तुलसी जीवन के छः दशक संघर्षमय जीवन की एक ऐसी कहानी है जो क्रांतदर्शी जीवन को प्रस्फुटित करने के साथ हम सभी को प्रेरित करती है।

अणुव्रत के माध्यम से सैकड़ों सेवाशील कार्यकर्ता उभरे। आचार्य तुलसी ने कार्यकर्ताओं के स्वाभिमान और सेवाभाव को सदैव सुरक्षित रखा। इस धरती पर कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो अपने कर्तव्य से पूरी सदी को उजाला देते हैं। सदी को उजालने के लिए बहुत लम्बी कार्य श्रृंखला की अपेक्षा नहीं है। केवल दो–चार कार्यों के आधार पर ही व्यक्ति अपने प्रभाव को स्थापित कर सकता है। कभी–कभी किसी महापुरुष का एक कार्य ही उन्हें महत्तता के शिखर पर प्रतिष्ठित कर देता है। जिस कार्य को जितना बड़ा धरातल मिलता है, वह उतनी ही अधिक लोकप्रियता पा सकता है।

आचार्य तलुसी की विशेषताएं : आचार्य तुलसी बीसवीं सदी के महिमाप्राप्त महापुरुषों में कालजयी व्यक्तित्व थे। ग्यारह वर्ष की किशोर अवस्था में साधु बनने का वयस्क निर्णय लेकर उन्होंने प्रमाणित कर दिया कि 'न खलु वयस्तेजसो हेतु' तेजस्विता का कारण केवल अवस्था ही नहीं है। साधु बनने के बाद ग्यारह वर्षों तक वे अपने दीक्षा गुरु के निकट सान्निध्य में रहे। छोटी सी कालावधि में गुरु ने अपने शिष्य को गुरुता की अर्हताओं से सम्पन्न कर दिया।

बाईस वर्ष की अवस्था में एक महान संघ का नेतृत्व संभालने की घटना भी कम आश्चर्यजनक नहीं है। आचार्य तुलसी ने जिस संघ का नेतृत्व संभाला, उसे विशिष्ट ऊंचाई देने का सपना देखा, उस स्वप्न को सच का धरातल देने के लिए उन्होंने ग्यारह वर्षों तक अंतरंग निर्माण में सघन पुरुषार्थ किया। उनका पुरुषार्थ सफल हुआ। युगीन संदर्भों में संघ की स्थिति मजबूत हुई। शैक्षिक स्तर उन्नत हुआ। दृष्टिकोण व्यापक बना। व्यापक क्षेत्र में काम करने की भावना बनी।

अणुव्रत का स्तूप : आचार्य तुलसी एक धर्म के आचार्य थे। संघीय समस्याओं को लेकर वे निरंतर सजग थे। आजादी के बाद देश के सामाजिक परिवेश में एक प्रकार की जड़ता का आभास हो रहा था। उससे पहले कुछ

समाज सुधारकों ने क्रांति का बिगुल बजाया था। उसका प्रभाव तो हुआ पर सामाजिक मूल्य–मानकों में व्यापक परिवर्तन नहीं हो पाया।

आचार्य तलुसी के अनुसार राष्ट्रीय चरित्र का आधार है व्यक्ति का चरित्र। जब तक व्यक्ति चरित्र सम्पन्न नहीं होगा, राष्ट्रीय चरित्र का चेहरा साफ–सुथरा नहीं बन पायेगा। जब तक व्यक्ति आडम्बर और प्रदर्शन की भावना से मुक्त नहीं होगा, गलत साधनों से अर्थार्जन की प्रवृत्ति नियंत्रित नहीं हो सकेगी। इस चिंतन की बुनियाद पर अणुव्रत का स्तूप खड़ा किया गया।

नैतिकता का दर्शन : अणुव्रत एक नैतिक आंदोलन है। यह कोई काल्पतिक उड़ान भर नहीं है, इसके पीछे नैतिकता का समग्र दर्शन है। आचार्य के अभिमत से नैतिकता के ये रूप हैं– शाश्वत और सामयिक। शाश्वत नैतिकता व्यक्ति, स्थान, समय परिस्थितियों से निरपेक्ष होती है। उसका मूल्य कभी बदलता नहीं है। सामयिक नैतिकता एक सापेक्ष सच्चाई है, उसके नियम किसी व्यक्ति पर लागू होते हैं और किसी पर नहीं भी होते। एक देश में जिन मूल्यों को अनैतिक माना जाता है, दूसरे देश में उनका समावेश नैतिकता के अन्तर्गत हो जाता है। अणुव्रत नैतिकता की आचार संहिता है, धर्म है, पर इसका सम्प्रदाय नहीं है।

चरित्र निर्माण का आंदोलन : आचार्य तुलसी नीतिवादी ही नहीं महान नीतिकार थे। उन्होंने शिक्षक और विद्यार्थी की अर्हता विकसित करने के लिए नीति का निर्धारण किया तो सरकारी अधिकारी और कर्मचारी को भी नीति का बोध पाठ दिया। उन्होंने समाज के हर वर्ग के लिए वर्गीय अणुव्रत का निर्माण किया जिससे चारित्रिक निर्माण का विकास हो सके।

मानवता के मसीहा : आचार्य तुलसी मानवता के मसीहा थे। नैतिक मूल्यों के क्षरण से सहमी–सिकुड़ी मानवता के अस्तित्व की रक्षा का संकल्प उनके व्यक्तित्व का सूचक था। उनके उन्नत और मजबूत कंधों पर नए मानव के निर्माण का भार था। उनका विशाल वक्ष उदारचरित नायक की स्मृति दिलाने वाला था। उनका पतली–पतली कोमल कलाइयों का सौंदर्य देव दुर्लभ था। आशीर्वाद की मुद्रा में उठा हुआ उनका हाथ दुनिया के अपरिमित वैभव को मनोहस्त लुटाने का अहसास होता था। उनकी कलात्मक अंगुलियां कला–साधना की प्रौढ़ता को अभिव्यक्ति देती थी। उनकी गति में अजब की स्फुरणा थी। उन्होंने कभी भी किसी भी परिस्थिति में विचलित होना नहीं सीखा था। हर वर्ग के लोग उनका मार्गदर्शन पाने के लिए उत्सुक रहते थे।

आचार्य तुलसी का बाह्य व्यक्तित्व जितना प्रभावशाली था, आंतरिक उतना ही प्रेरणादायी था। सत्य और गुरु के प्रति आस्था का भाव और समर्पण बेजोड़ था। उनकी सहजता और सरलता के उच्च शिखर पर प्रतिष्ठित करने वाली थी। उनकी प्राशनिक क्षमता अद्‌भुत थी।

संगीत उपासक : आचार्य तुलसी प्राचीन–अर्वाचीन सभी राग–रागनियों के ज्ञाता थे। वे कहते कि इस बहुरंगी सृष्टि में संगीत के मधुर स्वर सर्वत्र विद्यमान हैं। संगीत जनमानस को आकृष्ट करने का अमोघ साधन है। बालक हो या जवान, अत्पज्ञ हो या विद्वान सभी पर इसका अचूक प्रभाव है। आचार्य तुलसी कवि थे, ईश्वर के भक्त थे, समाज सुधारक थे व लोक नायक व मधुर गायक थे। उनके संगीत में खिलते हर नाजुक फूल की

मुस्कान भी थी। गले की लोच और संगीत का प्रवाह अनुपम था। जब–जब भी लोक गीतों की धुनों पर संगीत गाते तो श्रोतागण झूम उठते थे। आचार्य तुलसी संगीतकार के साथ–साथ संगीत प्रेमी भी थे। प्रवचन–प्रवचन में संगीत की मधुमय धारा बहाते थे। वे एक ऐसा शमां बांधते थे कि सब उसके साथ बंध जाते थे।

अणुव्रत एवं व्यक्तित्व निर्माण : जब भारत देश अंग्रेजों की दासता से मुक्त हुआ, तब एक जैन युवा मनीषी आचार्य श्री तुलसी के हृदय ने देश को चारित्रिक दृष्टि से उन्नत बनाने के लिए एक सपना संजो लिया। उन्होंने सम्प्रदायविहीन धर्म की कल्पना अपने मन में संजो ली। परिणति स्वरूप सन् 1949 में उन्होंने छोटे–छोटे व्रतों को इक्कट्ठा कर देश के नागरिकों के समक्ष रखा। इसका उन्होंने नामकरण किया अणुव्रत। उन्हीं के शब्दों में अणुव्रत आपको यह सुझाता है कि व्रत बंधन नहीं है, जिससे मुक्त होने के लिए आपको छटपटाना पड़े। व्रत वह सुरक्षा कवच है, जिसे धारण कर आप जीवन के हर विकट मोर्चे पर विजयी बन सकते हैं।

आचार्य तुलसी मानवता के मसीहा तथा विश्व की महान विभूतियों में से एक थे। उनका जीवन सत्यम् शिवम सुन्दरम् का अपूर्व प्रतिमान था। उनका हर कदम मानवता की मंगल मुस्कुराहट और हर शब्द समन्वय और सह–अस्तित्व का दिव्य संगीत था।

आचार्य तुलसी के सुविचार : सतत प्रवाही पानी का स्रोत अपने साथ कुछ दूसरी चीजों को भी बहाकर ले जाता है। तीव्रगामी स्रोत को रोकना तथा उसमें प्रवाहित पदार्थों को निकाल पाना सहज काम नहीं है। इसी प्रकार जरा और मृत्यु का एक प्रवाह अनादिकाल से बह रहा है। आज तक कभी भी रुका नहीं। उस प्रवाह में संसार के समस्त प्राणी बहते जा रहे हैं। वे चाहते हैं कि हम स्थिर हो जाएं अथवा प्रवाह से एक और हटकर अपने स्वतंत्र अस्तित्व को स्थापित करें पर उन्हें कोई आधार नहीं मिल रहा है।

- अपने विवेक को अपना शिक्षक बनाओ व शब्दों का कर्म से और धर्म का शब्दों से मेल बनाओ।
- हंसी मनुष्य के लिए सबसे बड़ा वरदान है, क्योंकि जीव जगत में सिर्फ आदमी ही हंस सकता है।
- सत्य के लिए हर वस्तु की बलि दी जा सकती है किंतु सत्य की बलि किसी भी वस्तु के लिए नहीं दी जा सकती है।
- धर्म की शिक्षा दिए बिना किसी को शिक्षित करने का अर्थ उसे एक चतुर शैतान बनाना है।
- ज्ञान के बराबर इस संसार में और कुछ पवित्र नहीं है।
- हमारे मन के विचार कर्म के पथ प्रदर्शक होते हैं।
- सच्ची विद्या उस समय आरंभ होती है, जब मनुष्य सब बाहरी सहारों को छोड़कर अपनी भीतरी अनन्तता की ओर ध्यान देता है।
- समय की धारा में सब कुछ बह जाता है, रह जाती है तो केवल स्मृतियां। दूसरों के मन में अपने लिए मधुर स्मृतिंया बनाइये।
- जब संतोष धन आता है, तो अन्य धन धूल के समान हो जाते हैं।
- जो समर्थ और सक्षम होते हुए भी अपने लिए अथवा दूसरों के लिए काम नहीं करता, उस पर परमेश्वर की कृपा दृष्टि कभी नहीं होती।

- जो प्रत्येक कार्य करने में समर्थ होता है, उसे किसी भी प्रकार की परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ता।

विनोद सैनी, ग्यारहवीं
टैगोर विद्या भवन, स्वर्णपथ
मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान

वैचारिक औदार्य के दुर्लभ समवाय

आचार्य श्री तुलसी ने भाषा, प्रांत, जाति, लिंग आदि के भेदभाव का खंडन करते हुए दलित वर्ग को ऊपर उठाने का महान प्रयास किया। तेरापंथ समाज द्वारा 150 से अधिक शैक्षणिक संस्थानों का संचालन किया जा रहा है। देश के विभिन्न राज्यों में विद्यालयों, महाविद्यालयों के माध्यम से सुसंस्कृत भावी पीढ़ी का निर्माण किया जा रहा है। दर्शक उनके दर्शन मात्र से तृप्त हो जाते थे।

आचार्य श्री तुलसी का जन्म सन् 1914 में कार्तिक शुक्ल दूज को चंदेरी, लाड़नूं (राजस्थान) की धरती पर हुआ। आचार्य श्री तुलसी ने 11 वर्ष की आयु में भागवती दीक्षा स्वीकार कर जैन आगमों एवं भारतीय दर्शनों का गहन अध्ययन किया। उन्होंने अपने मुनिकाल में 20 हजार पदों को कंठस्थ कर लिया। 16 वर्ष की आयु में अध्यापन कौशल में पारंगत हो गए। 22 वर्ष की आयु में तेरापंथ जैसे विशाल धर्म संघ के दायित्व की चादर ओढ़ कर 61 वर्षों तक उसे बखूबी से निभाया।

सचमुच कितना महान था वह मस्ताना फकीर जब नेतृत्व की संपूर्ण क्षमताओं के बावजूद अपने उत्तराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य पद विसर्जन का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। आचार्य श्री तुलसी जी का बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व महत्ता से परिपूर्ण है।

18 फरवरी, 1994 सुजानगढ़ का विशाल धर्म प्रांगण कितना अपूर्व था जब आचार्य श्री तुलसी जी ने अपने 60 दशक के तेजस्वी प्रशासन को एकाएक अलविदा कह कर उत्कृष्ट आत्म–साधना का निर्णय लिया। उनकी इस उद्घोषणा के साथ मानव समाज चौंक उठा। पद त्याग के इस क्रांतिकारी कदम ने नाम, यश, पद और प्रतिष्ठा की भीषण विभीषिका से त्रस्त राजनैतिक एवं धार्मिक जगत में तहलका मचा दिया।

अपने शिष्य को आचार्य के रूप में स्वीकार कर गुरुता का सर्वाधिकार सौंपना विलक्षण है। अहम् विसर्जन की इस दुर्लभ घटना ने आचार्य श्री तुलसी जी को अध्यात्म की उस उच्च व्यास पीठ पर अधिष्ठित कर दिया जहां राष्ट्रसंत, लोकरत्न, भारत ज्योति जैसे ढेरों अंकरण व उपाधियां, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, हकीम खांसूर जैसे संबोधन उनकी संतता की निर्मल आभा के सामने स्वयं गरिमामय हो उठे।

लाडनूं राजस्थान की धरती पर उगने वाले इस दूज के चांद ने अनुयायियों को ठंडक महसूस कराई वहीं सूरज की तरह तपना भी सिखाया। 22 वर्ष की आयु में तेरापंथ जैसे विशाल धर्म संघ के दायित्व की चादर ओढ़कर 61 वर्षों तक उसे बखूबी से निभाया तथा इस दौरान स्वयं तरक्की का सफर तय करते हुए अपने सम्पूर्ण धर्म संघ को युग की रफ्तार के साथ मोड़ देना उनकी जबरदस्त प्रशासनिक क्षमता, प्रतिभा, सूझबूझ का परिचायक है।

उन्होंने 34 वर्ष की आयु में जहां अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया वहीं तनावमुक्ति के लिए प्रेक्षाध्यान, चारित्रिक विकास के लिए शिक्षा में जीवन विज्ञान जैसे व्यापक आयामों का अवदान देकर सच्चे अर्थों में महान युग प्रवर्तक की भूमिका अदा की।

अहिंसा, अनुकंपा, शांति और नैतिकता की प्रतिष्ठापना के द्वारा उन्होंने सामाजिक स्वस्थता के लिए अविराम परिश्रम किया। नशामुक्ति के लिए उनकी अभिप्रेरणा से जागृत होकर हजारों लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार कर स्वस्थ जीवन शैली की ओर कदम रखे। सैकड़ों लोगों ने उसी समय बीड़ी बण्डल, गुटका के पैकेट छोड़कर प्रतिज्ञा में दृढ़ता व्यक्त की।

आचार्य श्री तुलसी बीसवीं सदी का विश्व विख्यात नाम है। उस युग में इस महापुरुष ने एक नई क्रांति का शंखनाद किया। धार्मिक और बौद्धिक जगत के बीच अध्यात्म के नए क्षितिज उद्घाटित किए। उनके द्वारा प्रदत्त अवदानों के लिए मानव जाति उनकी चिर ऋणी रहेगी। आचार्य श्री तुलसी उन महान कुशल शिल्पकारों की एक अनुपम कृति है। गुरुदेव ने केवल व्यक्तित्व को ही नहीं निखारा, अनेकानेक गूढ़ रहस्यों से भी सबको अवगत कराया। अपनी साधना, विनम्रता और सेवा के द्वारा अपने गुरु का दिल जीता । उनकी प्रत्येक कसौटी पर शत प्रतिशत खरे उतरे। लगभग चौबीस वर्षों तक अपनी कर्मजा शक्ति को विकसित ही नहीं किया अपितु उसके द्वारा अनेक सपनों को साकार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पैंतीस हजार से अधिक युवकों की आध्यात्मिक सेना अखिल भारतीय तेरापंथ और उसकी 300 से अधिक शाखाओं के अंतर्गत विविध गतिविधियों द्वारा समाजोत्थान का महत्वपूर्ण कार्य किया। उनके सक्षम आध्यात्मिक नेतृत्व में साठ हजार से अधिक सदस्यों वाली अपनी 375 से अधिक शाखाओं के साथ विभिन्न कार्य योजनाओं और महिला सशक्तिकरण के द्वारा संस्कृति और संस्कारों को सदृढ़ करने का भागीरथ प्रयास कर रही हैं।

नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए राष्ट्रसंत आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत एक आचार्य संहिता का नाम है जो जातिवाद, साम्प्रदायिक उन्माद, दहेज प्रथा, मिलावट आदि समाजिक बुराइयों के उन्मूलन के लिए छोटे–छोटे व्रतों के माध्यम से प्रयत्नशील है। मानवता के लिए आचार्य श्री तुलसी जी का यह अवदान संजीवनी के समान है।

अणुव्रत ने जाति, प्रांत, भाषा, रंग और लिंग आदि भेदजनक सीमाओं में सिमटे हुए धर्म को व्यापक धरातल दिया। किसी भी संप्रदाय, जाति, वर्ग और क्षेत्र में रहता हुआ व्यक्ति अणुव्रती बनने का गौरव अर्जित कर सकता है। चरित्र और नैतिकता को प्रतिष्ठित करने में अणुव्रत अहम् भमिका निभा रहा है।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, पंडित जवाहरलाल नेहरू, डॉ. राधाकृष्णन, जयप्रकाश नारायण, अन्ना दुरै, विनोबा भावे, सी. राजगोपालाचारी, दलाई लामा आदि ने अणुव्रत को राष्ट्र के उत्थान की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया और स्वयं इस आंदोलन के सहभागी भी बने।

प्रेक्षाध्यान शिविरों में आचार्य तुलसी द्वारा कराए जाने वाले प्रयोगों से देश–विदेश के हजारों लोगों ने आनंद और शांति का अनुभव किया है। सन 1970 में पुनः संचारित ध्यान की विद्या प्रेक्षाध्यान गणाधिपति तुलसी जी के अथक परिश्रम का फल है। यह प्राचीन ग्रन्थों, आधुनिक विज्ञान और अनुभव का समन्वय है। भगवान महावीर ने अपने साधना काल में ध्यान में जिन प्रयोगों का अभ्यास किया, आचार्य श्री तुलसी ने कई वर्षों तक शोध और अभ्यास के बाद उन्हें प्रेक्षाध्यान के रूप में प्रस्तुत किया।

प्रेक्षाध्यान विचारों और चेतना को शुद्ध करने का अभ्यास है तथा आत्म साक्षात्कार की प्रक्रिया है। सरल शब्दों में प्रेक्षा का अर्थ है अपने आप को देखना अपने शरीर, मन और आत्मा के सूक्ष्य स्पंदनों को राग–द्वेष से मुक्त होकर केवल देखना और जानना।

विभिन्न संस्कृतियों से जुड़े लगभग असंख्य लोगों ने अब तक इसके प्रयोगों का अभ्यास कर आन्तरिक परिवर्तन का अनुभव किया है। नियमित अभ्यास से और निखरने वाला यह प्रयोग आचार्य श्री तुलसी के पथ दर्शन में मानव जीवन के लिए वरदान सिद्ध हो रहा है।

जीवन विज्ञान जीवन जीने की कला सिखाता है। स्वस्थ समाज की रचना के लिए संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण की अपेक्षा है। व्यक्तित्व की समग्रता के लिए बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास आवश्यक है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बौद्धिक विकास पर बल दिया जा रहा है। जीवन विज्ञान बौद्धिक ज्ञान की उपेक्षा नहीं करता किंतु इसके साथ व्यक्तित्व विकास के अन्य आयामों पर भी बल देता है। जीवन विज्ञान के अंतर्गत विद्यार्थियों के लिए व्यवस्थित पाठ्यक्रम और प्रयोग निर्दिष्ट हैं जो जीवन में जैव–रासायनिक और जैव विद्युतीय परिवर्तन के द्वारा सर्वांगीण व्यक्तित्व के निर्माण में सहयोगी बनते हैं।

आचार्य श्री तुलसी ने भाषा, प्रांत, जाति, लिंग आदि के भेदभाव का खंडन करते हुए दलित वर्ग को ऊपर उठाने का महान प्रयास किया। तेरापंथ समाज द्वारा 150 से अधिक शैक्षणिक संस्थानों का संचालन किया जा रहा है। देश के विभिन्न राज्यों में विद्यालयों, महाविद्यालयों के माध्यम से सुसंस्कृत भावी पीढ़ी का निर्माण किया जा रहा है। दर्शक उनके दर्शन मात्र से तृप्त हो जाते हैं।

निस्पृहता, निर्लिप्तता, निर्विकारता, निर अहंकारिता और निश्छलता से उनका आंतरिक व्यक्तित्व माहात्म्य को प्राप्त हुआ है। वे तेजस्विता और क्षमाशीलता, साधना और शासना तथा सिद्धांतप्रियता और वैचारिक औदार्य के दुर्लभ समवाय थे। उनकी मृदुता, परोपकारिता नवागन्तुक को अनायास आकृष्ट कर लेती थी। उनके प्रत्येक कार्य में चिंतन की प्रौढ़ता, सूक्ष्मदर्शिता और प्रज्ञा संपन्नता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

अतः आचार्य श्री तुलसी द्वारा जीवन निर्माण, नैतिकता को बढ़ावा, संयमित जीवन आदि अवदानों द्वारा मानवता को सुधारने का प्रयास किया गया। उनके विचारों से ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है, इसलिए हमें उनके विचारों का सद्उपयोग करना चाहिए। ऐसे महासंत को नमन।

चंचल कौशिक, नौवीं
श्रीमती उत्तमीबाई आर्य कन्या
व. मा. विद्यालय, भिवानी, हरियाणा

नारी–चेतना के पक्षधर

आचार्य तुलसी ने अपने द्वारा प्रकाशित अनेक ग्रंथों में नारी की सौन्दर्यता का बोध कराया। सन् बीसवीं शताब्दी के मध्य में आचार्य ने नारी जाति को महान स्थान दिया। उन्होंने नारी को देवी का स्वरूप दिया। उन्होंने कहा कि पुरुष का वर्चस्व स्त्री के कारण ही है। आचार्य तुलसी के अनुसार नारी को अपनी चेतना का विकास कर उसे चेतनापूर्वक उच्चतम विकास की और अग्रसर करना होगा।

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान रही है। भारत जैसे पवित्र धरोवर में अनेक महान हस्तियों ने जन्म लिया है, जिन्होंने भारत की एकता को एकनिष्ठ किया। इन महान हस्तियों में अन्य महापुरुष हुए हैं, जैसे– चाणक्य, आर्यभट्ट, अहिंसा पुजारी महात्मा गांधी और रविन्द्रनाथ टैगोर इत्यादि। इन्होंने भारत के इतिहास में अपना योगदान प्रदान किया तथा गौरव स्थान प्राप्त किया। इनका विश्व में अपना वरेण्य स्थान रखता है।

इसी पवित्र श्रृंखला में एक महान नाम है अहिंसा के अग्रदूत, मानवता के मसीहा, अणुव्रत अनुशास्ता, युग प्रधान आचार्य तुलसी। आचार्य तुलसी इन महान हस्तियों में एक थे, देश की महान धरोहर के रूप में प्रतिष्ठित हुए। आचार्य तुलसी ने अपने जीवन के एक–एक पल को राष्ट्र में योगदान देते हुए प्रतिष्ठित किया। वे एक अच्छे राष्ट्र भक्त होने के नाते एक राष्ट्र प्रवर्तक भी थे।

जन्म व अध्ययन : आचार्य तुलसी का जन्म बीसवीं शताब्दी सन् 1914, 20 अक्टूबर में हुआ था। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य के पिता का नाम झूमरमल व माता का नाम देवी बदना था। आचार्य तुलसी जैन धर्म के थे तथा इन्होंने बाल्यावस्था में ही शास्त्रों का अध्ययन कर लिया तथा 22 वर्ष की आयु में ही जैन मुनि बने व श्रेष्ठता प्राप्त की। आचार्य बनने के पहले उन्होंने 11 वर्ष की आयु में तेरापंथ के अष्टम आचार्य कालूगणी के पास दीक्षित श्रेष्ठ छात्र के रूप में अध्ययन किया तथा आचार्य पद को संभाला। आचार्य के रूप में उन्होंने मानवता को नयी राह दी तथा सामाजिक कार्य में अनेक कदम उठाए।

अणुव्रत आंदोलन की पहल : आचार्य तुलसी ने 2 मार्च, 1949 को अणुव्रत आंदोलन का प्रारंभ किया। आचार्य श्री ने इस आंदोलन की पहल राष्ट्र की आजादी के लिए की। सन् 1947 को आचार्य श्री ने 'असली आजादी को अपनाओ' का नारा दिया तथा क्रांतिकारियों के अन्दर आवाज फूंकी। इस आवाज ने देश की आजादी के लिए अनेक कार्य किए।

इस कार्य को निरन्तर प्रज्ज्वलित करने के लिए आचार्य श्री ने भारत के अनेक प्रांतों में पैदल यात्राएं भी कीं। अणुव्रतों की व्यावहारिकता ही इनकी लोकप्रियता का कारण रही है। आचार्य श्री ने पांच महाव्रतों की रचना की और उन व्रतों के माध्यम से अनेक विचार प्रकट किये। अणुव्रत आंदोलन के द्वारा आचार्य श्री ने अपने अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया।

तुलसी साहित्य में नारी चेतना : आचार्य तुलसी ने अपने द्वारा प्रकाशित अनेक ग्रंथों में नारी की सौन्दर्यता का बोध कराया। सन् बीसवीं शताब्दी के मध्य में आचार्य श्री ने नारी जाति को महान स्थान दिया। उन्होंने नारी को देवी का स्वरूप दिया। उन्होंने कहा कि पुरुष का वर्चस्व स्त्री के कारण ही है। आचार्य तुलसी के अनुसार

नारी को अपनी चेतना का विकास कर उसे चेतनापूर्वक उच्चतम विकास की ओर अग्रसर करना होगा। उस समय आचार्य श्री ने कहा था कि नारी पुरुषों से अधिक प्रगतिशील है। नारी ही इस देश की धरोहर है।

अणुव्रत की महत्ता : आचार्य तुलसी ने अणुव्रत का उपदेश दिया। उन्होंने अनेक उपदेशों का प्रतिपादन किया। आचार्य श्री ने अणुव्रत को अनेक बिन्दुओं के अनुसार उसका अर्थ समझाया है। आचार्य श्री के अनुसार अणुव्रत प्रत्येक धर्म के लिए आवश्यक है व अणुव्रत का किसी अन्य सम्प्रदाय के साथ कोई गठबंधन नहीं है। अणुव्रत बताता है कि भारत की इस कर्मभूमि में अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया है और उनका उपदेश ही उनकी प्रतिध्वनियां हैं। भारत में अनेक धर्मों का प्रचलन है, यहां गांव–गांव में अनेक मंदिर व मठ हैं। प्राचीन मंदिर, धर्मस्थान, सार्वजनिक स्थान, बोधकला है, प्रवित्र नदियां हैं, अनेक महापुरुष व अनेक कलाओं का देश भारत है फिर भी चारित्रिक दुर्बलता का प्रश्न क्यों हमारे समक्ष भाव में आकर खड़ा है।

अहिंसा का पालनः आचार्य श्री ने मानवता को अहिंसा का पालन करने का उपदेश दिया। अहिंसा से ही मानवता आगे की ओर बढ़ती चली जाती है। उन्होंने मानवता को श्रेष्ठ पथ पर अहिंसा प्रदान की। आचार्य तुलसी की अनेक गाथाएं आज भी हमारे जीवन की दिशा बनी हैं। आचार्य श्री कहते थे कि सत्य, सदाचार, आत्मीयता, स्नेह व धैर्य का पालन करना चाहिए और सदा सत्कर्म करते रहना चाहिए।

नैतिकता : आचार्य श्री ने मानव मूल्य व नैतिकता को ही इस जीवन का मुख्य आधार माना है। उन्होंने समाज में अंधविश्वास, अप्रेरणात्मक, अनैतिक कार्यों व सामाजिक साम्प्रदायिकता व पिछड़ापन आदि को दूर करने के लिए नैतिक मूल्य अपनाने पर बल दिया। नैतिकता ही धैर्य को धारण करने का प्रथम चरण है।

मानवता के मसीहा : आचार्य तुलसी मानवता के मसीहा थे। उन्होंने मानवता के लिए महान कार्य किये तथा धार्मिक आन्दोलनों को भी चलाया। जनता का हित व अनेक नैतिक कर्मों को देश के लिए अपनाया इसलिए उनकी बौद्धिकता छलकती है, जो वर्ग,जाति, भाषा, धर्म आदि से ऊपर उठकर मानव जाति को जीवन मूल्यों के प्रति ऊपर उठा सके। गुरु पद पर रहते हुए उन्होंने नैतिकता की नई सोच देकर अणुव्रत को अपनाया व प्रदर्शित किया।

मानवता के लिए अमूल्य : आचार्य तुलसी का जन्म मानव जाति के लिए अहम् एवं मूल्यवान है। आचार्य तुलसी ने राष्ट्रीय निर्माण में व चरित्र कार्यों में महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। आचार्य श्री ने जैन धर्म और तेरापंथ के लिए ही नहीं बल्कि सामाजिक कल्याण व मानवता के लिए भी अनेक कार्य किए हैं।

आचार्य श्री जैन धर्म के महान प्रवर्तक थे। अतः हम कह सकते हैं कि आचार्य तुलसी एक महान सच्चे संत व जैन धर्म के विख्यात संत हुए जिन्होंने पूरे विश्व में अपनी प्रवृत्ति का प्रतिपादन किया। उनका मुख्य उद्देश्य मानवता में एकता व सभी धर्मों का पालन करना था।

आकाश पंचाल, बारहवीं
स्कूल फॉर एक्सीलेंस
देवास, मध्य प्रदेश

विजातीय वर्गों के बीच सेतु

आचार्य जी का अणुव्रत आंदोलन मानवता के लिए बहुत बड़ी देन है। बीसवीं सदी के आध्यात्मिक क्षितिज पर प्रमुखता से उभरने वाला जो नाम है, वह है आचार्य तुलसी। देश की ज्वलंत समस्याओं के समाधान में उनके अप्रतिम योगदान रहे हैं। सुप्रसिद्ध जैनाचार्य होते हुए भी उनके कार्यक्रम सम्प्रदाय की सीमा रेखाओं से सदा ऊपर रहे। उनका दृष्टिकोण असाम्प्रदायिक था।

बदनाजी रो लाल,
बन्यो आचार्य बाईसवें साल,
जीवनभर अनुशासन पाल,
बदल्यो रूढ़ीवड़ी काल।

मानवता का आधार मानव है। मानवता मानव का श्रृंगार है। मानव की सुरक्षा मानवता से है और मानव की सुरक्षा का दायित्व मानव पर है। आचार्य श्री तुलसी का जन्म 20 अक्टूबर, 1914 को भारत में झूमरमल खटेड और बदनाजी की संतान के रूप में लाडनूं, राजस्थान में हुआ था।

लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूरी।
चीटीं ले शक्कर चली, हाथी के शिर धूरी।

कवि की इन पंक्तियों का निदर्शन है आचार्य तुलसी का जीवन। सचमुच कितना महान था वह मस्ताना फकीर। उन्होंने नेतृत्व की संपूर्ण क्षमताओं के बावजूद अपने उत्तराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञ में आचार्य पद संक्रांत कर आचार्य तुलसी ने पद विसर्जन का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। आचार्य श्री तुलसी देश की ऐसी महान हस्ती थे जिन्होंने धर्म शब्द को पंथ से ऊपर उठाकर सर्वजन हिताय बनाया।

आचार्य जी का अणुव्रत आंदोलन मानवता के लिए बहुत बड़ी देन है। बीसवीं सदी के आध्यात्मिक क्षितिज पर प्रमुखता से उभरने वाला जो नाम है वह है आचार्य तुलसी। देश की ज्वलंत समस्याओं के सामाधन में उनके अप्रतिम योगदान रहे हैं। सुप्रसिद्ध जैनाचार्य होते हुए भी उनके कार्यक्रम सम्प्रदाय की सीमा रेखाओं से सदा ऊपर रहे। उनका दृष्टिकोण असाम्प्रदायिक था।

जब लोग उनका परिचय पूछते तब वे स्वयं अपना परिचय इस तरह से देते थे– '' मैं सबसे पहले एक मानव हूं, फिर मैं एक धार्मिक व्यक्ति हूं, फिर मैं एक साधनाशील जैन मुनि हूं और उसके बाद तेरापंथ संप्रदाय का आचार्य हूं।'' आचार्य तुलसी ने संप्रदाय के उत्थान के लिए विविध प्रकार के कार्यक्रम प्रारंभ किये थे। इसलिए वे जैन की अपेक्षा एक मानवतावादी संत के रूप में अधिक जाने गये।

जैन आचार्य तो वे थे ही पर वे अपने कार्यों से जनाचार्य भी बन गए थे। आचार्य श्री तुलसी ने देश की जनता की सुरक्षा के विकास के लिए अणुव्रत आंदोलन प्रारंभ किया। यह आंदोलन जनता के चरित्र के विकास के लिए था, देश में नैतिक मूल्यों की तेजी से होते हुए ह्रास को देखकर वे बड़े चिंतित थे।

आचार्य श्री तुलसी सर्वधर्म समभाव के प्रतीक पुरुष थे। साम्प्रदायिक कट्टरता को उन्होंने कभी उचित नहीं माना। उनका कहना था कि धर्म का स्थान सम्प्रदाय से ऊपर है। उन्होंने सभी धर्मगुरुओं को भी साम्प्रदायिक आग्रहों को छोड़कर सद्भाव का वातावरण बनाने के लिए प्रेरित किया, सभी धर्म, सभी जाति एवं सभी वर्ग के लोगों को एक मंच पर लाने में वे कामयाब हुए थे।

उन्होंने अणुव्रत आंदोलन के दौरान कहा कि धर्म पहले स्थान पर, संप्रदाय उसके बाद आता है। धर्म राजनीति से काफी अलग है, इसलिए यह राजनीतिक हस्तक्षेप के अधीन नहीं होना चाहिए। वे पांच सिद्धांत सत्य, अहिंसा, गैर कब्जे, गैर चोरी और ब्रह्मचर्य का पालन करते थे। कई महान हस्तियों ने भी अणुव्रत आंदोलन के नेक काम के लिए महान योगदान दिया। श्री मोरारजी देसाई, गुलजारीलाल नंदा, प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद सहित कई प्रमुख नेताओं ने इस आंदोलन का समर्थन किया।

आचार्य श्री तुलसी के मार्गदर्शन में जैन विश्व भारती, लाडनूं (राजस्थान) का निर्माण किया गया। जैन परंपरा और सामान्य प्राचीन भारतीय परंपराओं में छिपे हुए सत्य और मूल्यों को पुनर्जीवित करना, यह इसका उद्देश्य है। मानवता का प्रचार करने में भी इस संगठन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सचमुच आचार्य श्री तुलसी एक महान आत्मा थे जिन्होंने मानवता के महत्व को समझा क्योंकि मानव का आधार मानवता ही है। 23 जून, 1997 में उनका देहांत हो गया। आचार्य श्री तुलसी द्वारा दिखाई गई मानवता की राह पर चलने का प्रयास कुछ इस तरह करेंगे–

प्रेम अमान का दीप जलाएं
घर–घर में उजियारा हो,
मानवता ही धर्म हमारा
मानवता ही नारा हो।
मानव को मानव ये जोड़ें
संकीर्णता को हम छोड़ें,
निर्माण करें प्रेम पुलों का
नफरत की दीवारें तोड़े।
समदृष्टि से सब को देखें
हर कोई आंख का तारा हो,
मानवता ही धर्म हमारा
मानवता ही नारा हो।

समृद्धि कृष्ण कुमार, आठवीं
डॉ. वाई.एस.केडकर इंटरनेशनल स्कूल,
एन–6, सिडको, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

उपमाओं से ऊपर व्यक्तित्व

आचार्य तुलसी स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि अणुव्रत ने यह दावा कभी नहीं किया है कि वह इस धरती से भ्रष्टाचार की जड़ें उखाड़ देगा परंतु उनका मानना है कि यह सदाचार की प्रेरणा है और तब तक देता रहेगा जब तक हर सुबह का सूरज अन्धकार को चुनौती देकर प्रकाश की वर्षा करता रहेगा। वे भविष्य के प्रति आशावादी थे और यह विश्वास कर सकते थे कि एक दिन भारत का आम आदमी अणुव्रती होगा और आदर्श समाज की रचना करेगा।

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। भारत की मिट्टी के कण–कण में महापुरुषों के उपदेश की प्रतिध्वनियां है। चाणक्य, आर्यभट्ट, महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के भारत का इतिहास विश्व में अपना वरेण्य स्थान रखता है। स्वर्णिम इतिहास की इसी पवित्र श्रृंखला में एक नाम है– अंहिसा के अग्रदूत, मानवता के मसीहा, अणुव्रत अनुशास्ता, युग प्रधान आचार्य तुलसी का।

आचार्य तुलसी राष्ट्रसंत थे। देश की महान धरोहर थे। राष्ट्रीय एकता के पक्षधर थे। उनका प्रकाण्ड पांडित्य उन्हें अबू सीना, स्वामी विवेकानंद और डॉ. राधाकृष्णन के समान स्तर पर प्रतिष्ठित करता है। उनका स्वयं का परिचय उन्हीं के शब्दों में इस विराटता के साथ मुखर हुआ। उनका कहना था, ''मैं सबसे पहले मनुष्य हूं, फिर जैन हूं, फिर तेरापंथ का आचार्य हूं।''

प्रारंभिक जीवन : आचार्य तुलसी का जन्म 20 अक्टूबर, 1914 को राजस्थान में हुआ। वे एक जैन आचार्य थे। वे अणुव्रत और जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं के संस्थापक तथा एक सौ से अधिक पुस्तकों के लेखक थे। वे भक्त जैन व्यापारी के बेटे थे। उन्होंने सबसे पहले आठ साल की उम्र में स्कूल पास किया। आचार्य कालूगणी ने उनमें एक जैन साधु बनने की प्रबल इच्छा जगाई। आचार्य कालूगणी ने उनमें प्रतिभा, साहस और महान भाग्य के बीज बोए।

आचार्य के रूप में जीवन : जिम्मेदारी संभालने के बाद आचार्य तुलसी पूर्वी राज्यों के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान ग्यारह वर्षों तक फिरते रहे। इस अवधि के दौरान उन्होंने शिक्षा और उनके भिक्षुओं व भिक्षुणियों के प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने उन्हें लिखने और बोलने में अपने कौशल को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। वास्तव में उन्होंने एक प्रारंभिक चरण में संन्यास शिक्षा के लिए लिया था। सत्रह साल की उम्र में वे पहले से ही भिक्षुओं की बड़ी संख्या को सिखा रहे थे। उनके द्वारा सिखाए गए मुनि संस्कृत की तरह ज्ञान की विभिन्न धाराओं, प्राकृत दर्शन, तुलनात्मक अध्ययन आदि में बहुतश्रुत विद्वान के रूप में उभरे हैं।

समाज के लिए महत्वपूर्ण योगदान

- नन के बीच शिक्षा का प्रसार।
- प्रबुद्धता और तेरापंथ की महिला आबादी की जागृति।
- मानव जीवन की बेहतरी के लिए अणुव्रत आंदोलन।
- लाडनूं में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की स्थापना।
- मुमुक्षु बहनों लिए परमार्ची शिक्षण कार्यक्रम की स्थापना।
- जैन आगम प्रकाशन।

- देश भर में और सीमाओं से परे जैन धर्म के प्रचार के लिए समन श्रेणी की स्थापना।

अणुव्रत आंदोलनः अणुव्रत का मतलब है छोटी प्रतिज्ञा। आचार्य तुलसी को एहसास हुआ कि भारत की स्वतंत्रता तब तक व्यर्थ है जब तक राष्ट्रीय चरित्र का विकास न हो। उन्होंने पहले स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर एक कविता की रचना 'हम असली आजादी करते हैं' की थी। उनके लिए वास्तविक स्वतंत्रता का मतलब आंदोलन को शुभारंभ करना था। अणुव्रत आंदोलन के साथ व्यक्ति के चरित्र और नैतिकता को विकसित करने के उद्देश्य से आचार संहिता तैयार की गई थी और लोगों के समक्ष प्रस्तुत की गई थी। पांच सिद्धांत (सत्य, अहिंसा, गैर कब्जे, गैर चोरी और ब्रह्मचर्य) आचरण के इस कोड की नींव है।

उन्होंने लोगों के निम्नलिखित रहस्यों पर प्रकाश डाला–

- धर्म पहले स्थान पर आता है और संप्रदाय अगले स्थान पर।
- वहां कई संप्रदाय हो सकते हैं लेकिन धर्म सभी के अंतर्गत आता है।
- धर्म राजनीति से काफी अलग है। यह राजनीतिक हस्तक्षेप के अधीन नहीं होना चाहिए।
- धर्म केवल खुशी सुनिश्चित करने का साधन नहीं है, वह वर्तमान जीवन में खुशी लाने का भी एक साधन है।
- धर्म का मूल उद्देश्य चरित्र शुद्ध करने का है।

उन्होंने अभियान की एक श्रृंखला में समय–समय पर छुआछूत, दहेज, भ्रष्टाचार आदि के खिलाफ जनता में चेतना की एक नई लहर पैदा की। अपने निजी जीवन में पवित्रता और आत्म अनुशासन का अभ्यास करने के लिए अनुयायियों को प्रेरित किया। आत्म–परिवर्तन का अनुभव नागरिकों को एक अहिंसक सामाजिक दुनिया की और स्थान प्रदान करता है।

आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व किसी भी सहृदय को भाव विभोर करने में सक्षम है। उनके विराट व्यक्तित्व की उपमा नहीं दी जा सकती। बाल वय से संन्यास के पद पर प्रस्थित होकर क्रमशः आचार्य अणुव्रत अनुशास्ता, राष्ट्रसंत एवं मानव कल्याण के पुरोधा के रूप में विख्यात हुए हैं। काल के अनन्त प्रवाह में 80 वर्षों का मूल्य बहुत नगण्य होता है पर आचार्य तुलसी ने उद्देश्य पूर्ण जीवन जी कर जो ऊंचाइयां एवं उपलब्धियां हासिल की हैं वे किसी कल्पना की उड़ान से भी अधिक है। जैन धर्म एवं तेरापंथ सम्प्रदाय से प्रतिबद्ध होने पर भी आचार्य तुलसी का दृष्टिकोण असाम्प्रदायिक रहा है।

वे कहते थे– ''जैन धर्म मेरी रग–रग में, नस–नस में रमा हुआ है, किन्तु साम्प्रदायिक दृष्टि से नहीं, व्यापक दृष्टि से। क्योंकि मैं सम्प्रदाय में रहता हूं पर सम्प्रदाय मेरे दिमाग में नहीं रहता। मैं सोचता हूं मानव जाति को कुछ नया देना है तो साम्प्रदायिक दृष्टि से नहीं दिया जा सकता। यही कारण है कि मैंने सम्प्रदाय की सीमा को अलग रखा, और धर्म की सीमा को अलग।''

इसी व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर आचार्य तुलसी ने असाम्प्रदायिक धर्म का आन्दोलन चलाया, जो जाति, वर्ण, वर्ग, भाषा, प्रान्त एवं धर्मगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव जाति को जीवन मूल्यों के प्रति आकृष्ट कर सके। इस असाम्प्रदायिक मानव धर्म का नाम है–अणुव्रत आन्दोलन। आचार्य तुलसी ने धार्मिकता

के साथ नैतिकता की नई सोच देकर अणुव्रत दर्शन को प्रस्तुत किया जिसका उद्देश्य था–मानवीय एकता का विकास व समाज में सही मानदण्डों का विकास। आचार्य तुलसी ने कल्पना की थी कि 21वीं सदी के भारत का निर्माता मानव होगा और वह अणुव्रती होगा। अणुव्रती गृह संन्यासी नहीं होगा वह भारत का आम आदमी होगा और एक नए जीवन दर्शन को लेकर भविष्य का मार्गदर्शन तय करेगा।

आचार्य तुलसी ने पांच अणुव्रतों की कल्पना को समाज के समक्ष रखा है, वे हैं– अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। वस्तुतः जैन धर्म में जिन पांच महाव्रतों की कल्पना साधु जीवन के लिए है, उन्हीं को व्यावहारिक रूप देकर सामाजिक व्यक्ति के लिए अणुव्रत का नाम दिया जिससे कोई भी सामाजिक व्यक्ति उसे अपने जीवन में उतार कर अपने जीवन को उन्नत बना सकता है।

- अपनी काव्यमय पंक्तियों में आचार्य तुलसी ने अहिंसा अणुव्रत का परिचय इस प्रकार दिया :

है पांच अणुव्रत प्रथम अहिंसा वाणी,
हन्तव्य न इसमें निरपराध त्रस प्राणी।
स्थावर की सीमा, व्रत व्यापक बन जाए,
आतंकवाद का अन्त स्वयं आ जाए।

- सत्य अणुव्रत का संदेश उन्होंने अपनी काव्य पंक्तियों में इस प्रकार अभिव्यक्त किया :

क्या कभी अहिंसा सत्य बिना जी सकती
सुई धागे के बिना वस्त्र सी सकती।
अतएवं अहिंसक सत्यनिष्ठ होता है,
विश्वस्त स्वस्थ निज पाप–पंक धोता है।

अणुव्रत को वे एक धर्म के रूप में देखते थे पर किसी सम्प्रदाय के साथ इसका गठबन्धन नहीं है। इस दृष्टि से उन्हें स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं थी कि अणुव्रत धर्म है पर यह किसी वर्ग विशेष का नहीं। अणुव्रत जीवन को अखण्ड बनाने की बात करता है।

अणुव्रत के अनुसार ऐसा नहीं हो सकता कि व्यक्ति मन्दिर में जाकर भक्त बन जाए और दुकान पर बैठकर क्रूर अन्यायी। वे मानते थे कि भारत की माटी के कण–कण में महापुरुषों के उपदेश की प्रतिध्वनियां हैं। यहां गांव–गांव में मंदिर हैं, मठ हैं, धर्म स्थान हैं, धर्मोपदेशक हैं फिर भी चारित्रिक दुर्बलता का अनुत्तरित प्रश्न क्यों हमारे समक्ष आज भी आक्रान्त मुद्रा में खड़ा है।

अणुव्रत की आचार संहिता से प्रभावित होकर स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि आज के युग में जबकि मानव अपनी भौतिक उन्नति से चकाचौंध होता दिखाई दे रहा है और जीवन के नैतिक व आध्यात्मिक तत्वों की अवहेलना कर रहा है, वहां अणुव्रत आन्दोलन द्वारा न केवल मानव अपना सन्तुलन बनाए रख सकता है बल्कि भौतिकवाद के विनाशकारी परिणाम में अपने आप को बचाने की आशा कर सकता है।

आचार्य तुलसी स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि अणुव्रत ने यह दावा कभी नहीं किया है कि वह इस धरती से भ्रष्टाचार की जड़ें उखाड़ देगा परंतु उनका मानना है कि यह सदाचार की प्रेरणा है और तब तक देता रहेगा जब तक हर सुबह का सूरज अन्धकार को चुनौती देकर प्रकाश की वर्षा करता रहेगा। वे भविष्य के प्रति आशावादी थे और यह विश्वास कर सकते थे कि एक दिन भारत का आम आदमी अणुव्रती होगा और आदर्श समाज की रचना करेगा।

कोमल गर्ग दसवीं
आदर्श पब्लिक स्कूल,
बाली नगर, दिल्ली

सर्वधर्म सद्भाव के प्रतीक पुरुष

आचार्य श्री तुलसी सर्वधर्म सद्भाव के प्रतीक पुरुष थे। साम्प्रदायिक कट्टरता को उन्होंने कभी उचित नहीं माना। उनका कहना था कि धर्म का स्थान संप्रदाय से ऊपर है। उन्होंने सभी धर्मगुरुओं को भी सांप्रदायिक आग्रहों को छोड़कर सद्भाव का वातावरण बनाने के लिए प्रेरित किया। सभी धर्म, सभी जाति एवं सभी वर्ग के लोगों को एक मंच पर लाने में वे कामयाब हुए थे।

भारत भूमि युग पुरुषों की भूमि है। यहा प्रत्येक कालखंड में किसी न किसी ऐसे सनातन व्यक्तित्व ने जन्म लिया जिसके बोध पाठ ने उस युग को संवारा, अपनी उपस्थिति में समग्र मानवता का मार्गदर्शन किया और उनका अवबोध समग्र मानव जाति के लिए सनातन मार्गदर्शन बन गया।

विभिन्न युग पुरुषों की श्रृंखला में ऐसे ही एक युग पुरुष हुए हैं–आचार्य श्री तुलसी। वे परम आध्यात्मिक, मानवता के मसीहा, एक संपूर्ण विभूति थे। भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। भारत की मिट्टी के कण–कण में महापुरुषों के उपदेश की प्रतिध्वनियां हैं। चाणक्य, आर्यभट्ट, महात्मा गांधी और रविन्द्रनाथ टैगोर के भारत का इतिहास विश्व में अपना वरेण्य स्थान रखता है। स्वर्णिम इतिहास की इसी पवित्र श्रृंखला में एक नाम है– अहिंसा के अग्रदूत, मानवता के मसीहा, अणुव्रत अनुशास्ता, युग प्रधान आचार्य तुलसी का।

आचार्य तुलसी राष्ट्रसंत थे। देश की महान धरोहर थे। राष्ट्रीय एकता के पक्षधर थे। उनका प्रकाण्ड पांडित्य उन्हें अबू सीना, स्वामी विवेकानन्द और डॉ. राधाकृष्णन के समान स्तर पर प्रतिष्ठित करता है। आचार्य तुलसी का जन्म बीसवीं शताब्दी में 20 अक्टूबर, 1914 में हुआ। मात्र ग्यारह वर्ष की अल्पावस्था में वे तेरापंथ के अष्टम् आचार्य कालूगणी के पास दीक्षित हुए अर्थात् जैन मुनि बने। 11 वर्षों तक मेधावी छात्र के रूप में अध्ययन कर गुरु कालूगणी द्वारा 22 वर्षों की उभरती जवानी में आचार्य पद को प्राप्त हुए। उनके आचार्य काल के दूसरे दशक का प्रारम्भ नवनिर्माण की कल्पना के साथ हुआ।

प्रथम स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त, 1947 पर उन्होंने 'असली आजादी अपनाओ' का शंखनाद किया। हरित क्रांति, सत्याग्रह भूदान की तरह अणुव्रत में लोकतंत्र की उज्ज्वल कल्पना निहित है। अणुव्रत दर्शन व्यक्ति को नैतिक बनाने की आचार्य संहिता है।

आचार्य तुलसी ने संप्रदाय से भी अधिक महत्व मानवता को दिया। मानवता के उत्थान के लिए उन्होंने विविध प्रकार के कार्यक्रम प्रारंभ किए थे। इसलिए वे जैन आचार्य की अपेक्षा एक मानवतावादी संत के रूप में अधिक जाने गये। जैन आचार्य तो वे थे ही, अपने कार्यों से वे जनाचार्य भी बन गये थे। जैन, हिन्दू , मुस्लिम या अन्य संप्रदायों को मानने वाले लोग भी उनमें आस्था रखते थे। 2 मार्च, 1949 को आचार्य श्री तुलसी ने देश की जनता के चरित्र के विकास के लिए अणुव्रत आंदोलन का प्रारंभ किया था। देश में नैतिक मूल्यों के तेजी से होते हुए ह्रास को देखकर वे बड़े चिंतित थे।

उन्होंने यह महसूस किया था कि इस नैतिक पतन को अगर नहीं रोका गया तो राष्ट्र भीतर से खोखला हो जाएगा। अणुव्रत आंदोलन का प्रारंभ कर आचार्य तुलसी ने देश में नैतिक विकास का शंखनाद किया। विद्यार्थी

शिक्षक, राज्य कर्मचारी, व्यापारी, राजनीतिज्ञ आदि सभी वर्ग के लोगों के लिए अनिवार्य रूप से पालन करने योग्य एक आचार संहिता का निर्माण कर प्रस्तुत किया गया।

असल में यह विशुद्ध रूप से एक मानवीय आचार संहिता है, जिसे किसी भी धर्म–संप्रदाय को मानने वाले लोग अपना सकते हैं और एक अच्छा इंसान बन सकते हैं। आचार्य श्री तुलसी सर्वधर्म सद्भाव के प्रतीक पुरुष थे। साम्प्रदायिक कट्टरता को उन्होंने कभी उचित नहीं माना। उनका कहना था कि धर्म का स्थान संप्रदाय से ऊपर है। उन्होंने सभी धर्मगुरुओं को भी सांप्रदायिक आग्रहों को छोड़कर सद्भाव का वातावरण बनाने के लिए प्रेरित किया। सभी धर्म, सभी जाति एवं सभी वर्ग के लोगों को एक मंच पर लाने में वे कामयाब हुए थे।

वे एक महान धर्मगुरु के साथ–साथ समाज सुधारक भी थे। 23 जून, 1997 को उनका देहांत हो गया। मेरी दृष्टि में गांधी के बाद आचार्य तुलसी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन से समूचे देश और दुनिया को प्रभावित किया।

भव्या, दसवीं
वैश्य मॉडल वरिष्ठ मा. विद्यालय,
भिवानी, हरियाणा

तुलसी का जीवन एक अनुपम कहानी

आचार्य तुलसी ने एक महान युग प्रवर्तक के रूप में कार्य किया। उन्होंने हर क्षेत्र में पहल करके कार्य किया। उन्होंने नारी जाति में घूंघट तथा अन्य प्रचलनों को, जो उसे मर्यादाओं के नाम पर व्यर्थ बंधनों में रखकर उसके विकास में बाधक बनते थे, उन्हें उखाड़ फेंकने का आह्वान किया। बाल–विवाह, मृत्यु भोज, विधवाओं के प्रति तिरस्कार की भावना आदि को समाप्त करने का भरपूर प्रयास किया।

''**मैं** पहले इन्सान हूं फिर धार्मिक हूं, फिर जैन हूं और फिर तेरापंथ का आचार्य हूं''– इन शब्दों में अपना परिचय देने वाले महामानव का नाम है आचार्य तुलसी। उन्होंने इन शब्दों में केवल अपना परिचय नहीं दिया इनके लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। तेरांपथ, जैन समाज, धार्मिक जगत और मानव जाति इन चारों स्तरों को आचार्य तुलसी ने अपने व्यक्तित्व, कृतित्व और अवदानों से प्रभावित किया। नित्य–नये सपने लेना और उन्हें साकार करना उनके व्यक्तित्व की पहचान बन गई। अप्रतिम पुरुषार्थ, अजेय संकल्प, अतुलनीय मनोबल और अटूट आत्मविश्वास ने उनके आभामण्डल को अलौकिक दिव्यता प्रदान की।

श्रद्धोपनिषद् के संवेदना–संदेश यह संदेश दे रहे हैं ''जिएं तो आचार्य तुलसी जैसे जिएं कार्य करें तो आचार्य तुलसी जैसा करें'' और जिस सूक्त को आचार्य तुलसी ने अपने जीवन में सदा चरितार्थ किया, उसे अपने जीवन में अपनाएं–क्षण भर के लिए भी जिओ, तो ज्योति बन कर जिओ, धुआं बन कर नहीं।

अणुव्रत दो शब्दों से मिलकर बना है। अणु+व्रत, अणु का अर्थ छोटा व व्रत का अर्थ व्रतों को धारण करना अर्थात छोटे व्रतों को धारण करने वाला। आदमी भले किसी भी जाति, वर्ग, वर्ण, लिंग और रंग का क्यों न हो, वह सही अर्थ में आदमी बने, यह अणुव्रत का अभीष्ट है। 'पहले इंसान, फिर हिन्दू या मुसलमान' इस उद्घोष में अणुव्रत ने धर्म और जाति के आधार पर होने वाले बंटवारे पर प्रहार किया है। 'संयमः खलु जीवनम्' यह अणुव्रत का मूल घोष है।

अणुव्रत सह–अस्तित्व और निःशस्त्रीकरण के सिद्धान्त में विश्वास करना है। 'निज पर शासन फिर अनुशासन' इस घोष के द्वारा अणुव्रत ने परोपदेश–परायणता पर प्रहार कर अपना चरित्र सुधारने का निर्देश दिया है। चरित्र को प्रतिष्ठित करने में अणुव्रत ने अहम भूमिका निभाई है। अणुव्रत ने सत्यनिष्ठा, प्रमाणिकता, असाम्प्रदायिकता आदि सर्वभौम तत्वों की धारा बहाई, युग–चेतना को झकझोरा, हजारों–हजार व्यक्तियों को उस धारा में बहने के लिए आमंत्रित किया और वह देश की सीमाएं पार कर विदेशों में पहुंच गया।

अणुव्रत एक आचार–संहिता का नाम है। किसी भी सम्प्रदाय में रहता हुआ व्यक्ति अणुव्रती बन सकता है। आचार्य तुलसी ने पांच अणुव्रत बताएं हैं अर्थात् स्वीकार किये। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह इन पांच अणुव्रतों में से अहिंसा पर आचार्य तुलसी ने सबसे ज्यादा जोर दिया।

ज्योति पुंज, अंतर्ज्ञानी, मन से प्रणाम है,
हे अनन्त के ययावर तुमको सलाम है,
अणुव्रत के माध्यम से जन–जीवन बदलेगा,
होंठ हो गये मौन किन्तु संगीत चलेगा।

अणुव्रत आन्दोलन की आवाज को घर–घर तक पहुंचाने में आचार्य श्री ने पंजाब, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल आदि प्रांतों की लम्बी–लम्बी यात्राएं की हैं। वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण जी भी इसी अणुव्रत आन्दोलन को कार्यशील कर रहे हैं। आचार्य तुलसी ने श्रमण–श्रेणी की शुरूआत करके भारत के बाहर भी यत्र–तत्र उसकी आवाज पहुंचाई।

वर्तमान जगत समस्याओं से संकुल बना हुआ है। व्यसन और तनाव जैसी गंभीर समस्याओं से पूरा विश्व आक्रान्त है। आचार्य तुलसी ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग इन समस्याओं के समाधान के रूप में प्रतिष्ठा पाते चले जा रहे हैं। असहिष्णुता, क्रोध आदि भावनात्मक समस्याओं का समाधान भी प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों से संभव बन सका। यह पद्धति न केवल आध्यात्मिक दृष्टि से अपितु वैज्ञानिक दृष्टि से भी परिपूर्ण है। आज भी प्रेक्षा ध्यान विश्व में व्यापक बन रहा है।

दहेज प्रथा एक कलंक : आचार्य तुलसी ने दहेज प्रथा को एक कलंक माना है। उन्होंने दहेज प्रथा को मिटाने के लिए सशक्त कदम उठाया। जनता के व्यापारिक मानस ने आजकल शादी को एक सौदे का माध्यम बना डाला है। लड़के का पिता इस अवसर को एक धन प्राप्त करने का मौका समझता है। लड़की वालों के लिए यही अवसर एक मानसिक हिंसा व परेशानी देने वाला बन जाता है। पहले भी दहेज प्रथा थी, आज भी है परन्तु आज इस प्रथा में अनेक विकार आ गये हैं।

पिता अपनी पुत्री को इच्छानुसार जो धन देता है उसमें उसके स्नेह की भावना रहती है पर आज उस स्नेह के स्थान को बाध्यता ने घेर लिया है आज धन दिया नहीं जाता किन्तु देना पड़ता है आचार्य तुलसी ने दहेज के विरूद्ध जन–मानस तैयार करने का प्रयास किया है।

इस आन्दोलन का दृष्टिकोण है कि हर अभिभावक को यह प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि वह अपने बच्चों की शादी के अवसर पर किसी प्रकार का दहेज नहीं देगा, न लेगा। इस दहेज के खातिर मां–बाप लड़की को जन्म से ही मार देते हैं, कन्याओं की भ्रूण हत्या होने लगी है।

लाखों घर बरबाद हो गये, इस दहेज की होली में,
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या, बैठ न पाईं डोली में।

चरित्र बल : जिस जीवन में किसी प्रकार की निष्ठा नहीं है वह संसार की हवा के साथ बह जाता है। उस हवा के विपरीत चलने की ताकत चरित्र निष्ठा में है क्योंकि चरित्र सर्वोपरि है। लोग कहते हैं कि चरित्रहीनता आज के युग की सबसे बड़ी समस्या है। शास्त्रों में कहा भी है– कर्म आचरण से व्यक्ति बाह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शुद्र बनता है। जन्म या जाति से नहीं। आचार्य तुलसी का चिन्तन देश के नैतिक व चरित्र उत्थान में ही लगा रहा। देश की अमूल्य निधि नैतिक व चरित्रता है।

अणुव्रत आन्दोलन प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी ने अक्टूबर सन् 1959 में सैकड़ों कार्यकर्ताओं के विराट सम्मेलन में उन्हें प्रेरणा देते हुए घोषणा कि वे निम्नोक्त तीन अभियानों को प्रमुखता दें :–

1. रिश्वत विरोधी अभियान
2. मिलावट विरोधी अभियान
3. मद्य विरोधी अभियान

इस प्रकार आचार्य तुलसी ने आचरण शुद्धि के लिए कई अभियान चलाए।

अनुशासन : आचार्य तुलसी के जीवन का प्रमुख सिद्धान्त है अनुशासन। इसी संबंध में आचार्य तुलसी ने कहा है– ''सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा'' व्यक्ति के सुधार से ही समाज का सुधार संभव है। समाज–सुधार की यात्रा राष्ट्र–सुधार की दिशा में आगे बढ़ती है। समाज और राष्ट्र के निर्माण का सपना पूरी तरह से व्यक्ति–निर्माण पर टिका हुआ है। आचार्य श्री तुलसी के जीवन का समग्रता से अध्ययन किया जाए तो अनुभव होगा कि उनकी जीवन शैली असाधारण थी। अनुशासन उनके व्यक्तित्व का विशेष घटक था। अनुशासन में रहने और दूसरों को अनुशासन में रखने की कला में वे सिद्धहस्त थे

आचार्य तुलसी ने कहा है –''मैं यह तो नहीं मानता कि तेरापंथ साधुओं में समर्पण का पूर्ण रूप है किन्तु इतना अवश्य कह सकता हूं कि इस युग में एक पिता के 4–5 पुत्र भी अपने पिता के अनुशासन को स्वीकार करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं, जबकि तेरांथ धर्मसंघ में 700 से अधिक साधु–साध्वियां एक आचार्य के धार्मिक नेतृत्व में रह रहे हैं। अनुशासन जीवन की कला है। तेरापंथ के गुरुदेव व आचार्य होने के नाते उन्हें अनुशासन प्रिय था, इसलिए वे अनुशास्ता कहलाये।''

शिक्षा क्षेत्र में योगदान : शिक्षा के क्षेत्र को ही लिया जाए तो पता चलेगा आचार्य प्रवर ने इस क्षेत्र में कितना क्रांतिकारी मार्गदर्शन दिया था। अणुव्रत शिक्षकों को संगठित करके विद्यार्थियों के जीवन में परिवर्तन किया। उनकी भावना थी कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली अपर्याप्त है, अपूर्ण है, उसे मूल्यों की प्रतिष्ठा करके ही पूर्ण किया जा सकता है। अध्यात्म बहुत ऊंचा तत्व है पर वह जब तक विज्ञान को साथ लेकर नहीं चलेगा, अधूरा रहेगा। अध्यात्म व विज्ञान उपयोगी होने पर भी एक–दूसरे से बिछुड़ कर दोनों अधूरे हैं।

अध्यात्म हमारी चेतना के केन्द्र में है और विज्ञान परिधि में है। आचार्य तुलसी ने कहा है 'बांटी तो विद्या बढ़े'–यह कहावत की विलक्षणता को प्रकट करती है। आचार्य तुलसी ने शिक्षा के लिए जैन विश्व भारती की स्थापना की। शिक्षा के क्षेत्र में गणाधिपति तुलसी जी ने नवीन प्रयोगों का सूत्रपात किया। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और अन्तर्रात्मिक स्तरों पर शिक्षा के आयामों को सर्वांगीणता का स्वरूप प्रदान करने का जो प्रामाणिकता एवं प्रयोग, प्रयास एवं प्रयत्न किये वे विश्व को एक नई दिशा में ले जाने का दिव्य मार्ग है।

आचार्य तुलसी ने एक महान युग प्रवर्तक के रूप में कार्य किया। उन्होंने हर क्षेत्र में पहल करके कार्य किया। उन्होंने नारी जाति में घूंघट तथा अन्य प्रचलनों को, जो उसे मर्यादाओं के नाम पर व्यर्थ बंधनों में रखकर उसके विकास में बाधक बनते थे, उन्हें उखाड़ फेंकने का आह्वान किया। बाल–विवाह, मृत्यु भोज, विधवाओं के प्रति तिरस्कार की भावना आदि को समाप्त करने का भरपूर प्रयास किया। धर्म में व्याप्त आडम्बरों का नकाब उतार फेंकने के लिए आचार्य श्री ने ढोंगियों को फटकारा और उन्हें दोहरे मानदंडों के अपनाने के लिए डांट लगायी। उन्होंने विरोधियों तक के प्रति यह कहकर 'जो हमारा करे विरोध, उसे हम समझें विनोद।' सहिष्णुता का परिचय दिया।

आचार्य तुलसी की कथनी व करनी में कोई अन्तर नहीं था, इसलिए अपनी साधना, त्याग, तपस्या द्वारा लोकप्रियता के चरम बिन्दु पर पहुंचाने पर भी उन्होंने तुरन्त ही आचार्य पद का विसर्जन कर दिया। उन्होंने कहा था, ''आत्म अनुशासन का विकास समाज और सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा का एक महत्वपूर्ण अवदान है। उन्होंने लोगों के रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा आदि के तौर–तरीके बदल दिये।

अतः गुरु तुलसी का जीवन एक अनुपम सी कहानी है,
निराली हर अदा तेरी जिंदादिल जवानी है,
शिवंसुदर है क्षेमकर है तेरे जीवन की पोथी,
पत्थर से प्रतिमा बनी वो तेरी मेहरबानी है।''

प्रेक्षा जैन, बारहवीं
एस.एन. बोहरा राजकीय उ.मा. विद्यालय,
जसोल, राजस्थान

गांधी के बाद सबसे प्रभावी व्यक्तित्व

उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय जनता के सोए आत्म विश्वास एवं अध्यात्म शक्ति को जगाने का उपक्रम किया। वे पाश्चात्य संस्कृति की अच्छाई ग्रहण करने के विरोधी नहीं थे परन्तु सभी बातों में अनुकरण राष्ट्र के हित में नहीं मानते थे। भारतीयों को समता और संयम का संदेश देते हुए उन्होंने कहा, ''जब तक मानव संयम की ओर नहीं मुड़ेगा, पिशाचिनी की तरह मुंह बाए खड़ी विषम समस्याएं उसका पीछा नहीं छोड़ेगी।''

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। भारत की मिट्टी के कण–कण में महापुरुषों के उपदेश की प्रतिध्वनियां हैं। चाणक्य, आर्यभट्ट, महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के भारत का इतिहास विश्व में अपना वरेण्य स्थान रखता है। स्वर्णिम इतिहास की इसी पवित्र श्रृंखला में एक नाम है– अंहिसा के अग्रदूत, मानवता के मसीहा, अणुव्रत अनुशास्ता, युग प्रधान आचार्य तुलसी का।

आचार्य तुलसी राष्ट्रसंत थे। देश की महान धरोहर थे। राष्ट्रीय एकता के पक्षधर थे। उनका प्रकाण्ड पांडित्य उन्हें अबू सीन, स्वामी विवेकानंद और डॉ. राधाकृष्णन के समान स्तर पर प्रतिष्ठित करता है। उनका स्वयं का परिचय उन्हीं के शब्दों में इस विराटता के साथ मुखर हुआ। उनका कहना था, मैं सबसे पहले मनुष्य हूं, फिर जैन हूं, फिर तेरापंथ का आचार्य हूं।''

आचार्य तुलसी का जन्म बीसवीं शताब्दी में 20 अक्टूबर, 1914 में हुआ। मात्र ग्यारह वर्ष की अल्पावस्था में वे तेरापंथ के अष्टम आचार्य कालूगणी के पास शिक्षित हुए अर्थात् जैन मुनि बने। 11 वर्षों तक मेधावी छात्र के रूप में अध्ययन कर गुरु कालूगणी द्वारा 22 वर्षों की उभरती जवानी में आचार्य पद प्राप्त कर लिया। उनके आचार्य काल के दूसरे दशक का प्रारम्भ नवनिर्माण की कल्पना के साथ हुआ।

प्रथम स्वतंत्रता दिवस, 15 अगस्त, 1947 को उन्होंने 'असली आजादी अपनाओ' का शंखनाद किया। उस समय मानवीय मूल्यों को चोट पहुंच रही थी। आचार्य तुलसी ने 2 मार्च, 1949 को 34 वर्ष की आयु में अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत आंदोलन में हरित क्रांति, सत्याग्रह व भूदान की तरह लोकतंत्र की उज्ज्वल कल्पना निहित है। अणुव्रत दर्शन व्यक्ति को नैतिक बनाने की आचार संहिता है। आचार्य तुलसी के अणुव्रत की आवाज राष्ट्रपति से लेकर गरीब की झोपड़ी तक गूंजी।

उनका व्यक्तित्व पुरुषार्थ का परम पर्याय था। वे सृजनशील चेतना के धनी थे। पद और सम्मान की आसक्ति से ऊपर उठ उन्होंने 18 फरवरी, 1994 को अपने आचार्य पद का विसर्जन कर विश्व के इतिहास में एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया, जो वर्तमान युग के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है।

वे एक महान धर्मगुरु के साथ समाज सुधारक भी थे। मेरी दृष्टि में गांधी के बाद आचार्य तुलसी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन से समूचे देश और दुनिया को प्रभावित किया। उनका मानना था कि जिस राष्ट्र ने अपनी संस्कृति को भुला दिया वह राष्ट्र जीवित तथा जाग्रत राष्ट्र नहीं हो सकता । देशवासियों को उन्होंने सदैव विराट सांस्कृतिक मूल्यों से अवगत कराया तथा उसके संरक्षण पर जोर दिया।

भारतीय संस्कृति के गौरव को व्यक्त करने वाली आचार्य तुलसी की उक्त पंक्तियां द्रष्टव्य हैं, जो लोग पदार्थ में विश्वास करते हैं, वे असहिष्णु हो सकते हैं। जो लोग शस्त्र शक्ति में विश्वास करते हैं, वे निरपेक्ष हो सकते हैं। जो लोग अपने लिए दूसरे के अनिष्ट को क्षम्य मानते हैं, वे अनुदार हो सकते हैं परंतु भारतीय संस्कृति की यह विलक्षणता रही है कि उसने पदार्थ को आवश्यक माना एवं शस्त्र शक्ति का सहारा लिया पर उसमें त्राण नहीं देखा। अपने लिए दूसरों का अनिष्ट हो गया, पर उसे क्षम्य नहीं माना। यहां जीवन का लक्ष्य विलासिता नहीं आत्म साधना रहा। लोभ लालसा नहीं, त्याग तितिक्षा रहा।

आचार्य तुलसी ने हमेशा सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षण प्रदान किया। संस्कार निर्माण पर बल दिया। आदर्श जीवन जैली का परिचय दिया। समन्वय दृष्टिकोण अपनाने की सलाह दी। भारतीय संस्कृति सबसे प्राचीन ही नहीं समृद्धि भी है। अतः किसी भी राष्ट्रीय समस्या का हल हमें अपने सांस्कृतिक तत्वों के द्वारा ही खोजना चाहिए क्योंकि हमारा अतीत अत्यंत वैभवशाली रहा है।

उन्होंने कहा– हिन्दू संस्कारों की जमीन छोड़कर आयातित संस्कृति के आसमान में उड़ने वाले लोग दो चार लम्बी उड़ानों के बाद जब अपनी जमीन पर उतरने या चढ़ने का सपना देखेंगे तो उनके सामने अनेक प्रकार की मुसीबतें खड़ी हो जायेंगी।

अनुशासित जीवन से युक्त अध्यात्म की समृद्धि के साथ भारत विश्व का पथ प्रदर्शक रहा। भारत वर्ष महापुरुषों की तपोभूमि रही । यहां पर कई महापुरुषों का जन्म हुआ। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय जनता के सोए आत्म विश्वास एवं अध्यात्म शक्ति को जगाने का उपक्रम किया। वे पाश्चात्य संस्कृति की अच्छाई ग्रहण करने के विरोधी नहीं थे परन्तु सभी बातों में अनुकरण राष्ट्र के हित में नहीं मानते थे। भारतीयों को समता और संयम का संदेश देते हुए उन्होंने कहा, ''जब तक मानव संयम की ओर नहीं मुड़ेगा, पिशाचिनी की तरह मुंह बाए खड़ी विषम समस्याएं उनका पीछा नहीं छोड़ेगी।''

सत्य, अहिंसा, क्षमा, सहिष्णुता, संयम इत्यादि हमारे सांस्कृतिक मूल्य रहे हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति को विदेशी लोगों से इतना खतरा नहीं बताया जितना इस संस्कृति में रहने वालों से बताया। उन्होंने भारतीय संस्कृति को प्रतिपादित करते हुए कहा, ''अणुव्रतों के द्वारा अणुबमों की भयंकरता का विनाश हो, अभय के द्वारा भय का विनाश हो, त्याग के द्वारा संग्रह का ह्रास हो। यह घोष सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक बने तभी जीवन की दिशा बदल सकती है।''

भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों में क्षमा, धर्म शास्त्र एवं अध्यात्म वाणी का महत्वपूर्ण स्थान है। इसे जीवन में उतारने का संदेश और समरसता मूलक जीवन पद्धति को अपनाने का आग्रह किया गया।

आचार्य तुलसी की टिप्पणी महत्वपूर्ण है, 'जिस शिक्षा के साथ अनुशासन, धैर्य, सहिष्णुता, सहअस्तित्व आदि जीवन मूल्यों का विकास नहीं होता, उस शिक्षा की जीवन दृष्टि के आगे प्रश्न चिन्ह उभर जाता है। अतः शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है जीवन मूल्यों को समझना, यथार्थ को जानना तथा उसको पाने की योग्यता हासिल करना।''

आचार्य तुलसी ने आदर्श जीवन शैली को अपनाने पर बल दिया जिसमें सांस्कृतिक मूल्य नागरिक श्रद्धावना, विचारशील, सहनशील, कर्मशील व चरित्रवान हो, इस हेतु उन्होंने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया।

वतर्मान समय की स्थिति पर टिप्पणी करते हुए कहा, '' मनुष्य असत आचरण करता है यह चिंता का विषय है। इससे भी बड़ी चिंता की बात यह है कि सदाचार से उसकी आस्था हिल गई है। इस प्रकम्पित आस्था को पुनः स्थिर करने के लिए नैतिकता और चरित्र निष्ठा में विश्वास से ही आज की विषम समस्याओं से उत्पीड़ित जनजीवन राहत पा सकता है। ऐसी दिव्य आत्मा सदियों में भू पर अवतरित होती है। हम उनके विराट व्यक्तित्व को हृदय से नमन करते हैं।

विवेक जैन, आठवीं
श्री वैष्णव अकादमी, इंदौर
मध्य प्रदेश

आधुनिक युग के महर्षि

आचार्य तुलसी केवल तेरापंथ और जैन धर्म के दायरे तक ही सीमित नहीं थे, बल्कि अपने व्यापक मानवतावादी दृष्टिकोण और अध्यात्म, नीति, अनुशासन, साहित्य, दर्शन तथा लोक जागरण के माध्यम से समस्त मानव समाज के कल्याण के आशा बिंदु बन गये थे। आचार्य तुलसी रुढ़ि मुक्त धर्म संघ के आग्रही थे और तेरापंथ संघ में कई सुधार–संशोधनों के पक्षधर थे।

आचार्य तुलसी अध्यात्म के शिखर पुरुष और बीसवीं शताब्दी के युग प्रवर्तक राष्ट्रसंत थे। आचार्य तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के नौवें आचार्य थे। वे श्रमण परम्परा के सबल प्रतिनिधि, आधुनिक युग के महर्षि, भारतीय संस्कृति के स्तम्भ और अत्यंत तेजस्वी और ओजस्वी आचार्य थे। वे नैतिक जागरण के पुरोधा एवं शांति के संदेशवाहक थे। उनके व्यापक व्यक्तित्व और उदार विचारों ने उन्हें सम्प्रदायातीत महामानव बना दिया था। मानवता की अहर्निश सेवा के कारण वे पूरे देश की जनता के हृदयहार बन गये थे। उन्होंने अपने व्यापक बहु–आयामी कार्यों की पीठिका पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की थी।

आचार्य तुलसी केवल तेरापंथ और जैन धर्म के दायरे तक ही सीमित नहीं थे, बल्कि अपने व्यापक मानवतावादी दृष्टिकोण और अध्यात्म, नीति, अनुशासन, साहित्य, दर्शन तथा लोक जागरण के माध्यम से समस्त मानव समाज के कल्याण के आशा बिंदु बन गये थे। आचार्य तुलसी रुढ़ि मुक्त धर्म संघ के आग्रही थे और तेरापंथ संघ में कई सुधार–संशोधनों के पक्षधर थे।

उन्होंने जातिवाद, छुआछूत आदि का विरोध किया और साधु–साध्वियों को सभी जातियों के बीच जाकर धर्म प्रचार करने तथा उपदेश देने के लिए भेजा। उन्होंने धर्म के क्षेत्र में नये मूल्यों की प्रतिष्ठा की। धर्म चेतना को सम्प्रदाय की सीमा में न बांधकर जनधारा के साथ जोड़ा। उन्होंने सौहार्द एवं सर्वधर्म समभाव का वातावरण तैयार कर जन–जन को एकबद्ध करने का महान प्रयत्न किया।

अणुबम से संत्रस्त युग को शान्ति के संदेशवाहक आचार्य तुलसी ने एक बहुत बड़ी राहत दी थी। अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से उन्होंने धर्म को व्यापक रूप दिया। अणुव्रत अभियान, जीवन विज्ञान तथा प्रेक्षाध्यान के विविध रचनात्मक कार्यक्रम मानव जाति के लिए वरदान सिद्ध हुए।

आचार्य श्री तुलसी की हर प्रकृति में मानव–मात्र के कल्याण की भावना निहित रहती थी। वर्णभेद, जातीयता और प्रान्तीयता की दीवारें कभी उनके कार्य क्षेत्र में बाधक नहीं बनी।

आचार्य तुलसी का बाह्य और आंतरिक दोनों व्यक्तित्व विराट थे। मझला कद, गौर वर्ण, विशाल भव्य ललाट, तेजस्वी आंखें, प्रलम्ब कान, मुस्कुराता सौम्य चेहरा, सीधा–सादा श्वेत परिधान और इन सबमें निर्मित मानव–कल्याण के लिए सतत प्रयत्नशील गंभीर व्यक्तित्व प्रथम दर्शन में ही सबको आकर्षित कर लेता था।

आचार्य तुलसी का जन्म संवत् 1971 कार्तिक शुक्ल द्वितीया को राजस्थान के लाडनूं के खटेड़ वंश में हुआ था। उनके पिता का नाम झूमरमलजी और माता का नाम बदनाजी था। अपने भाई–बहनों में तुलसी का स्थान

आठवां था। तुलसी का बचपन मां की असीम ममता, परिवार के अमित स्नेह एवं धार्मिक वातावरण में बीता। अष्टमाचार्य श्री कालूगणी से दीक्षा ग्रहण की और उन्हीं के संरक्षण में अपने जीवन का बहुमुखी विकास किया। वे क्रमशः संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषाओं के अधिकारी विद्वान बन गये।

आचार्य कालूगणी ने वि.सं. 1996 भाद्र शुक्ल तृतीय को गंगापुर में उन्हें युवाचार्य पद का गुरुवर दायित्व प्रदान किया और उनके स्वर्गवास के बाद वि.सं. 1996 भाद्र शुक्ल षष्ठी को युवाचार्य तुलसी आचार्य पद पर आसीन हुए। तेरापंथ के इतिहास में इतनी छोटी आयु में युवाचार्य तथा आचार्य बनने वाले तुलसी प्रथम व्यक्ति थे। उन्होंने अर्थहीन मूल्यों, अन्धविश्वासों एवं गलत परमपराओं से नारी समाज को मुक्त होने का बोध दिया। उपासक संघ के साधना शिविरों से श्रावक–श्राविका समाज में चैतन्य का जागरण हुआ।

उन्होंने संस्कृत, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषाओं में उच्च कोटि के ग्रन्थों की रचना की। वे सिद्धहस्त कवि थे। राजस्थानी भाषा में उनकी कई सरस रचनाए हैं, कई काव्य–ग्रन्थ हैं। समण श्रेणी की स्थापना आचार्य तुलसी के प्रगतिशील कार्यक्रमों की बड़ी उपलब्धि है। इस श्रेणी में दीक्षित समण–समणियों द्वारा प्रभावना का व्यापक कार्य हो रहा है। जहां साधु–साध्वियां नहीं पहुंच पाते वहां समण–समणी वर्ग पहुंच जाते हैं। उन्होंने जैन धर्म की महान शिक्षाओं तथा नैतिकतापूर्ण जीवन शैली को देश एवं विदेश में प्रसारित किया है। आचार्य तुलसी के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि अणुव्रत आंदोलन है।

अणुव्रत ने पूरे विश्व में एक हलचल पैदा की। उसका प्रयोग पूरे देश में व्यापक स्तर पर होने लगा। जाति, लिंग, भाषा, वर्ण, वर्ग, सम्प्रदाय आदि से परे सभी धर्मों के लोग उससे जुड़े और उसकी उपयोगिता सर्वसिद्ध हुई। इस अणुव्रत आन्दोलन ने मानव जाति के नैतिक एवं चारित्रिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और आज भी वह व्यापक स्तर पर क्रियान्वित हो रहा है। नैतिक अभियान की मशाल लिए आचार्य तुलसी ने लगभग एक लाख किलोमीटर की पदयात्रा की। हिमालय से कन्याकुमारी तक जन–जन तक पहुंचे और साथ ही अपने 650 साधु–साध्वियों के विशाल संघ को भी भारत के हर प्रांत, नगर और गांव–गांव में भेजा।

आचार्य तुलसी की दूसरी बड़ी उपलब्धि जैन विश्व भारती है। इसके अधीन संचालित विश्व विद्यालय को भारत सरकार द्वारा मान्य विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया है। उनकी मानवीय सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए सं. 2027 में उन्हें 'युगप्रधान' की उपाधि दी गई। इसके अतिरिक्त ई. राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर यूनिवर्सिटी द्वारा भारत ज्योति का अलंकरण, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान सारनाथ, वाराणसी द्वारा वाचस्पति (डी.लिट) का मानद अलंकरण, राष्ट्रीय एकता के विकास में उल्लेखनीय भमिका के लिए 'इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एकता सद्भावना पुरस्कार' आदि प्रदान किये गए। जैन विश्व भारती को उन्होंने कामधेनु की संज्ञा दी थी। इसके साथ की आचार्य तुलसी ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दो बड़े विश्व शान्ति सम्मेलन भी आयोजित किये।

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति महान दार्शनिक सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन द्वारा उस सुअवसर पर तुलसी अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया। सं. 2050 माघ शुक्ल सप्तमी (18 फरवरी, 1994) को आचार्य तुलसी ने सुजानगढ़, चूरु में अपने आचार्य पद का विसर्जन कर दिया और प्रज्ञा–पुरुष युवाचार्य महाप्रज्ञ को तेरापंथ धर्म संघ के दसवें आचार्य पर पर प्रतिष्ठित कर दिया। यह इतिहास की विरल घटना थी। जीवित अवस्था में अपने

आचार्य पद का त्याग बहुत बड़ी बात कही जा सकती है। आचार्य महाप्रज्ञ ने गणाधिपति तुलसी के आचार्य 'पदाभिषेक दिवस' को विकास महोत्सव के रूप में मनाने की घोषणा की।

गंगाशहर में गणाधिपति तुलसी ने 15 दिन का एकान्तवास बोथरा भवन में किया। 16 जून, 1997 को उन्होंने अपनी निजी डायरी में लिखा ''अब मुझे संथारा संलेखना करना चाहिए''। सांतवें ही दिन उनके शरीर में हल्का सा कम्पन आया और वे सुखासन की मुद्रा में 23 जून, 1997 को अचानक महाप्रयाण कर गये। उन्होंने मानो इच्छा मृत्यु प्राप्त की थी। उनका तेजस्वी व्यक्तित्व सामाजिक, दैनिक और राष्ट्रीय सीमाओं को पारकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हो गया था। उनका चितंन देशकाल की सीमा से परे संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए नियोजित था। इसलिए वे स्वयं को पहले मानव मानते थे, फिर भारतीय, फिर जैन और अंत में तेरापंथी मानते थे।उनका मानना था कि धर्म, जाति, क्षेत्र, वर्ण, भाषा आदि के आधार पर मानव–मानव में भेद करना सर्वथा अनुचित है। मनुष्य सबसे पहले मनुष्य है, इसलिए मनुष्यता की दृष्टि से सब एक समान हैं। कोई छोटा–बड़ा नहीं, कोई ऊंच–नीच नहीं। आचार्य तुलसी का 60 वर्ष का अमिट ऐतिहासिक उपलब्धियों से भरा शासनकाल वस्तुतः तेरापंथ धर्मसंघ का स्वर्णिम शासनकाल था।

मुस्कान सुराणा, नौवीं
श्री भारती विद्यालय,
तारा तल्ला संतोषपुर रोड, विधानगढ़, कोलकाता,
पं. बंगाल

चंदेरी के चाँद

अनमोल गुणों के संप्रेषक गुरुदेव ने भौतिक उत्थान में अपने जीवन के मूल्यों व उसके क्षणों को सर्जा। यही कारण था कि भारत सरकार ने उन्हें 'इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार' से नवाजा और राजस्थान यूनिवर्सिटी ने उन्हें 'भारत ज्योति' कहा। गुरुदेव तुलसी इस धरा पर शरीर से चाहे अदृश्य हो गए हों, उनके अवदान अमर हैं, जो सदा मानवता का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

आचार्य तुलसी का जन्म सन् 1914 में कार्तिक शुक्ल दूज को चंदेरी (लाडनूं) की धरती पर हुआ। मानवता के मसीहा गुरुदेव तुलसी ने लगभग 70 वर्ष तक संयम और त्याग का जीवन जिया। इसके महत्व को उजागर किया। भौतिकता की लपटें जब विश्व को घेर रही थीं व मानव इसकी मूर्छा में जी रहा था तो उन्होंने आध्यात्मिकता की बूटी देकर कृतार्थ किया। दिवास्वप्न दृष्टा गणाधिपति तुलसी का सम्पूर्ण जीवन महान अवदानों का प्रदाता रहा। अनैतिकता, भ्रष्टाचार, हिंसा एवं आंतक जैसी विषमताओं को दूर करने हेतु उनके अवदान वरदान बने।

आचार्य तुलसी ने 34 वर्ष की उम्र में जहां अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात किया, वहीं तनाव मुक्ति के लिए प्रेक्षाध्यान, चारित्रिक विकास के लिए शिक्षा में जीवन विज्ञान जैसे व्यापक आयामों का अवदान देकर सच्चे अर्थो में महान युग प्रवर्तक की भूमिका अदा की।

भारत की बाह्य स्वतंत्रता को अभिशाप बनने से बचाने के लिए गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का सिंहनाद किया। यह समाज सुधार का शाश्वत माध्यम है। इसकी गूंज राष्ट्रपति भवन से लेकर गरीब की झोपड़ी तक पहुंची। वर्ण, जाति, लिंग भेद से ऊपर यह असांप्रदायिक धर्म है। यह सही है 'जीवन विज्ञान' जीवन जीने का विज्ञान है। अमन से जीने का अद्‌भुत अवदान है। देश के उज्ज्वल भविष्य के निर्माता गुरुदेव तुलसी ने जीवन विज्ञान जैसा अवदान देकर नव निर्माण की अहम् भूमिका प्रस्तुत की।

अनमोल गुणों के संप्रेषक गुरुदेव ने भौतिक उत्थान में अपने जीवन के मूल्यों व उसके क्षणों को सर्जा। यही कारण था कि भारत सरकार ने उन्हें 'इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार' से नवाजा और राजस्थान यूनिवर्सिटी ने उन्हें 'भारत ज्योति' कहा। गुरुदेव तुलसी इस धरा पर शरीर से चाहे अदृश्य हो गए हों, उनके अवदान अमर हैं, जो सदा मानवता का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

आचार्य तुलसी ने मानव कल्याण के लिए अनेक अवदान दिए हैं, जिनमें जीवन विज्ञान, प्रेक्षा ध्यान, अणुव्रत समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति चेतना, भारतीय संस्कृति एवं इतिहास को पोषित करने, महिला शिक्षा एवं महिला चेतना को समाज भुला नहीं पाएगा।

सचमुच कितना महान था वह मस्ताना फकीर। अपने नेतृत्व की सम्पूर्ण क्षमताओं के बावजूद उन्होंने महाप्रज्ञ में आचार्य के गुणों को देख अपने पद का विसर्जन कर अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

फरवरी 1994, सुजानगढ़ का विशाल धर्म प्रांगण कितना अपूर्व था जब आचार्य श्री तुलसी ने अपने 60 दशक के तेजस्वी प्रशासन को एकाएक अलविदा कह कर उत्कृष्ट आत्म–साधना का निर्णय लिया। उनकी इस उद्घोषणा के साथ मानव समाज चौंक उठा। पद त्याग के इस क्रांतिकारी कदम ने नाम, यश, पद और प्रतिष्ठा की भीषण विभिषिका से त्रस्त राजनीतिक एवं धार्मिक जगत में तहलका मचा दिया।

अपने शिष्य को आचार्य के रूप में स्वीकारना गुरुता का सर्वाधिकार सौंपना विलक्षण है। अहम् विर्सजन की इस दुर्लभ घटना ने आचार्य श्री तुलसी को अध्यात्म के उस उच्च व्यास पीठ पर अधिष्ठित कर दिया जहां राष्ट्रसंत लोकरत्न, भारत ज्योति जैसे ढेरों अलंकरण व उपाधियां, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, हकीम खांसूर जैसे सम्बोधन उनकी संतता की निर्मल काया के सामने स्वयं गरिमा मंडित हो उठे।

चंदेरी की धरती पर इस उगने वाले दूज के चांद ने अनुयायियों को ठंडक महसूस कराई, वहीं सूरज की तरह तपना सिखाया। सफर तय करते हुए अपने संपूर्ण संघ को युग की रफ्तार के साथ मोड़ देना उनकी जबरदस्त क्षमता, प्रतिभा, सूझबूझ का परिचारयक है। वे बीसवीं सदी के महान संत थे जिन्होंने अपने विचारों से समाज को ऊष्मा प्रदान की जिसे मानव जाति कभी भुला नहीं पाएगी।

• कनिष्का चावला नौवीं
सेंट सिसिलियास पब्लिक स्कूल,
एफ ब्लाक, विकासपुरी, दिल्ली

सहज, पवित्र व पारदर्शी व्यक्तित्व

आचार्य तुलसी का सम्पूर्ण जीवन मानवता के उपकार के लिए बहती हुई गंगा सा पवित्र, हिमालय सा उन्नत और हिन्द महासागर सा विशाल है। वे सच्चे लोकनायक थे। वे पीड़ित मानवता के सजग प्रहरी थे। टूटते जीवन को जोड़ने वाले कुशल शिल्पी थे। उनका विराट व्यापक और चुम्बकीय व्यक्तित्व मनुष्यता की विरोधी किसी भी समस्या को ध्वस्त करने में सक्षम है।

हिन्दी साहित्य के आचार्य डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि – '' दुर्वार काल स्त्रोत सबको बहा देगा, स्वर्णाक्षरों में लिखी हुई पंक्तियां भी काल के थपेड़ों को सहन नहीं कर पायेगी, वही बचेगा जिसे मनुष्य के हृदय में स्थान प्राप्त होगा।'' आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व और जीवन–दृष्टि के संदर्भ में यह पंक्तियां उनके चरित्र और मानवता के लिए अवदान की दृष्टि से सटीक हैं।

आचार्य तुलसी का सहज, पवित्र व पारदर्शी व्यक्तित्व मानवता के उपकार के लिए ही अवतरित हुआ था। आचार्य तुलसी मानवता के कर्णधार थे। उन्होंने वर्ण–जाति, समुदाय, वर्णभेद और आचरण से भी बढ़कर मानव धर्म की स्थापना की। संभवतः उनके व्यक्तित्व को ही आदर्श मानकर डॉ. नगेन्द्र ने अपने विचार प्रकट किए होंगे कि अपने आपको पूर्णता के साथ अभिव्यक्त करना, चाहे वह कर्म द्वारा हो अथवा वाणी द्वारा या किसी भी अन्य माध्यम के द्वारा, व्यक्तित्व की सबसे बड़ी सफलता है।

आचार्य तुलसी का यह पूर्ण व्यक्तित्व आज नैतिकता के संकट और चारित्रिक पतन से टूटते हुए विश्व के लिए एक नयी प्रकाश–ज्योति बनकर मानवता का कल्याण कर सकता है। आचार्य तुलसी आत्मीयता के सागर थे, समभाव के साधक थे, सहजता की मूर्ति थे, राष्ट्रीय चेतना के प्रहरी थे, मानवता के मसीहा थे। इन सभी गुणों की सफल अभिव्यक्ति का प्रमाण यह है कि उन्होंने नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत आन्दोलन की सफल और सार्थक अभिव्यक्ति मानवता के लिए वरदान सिद्ध हो सकती है।

उन्होंने मानवता के वास्तविक अस्तित्व के लिए अहिंसा को सार्वभौमिक जीवन में सच्चे मन से उतारने का प्रयत्न किया। आचार्य तुलसी ने अपने ओजस्वी व्यक्तित्व और सार्थक प्रयत्नों से मानवीय समाज को क्षमतावान बनाने का पूरा प्रयत्न किया है। आचार्य तुलसी के मानवता के लिए अवदान को हम निम्न बिन्दुओं में रेखाकिंत कर सकते हैं :

युगदृष्टा आचार्य : आचार्य तुलसी युगदृष्टा आचार्य थे। उन्होंने युग की परिस्थितियों को समझा, युग के संकटों को परखा और उनके समाधान के लिए प्रभावी उपाय प्रस्तुत किये। समाज की जड़ता, शुष्कता और अचेतनता को मिटाने का पूरा प्रयत्न किया।

वास्तविक धर्म शास्ता : आचार्य तुलसी का जीवन वास्तविक धर्म शास्ता का जीवन है। धर्म के विषय में वे कहते थे, ''धर्म गुरुओं की पारस्परिक ईर्ष्या, कलह और विद्वेष को देखकर लगता है कि पानी में आग लग गई है, मैं आग को बुझाना चाहता हूं और इसके लिए आप सभी का सहयोग चाहता हूं।''

धर्म के आधार पर मानव जाति को विभक्त कर सामाजिक विषमता पैदा करने वाले धार्मिकों समक्ष के प्रखर तर्क प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा–

मिसरी स्यूं मुख मीठो होसी, कोई खावै
जात पातरो पचड़ो फिर क्यूं बीच में आवै।

मानवता के मसीहा : पीड़ित और शोषित मानवता को उन्होंने गति प्रदान की। समाज सुधारक के रूप में वह जीवन भर रूढ़ियों, कुरीतियों और अंधविश्वासों को चुनौती देते रहे। आचार्य तुलसी के काव्य रूपी दर्पण में देखकर समाज अपनी कुरीतियों और विकृतियों से मुक्त होने का सार्थक प्रयत्न कर सकता है।

सर्वोदयी स्वप्न दृष्टा : आचार्य तुलसी समाज में अणुव्रत के माध्यम से सर्वोदय लाना चाहते थे, वे कहते हैं–

सर्वांगी व्यक्तित्व उदय हो
लक्ष्य सामने सर्वोदय हो।

आध्यात्मिक ऊर्जा के स्रोत : आचार्य तुलसी का जीवन अध्यात्म ऊर्जा से भरा हुआ है। इसी ऊर्जा से वे मानवता को अमर बना देना चाहते थे। वे कहते हैं– अध्ययन से भिन्न मेरा अस्तित्व नहीं है, मेरे लिए अध्यात्म ही सब कुछ है। अध्यात्म की शक्ति का स्मरण दिलाते हुए वह कहते हैं कि–

तू स्वयं है दिव्य जोत, है विलक्षण शशि तेरी।
पर तुझे करती हतप्रभ, मोह माया की अंधेरी।

संघर्षशील सन्त : सन्त वह होता है जो परदुःख से द्रवित होता है। आचार्य तुलसी सम्पूर्ण मानवता को दुःखों से मुक्त करने के लिए संघर्ष को अनिवार्य मानते थे। उनके साहित्य में संघर्षों से हंस–हंसकर खेलने की प्रेरणा सर्वत्र विद्यमान है। वे कहते थे कि ''जो हमारा हो विरोध, हम उसे समझे विनोद।'' अपने आराध्य आचार्य भिक्षु को समर्पित उनकी यह पंक्तियां उनके संघर्षमय सन्त व्यक्तित्व को प्रमाणित करती हैं।

आग से खेले सतत् अपमान का विष भी पिया,
घोर संकट के समय शान्तमय जीवन जिया।

इस प्रकार आचार्य तुलसी का सम्पूर्ण जीवन मानवता के उपकार के लिए बहती हुई गंगा सा पवित्र, हिमालय सा उन्नत और हिन्द महासागर सा विशाल है। वे सच्चे लोकनायक थे। वे पीड़ित मानवता के सजग प्रहरी थे। टूटते जीवन को जोड़ने वाले कुशल शिल्पी थे। उनका विराट, व्यापक और चुम्बकीय व्यक्तित्व मनुष्यता की विरोधी किसी भी समस्या को ध्वस्त करने में सक्षम है।

भारतीय समाज उनके विचारों के प्रकाश में अपने जीवन को ढालकर मानवता का नेतृत्व करने में सक्षम हो सकता है। ऐसे तुलसी जैसे ही आचार्य तुलसी को शत्–शत् नमन।

जयदेव शर्मा, आठवीं
लेडी अनुसुईया सिंघानिया एजूकेशन सेंटर
झालारापाटन रोड, झालावाड़, राजस्थान

सृजनशील चेतना के धनी

आचार्य तुलसी ने सत्यम् शिवमं और सुन्दरम् की युगपत उपासना की है। इसीलिए उनका साहित्य मनोरंजन एवं व्यावसायिकता से ऊपर सृजनात्मकता को पैदा करने वाला है। उनके विचार सीमा को लांघकर असीम की ओर गति करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व किसी भी सहृदय को भाव विभोर करने में सक्षम है। उनके विराट व्यक्तित्व की उपमा नहीं दी सकती।

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। भारत की मिट्टी के कण–कण में महापुरुषों के उपदेश की प्रतिध्वनियां हैं। चाणक्य, आर्यभट्ट, महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के भारत का इतिहास विश्व में अपना वरेण्य स्थान रखता है। स्वर्णिम इतिहास की इसी पवित्र श्रृंखला में एक नाम है– अंहिसा के अग्रदूत, मानवता के मसीहा, अणुव्रत अनुशास्ता, युग प्रधान आचार्य तुलसी का।

आचार्य तुलसी राष्ट्रसंत थे। देश की महान धरोहर थे। राष्ट्रीय एकता के पक्षधर थे। उनका प्रकाण्ड पांडित्य उन्हें अबू सीन, स्वामी विवेकानंद और डॉ. राधाकृष्णन के समान स्तर पर प्रतिष्ठित करता है। उनका स्वयं का परिचय उन्हीं के शब्दों में इस विराटता के साथ मुखर हुआ। उनका कहना था, मैं सबसे पहले मनुष्य हूं, फिर जैन हूं, फिर तेरापंथ का आचार्य हूं।''

आचार्य तुलसी का जन्म बीसवीं शताब्दी में 20 अक्टूबर, 1914 को हुआ। मात्र ग्यारह वर्ष की अल्पावस्था में वे तेरापंथ के अष्टम् आचार्य कालूगणी के पास दीक्षित हुए, अर्थात् जैन मुनि बने। 11 वर्षों तक मेधावी छात्र के रूप में अध्ययन कर गुरु कालूगणी द्वारा 22 वर्षों की उभरती जवानी में आचार्य पद को प्राप्त हुए। उनके आचार्य काल के दूसरे दशक का प्रारंभ नवनिर्माण की कल्पना के साथ हुआ।

प्रथम स्वतंत्रता दिवस, 15 अगस्त, 1947 को उन्होंने 'असली आजादी अपनाओ' का शंखनाद किया। 2 मार्च, 1949 को उन्होंने 34 वर्ष की आयु में अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। हरित क्रांति, सत्याग्रह व भूदान की तरह अणुव्रत आंदोलन में लोकतंत्र की उज्ज्वल कल्पना निहित है। अणुव्रत दर्शन व्यक्ति को नैतिक बनाने की आचार संहिता है। आचार्य तुलसी की अणुव्रत की आवाज राष्ट्रपति से लेकर गरीब की झोपड़ी तक गूंजी। इस नैतिक क्रांति को निरंतर प्रज्ज्वलित रखने के लिए उन्होंने पूरे देश में कन्याकुमारी तक लगभग एक लाख कि. मी. की पदयात्राएं कीं।

उनका व्यक्तित्व पुरुषार्थ का परम पर्याय था। वे सृजनशील चेतना के धनी थे। पद और सम्मान की आसक्ति से ऊपर उठ उन्होंने 18 फरवरी, 1994 को अपने आचार्य पद का विसर्जन कर विश्व के इतिहास में एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया जो वर्तमान युग के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। वे एक महान धर्मगुरु के साथ समाज सुधारक भी थे। मेरी दृष्टि में गांधी के बाद आचार्य तुलसी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन से समूचे देश और दुनिया को प्रभावित किया।

भारतीय संस्कृति की साहित्यिक परम्परा में सन्त साहित्य का विशिष्ट स्थान है। आचार्य तुलसी बीसवीं सदी की सन्त परंपरा के महान साहित्य स्रष्टा युग पुरुष थे। उनका साहित्य परिमाण की दृष्टि से ही विशाल नहीं अपितु गुणवत्ता एवं जीवन मूल्यों को लोक जीवन में संचारित करने की दृष्टि से भी विशिष्ट है।

आचार्य तुलसी ने सत्यम् शिवमं और सुन्दरम् की युगपत उपासना की है। इसीलिए उनका साहित्य मनोरंजन एवं व्यावसायिकता से ऊपर सृजनात्मकता को पैदा करने वाला है। उनके विचार सीमा को लांघकर असीम की ओर गति करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व किसी भी सहृदय को भाव विभोर करने में सक्षम है। उनके विराट व्यक्तित्व की उपमा नहीं दी जा सकती।

आचार्य तुलसी ने पांच अणुव्रतों की कल्पना को समाज के समक्ष रखा है, वे हैं– अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। वस्तुतः जैन धर्म में जिन पांच महाव्रतों की कल्पना साधु जीवन के लिए है, उन्हीं को व्यावहारिक रूप देकर सामाजिक व्यक्ति के लिए अणुव्रत का नाम दिया जिससे कोई भी सामाजिक व्यक्ति उसे अपने जीवन में उतार कर अपने जीवन को उन्नत बना सकता है।

इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है– अहिंसा अणुव्रत की मान्यता के अनुसार कम से कम निरपराध त्रस जीव जैसे–चलने फिरने वाले प्राणियों का हनन नहीं होना चाहिए। एक सामाजिक व्यक्ति के लिए स्थावर जीवों की हिंसा से सर्वथा बच पाना कठिन है, परन्तु उसकी सीमा की जा सकती है। अपनी काव्यमय पंक्तियों में आचार्य तुलसी ने अहिंसा अणुव्रत का परिचय इस प्रकार दिया है :

है पांच अणुव्रत प्रथम अहिंसा वाणी
हन्तव्य न इसमें निरपराध त्रस प्राणी।
स्थावर की सीमा, व्रत व्यापक बन जाए,
आतंकवाद का अन्त स्वयं आ जाए।

इस प्रकार कवि ने अहिंसा अणुव्रत के पालन से यह लाभ बताया कि इससे आतंकवाद की समस्या का समाधान अपने आप हो सकता है क्योंकि इस व्रत की स्वीकृति के फलस्वरूप निरपराध मनुष्यों की हत्या सहज रूप में प्रतिबन्धित हो जाती है।

अहिंसा हो और सत्य न हो तो अहिंसा जीवित नहीं रह पाती, इसीलिए अहिंसक श्रावक सत्य के प्रति निष्ठावान होते हैं। व`विश्वस्त और आत्मस्थ रहते हुए भी अपने पाप रूपी कीचड़ का प्रक्षालन करते हैं। सत्य अणुव्रत का सन्देश उन्होंने अपनी काव्य पंक्तियों में इस प्रकार अभिव्यक्ति किया।

क्या कभी अहिंसा सत्य बिना जी सकती
सुई धागे के बिना वस्त्र सी सकती।
अतएव अहिंसक सत्यनिष्ठ होता है,
विश्वस्त स्वस्थ निज पाप–पंक धोता है।

इस प्रकार सत्य अणुव्रत का पालन करने वाला श्रावक पुष्ट आधार के बिना किसी पर दोषारोपण नहीं करता। क्रोध लोभ, भय और काम से दूर व्यक्ति असत्य नहीं बोलता, किसी के गोपनीय रहस्य का उद्घाटन नहीं करता, किसी को गलत पथदर्शन नहीं देता। इनमें से एक भी आचरण–भंग का अपराधी होता है। जो जीवन नैतिकता से शून्य होता है वह वास्तव में शून्य है। इस दृष्टि से आचार्य अणुव्रत संजीवन है, जो शून्यता को भरने वाला है। आर्थिक घोटाले किसी भी क्षेत्र में हों उनका समावेश चोरी माना जाता है। इस अणुव्रत के अनुसार प्रामाणिक श्रावक जीवन का सुस्थिर सिद्धांत है। आचार्य तुलसी की पंक्तियां हैं :

जो नैतिकता से शून्य जीवन है
इसलिए आचार्य अणुव्रत संजीवन है,
आर्थिक अपराधीकरण स्वयं चोरी है
प्रामाणिकता श्रावक की स्थिर थ्योरी है।

इस प्रकार अचौर्य अणुव्रत का संदेश है कि कोई भी मनुष्य दूसरे के प्रति क्रूरतापूर्ण व्यवहार न करे। शारीरिक क्रूरता का संबंध हिंसा से व आर्थिक क्रूरता का संबंध अचौर्य अणुव्रत के साथ है। अतः चोरवृत्ति का परित्याग ही इसका मुख्य संदेश है।

श्रावक का चौथा अणुव्रत है ब्रह्मचर्य। यह अपने द्वारा अपने जीवन की सुरक्षा है। भोग लालसा को सीमित करने का सघन प्रशिक्षण इसी में निहित है। इस व्रत के श्रावक संतोषी होते हैं। आचार्य तुलसी के शब्द हैं –

है ब्रह्मचर्य अपने से अपना रक्षण
भोगेच्छा–परिसीमन का सघन प्रशिक्षण
अपने घर में संतुष्ट नियम में निष्ठा
श्रावक जीवन की सबसे बड़ी प्रतिष्ठा।

दिशा धनखड़, दसवीं
पठानिया पब्लिक स्कूल, 8 के.एम. स्टोन,
गोहाना रोड, रोहतक,
हरियाणा

पंथ के कार्यभार के रूप में आचार्य तुलसी ने बीकानेर के कई स्थानों का भ्रमण किया। इस अवधि में उन्होंने संतों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। अपने संत जीवन के आरंभिक काल में ही शिक्षा देना शुरू कर दिया था। उनके शिष्यों में मुनि नथमल और मुनि बुद्धमल का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उनके शिष्य आगे चलकर संस्कृत, प्राकृत, दर्शन के बड़े विद्वान बने।

आचार्य तुलसी (20 अक्टूबर, 1914 –23 जून, 1997) एक जैन धर्म के आचार्य थे। वे अणुव्रत और जैन विश्व भारती के संस्थापक थे। उन्होंने सौ से ज्यादा किताबें लिखी थीं। डॉ. राधाकृष्णन ने उनको अपनी किताब 'लिविंग विद परपज' में विश्व के महान 15 व्यक्तियों में शामिल किया। सन् 1971 में तात्कालिक राष्ट्रपति वी. वी. गिरि द्वारा युग प्रधान की उपाधि से विभूषित किया गया। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ और साध्वी कनकप्रभा की उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आचार्य तुलसी का जन्म लाडनूं राजस्थान में हुआ था। इनके पिता का नाम झूमरमल खटेड़ और माता का नाम बदनाजी था। उन्होंने आठ वर्ष की उम्र में विद्यालय जाना शुरू किया। आचार्य तुलसी अपने गुरु आचार्य कालूगणी से सन् 1925 में लाडनूं उनसे मिलने आए। उनसे मिलने के बाद तुलसी के मन में एक जैन सन्त बनने की इच्छा हुई।

यद्यपि वे कम उम्र के थे, तथापि आचार्य कालूगणी ने उनमें एक महान व्यक्ति के सभी गुणों को देखा। एक वर्ष पहले ही उनके बड़े भ्राता मुनि चम्पा लाल संत बन गये थे। अपने बड़े भाई के संरक्षण में ही तुलसी जी की पढ़ाई हुई। केवल सात वर्षों में ही संस्कृत के बड़े विद्वान बन गये। जैन आगम और जैन दर्शन की पढ़ाई तभी से शुरू की। इसी अवधि में 20000 संस्कृत श्लोकों को कंठस्थ करने का मुकाम हासिल किया। उस समय उन्होंने राजस्थानी भाषाओं में कविताएं लिखीं। वे प्रवचन भी बोलने लगे।

सन् 1936 में राजस्थान के गंगापुर में अपने वर्षाकालीन चार महीनों के प्रवास के समय आचार्य कालूगणी बहुत बीमार पड़ गये। आचार्य कालूगणी ने अपने देहावसान के समय तुलसी जी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। तुलसी जी उस समय 22 साल के थे। उन्हें एक धार्मिक पंथ (जिसमें 500 जैनी संत और लाखों भक्त थे) का नेतृत्व करने का कार्यभार सौंपा गया।

पंथ के कार्यभार के रूप में आचार्य तुलसी ने बीकानेर के कई स्थानों का भ्रमण किया। इस अवधि में उन्होंने संतों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। अपने संत जीवन के आरंभिक काल में ही शिक्षा देना शुरू कर दिया था। उनके शिष्यों में मुनि नथमल और मुनि बुद्धमल का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उनके शिष्य आगे चलकर संस्कृत, प्राकृत, दर्शन के बड़े विद्वान बने।

आचार्य तुलसी ने यह महसूस किया कि बिना राष्ट्रीय चरित्र के भारत की स्वाधीनता व्यर्थ है। उनके अनुसार सुन्दर चरित्र निर्माण ही स्वाधीनता का सही अर्थ है। इस दिशा में अणुव्रत आन्दोलन एक सुन्दर प्रयास था। 2 मार्च, 1949 को उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन का आरंभ किया।

अणुव्रत का अर्थ है– अणु–यानी छोटा व्रत यानी शपथ। व्यक्तिगत चरित्र के निर्माण में एक सुन्दर व्यवहार को जनता के सामने रखा गया। सत्य, अहिंसा, विग्रह, अचोरी और ब्रह्मचर्य इस सुन्दर व्यवहार के पांच सिद्धांत थे।

पूरे देश में यह प्रयास सराहा गया। हजारों लोग इसके पक्ष में आगे आये। आत्म जागरण और चरित्र निर्माण की दिशा में जनता ने इस आन्दोलन को स्वीकार किया। आचार्य तुलसी और जैन तेरापंथ संतों ने अणुव्रत के इस संदेश को एक गांव से दूसरे गांव तक पहुंचाने के लिए नंगे पांव पदयात्रा की। अणुव्रत आन्दोलन ने निम्नलिखित रहस्यों को जनता तक पहुंचाने का काम किया।

- धर्म का पहला स्थान है।
- धार्मिक पंथ कई हो सकते हैं परन्तु धर्म से सभी पंथ संबंधित हैं।
- धर्म राजनीति से अलग है।
- धर्म वर्तमान में सुख लाता है।
- धर्म चरित्र को शुद्ध करता है।

जैन आगम : 1950 में आचार्य तुलसी (जब महाराष्ट्र के मनचर गांव में रहते थे) को जैन आगम के संपादन की इच्छा हुई। उन्होंने अपने शिष्य मुनि नथमल से अपने मन की इच्छा प्रकट की और वे जैन आगम के शोध–कार्य में लग गये। उज्जैन में अपने चातुर्मास के दौरान जैन आगम का कार्य शुरू किया और महाप्रज्ञ जी को संपादक का कार्य सौंपा। तुलसी, महाप्रज्ञ और दूसरे विद्वानों की सहायता से हजारों साल पुराने ग्रन्थों को सुरक्षित रखा गया और उन ग्रथों को एक वैज्ञानिक रूप दिया गया, जिसे जनता भी स्वीकार करे।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय : 'जैन विश्व भारती' एक संस्था बनी जो सन् 1971 में लाडनूं, राजस्थान में आचार्य तुलसी की अनुमति से स्थापित की गई। उसका मुख्य उद्देश्य इस पर था कि पुराने जैन और भारतीय संस्कृतियों को लोगों तक पहुंचाये। यह संस्था बाद में सन् 1991 में एक विश्वविद्यालय बन गया। उसका मुख्य उद्देश्य अहिंसा, संस्कृत, जैनधर्म, प्राकृत, योग, ध्यान और साहित्य को लोगों से परिचित करने का था। यहां प्रेक्षा ध्यान और जीवन विज्ञान भी सिखाया जाता है। यहां कई विषयों पर शोध कार्य होता है।

साध्वी प्रमुखा : आचार्य तुलसी ने अपने जीवन काल में तीन साध्वी प्रमुखाओं को चुना।

- सन् 1936 में साध्वी प्रमुखा झमकू जी– गंगापुर।
- सन् 1946 में साध्वी प्रमुखा लदन जी– राजगीर।
- सन् 1978 में साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा जी– गंगा शहर।

श्रमण क्रम : आचार्य तुलसी ने श्रमण क्रम का निर्माण सन् 1980 में पूरे विश्व में जैन धर्म के प्रचार के लिए किया। यह क्रम जैन और साध्वी प्रमुखाओं की जीवनचर्या पर आधारित है। यह क्रम जैन लोगों को जैन साधओं और साध्वी प्रमुखाओं से परिचित करवाता है। लोगों ने सोचा था कि उन्हें इस क्रम में नये काम करने की जगह मिलेगी।

अणुव्रत विश्व भारती : आचार्य तुलसी ने कई जगहों, समाजों और घरों में हिंसा देखी। इसके लिए उन्होंने सोचा कि अणुव्रत आन्दोलन को और भी आगे बढ़ायें। इसलिए उन्होंने अणुव्रत विश्व भारती को सन् 1983 में स्थापित किया। यहां मुख्य रूप से अहिंसा का पाठ पढ़ाया जाता है। विश्वभर में इसकी 60 से भी अधिक संस्थाएं स्थापित की गयी हैं।

आदर्श साहित्य संघ : इस संस्था में साहित्य पर जोर दिया जाता है। यहां जैन संतों का साहित्य है। इसका स्थापना सन् 1948 में तुलसी जी की अनुमति से हुई थी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल : इसका निर्माण सन् 1966 में हुआ। यहां लगभग तेरापंथ संस्था की 37000 महिलायें हैं।

अखिल भारतीय युवक परिषद : इस संस्था में युवकों की ताकत और शक्ति पर उनको शिक्षा दी जाती है।

साहित्य : आचार्य तुलसी एक अच्छे साहित्यकार थे जिन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना की है। उन्होंने संस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी में साहित्य की प्रतिभा को दिखाया है।

यात्राएं : आचार्य तुलसी ने लगभग एक लाख किलोमीटर से भी अधिक पद यात्राएं कीं, इनमें से मुख्य हैं :

- 1949 : बीकानेर से जयपुर, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब और फिर वापस राजस्थान।
- 1955 : राजस्थान से गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और फिर वापस राजस्थान।
- 1966 : राजस्थान से गुजरात, तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, केरल, ओडिसा, मध्य प्रदेश और फिर वापस राजस्थान।

पुरस्कार और सम्मान : उन्हें कई पुरस्कारों व सम्मानों से सम्मानित किया गया। युग प्रधान, भारत ज्योति पुरस्कार, वाक्पति पुरस्कार, इंदिरा गांधी पुरस्कार।

आचार्य तुलसी का परलोक गमन 23 जून, 1997 में हुआ। हमें गर्व होना चाहिए कि आचार्य तुलसी जैसे महापुरुष का इस धरती पर जन्म हुआ। वे लोगों को अंधकार से प्रकार की ओर ले गए।

प्रतीक खेमका, नौवीं
जे.जी.वी.वी स्कूल, अण्णा नगर,
चेन्नई, तमिलनाडु

कुरीतियों के उन्मूलक

अणुव्रत आचार्य श्री तुलसी का वह अवदान है जो केवल आज को ही आलोकित नहीं कर रहा है। यह इसका आलोक आने वाली कई पीढ़ियों तक पहुंचाता है। अणुव्रत उपासना की पगडंडियां नहीं है, यह चरित्र का राजमार्ग है। इस पर जो भी चलेगा निश्चित भाव से मंजिल तक पहुंच सकेगा। यह मानव मात्र के लिए है।

आचार्य तुलसी एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम है जिनकी अहिंसा विषयक नई सोच ने समूची भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया। अहिंसा का उन्होंने न केवल उपदेश ही नहीं दिया बल्कि जीवन में उसका सफल प्रयोग भी किया। वे कहते थे– ''अहिंसा में मेरा अंधविश्वास नहीं है। वह मेरे जीवन की प्रकाश रेखा है। मैंने इससे अपने जीवन को आलोकित करने का प्रयत्न किया। मैं इससे बहुत संतुष्ट और प्रसन्न हूं।''

आचार्य तुलसी के निकट आने वाला हिंसक व्यक्ति भी अहिंसा की भावधारा से अनुप्राणित हो जाता था। उनके जीवन में सैकड़ों ऐसे प्रसंग हैं, जब तीव्र हिंसात्मक वातावरण में भी वे अहिंसात्मक प्रयोग करते रहे। वह समता और सहिष्णुता से विचलित नहीं हुए।

अपने जीवन के अनुभवों को वाणी देते हुए उन्होंने कहा– ''मेरे जीवन में अनेक प्रसंग आए, जहां कुछ लोगों ने मेरे प्रति हिंसा का वातावरण तैयार किया। वे लोग चाहते थे कि मैं अपनी अहिंसात्मक नीति को छोड़कर हिंसा के मैदान में उतर जाऊं, पर मेरे अंतःकरण ने कभी भी उनका साथ नहीं दिया। मैंने हर हिंसात्मक प्रहार का प्रतिकार अहिंसा से किया।''

लोक जीवन में अहिंसा को जीवन शैली का अंग बनाने के लिए उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के साथ ही अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। अणुव्रत का मूलभूत उद्देश्य है आत्मानुशासन का विकास, आत्म संयम का विकास और आत्मतोष का अनुभव। अणुव्रत एक सार्वभौम, सार्वजनिक और सार्वकालिक कार्यक्रम है। शहर हो या गांव, देश हो या विदेश, सब जगह अणुव्रत की उपयोगिता है। श्रमिक हो या व्यवसायी, शिक्षक हो विद्यार्थी, जनता हो या जननेता, सबके लिए अणुव्रत का दिशादर्शन आवश्यक है। दिन हो या रात, सत्युग हो या कलियुग, किसी भी समय अणुव्रत की अपेक्षा को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि वर्षों से अणुव्रत अभियान अनवरत चल रहा है।

आचार्य श्री तुलसी एक स्वप्नदृष्टा आचार्य थे। वे नए–नए सपने देखते। उन्हें आकार देने की योजना बनाते, योजना की क्रियान्विति के लिए पुरुषार्थ करते और अपने पुरुषार्थ के साथ नये–नये व्यक्तियों को जोड़ते रहते थे। जैन आगमों में आचार्य को दीपक से उपमित किया गया है। एक दीपक से हजारों दीपक प्रज्ज्वलित हो सकते हैं। इसी प्रकार आचार्य अपनी ज्ञान–ज्योति से स्वयं दीप्तिमान होते हैं और दूसरों को दीप्तिमान करते हैं।

आचार्य श्री ने देश की आजादी के साथ–साथ अणुव्रत का सपना देखा। इसका उद्देश्य था– लोक जीवन को चरित्र के साथ संयोजित करना। आचार्य श्री के व्यापक या राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों में अणुव्रत पहला

कार्यक्रम है। अणुव्रत मिशन को लेकर आचार्य श्री ने अपने कार्यक्षेत्र को विस्तार दिया। इससे पहले उनका विहार क्षेत्र राजस्थान तक सीमित था। सन् 1950 में आचार्य श्री पहली बार दिल्ली गये। वहां अणुव्रत का पहला अधिवेशन क्या हुआ, एक धमाका हो गया। लगभग पांच सौ व्यापारियों ने एक साथ खड़े होकर व्यापार में होने वाली अनैतिकताओं जैसे–मिलावट करना, असली वस्तु दिखाकर नकली वस्तु देना आदि, प्रवृत्तियों को छोड़ने का संकल्प स्वीकार किया तो हजारों–हजार आंखें विस्फारित ही रह गईं। समाचार पत्रों ने उस संवाद को पूरे महत्व के साथ प्रकाशित किया, लोगों में जिज्ञासा, उत्सुक्ता बढ़ी और आशंका का स्थान कुछ नई संभावनाओं ने ले लिया।

आचार्य श्री ने स्वयं भी यह कल्पना नहीं की थी कि उनका छोटा सा मिशन एक व्यापक कार्यक्रम के रूप में उभरेगा और राष्ट्रीय चरित्र का संवाहक बनेगा। किंतु जहां संभावना पुष्ट हुई और आशा का दीप जल उठा तो उन्होंने अणुव्रत यात्रा करने का निर्णय लिया। इस निर्णय की क्रियान्विति में उन्होंने पंजाब से कन्याकुमारी और कच्छ से कोलकाता तक लगभग पूरे देश की धरती का अवगाहन किया। जैन मुनि होने के कारण पदयात्रा उनका जीवन व्रत था। वे पांव–पांव चलकर धरती के इस छोर से उस छोर तक पहुंचे। लांखों–लाख लोगों से सीधा संपर्क साधा। उनकी समस्याओं को समझने और अणुव्रत के माध्यम से उन्हें समाधान सुझाया।

अणुव्रत को ही यह श्रेय जाता है कि उसने आचार्य भिक्षु द्वारा स्वीकृत सार्वभौम धर्म की बात को पूरी तरह से व्यावहारिक बना दिया। यह श्रेय भी अणुव्रत को जाता है कि उसने धर्म की, और धर्माचार्यों से दूर रहने वाले पंडित नेहरु जैसे व्यक्ति का संपर्क आचार्य श्री के साथ कराया और उनको एक सीमा तक धर्मोन्मुख बनाया। यह श्रेय भी अणुव्रत को ही मिलेगा कि उसने लाखों–लाख लोगों को मादक व नशीले पदार्थों की गिरफ्त से मुक्त कर स्वस्थ जीवन जीने का रास्ता दिखलाया।

अणुव्रत के अन्तर्गत आचार्य श्री ने नयामोड़ कार्यक्रम दिया। इस कार्यक्रम ने सामाजिक कुरुढ़ियों के उन्मूलन के कीर्तिमान स्थापित कर दिये। वाल विवाह, वृद्धा विवाह, मृत्यु भोज, मृत्यु के उपलक्ष्य में रुदन, विधवा स्त्री की अवमानना आदि अनेक प्रसंग ऐसे थे जो सामाजिक विकास के दरवाजों को बंद किये हुए थे।

विद्यार्थी और शिक्षक अणुव्रत के लिए उर्वर भूमि है। इस पर नैतिक बीजों का वपन कर वह अपने देश को खुशहाल भविष्य देना चाहता है। नशे की संस्कृति की ओर उन्मुख देश का विघार्थी वर्ग अणुव्रत की छत्रछाया में आया तो उसमें पनप रही अपराधी मनोवृत्ति से छुटकार मिल सकता है। इस दृष्टि से अणुव्रत शिक्षक संसद गठित की गई। उसकी गतिविधियों से शिक्षा के क्षेत्र में नई हलचल हो रही है। विद्यार्थी और शिक्षक ये दो वर्ग अणुव्रत के साथ पूरी शक्ति से जुड़ जायें तो शिक्षा जगत में नई क्रांति घटित हो सकती है।

अणुव्रत आचार्य श्री तुलसी का वह अवदान है जो केवल आज को ही आलोकित नहीं कर रहा है। यह इसका आलोक आने वाली कई पीढ़ियों तक पहुंचाता है। अणुव्रत उपासना की पगडंडियां नहीं है, यह चरित्र का राजमार्ग है। इस पर जो भी चलेगा निश्चित भाव से मंजिल तक पहुंच सकेगा। यह मानव मात्र के लिए है। जाति, रंग, लिंग, धर्म, संप्रदाय, प्रांत आदि की सीमाएं इसमें कहीं भी बाधक नहीं है। इसके माध्यम से आचार्य

श्री ने मनुष्य मात्र को आमंत्रण दिया है चारित्रिक मूल्यों की पुनः स्थापना के लिए अणुव्रत के मंच से एक ऐसा सामूहिक प्रयत्न हो, जो मनुष्य को मनुष्य बना सके और मनुष्य से जोड़ सके।

आचार्य तुलसी एवं महाप्रज्ञ की सन्निधि में अहिंसा विषयक अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेस का आयोजन हो चुका है जिसमें ऐसे प्रस्ताव पारित किये गये जिसे मनुष्य की शक्ति ध्वंस में नहीं अपितु रचनात्मक शक्तियों के विकास में लगे तथा अहिंसा की सामूहिक शक्ति का प्रदर्शन किया जा सके।

अंहिसा के प्रायोगिक प्रशिक्षण लिए आचार्य तुलसी एक शक्तिशाली अहिंसक सेना का निर्माण करना चाहते थे, जो सेना राजनीति के प्रभाव से सर्वथा अछूती हो। आचार्य तुलसी ने अहिंसा को समाज के साथ जोड़कर उसे जन आंदोलन और क्रांति का रूप देने का प्रयत्न किया। अहिंसा के द्वारा तुलसी ने अपनी अतंर्भावना प्रकट करते हुए कहा– ''मैं सामूहिक अशांति को जन्म देने वाली हिंसा को मिटाकर अहिंसा प्रधान समाज का निर्माण करना चाहता हूं।''

शस्त्रीकरण के दुष्परिणामों से समस्त विश्व भयाक्रान्त है इसलिए निःशस्त्रीकरण की आवाज चारों ओर से उठ रही है। आचार्य तुलसी की अवधारणा है कि भौतिक शस्त्र उतने खतरनाक नहीं, जितना सचेतन शस्त्र मनुष्य का असंयम है। आचार्य तुलसी शक्ति संतुलन के लिए भी शस्त्र निर्माण की बात से सहमत नहीं थे, क्योंकि इससे अपन्यय तो होता ही है साथ ही किसी गलत हाथों से दुरूपयोग होना भी संभव है।

अनावश्यक हिंसा के विरोध में जितनी सशक्त आवाज आचार्य तुलसी ने अपने साहित्य में उठाई, इस सदी में दूसरा कोई साहित्यकार उनके समकक्ष नहीं ठहर सकता।

वर्षा शर्मा, दसवीं
सरस्वती विद्यालय, दरियागंज,
दिल्ली

लोक शक्ति के प्रकाश पुंज

आचार्य तुलसी कहा करते थे कि व्यक्ति–व्यक्ति से समाज परिवर्तन होगा और जब तक व्यक्ति नहीं सुधरेगा तब तक कुछ नहीं होगा। विरोध सच्चाई की, मन्तव्यों की खरी कसौटी है। जो कोई भी होने वाले विरोध से तिलमिला उठता है वह अपने उद्देश्यों में कामयाब नहीं हो सकता है। जहां व्यक्ति लालसा के भंवर में फंस जाता है, वहां उसका जीवन दुःख और अशांति का घर बन जाता है।

यह कल्पना भी नहीं की जा सकती कि मात्र 22 वर्ष की आयु में आचार्य पद ग्रहण करते हुए ऐसे एक धर्म समुदाय का दायित्व संभालना और पंच महाव्रतों से दीक्षित पांच सौ से अधिक की संन्यस्त जमात को अहिंसात्मक अनुशासन से शासित कर लाखों–लाख व्यक्तियों के धर्मसंघ को कुशलता से चला ले जाना कोई आसान कार्य नहीं है। इस दृष्टि से आचार्य श्री तुलसी इतिहास की एक अविरल विभूति थे, जिन्होंने अल्पायु में तेरापंथ सम्प्रदाय का न सिर्फ सफल नेतृत्व किया, वरन नये–नये आयामों से तेरापंथ को एक नई दिशा दी और उसकी प्रकाशमान किरणें हिमालय से कन्याकुमारी तक प्रज्ज्वलित कर अपने संघ को एक युगीन शक्ति प्रदान की।

आज तेरापंथ उनकी नेतृत्व शक्ति को पाकर न सिर्फ भाग्यशाली है वरन अपनी नवीनतम आभाओं से गौरवशाली भी है। आचार्य तुलसी न सिर्फ एक धर्मसंघ के प्राणवान प्रचेता वरन इतिहास के निर्माता भी थे। उन्होंने जहां अतीत को संजोया, वर्तमान को संवारा, वहां भविष्य का भी निर्माण किया। उनकी उपलब्धियां अनेक हैं। न सिर्फ एक समुदाय विशेष में वरन नव–समाज रचना और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय जीवन की मानवीय चेतना में भी वे सबसे आगे रहे।

आचार्य तुलसी जैन परंपरा के संवाहक तेरापंथ धर्मसंघ के क्रांतदर्शी आचार्य थे। उन्होंने जैन धर्म को जन धर्म के रूप में व्यापकता प्रदान की। आचार्य तुलसी एक वर्ग, समाज, संप्रदाय और देश मात्र के ही नहीं वरन् समस्त मानव कल्याण की संभावनाओं से प्रेरित लोकशक्ति के प्रकाशपुंज थे। उन्होंने मानव जाति के कल्याण के लिए अणुव्रत आंदालेन का सूत्रपात किया। अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से समाज, देश और युग की समस्याओं को समाधान देने का भगीरथ प्रसास किया।

आचार्य तुलसी ने कहा है कि प्रेक्षाध्यान, जीवन–विज्ञान, अहिंसा प्रशिक्षण के माध्यम से मानवीय चेतना के जागरण का जो कार्य हो रहा है, लाखों–लाख लोग उनसे लाभान्वित हो रहे हैं। आचार्य तुलसी ने बताया है कि जीवन एक गीत है यदि कोई गा सके । जीवन एक अवसर है यदि कोई उसका उपयोग कर सके। जीवन एक साहसिक यात्रा है, यदि कोई निर्यता से आगे बढ़ सके। आज का मनुष्य जीवन को विज्ञान समझता है लेकिन जीवन विज्ञान जीव जगत के रहस्यों को समझने वाला विज्ञान नहीं है। इसका सीधा संबंध मनुष्य की जीवनशैली से है। जीवन विज्ञान चढ़ाई नहीं कढ़ाई है। पुस्तकीय ज्ञान नहीं, मनन निदिध्यासन है। सन्त कबीर की अनुभव वाणी है–

पढ़–पढ़ पोथा जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।

बड़ी–बड़ी पुस्तकें पढ़कर, परीक्षाएं देकर व्यक्ति डिग्रियां बटौर सकता है, पंडित नहीं हो सकता। पंडित वह होता है जो प्रेम की लिपि पढ़ता है और प्रेम की भाषा बोलता है। विद्वतापूर्ण भाषण देने वाला व्यक्ति किसी श्रोता पर अपना प्रभाव छोड़ पाए या नहीं, प्रेम के दो आखर बोलकर व्यक्ति संसार को वश में कर लेता है। इस दृष्टि से पुस्तकीय ज्ञान और उपाधियों से भी अधिक मूल्य है प्रायोगिक जीवन का। जिस व्यक्तित्व का विश्वास प्रायोगिक जीवन में होता है, वही जीवन विज्ञान पढ़ सकता है।

आचार्य तुलसी की स्मृति एक शाश्वत सत्य की स्मृति है। चरित्र और नैतिकता शाश्वत सत्य है। जिस समाज और राष्ट्र में नैतिकता का पतन होता है, वह राष्ट्र निश्चित ही एक या दो शताब्दी में पतन की और चला जाता है। चरित्र और नैतिकता के बल पर ही राष्ट्र स्थिर रहता, निरन्तर उन्नति करता है। विश्व में आज वे ही राष्ट्र प्रगति कर रहे हैं, जिनका नैतिक बल सुदृढ़ है। किन्तु खेद है आज चरित्र और नैतिकता के उस सत्य की उपेक्षा हो रही है। यही कारण है भ्रष्टाचार और अपराध आज शिष्ट और बड़े लोगों के सामान्य आचरण बन गये हैं। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से एक धर्मक्रांति की थी। उन्होंने नैतिकता शून्य धर्म को पूरी तरह अस्वीकार किया था। यही कारण है अणुव्रत की आवाज को देशभर में सुना गया और एक नैतिक क्रांति का जन्म हुआ।

आचार्य तुलसी कहा करते थे कि व्यक्ति–व्यक्ति से समाज परिवर्तन होगा और जब तक व्यक्ति नहीं सुधरेगा तब तक कुछ नहीं होगा। विरोध सच्चाई की, मन्तव्यों की खरी कसौटी है। जो कोई भी होने वाले विरोध से तिलमिला उठता है वह अपने उद्देश्यों में कामयाब नहीं हो सकता है। जहां व्यक्ति लालसा के भंवर में फंस जाता है, वहां उसका जीवन दुःख और अशांति का घर बन जाता है।

आचार्य तुलसी ने मानवता को अहिंसा का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि अहिंसा का आदर्श समता का आदर्श है। किसी के प्रति तिरस्कार और अनादर की वृत्ति वहां स्वीकार्य नहीं है। अहिंसा तो सौजन्य, शांति, सद्भावना और मैत्री से ओत–प्रोत है। जहां इन पर व्याघत होता है वह अहिंसा नहीं, हिंसा है। हिंसा का अर्थ है पतन। उससे बचना, उत्थान की ओर अग्रसर होना, अहिंसा का धर्म है।

प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि अहिंसा के आदर्शों पर आगे बढ़ता हुआ अपने मन, वचन और शरीरगत व्यवहार को अधिक अहिंसामय बनाए। अणुव्रत आंदोलन एक अहिंसात्मक आंदोलन है। जन–जन की जीवन प्रवृत्ति में अहिंसा की अनुभूति हो, अहिंसा दिवस मनाने का यही अभिप्रायः है।

आचार्य तुलसी ने मानव उत्थान के लिए कई कार्य किये। मानव उत्थान के लिए देश का विकास जरूरी है। हाल में देश में भ्रष्टाचार इतना बढ़ रहा है कि दीमक की तरह देश को खोखला कर रहा है। बाह्य जगत में भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण है आर्थिक आसक्ति और आर्थिक आकर्षण। देश की अर्थव्यवस्था तभी स्वस्थ हो सकती है, जब पृष्ठभूमि में नैतिकता और आध्यात्मिकता के प्रकंपन शक्तिशाली हो। आज भ्रष्टाचार इसलिए बढ़ रहा है कि अर्थशास्त्रीय चिंतन में नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक मूल्यों को नकारा गया है। भ्रष्टाचार के कारण भी असंख्य हैं और क्षेत्र भी असंख्य हैं। भ्रष्टाचार की समस्या अतीत में रही है, वर्तमान में है और भविष्य में नहीं रहेगी, ऐसी कल्पना भी नहीं की जा सकती । हम सच्चाई को झुठलाकर आकाश–कुसुम से सुगंध नहीं ले सकते । आचार्य तुलसी श्री ने कहा है– भ्रष्ट लोगों को मिटाने से भ्रष्टाचार समाप्त नहीं होगा। भ्रष्टाचार समाप्त होगा भ्रष्ट लोगों का भला बनाने से।

आचार्य तुलसी ने मानवता को संदेश दिया है कि खाद्य जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। उसमें मिलावट करना जनजीवन के साथ खिलवाड़ करना है। किन्तु अर्थ, लोलुप मनुष्य ऐसा कर लेते हैं। मानव वह होता है जो नए पथ का निर्माण करे। निर्माण करना कठिन है ध्वंस तो कोई भी कर सकता है। आचार्य तुलसी ने एक पंक्ति में कहा है कि इन्सान पहले इन्सान फिर हिन्दू या मुसलमान।

आचार्य तुलसी ने युवा पीढ़ी को संदेश दिया कि नशाबन्दी के लिए सरकार कोई कदम उठाए या नहीं, मानवीय धरातल पर काम करने वाले हर व्यक्ति का पावन कर्तव्य है कि वह शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक और आध्यामिक दृष्टि से चिंतन करे। सुरा और सिनेमा के पीछे अपने परिवार को व्यवस्थित करने वाले मजदूरों की स्थिति का आकलन करें तथा समाज को एक कष्टकर स्थिति से बचाने के लिए मादक द्रव्य विरोधी वातावरण निर्मित करने की बात सोचे। अणुव्रत सात्विक और आनंदमय जीवन जीने का मार्ग है। व्यसन–मुक्त जीवन उसकी पहली शर्त है।

अणुव्रत का काम है धर्म को पुनर्जीवन देना। धर्म का मूल तत्व है संयम या प्राणी मात्र के प्रति प्रेम का विस्तार। अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु अणुव्रत के लिए यह सहज प्राप्त है कि वह जाति–सम्प्रदाय आदि का मूल्य कम करे।

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत का प्रवर्तन करने के बाद तरह–तरह के प्रयोग करने शुरू किये। उन्होंने आह्वाहन किया कि मनुष्य को अपने आप पर काबू रखना होगा। अपना आत्म–संतुलन गवाना नहीं है। सदाचार और सादापन को निभाना है। हमारा काम ही महान है, इसलिए हमें कार्य को स्वच्छ और सुन्दर बनाना है। अच्छे आदर्श ही मनुष्य को महान बनाते हैं। आचार्य तुलसी जैसे आदर्श व्यक्तित्व को मानवता कभी नहीं बिसारेगी अपितु उसका हृदयंगम कर भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेगी।

फूलवाला ध्रुवी जितेन्द्र कुमार, बारहवीं
सेठ श्री प्राणलाल हीरालाल
बचकानीवाला वरि. माध्यमिक
विद्या मंदिर, खारवार नगर,
सूरत, गुजरात

चारों दिशाओं में गूंजती यश–गाथाएं

वर्तमान के औद्योगिक युग में हम अनुशासन को भूलते जा रहे हैं। आज बेटे के पिता के प्रति, शिष्य का गुरु के प्रति तथा पत्नी का पति के प्रति व्यवहार पूर्णतया बदल गया है। कहां पहले राम जैसे पुत्र, सीता जैसी पत्नी हुआ करती थी परन्तु अब भारतीय समाज पूर्णतया पश्चिमी हो गया है। ऐसे में आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत का दीप जलाकर भारतीय समाज में फिर से अनुशासन का बीज बाने का कार्य किया तथा वे सफल भी हुए।

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा
तुलसी अणुव्रत सिंहनाद, सारे जग में प्रसरेगा।

इन्हीं कुछ भावनाओं के साथ आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया जिसने संपूर्ण समाज को सदाचार, सादगी, नैतिकता व मूल आजादी को आत्मसात करवाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अणुव्रत आंदोलन के द्वारा मानवता को जो नैतिक मूल्य दिए हैं, उन्हें जानने से पूर्व अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक व महान व्यक्तित्व आचार्य श्री तुलसी का संक्षिप्त जीवन परिचय जानना आवश्यक है।

आचार्य श्री का जन्म कार्तिक शुक्ल द्वितीया, 20 अक्टूबर, 1914 को चंदेरी, लाडनूं में हुआ। उन्होंने 11 वर्ष की अल्पायु में तेरापंथ के अष्टम् आचार्य कालूगणी के मार्गदर्शन में आचार्य–दीक्षा प्राप्त की तथा 22 वर्ष की आयु में अपनी बुद्धिमता और नैतिकता के बल पर आचार्य पद पर आसीन हुए और फिर इसके बाद शुरू हुई उनकी यशोगाथा जो चारों दिशाओं में गुंजायमान होती रही।

तुलसी के बल विक्रम का साक्षी, प्रत्येक सिंधु प्रत्येक अंचल।
आप परम अहिंसक शांतिशील, आप परम क्रांतिरूप प्रबल।

आचार्य श्री तुलसी ने अपना संपूर्ण जीवन अणुव्रत के उत्थान में लगा दिया। आचार्य श्री तुलसी भारतीय संत परंपरा के एक उज्ज्वल नक्षत्र थे जो संपूर्ण विश्व में अणुव्रत का संदेश पहुंचाने में सफल रहे।

आजादी के बाद आचार्य श्री तुलसी ने देखा कि जनमानस अशांति, असंतोष और विलासितापूर्ण जीवन की ओर अग्रसर हो रहा है। लोग पहले अंग्रेजों के गुलाम रहे व आजादी के बाद विलासितापूर्ण जीवन के गुलाम होते जा रहे हैं। अंग्रेजों की गुलामी में भारतीयों ने अपने कर्तव्य व नैतिक गुणों को खो दिया तो आचार्य श्री को लगा कि अभी तो भारत को असली आजादी मिलनी बाकी है। अतः आचार्य श्री ने 2 मार्च, 1949 को सरदारशहर से भारतीयों को सदाचार, सादगी, नैतिकता व आजादी के मूल ध्येय को आत्मसात करवाने के लिए अणुव्रत आंदोलन की शुरू हुई आवाज गरीब की झोंपड़ी से राष्ट्रपति भवन तक गूंजी। उन्होंने पूरे देश का भ्रमण कर 1 लाख किमी. की पदयात्रा कर लोगों में नैतिक गुणों का विकास किया तथा निरंतर बिना किसी रुकावट के चलते रहे।

आचार्य श्री के अनुसार किसी देश की सबसे बड़ी सम्पत्ति उस देश के नागरिकों का नैतिक मूल्य है। लोगों के उच्च चरित्र से देश अत्यधिक शक्तिशाली बनता है। लोगों के लिए नैतिक विकास का बड़ा मूल्य है। अगर किसी व्यक्ति में नैतिक विकास नहीं हो पाएगा तो वह अपने राष्ट्र को किस प्रकार ऊपर उठा पाएगा, इसलिए विश्व के सभी धर्मों की नींव में नैतिकता के खंभे रूपे हुए हैं। आचार्य श्री तुलसी के अणुव्रत आंदोलन में अशांति व अंसतोष को समाप्त करने के लिए नैतिक विकास को एक बड़ा मापदंड माना है।

अणुव्रत की आचार संहिता में भी नैतिक गुणों के विकास के लिए कई तरह के नियम बनाए हैं जिससे सभी में नैतिक गुणों को विकसित किया जा सके। आचार्य श्री तुलसी ने यह स्पष्ट किया है कि किसी राष्ट्र के ऊपर उठने के लिए वहां के नागरिकों को ऊपर उठना होगा जिसके लिए प्रत्येक नागरिक में नैतिक अर्थात् नीतिगत गुणों का होना आवश्यक है। अणुव्रत द्वारा नैतिक गुणों के रूप में मानव समाज को एक अनुपम उपहार मिला है।

राष्ट्र के उत्थान के लिए अनुशासित होना व्यक्तियों के लिए परम आवश्यक है। वर्तमान के औद्योगिक युग में हम अनुशासन को भूलते जा रहे हैं। आज बेटे का पिता के प्रति, शिष्य का गुरु के प्रति तथा पत्नी का पति के प्रति व्यवहार पूर्णतया बदल गया है। कहां पहले राम जैसे पुत्र, सीता जैसी पत्नी हुआ करती थी परन्तु अब भारतीय समाज पूर्णतया पश्चिमी हो गया है। ऐसे में आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत का दीप जलाकर भारतीय में फिर से अनुशासन का बीज बोने का कार्य किया तथा वे सफल भी हुए। अणुव्रत जनसमुदाय के बीच आत्मानुशासन को विकसित करने तथा उसकी अभिप्रेरणा देने हेतु समर्पित है।

आचार्य श्री ने भारतीय समाज को अणुव्रत द्वारा एक ऐसा मानवीय मूल्य दिया जिसने संगठन का महत्व बताया। प्रबंधन का महत्वपूर्ण सिद्धांत है, संयम ही जीवन है। अर्थात् संयम रखते हुए जीवन–यापन करना। बिना संयम के जीवन जीना महत्वहीन जीवन जीना है।

प्रबंधन का अर्थ है–सुचारू रुप से। वर्तमान की इस उथल–पुथल वाली जिंदगी में प्रबंधन का होना अति आवश्यक है। अगर किसी राष्ट्र में प्रबंधन सही नहीं हो तो वह राष्ट्र निश्चय ही पतन की ओर अग्रसर होता है यदि राष्ट्र में प्रबंधन है तो वह राष्ट्र सबल होकर अपनी सफलता के मार्ग प्रशस्त कर सकता है। अगर किसी राष्ट्र या मानव को सबल होना है तो उसके लिए आवश्यक है कि वह प्रबंधन के अध्याय को अपने जीवन में उतार ले। यही अणुव्रत संदेश देता है। इस प्रकार आचार्य श्री द्वारा प्रदत्त अणुव्रत से उत्पन्न प्रबंधन मानव के उत्थान के लिए एक सर्वोत्तम उपाय है।

अणुव्रत ने नैतिकता, अनुशासन के साथ–साथ एक नया संदेश दिया है जिसे प्राचीन काल से ऋषि–मुनि अपने जीवन में उतारे हुए हैं–अहिंसा। अहिंसा का शाब्दिक अर्थ है–हिंसा न करना। वर्तमान में सभी व्यक्ति अहिंसा शब्द से परिचित हैं। महात्मा गांधी, महात्मा बुद्ध भी अहिंसा पर जोर देते थे। आचार्य श्री ने भी अणुव्रत में इस मानवीय गुण का समावेश किया। आचार्य श्री कहते हैं कि जीवन में यदि अहिंसा प्रारम्भ हो जाए तो बहुत है। अहिंसक व्यक्ति न तो किसी को कष्ट देता है और न ही किसी से घृणा करता है। अहिंसा में न पलायन है और न ही वीरता। अहिंसा में सिर्फ प्रेम का समावेश है। अणुव्रत हमें शत्रुओं से भी प्रेम करने का संदेश देता है।

अगर समाज में अहिंसा अर्थात् संयोजक शक्ति खत्म हो गई तो क्या समाज जीवित रह पाएगा। संयोजक शक्ति के खत्म हो जाने से समाज आपस में लड़ेंगे। समाज टुकड़ों में बंट जायेगा, अतः आचार्य श्री द्वारा अहिंसा का समावेशन एक न्यायोचित कार्य है।

अहिंसा द्वारा मानव अन्य लोगों से जुड़ पाया है। अतः यह कहना ठीक है कि आचार्य श्री द्वारा मानवीय समाज को दिया गया यह अहिंसा रूपी उपहार सर्वोत्तम है। आचार्य श्री ने अणुव्रत की स्थापना कर बस यही भाव प्रस्तुत किया है।

भारत जागो, विश्व जगाओ
अपना दिव्य रूप प्रकटाओ।

देवेन्द्र भोजक,
आदर्श विद्या मंदिर, लाडनूं,
राजस्थान

मानव–मूल्यों के सजग प्रहरी

आंदोलन ने लोगों को सत्य, अहिंसा, न्याय के रास्ते पर चलने, गरीबों की सहायता करने, प्रेम, दया का उपदेश देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आचार्य तुलसी मनुष्य धर्म को सच्चा धर्म मानते थे तथा सामाजिक जीवन के लिए नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति बहुत संवेदनशील थे। उनका उद्देश्य मानव को ऊंचा उठाना एवं सामज में मानव मूल्यों का विकास करना था।

अणुव्रत आंदोलन के प्रणेता आचार्य तुलसी मूल रूप से जैन धर्म के अनुयायी थे। इस आंदोलन के कारण ही भारतीय समाज में आचार्य तुलसी का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। उसका कारण था कि उन्होंने हिन्दू, बौद्ध, जैन धर्म के मूल सिद्धातों को इस आंदोलन में स्थान दिया। आचार्य तुलसी एवं अणुव्रत आंदोलन को जानने से पूर्व उन परिस्थितियों को जानने की आवश्यकता है जिनमें उन्होंने जन्म लिया।

आचार्य तुलसी का जन्म 20 अक्टूबर, 1914 में राजस्थान के लाडनूं नामक स्थान में हुआ था। भारत उस समय परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, छोटी–छोटी रियासतों में राजाओं के बीच अत्यंत अशांति एवं क्रूरता का माहौल था। इनके जन्म स्थान राजस्थान में उनका बोलबाला था। विश्व परिप्रेक्ष्य में उस समय प्रथम विश्वयुद्ध प्रारम्भ हुआ था। विशाल नरसंहार के साथ–साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का भी संहार हो रहा था।

उपर्युक्त परिस्थितियों में जन्म लेने वाले आचार्य तुलसी की ग्यारहवें वर्ष में ही भिक्षु बनने की तीव्र इच्छा हुई। उन्होंने मात्र 7 वर्षों में ही संस्कृत एवं प्राकृत भाषा में विद्वता प्राप्त करके जैन आगम एवं जैन दर्शन का वृहद् अध्ययन किया।

जैन दर्शन में भारतीय संस्कृति के कई भाग समाहित हैं। इसमें मूल्यों को महत्व दिया जाता है, व्यक्ति को नहीं। जैन दर्शन से प्रभावित आचार्य तुलसी ने इसके सिद्धांतों एवं इन पर आधारित स्वयं के सिद्धांतों के आधार पर तत्कालीन समाज को दिशा देने का प्रयास किया।

अणुव्रत का अर्थ है– अणु+व्रत अर्थात् छोटे व्रत। समाज से बुरी परंपराएं हटाने के लिए आचार्य तुलसी ने सभी धर्मों के लिए अणुव्रत बनाए एवं एक आंदोलन प्रारम्भ करके इनका प्रचार–प्रसार शुरू किया। इसमें जाति, धर्म, देश एवं रंग, विचारधारा के बीच कोई भेद नहीं था। यह साधारण नैतिक मूल्यों पर आधारित था जिसके मुख्य नियम निम्न प्रकार के थे :

- मैं स्वेच्छा से किसी निर्दोष प्राणी को नहीं मारूंगा।
- मैं किसी पर आक्रमण नहीं करूंगा। शांति और निःशस्त्रीकरण अपनाऊंगा।
- मैं हिंसक आंदोलनों में भाग नहीं लूंगा।
- मैं मनुष्य की एकता में विश्वास करूंगा।
- मैं धार्मिक सहिष्णुता अपनाऊंगा।
- मैं व्यापार एवं व्यवहार में किसी को धोखा नहीं दूंगा।
- मैं चुनाव में अनैतिक व्यवहार नहीं करूंगा।
- मैं कोई व्यसन नहीं करूंगा। मैं पर्यावरण, पेड़ों एवं पानी के बचाव का प्रयत्न करूंगा।

समाज में मानवता के गुणों के विकास के लिए अणुव्रत आंदोलन का बड़ा योगदान है। इसके पांच सिद्धांत सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह (संग्रह न करना) अस्तेय (चोरी न करना) एवं ब्रह्मचर्य है। इस आंदोलन ने लाखों लोगों को व्यक्तिगत रूप से आत्मिक शुद्धता एवं आत्म अनुशासन के लिए प्रेरित किया। आंदोलन का अंतिम लक्ष्य एक अहिंसात्मक, सामाजिक एवं राजनीतिक वातावरण बनाना था। इस तरह नैतिकता को भरपूर प्रचार मिला।

धर्म का मुख्य उद्देश्य चरित्र की शुद्धता है, जिसमें धार्मिक क्रियाएं गौण हैं। नैतिकता एवं धर्म एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जिस व्यक्ति में नैतिकता है वह कभी भी धर्म के विरुद्ध नहीं होगा। उसी तरह यदि धर्म में विश्वास है तो व्यक्ति कभी भी अनैतिक नहीं होगा। इससे समाज में प्रेम एवं सहिष्णुता को बल मिला।

विज्ञान के इस युग में ऐसे धर्म की आवश्यकता बताई गई जो भौतिक सुखों की खोज से उत्पन्न मानसिक तनाव को समाप्त कर सके। इसके लिए प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान का प्रचार किया गया। अणुव्रत आंदोलन में प्रेक्षाध्यान पर विशेष ध्यान दिया गया।

इसके द्वारा हजारों लोगों को शारीरिक एवं मानसिक शांति मिली। जीवन विज्ञान ने प्रशासन एवं शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सुधार किए। विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं नैतिक विकास में इसका अत्यधिक योगदान रहा। मनुष्य के संवेगों को शुद्ध करने एवं व्यसनों को नियंत्रित करने में जीवन विज्ञान का बड़ा संयोग रहा। इसके द्वारा एक धार्मिक समाज का पुनर्जागरण हुआ।

आचार्य तुलसी ने समाज में हिंसा के कारणों की खोज की और पाया कि हिंसा का कारण अन्याय, स्वार्थ, अज्ञानता तथा मूल आवश्यकताओं की कमी है। इस आंदोलन ने न्याय व्यवस्था को इतना मजबूत बनाने पर बल दिया कि कोई अन्याय का शिकार न हो।

आंदोलन ने लोगों को सत्य, अहिंसा, न्याय के रास्ते पर चलने, गरीबों की सहायता करने, प्रेम, दया का उपदेश देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आचार्य तुलसी मनुष्य धर्म को सच्चा धर्म मानते थे तथा सामाजिक जीवन में नैतिक एवं अध्यात्मिक मूल्यों के प्रति बहुत संवेदनशील थे। उनका उद्देश्य मानव को ऊंचा उठाना एवं समाज में मानव मूल्यों का विकास करना था।

अणुव्रत ने राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक एकता, सर्वधर्म समभाव, प्रेम, नैतिकता, व्यसनमुक्ति, नैतिक शिक्षा अस्पृश्यता उन्मूलन के प्रयास, भाषायी सद्भाव, भावात्मक एकता जैसे दैनिक जीवन से जुड़े विभिन्न व्यावहारिक कार्यों को भी आगे बढ़ाने की दिशा में प्रयत्न किया।

अणुव्रत आंदोलन ने चारित्रिक मूल्यों के प्रसार हेतु अहिंसा, महिला, सर्वधर्म, लेखक, विद्यार्थी सम्मेलन आयोजित किये एवं असांप्रदायिक धर्म के प्रचार द्वारा इसकी आचार–संहिता से अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने का प्रयास कर रहा है।

1960 में अणुव्रत ने सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन का नया अभियान शुरू किया। 1957 में अणुव्रत ने प्रजातांत्रिक मूल्यों के संरक्षण हेतु चुनाव में आचार–संहिता के पालन हेतु प्रयास प्रारंभ किए।

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने विभिन्न मस्जिदों, मठों, चर्चो और अन्य धर्म–स्थलों पर जाकर साम्प्रदायिक सद्भावना का संदेश दिया तथा सर्वधर्म सद्भाव का वातावरण बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया। आज भी विश्वभर में फैले हुए समण–समणियां स्वेच्छा से विश्वशांति की दिशा में कार्य करके 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को पुष्ट कर रहे हैं।

इस प्रकार आधुनिक समाज की समस्याओं के प्रति संवेदनशील आचार्य श्री तुलसी के अणुव्रत आंदोलन ने विश्वशांति, सामाजिक अच्छाई, सामाजिक न्याय, जीवन के शाश्वत मूल्यों, नैतिक मूल्यों एवं संस्कृति के संवर्धन हेतु अनेक प्रयास किए हैं। मानव तथा मानव मूल्यों को समाज में स्थापित करना भी इस आंदोलन का ध्येय है। मानवता के लिए आचार्य तुलसी का यही महान अवदान है।

प्रणीता जोशी, दसवीं
कैंपस स्कूल, पंतनगर, ऊधम सिंह नगर,
उत्तराखण्ड

अवदानों को अंगीकार करने का समय

आचार्य तुलसी का कहना था कि आज मानव अतिवादी बन गया है, उसे सही रास्ता दिखाना ही होगा। इसमें अणुव्रत की भूमिका बहुत अच्छी हो सकती है। अणुव्रत शिक्षक संसद के हाथ में अणुव्रत की मशाल है। इससे विद्यार्थियों को जीवन में सही दिशा मिल जाए तो जन जीवन पर उसका प्रभाव हो सकता है।

अणुव्रत सनातन धर्म है। वह किसी भी देश, काल, वर्ग आदि की सीमा से परे है, इसलिए सबके लिए कल्याणकारी है। देश का सौभाग्य है कि आचार्य श्री तुलसी जी ने इस आंदोलन के द्वारा व्यक्ति–व्यक्ति का सुधार करने की कोशिश की। आचार्य तुलसी का कहना है कि आज मनुष्य मनुष्यता से विपरीत आचरण कर रहा है। इसकी दिशा बदल गई है।

अणुव्रत का उद्देश्य है कि कथनी और करनी में समानता आए। अणुव्रत किसी को गृहत्याग करने या संन्यासी बनने के लिए नहीं कहता। वह चाहता है कि मनुष्य की हर गतिविधि में मानवीय मूल्यों का दर्शन हो। उसका जो रूप धर्मस्थान में हो, वही रूप दुकान–ऑफिस में होना चाहिए। नेताओं को भी मर्यादा या अनुशासन का ध्यान रखना चाहिए। यदि हमारे नेता वोटबैंक की राजनीति करना छोड़ दें और मर्यादा का पालन करते हुए आचार्य तुलसी की अनुशासित जीवन–शैली को अपना लें तो देश व समाज दोनों का विकास संभव है।

शिक्षा और अणुव्रत दोनों तत्वों को जोड़ते हुए आचार्य तुलसी ने अपने प्रवचन में कहा कि आज सर्वाधिक कार्य है मनुष्य को बदलना। इस समस्या का हल अणुव्रत से खोजा जा सकता है। केवल आध्यात्मिकता और केवल वैज्ञानिकता से बहुत भला होने वाला नहीं है। उसके लिए आध्यात्मिक वैज्ञानिक का निर्माण करना होगा।

अणुव्रत का संबंध केवल शिक्षा से नहीं है। यह मानव जीवन, स्वरूप, समाज एवं पर्यावरण की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। आज व्यक्ति शिक्षित होने के बाद भी दीक्षित होने का प्रयास नहीं करते, जबकि दीक्षित व्यक्ति ही शिक्षा के सही अर्थ को समझ सकता है। इस समय के बाद ही व्यक्ति का मानसिक और भावात्मक विकास संभव है और वह हिंसा एवं नफरत के मार्ग से विरत हो सकता है।

शिक्षा का संबंध स्थानविशेष और क्षेत्रविशेष के साथ नहीं है। विद्यालय, आश्रम, गुरुकुल या घर, सब जगह शिक्षा हो सकती है। बच्चे की प्रथम शिक्षिका तो उसकी मां, नानी, दादी ही होती है। वस्तुतः शिक्षा का संबंध स्वयं की पहचान से है। वर्तमान शिक्षा पद्धति की सबसे बड़ी कमी यह है कि उसके अन्तर्गत दुनिया भर की बातें बताई जाएंगी पर आत्मज्ञान की एक किरण भी प्राप्त नहीं होगी।

आचार्य तुलसी का कहना था कि आज मानव अतिवादी बन गया है, उसे सही रास्ता दिखाना ही होगा। इसमें अणुव्रत की भूमिका बहुत अच्छी हो सकती है। अणुव्रत शिक्षक संसद के हाथ में अणुव्रत की मशाल है। इससे विद्यार्थियों को जीवन में सही दिशा मिल जाए तो जन जीवन पर उसका प्रभाव हो सकता है।

अणुव्रत की दृष्टि से एक वर्ष का नया कार्यक्रम निर्णीत किया गया। उसके अनुसार प्रतिमाह की शुक्ल पक्ष की द्वितीया को यह कार्यक्रम आयोजित होगा। वह दिन अणुव्रत चेतना दिवस के रूप में मनाया जाएगा, ऐसा सोचा

गया था। अन्य अनेक नई योजनाएं सामने आई थीं। अणुव्रत एक मिशन के रूप में और अधिक प्रभावी बने, यह अपेक्षा है। उसकी पूर्ति तब ही संभव है जब कार्यकर्ता एकजुट होकर इस दिशा में प्रस्थान करें।

अखिल भारतीय अणुव्रत समिति द्वारा निर्धारित अणुव्रत चेतना दिवस का न्यूनतम वार्षिक कार्यक्रम या प्रारूप निर्णीत है। प्रतिमाह शुक्ल पक्ष की द्वितीया को अणुव्रत सगोष्ठी का आयोजन जिसमें सामूहिक प्रार्थना, अणुव्रत गीतों का सामूहिक संगान, अणुव्रत आचार संहिता का वाचन तथा अणुव्रत के बारे में निर्धारित एक विषय पर वक्तव्य हो, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के प्रयोग हों, इस कार्यक्रम में यथासंभव सभी साधु–साध्वियां समण–समणियां सम्मिलित हों।

उसी दिन छोटी–छोटी टोलियां बनाकर आसपास के गांवों में या कालोनियों में जाकर अणुव्रतों का प्रचार करें, प्रशिक्षण दें। महापुरुषों की वाक्य पट्टिकाओं का उपयोग हो। अणुव्रत आचार संहिता एवं एक सूत्री कार्यक्रम 'नशामुक्ति' का अधिक से अधिक लोगों को संकल्प कराया जाए। राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय समाचारपत्रों में अणुव्रत पर आधारित लेखों का प्रकाशन हो तथा दूरदर्शन, आकाशवाणी आदि माध्यमों से भी अणुव्रत की गतिधियों का प्रसार हो। उस दिन दोपहर या सांयकाल वर्गीय गोष्ठियां भी रखी जाएं। उनमें अध्यापक, अधिकारी, व्यापारी, छात्र, मजदूर, किसान आदि सम्मिलित हों। बड़े क्षेत्रों में प्रतिमास अलग–अलग वर्गों की गोष्ठियां रखी जा सकती हैं। इन गोष्ठियों में जैन साधु, जैनेतर साधु, महन्त, विद्वान आदि लोगों का भी सहयोग लिया जाए। अणुव्रत संगठन का विस्तार हो तथा ऐसा प्रयास हो कि पूरे देश में एक हजार स्थानों में यह दिवस मनाया जाये।
1895 में समिति ने अणुव्रत आंदोलन के प्रणेता और महान मानवतावादी आचार्य तुलसी को सम्मानित करने का निश्चय किया। आचार्य श्री तुलसी जैनधर्म के तेरापंथ के आचार्य थे। उनका चिंतन, दृष्टिकोण, साम्प्रदायिक संकीर्णता से सर्वधा मुक्त है। आचार्य तुलसी के शब्दों में ही उनका परिचय है–'मैं पहले मानव हूं, उसके बाद धार्मिक हूं। तत्पश्चात जैन हूं, तेरापंथ का आचार्य हूं।'' आचार्य श्री तुलसी के इसी असाम्प्रदायिक और व्यापक दृष्टिकोण ने उन्हें मानवतावादी धर्माचार्य के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

अणुव्रत यात्रा का एक मुख्य उद्देश्य है चरित्र–निर्माण। वे जहां भी जाते प्रवचन करते। वहां नैतिकता के स्वर गूंज उठते। संस्कार निर्माण की गोष्ठियां चलतीं। कार्यकर्ता स्कूलों में जाकर अणुव्रत की चर्चा करते हैं। ग्रामीण बहनों को रुढ़िमुक्त जीवन जीने की सलाह देते हैं। ग्रामीण लोगों को अणुव्रत प्रदर्शनी दिखाई जाती है। उन्होंने कहा कि जो अणुव्रत का काम हो रहा है उससे उन्हें संतोष नहीं है। वहां यात्रियों की यात्रा है। इसमें सम्मिलित होने वाले सभी भाई–बहनों को श्रम करना होगा। स्कूलों व कॉलेजों में अणुव्रत का वातावरण बनाना होगा।

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत यात्रा प्रारंभ की। वह यात्रा जैन, तेरापंथी अथवा किसी धर्म संप्रदाय की नहीं थी। यह तो मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा में आज तक चल रहा एक अभिमान है। इस अभियान का लक्ष्य है 'सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।' अणुव्रत व्यक्ति सुधार का मार्ग है। आज का मानव हिंसा, छुआछूत, धार्मिक असहिष्णुता आदि से ग्रस्त है। सत्ता के माने लोकतंत्र की शुद्धि विस्मृत हो चुकी है। जातिवाद, प्रान्तवाद, पार्टीवाद और मजहबवाद का जाल सा बिछा है। वे इन सबसे ऊपर उठी हुई मानसिकता का निर्माण करना चाहते थे, जिससे सुरसा की तरह मुंह फैलाकर खड़ी समस्याओं का अंत हो सके।

अणुव्रत यात्रा का उद्देश्य जन चेतना को जगाना था। इस माध्यम से वे जनता को असाम्प्रदायिक धर्म, नैतिकता और मानवीय मूल्यों को अपनाने का संदेश देते हैं। अपने संदेश के द्वारा वे पांच बिंदुओं की ओर सबका ध्यान आकृष्ट करना चाहते थे। वे पांच बिंदु इस प्रकार हैं– भाईचारा, सही शिक्षा, लोकतंत्र में शुद्धि, व्यसनमुक्ति और अश्लीलता निवारण।

मनुष्य की जीवन शैली में बदलाव लाने तथा अणुव्रत को व्यापक एवं व्यावहारिक बनाने के लिए अणुव्रत परिवार की योजना बनाई गई। योजना के आधार पर काम भी शुरू हो गया। अणुव्रत परिवार की सदस्यता स्वीकार करने वाले परिवार की प्राथमिक अर्हता इस प्रकार निर्धारित की गई। परिवार का प्रमुख व्यक्ति संपूर्ण अणुव्रती हो, परिवार के सभी सदस्य व्यसनमुक्त हों, परिवार में पारिवारिक सौहार्द हो, परिवार का हर सदस्य खानपान की शुद्धि रखे, धार्मिक सद्भावना का वातावरण हो ।

अपने उक्त विषय को लक्ष्य बनाकर आचार्य तुलसी ने कहा कि परिवर्तन कानून व डंडे के बल पर नहीं आ सकता। व्यक्ति खुले दिमाग से सोच समझे और आचरण में उतरने के लिए प्रयत्नशील हो तभी बदलाव संभव हो सकता है। जिन व्यक्तियों को स्वस्थ एवं उन्नत जीवन शैली से जीना हो, वे पहले बारीकी से अपना आत्मनिरीक्षण करें, परिवार का प्रतिलेखन करें।

आचार्य तुलसी ने कहा था– लगभग पचास वर्षों से हम अणुव्रत मिशन को लेकर देश के कोने–कोने में घूम रहे हैं। हमारा उद्देश्य है देश का नैतिक, चारित्रिक विकास करना। अणुव्रत असाम्प्रदायिक धर्म है। इसमें उपासना, गौण और आचरण प्रमुख है। वर्तमान की विकृत होती जीवनशैली को बदलने के लिए आप और हम सब मिलकर एक–दूसरे के साथ जुड़कर काम करें, यह बहुत आवश्यक है।
यदि आज हम सब आचार्य तुलसी के दिए इन जीवन मूल्यों व उनके अवदानों को अंगीकार कर लें, व्यक्ति सुधार को मूलमंत्र के रूप में अपना लें तो निश्चित ही हमारा सम्मान विश्व के सबसे प्रगतिशील मानवीय एवं नीतिपरक समाज की गणना में अणुगण्य होगा।

रिया जैन, दसवीं
लीलावती विद्या मंदिर सी.सै. स्कूल,
शक्ति नगर, दिल्ली

आधुनिक भारत के सुकरात

यह हमारा सौभाग्य है कि आज भारत के कोने–कोने में सत्य और प्रेम का प्रसार हो रहा है। जनता अपने साधारण जीवन में ईमानदारी का व्यवहार कर रही है। सरकारी कर्मचारी भी अपने कर्तव्य को ईमानदारी से पूरा करने का उपदेश दे रहे हैं। व्यापारी वर्ग से धाखेबाजी और चोरबाजारी दूर होती जा रही है। केवल भारतीय ही नहीं, दूसरे देश भी आचार्य श्री के उच्च विचारों से प्रभावित हो रहे हैं।

आचार्य श्री तुलसी एक अर्थ में आधुनिक भारत के सुकरात थे एक पारंगत तर्कविद् थे। उनकी मुख्य शिक्षा यह है कि सत्य केवल वाद–विवाद का विषय नहीं है। एक शताब्दी से अधिक समय की अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीय मानव को तर्क प्रधान बना दिया है। महात्मा गांधी, पं. मदनमोहन मालवीय और सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन ने इस बुराई के बहुत से निवारण किये हैं।

आचार्य श्री तुलसी ने भारत में मिथ्यावादियों की बुराई दूर करने के लिए एक नया ही मार्ग अपनाया। उनका कहना है कि मनुष्य को नैतिक अनुशासन का पालन करके सत्यमय और ईश्वर परायण जीवन बिताना चाहिए। संसार में हजारों धार्मिक नेता हो चुके हैं और पैदा होंगे परन्तु उनमें कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने लोगों के हृदय परिवर्तित किए हैं, संसार में प्रेम और शांति के स्त्रोत बहाये हैं और लोगों के दिलों को इसी दुनिया में स्वर्गीय आनंद से सराबोर करने के अमूल्य प्रयत्न किये हैं। बीसवीं सदी में हमारी इन आंखों ने भी एक ऐसे ही महापुरुष आचार्य श्री तुलसी जी को देखा है।

जज्बे की कड़ी धूप हो तो क्या नहीं मुमकिन,
यह किसने कहा मनुष्य बदलता ही नहीं है।

परिचय : आचार्य तुलसी ने राजस्थान के नागौर जिले का एक सुंदर व सुव्यवस्थित कस्बे लाडनूं में जन्म लिया। उनका जन्म वि. संवत् 1971 में हुआ । ओसवाल वंश, खटेड गौत्र, पिता का नाम झूमरमलजी, माता का नाम बदना जी तथा उनके छह भाई, तीन बहनें थीं। आचार्य तुलसी अपने भाइयों में सबसे छोटे थे। मध्यम वर्ग परिवार की परिस्थिति में आचार्य तुलसी का लालन–पालन हुआ। वहां 1000 से अधिक वर्ष पुराने जैन मन्दिर हैं। उसमें सरस्वती की एक दुर्लभ प्रतिमा है। जैन लोगों की यहां अच्छी बस्ती है। श्वेताम्बर व दिगम्बर दोनों परम्पराओं के अनुयायी यहां रहते हैं। आठ वर्ष की अवस्था में उन्होंने नन्दलालजी ब्राह्मण के पास अध्ययन शुरू किया। एक वर्ष उनके पास पढ़कर दो वर्ष तक हीरालाल जी जैन के स्कूल में अध्ययन किया। यह अपनी कक्षा में दो वर्ष मॉनीटर भी थे।

जीवन व्यक्तित्व : तुलसी के व्यक्तित्व में संवेदनशीलता, सहिष्णुता और उदारता की वृत्तियां मूल रूप से विद्यमान रही हैं जिसे अनेकांत दृष्टि ने और भी गहनता तथा व्यापकता प्रदान की है। अपनी अनाग्रही दृष्टि और विरोधों के सहअस्तित्व की स्वीकृति के कारण एक प्रकार का बौद्धिक अहिंसावाद ही कहा जा सकता है। वे प्रारम्भ से ही स्वप्नदर्शी रहे। उन्हें स्वप्न से कभी संतोष नहीं हुआ। आचार्य तुलसी एक व्यक्ति नहीं, बल्कि विशाल सांस्कृतिक संस्था थे। उनका तेजस्वी व्यक्तित्व अब एक गौरवपूर्ण प्रतिष्ठान बन गया है। आचार्य

तुलसी की पदयात्राएं महज संन्यासियों का पर्यटन या धर्मयात्राएं नहीं, बल्कि एक महान मानवीय आंदोलन है, सामाजिकता का सर्वश्रेष्ठ अभियान।

संन्यासियों के प्रति राग–विराग रखने वाले लोगों न आचार्य तुलसी के दिव्य–व्यक्तित्व को बार–बार विविदास्पद बनाने की कोशिश की लेकिन अणुव्रत दर्शन की शाश्वतता और सार्थकता को कोई मना नहीं कर सका। वे रवीन्द्रनाथ की तरह जैन विश्व भारती के नाभिकीय केन्द्र बन गये। नोबल की भांति जय तुलसी फाउंडेशन के प्रेरणा स्तम्भ बने। विनोबा भावे की तरह वे एक राष्ट्रीय संत ।

वैसे तो जैन दर्शन अपने आप में एक सम्पूर्ण मानवीय दर्शन है फिर भी आचार्य तुलसी जैनों के साथ–साथ जैनेतर प्रज्ञा में अधिक लोकप्रिय हुए। वे सादगी, त्याग और तपस्या को साधु जीवन का आधार मानते थे। अणुव्रत आंदोलन का प्रसार कर आचार्य श्री ने जनता के जीवन में एक बहुत बड़ी क्रांति कर दी।

यह हमारा सौभाग्य है कि आज भारत के कोने–कोने में सत्य और प्रेम का प्रसार हो रहा है। जनता अपने साधारण जीवन में ईमानदारी का व्यवहार कर रही है। सरकारी कर्मचारी भी अपने कर्तव्य को ईमानदारी से पूरा करने का उपदेश दे रहे हैं। व्यापारी वर्ग से धाखेबाजी और चोरबाजारी दूर होती जा रही है। केवल भारतीय ही नहीं, दूसरे देश भी आचार्य श्री के उच्च विचारों से प्रभावित हो रहे हैं।

आचार्य तुलसी ने हमेशा मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए सतत् संघर्ष किया। सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन ने भी कहा था कि चिड़ियों की तरह हवा में उड़ना एवं मछलियों की तरह पानी में तैरना सीखने के बाद अब हमें इन्सानों की तरह जमीन पर चलना सीखना चाहिए। आचार्य श्री भी एक स्नेहदिल, भावुक, अभिभावक की तरह अपनी इन संतानों को अंगुली पकड़ चेतना के पैरों से चलना सिखाते रहे।

मानवहित में अवदान : आचार्य श्री तुलसी आध्यात्मिक जगत के मनीषी थे किंतु समाज के हर एक दुख–दर्द के साथ वे आरंभ से ही संपर्क में रहे। तेरापंथ सम्प्रदाय के शीर्षस्थ स्थान पर आसीन होते हुए भी उन्होंने अपनी साधना के पटल को संकीर्ण नहीं होने दिया। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया और उस विचार को देशव्यापी बनाने के लिए वे उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक हजारों मील घूमे।

अणुव्रत आंदोलन ने लोक जीवन को जीने की कला दी। वे भारतीय जीवन के इस धर्म को प्रति क्षण जानते रहे कि आत्मा अमर है और शरीर मरणशील, फिर भी उन्होंने शरीर की उपेक्षा नहीं की। यही कारण है कि उनके धार्मिक आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना 'प्रेक्षाध्यान' कि देखा जाना शरीर को, मन को, प्राण को, अणु–अणु को कि कहां क्या दोष है, क्या खामी है ताकि उसे ध्यान की अग्नि में जलाया जा सके और तन–मन की निर्मलता का सहारा लेकर आत्मा के पुरुषार्थ को व्यक्त किया जा सके।

अणुव्रत अनुशास्ता साफ–साफ शब्दों में कहते हैं कि तुम अणुव्रती बनो, हम तुम्हें खुशहाल जीवन और सुसम्पन्न राष्ट्र देंगे। अणुव्रत और प्रसन्नता तथा सुसम्पन्नता ये दो बातें नहीं हैं, अपितु इनमें कारण–कार्य संबंध है। निश्चय मानिए अणुव्रती का जीवन सात्विक व सार्थक जीवन होगा। खुशहाली का जीवन होगा। अतः अणुव्रत अनुशास्ता के जन्म शती वर्ष पर उनके द्वारा प्रदत्त अणुव्रत को जीवन में उतारने और अणुव्रत धारा को तीव्र

गति से प्रवाहित करने का व्रत लेकर उस महामानव का जन्मदिवस मनाएं तभी महापुरुषों का जन्म दिवस मनाने की सार्थकता होगी।

पवन सूर्यवंशी, ग्यारहवीं
न्यू पिंक फ्लॉवर उ.मा. विद्यालय
इन्दौर मध्य प्रदेश

मानवता के अनन्य उपासक

उन्होंने पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक पैदल यात्रा कर महावीर की वाणी को, अहिंसा के सन्देश को दूर–दूर तक पहुंचाया। साहित्य जगत में उनकी सेवाएं अनुपम थीं। उनकी रचनाएं सैकड़ों पुस्तकों के रूप में विद्यमान हैं। उनकी सबसे महत्वपूर्ण देन 'आगम वाचना' है। उन्होंने विपुल–साहित्य के सृजन के साथ अनेक साहित्यकारों का भी निर्माण किया। उनके शासन काल का सारा साहित्य सरस्वती का विशाल भण्डार है।

अणुव्रत प्रर्वतक, युग प्रधान आचार्य श्री तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के नौवें आचार्य थे। राष्ट्रसंत गुरुदेव श्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से धर्म को व्यापक रूप दिया और सौहार्द एवं सर्वधर्म सद्भाव का वातावरण तैयार कर जन–जन को जोड़ने का प्रयत्न किया। उनके ऊर्ध्वमुखी दृष्टिकोण और उदात्त चिन्तन ने उनको अधिक लोकप्रियता एवं प्रसिद्धि प्रदान की। सन् 1971 में तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी.वी गिरि द्वारा उनको 'युगप्रधान' की उपाधि दी गई।

उनका जन्म लाडनूं (राजस्थान) के खटेड़ वंश में 20 अक्टूबर, 1914 को हुआ। उनके पिताजी का नाम झूमरमल जी एवं माता का नाम बदनाजी था। उनका बाल्यकाल मां की ममता, परिवार के अमित स्नेह एवं धार्मिक वातावरण में बीता। मात्र 11 वर्ष की आयु में बालक तुलसी का दीक्षा संस्कार लाडनूं में तेरापंथ धर्मसंघ के आंठवें आचार्य श्री कालूगणी द्वारा सम्पन्न हुआ।

आचार्य श्री तुलसी का मुनि जीवन अनुशासनमय था। वे संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, राजस्थानी भाषा के विद्वान थे। उन्होंने व्याकरण कोश, काव्य, दर्शन तथा न्याय विषयों का गंभीर अध्ययन किया। बीस हजार श्लोकों को कंठस्थ करना उनकी स्मृति का परिचायक था। सोलह वर्ष की आयु में विद्यार्थी मुनियों के शिक्षा केन्द्र का सफलता पूर्वक संचालन करने लगे।

संयमी जीवन की निर्मल साधना, विवेक का जागरण, सूक्ष्म ज्ञान का विकास, सहनशीलता, धीरता आदि विशेषताओं के कारण बाइस वर्ष की अल्प अवस्था में आचार्य श्री कालूगणी ने संत तुलसी को युवाचार्य पद का दायित्व प्रदान किया। चार दिन बाद ही आचार्य श्री कालूगणी के स्वर्गवास के बाद श्री तुलसी आचार्य पद पर आसीन हुए। तेरापंथ जैसे विशाल एवं मार्यादित धर्मसंघ को युवा आचार्य का नेतृत्व मिला। यह जैन संघ के इतिहास की विरल घटना थी। अवस्था एवं योग्यता का कोई अनुबन्ध नहीं होता।

आचार्य श्री तुलसी ने सर्वप्रथम प्रशिक्षण का कार्य अपने हाथ में लिया। उनकी दीर्घ–दृष्टि साध्वी समाज पर पहुंची। उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप साध्वी समाज के लिए बहुमुखी विकास के नये द्वार उद्घाटित हुए। आज धर्मसंघ में अनेक विदुषी साध्वियां हैं।
आचार्य श्री तुलसी के अनवरत परिश्रम एवं साध्वी प्रमुखा की लांडाजी की सतत् प्रेरणाओं से शिक्षा के क्षेत्र में साध्वी समाज गतिमान हुआ एवं आचार्य श्री कालूगणी का स्वप्न साकार हुआ। इनके शासन काल में तपोमय इतिहास भी ऊंचाइयों पर रहा। जनकल्याण की दृष्टि से उन्होंने 34 वर्ष की आयु में अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत एक नैतिक आचार संहिता है। 'संयमः खलु जीवनम्' अर्थात् 'संयम ही जीवन है' इस आन्दोलन का नारा है। अणुव्रत सर्वोदय है, वह सब के उदय की बात कहता है।

नैतिक अभियान की मशाल थामे आचार्य श्री तुलसी ने एक लाख कि.मी. की पदयात्रा की। गांव–गांव में नैतिकता का दीप जलाया। घर–घर में अध्यात्म की लौ जलाई। आचार्य श्री तुलसी के प्रयत्नों से अणुव्रत की आवाज गरीब की झोपड़ी से राष्ट्रपति भवन तक पहुंची। लाखों व्यक्तियों ने अणुव्रत के नियमों को स्वीकार किया। सभी राष्ट्रपति और प्रधानमंत्रियों ने इस अभियान की भूरि–भूरि प्रशंसा की। देशभर में एक नैतिक वातावरण बना। ''सादा जीवन उच्च विचार'' के प्रशिक्षण ने देशभर में एक नैतिक वातावरण बनाया व यह प्रशिक्षण देकर अर्थहीन मूल्यों, अंधविश्वासों एवं गलत परम्पराओं से मुक्त होने का बोध दिया। धर्म केवल परलोक सुधारने के लिए नहीं बल्कि वर्तमान जीवन जीने की कला है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था एवं 'जैन विश्व भारती' उनके जीवन काल की दो विशिष्ट उपलब्धियां हैं। आचार्य श्री तुलसी के उत्तराधिकारी प्रज्ञापुरुष श्री महाप्रज्ञ जी थे। उन्होंने अपने गुरु के मार्गदर्शन में प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान के अनेक प्रयोग दिये हैं जो मानव जाति के लिए कल्याणकारी सिद्ध हुए हैं। आचार्य श्री की हर प्रवृत्ति में मानवमात्र के कल्याण की भावना रहती है।

उन्होंने पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक पैदल यात्रा कर महावीर की वाणी को, अहिंसा के सन्देश को दूर–दूर तक पहुंचाया। साहित्य जगत में उनकी सेवाएं अनुपम थीं। उनकी रचनाएं सैकड़ों पुस्तकों के रूप में विद्यमान हैं। उनकी सबसे महत्वपूर्ण देन 'आगम वाचना' है। उन्होंने विपुल–साहित्य के सृजन के साथ अनेक साहित्यकारों का भी निर्माण किया। उनके शासन काल का सारा साहित्य सरस्वती का विशाल भण्डार है।
उन्होंने सुखी जीवन के तीन बहुमूल्य सूत्र दिए–*चिंता नहीं, चिन्तन करो। व्यथा नहीं, व्यवस्था करो। प्रशंसा नहीं, प्रस्तुति करो।*

आचार्य श्री तुलसी तेरापंथ धर्म संघ के सर्वोच्च अधिशास्ता थे, अनेक उपाधियों से अलंकृत थे, लेकिन किसी भी पद, सत्ता या उपाधि के साथ उनका चिपकाव नहीं था। उनके 60 वर्ष का शानदार शासनकाल तेरापंथ धर्मसंघ का सुनहरी शासनकाल था। सन् 1993 में आचार्य श्री ने सुजानगढ़ में प्रज्ञापुरुष श्री महाप्रज्ञ जी को अपने स्थान पर आचार्य नियुक्त कर अपने आचार्य पद का ऐसे विसर्जन कर दिया जैसे मनुष्य ओढ़ी हुई चादर को उतार कर रख देता है। इस तरह पद और सत्ता से अलिप्त कोई पहुंचा हुआ योगी ही हो सकता है।

महान दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा लिखित Living with purpose पुस्तक में 14 महान व्यक्तियों के जीवन का वर्णन है, उनमें से एक नाम आचार्य श्री तुलसी का भी है। गंगाशहर में गुरुदेव ने 15 दिन का एकान्तवास बोथरा भवन में किया। 16 जून, 1997 को गुरुदेव ने अपनी निजी डायरी में लिखा, अब मुझे संसार संलेखना करना चाहिए।' सुबह परामर्श के बाद लिखा, 'सात दिन अभी और देखा जाए।' ठीक सात दिन बाद 23 जून, 1997 को गुरुदेव ने महाप्रयाण कर दिया। उनको अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था। देश–विदेश के लाखों लोग अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने गंगाशहर पहुंचे। प्रत्येक आंखों में आंसू थे।

मानवता का अनन्य उपासक, जन–जन का मार्गदर्शक इस संसार से विदा हो गया। संसार भर में 2013–2014 में उनकी जन्म शताब्दी मनाई जा रही है। उनके विराट व्यक्तित्व को शत्–शत् नमन है।

सोनाली जैन, ग्यारहवीं
जिनवाणी भारती पब्लिक स्कूल,
सैक्टर–4, द्वारका, दिल्ली

जन–जागरण की बुलंद आवाज

आचार्य तुलसी के अणुव्रत की उदार व जन कल्याण की भावनाओं को देश–विदेश के सभी नेताओं तथा चिंतक–मनीषियों ने सराहा। अणुव्रत के लिए आचार्य तुलसी को युग– प्रधान की उपाधि से अलंकृत किया गया तथा अनेक राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्रदान किये गये। आचार्य तुलसी ने 'जैन विश्व भारती' की भी स्थापना की।

जैन धर्मगुरु व महान विचारक आचार्य तुलसी सामाजिक कुरीतियों के प्रबल विरोधी एवं समाज सुधारक थे। उनका जन्म 20 अक्टूबर, 1914 को राजस्थान के लाडनूं शहर में एक जैन व्यवसायी परिवार में हुआ था। तीव्र मेधा व सौम्य स्वभाव वाले बालक तुलसी में कुलगुरु आचार्य कालूगणी ने अनन्त संभावनाएं देख ली थीं। 11 वर्ष की उम्र में तुलसी दीक्षा लेकर मुनि बन गये।

गुरु के सान्निध्य में मुनि तुलसी ने संस्कृत, प्राकृत आगम ग्रंथों तथा जैन धर्म के गूढ़ रहस्यों को पूरी तरह आत्मसात कर लिया। अपनी सौम्यता, विनम्रता तथा विद्वता से वे धर्माचार्य के परम प्रिय हो गये थे तथा सदैव साथ रहते हुए सेवा व धर्मकार्य करते रहते थे। मुनि तुलसी यद्यपि बहुत कम उम्र के थे, तथापि अनेक बड़ी उम्र के साधक–साध्वियां उनके शिष्य थे।

सन् 1936 में मात्र 22 वर्ष की उम्र में ही आचार्य कालूगणी के निर्देशानुसार मुनि तुलसी को ही उनका उत्तराधिकारी नामांकित कर दिया। आचार्य तुलसी जैन संप्रदाय के मुख्य धर्मगुरु बने। सन् 1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ तो आचार्य तुलसी का मानना था कि सच्ची स्वतंत्रता तब होगी जब समाज में व्याप्त असंख्य कुरीतियां समाप्त होंगी तथा देश व विश्व का हर प्राणी शुद्ध व निश्छल जीवन जी सकेगा।

यह वह परिवेश था जब कुछ ही वर्षों पूर्व विश्वयुद्ध (द्वितीय) का भीषण नर संहार हुआ था तथा बंटवारे की त्रासदी से असंख्य लोग दुखी थे। समाज में स्वार्थी तत्वों का, भ्रष्टाचार, दहेज प्रथा, बाल विवाह तथा वृद्ध–विवाह का चलन जोरों पर था। अभाव होते हुए भी सम्पूर्ण बिरादरी तथा कहीं–कहीं तो पूरे गांव को मृतक भोज कराने की मजबूरी में आम आदमी पिसा जा रहा था तथा स्त्रियों पर अत्याचार व दमन तो लगभग हरेक समाज में प्रचलित था। विधवा को विशेष त्रास व अभाव में जीना पड़ रहा था। वे जन जागरण की बुलंद आवाज थे।

समाज के ऐसे ही वातावरण का अवलोकन कर आचार्य तुलसी ने निर्णय किया कि जब तक ये कुरीतियां दूर नहीं होतीं तथा नैतिक मूल्यों की स्थापना हर व्यक्ति के जीवन में नहीं होती, समाज व देश का विकास व प्रगति कदापि संभव नहीं। छुआछूत, भेदभाव, लोलुपता, भ्रष्टाचार से मुक्त एक नैतिक उत्थान की भावना के संचार से ही शांति, सुरक्षा व प्रगति संभव है।

आचार्य तुलसी यह भी जानते थे कि मानव मात्र का मानस समान दृढ़ता युक्त नहीं होता और मात्र धर्म व नीति की लम्बी–चौड़ी बातें सभी को आत्मसात भी नहीं होतीं। अतः नैतिक मूल्यों की स्थापना हेतु उन्होंने मानव मनोविज्ञान को समझते हुए, सिद्धांतों को क्रमिक रूप से टुकड़ों–टुकड़ों में बांट कर, समाज के लोगों से छोटे छोटे कदमों से आत्म नियंत्रण कर एक–एक सिद्धांत का पालन अथवा यों कहिए एक–एक बुराई को दूर करते जाने का क्रमिक कार्यक्रम समाज के सामने रखा जिसे नाम दिया अणुव्रत। (अणु–अल्प, छोटा, व्रत–संकल्प)।

अणुव्रत की विशेषता यह रही कि यह ऊपर से लादा दबाव नहीं बल्कि संबद्ध व्यक्ति द्वारा स्व–अनुशासन द्वारा स्वीकारा गया स्वयं से किया गया संकल्प था जिसमें एक–एक बुराई को छोड़ते जाने का क्रमिक कार्यक्रम था।

इस अणुव्रत को आचार्य तुलसी ने 2 मार्च, 1949 को उद्घोषित किया। अणुव्रत के मूल में चरित्र, नैतिकता की स्थापना, सत्य–परिग्रह आधारित जीवन, व सर्व कल्याण की पवित्र भावना थी। अणुव्रत के मूलभूत आधार स्तंभ थे– सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अचौर्य (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य।

अणुव्रत के अनुशीलन हेतु उन्होंने चित्त की एकाग्रता, शांति व शुद्ध चित्त पर जोर दिया। इनकी उपलब्धि हेतु उन्होंने 'प्रेक्षा–ध्यान' का प्रस्ताव प्रस्तुत किया ताकि एकाग्रचित्त से उपरोक्त सुंदर भावनाओं व विचारों को आत्मसात किया जा सके। नैतिक व आध्यात्मिक उन्नति के लिए अणुव्रत को, मात्र जैन धर्मावलंबियों को ही नहीं, समाज के हर वर्ग, जाति व वर्ण के व्यक्ति का आह्वान किया गया। अपनी असंख्य पद यात्राओं व भ्रमण काल में आचार्य तुलसी लोगों को अणुव्रत के अनुशीलन हेतु एक से अधिक संकल्प लेने को प्रेरित करते रहे।

आचार्य तुलसी के अणुव्रत की उदार व जन कल्याण की भावनाओं को देश–विदेश के सभी नेताओं तथा चिंतक–मनीषियों ने सराहा। अणुव्रत के लिए आचार्य तुलसी को 'युग प्रधान' की उपाधि से अलंकृत किया गया तथा अनेक राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्रदान किये गये। आचार्य तुलसी ने 'जैन विश्व भारती' की भी स्थापना की। उन्होंने लगभग 100 पुस्तकों की रचना की। अन्त में कहा जा सकता है कि आचार्य तुलसी के सभी अवदान मानवता के कल्याण की संजीवनी है।

सुमित शर्मा, दसवीं
सेंट जॉन स्कूल, आबू रोड,
राजस्थान

मानव–कल्याण के पुरोधा

आचार्य तुलसी ने कल्पना की कि 21वीं सदी के भारत का निर्माता मानव होगा और वह अणुव्रती होगा। अणुव्रती गृह संन्यासी नहीं होगा, वह भारत का आम आदमी होगा और एक नए जीवन दर्शन को लेकर भविष्य का मार्गदर्शन तय करेगा। आचार्य तुलसी ने पांच अणुव्रतों की कल्पना को समाज के समक्ष रखा, वे हैं–अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।

भारतीय संस्कृति की साहित्यिक परम्परा में सन्त साहित्य का विशिष्ट स्थान है। आचार्य तुलसी बीसवीं सदी की सन्त परंपरा के महान साहित्य सृष्टा युग पुरुष थे। उनका साहित्य परिमाण की दृष्टि से ही विशाल नहीं अपितु गुणवत्ता एवं जीवन मूल्यों को लोक जीवन में संचारित करने की दृष्टि से भी विशिष्ट है। आचार्य तुलसी ने सत्यम् शिवम् और सौन्दर्य की युगपत उपासना की है। इसीलिए उनका साहित्य मनोरंजन एवं व्यावसायिकता से ऊपर सृजनात्मकता को पैदा करने वाला है। उनके विचार सीमा को लांघकर असीम की ओर गति करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व किसी भी सहृदय को भाव विभोर करने में सक्षम है। उनके विराट व्यक्तित्व की उपमा नहीं की जा सकती।

बालवय से संन्यास के पथ पर प्रस्थित होकर क्रमशः आचार्य अणुव्रत अनुशास्ता, राष्ट्रसंत एवं मानव कल्याण के पुरोधा के रूप में विख्यात हुए हैं। काल के अनन्त प्रवाह में 80 वर्षों का मूल्य बहुत नगण्य होता है पर आचार्य तुलसी ने उद्देश्यपूर्ण जीवन जीकर जो ऊंचाइया एवं उपलब्धियां हासिल की हैं वे किसी कल्पना की उड़ान से भी अधिक है। जैन धर्म एवं तेरापंथ संप्रदाय से प्रतिबद्ध होने पर भी आचार्य तुलसी का दृष्टिकोण असांप्रदायिक रहा है। वे कहते हैं '' जैन धर्म मेरी रग–रग, नस –नस में रमा हुआ है किन्तु साम्प्रदायिक दृष्टि से नहीं व्यापक दृष्टि से। क्योंकि मैं साम्प्रदाय में रहता हूं पर सम्प्रदाय मेरे दिमाग में नहीं रहता। मैं सोचता हूं मानव जाति को कुछ नया देना है तो साम्प्रदायिक दृष्टि से नहीं दिया जा सकता। यही कारण है कि मैंने सम्प्रदाय की सीमा को अलग रखा और धर्म की सीमा को अलग।''

इसी व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर आचार्य तुलसी ने असाम्प्रदायिक धर्म का आन्दोलन चलाया, जो जाति, वर्ण, वर्ग, भाष, प्रान्त एवं धर्मगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव जाति को जीवन मूल्यों के प्रति आकृष्ट कर सके। इस असाम्प्रदायिक मानव धर्म का नाम है अणुव्रत आन्दोलन। आचार्य तुलसी ने धार्मिकता के साथ नैतिकता की नई सोच देकर अणुव्रत दर्शन को प्रस्तुत किया, जिसका उद्देश्य था मानवीय एकता का विकास, सहअस्तित्व की भावना का विकास, व्यवहार में प्रामाणिकता का विकास, आत्मनिरीक्षण की प्रवृत्ति का विकास व समाज में सही मानदण्डों का विकास।

आचार्य तुलसी ने कल्पना की कि 21वीं सदी के भारत का निर्माता मानव होगा और वह अणुव्रती होगा। अणुव्रती गृह संन्यासी नहीं होगा, वह भारत का आम आदमी होगा और एक नए जीवन दर्शन को लेकर भविष्य का मार्गदर्शन तय करेगा। आचार्य तुलसी ने पांच अणुव्रतों की कल्पना को समाज के समक्ष रखा, वे हैं–अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। वस्तुतः जैन धर्म में जिन पांच महाव्रतों की कल्पना साधु जीवन के लिए है उन्हीं को व्यावहारिक रूप देकर सामाजिक व्यक्ति के लिए अणुव्रत का नाम दिया जिसे कोई भी सामाजिक व्यक्ति अपने जीवन में उतार कर अपने जीवन को उन्नत बना सकता है।

अणुव्रत की व्यावहारिकता ही इनकी लोकप्रियता का कारण रही है। इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है– अहिंसा अणुव्रत की मान्याता के अनुसार कम से कम निरपराध त्रस जीव जैसे चलने–फिरने वाले प्राणियों का हनन नहीं होना चाहिए। एक सामाजिक व्यक्ति के लिए स्थावर जीवों की हिंसा से सर्वथा बच पाना कठिन है, परन्तु उसकी सीमा की जा सकती है।

अहिंसा हो और सत्य न हो तो अहिंसा जीवित नहीं रह पाती, इसीलिए अहिंसक श्रावक सत्य के प्रति निष्ठावान होते हैं। विश्व स्तर और आत्मस्थ रहते हुए भी अपने पाप रूपी कीचड़ का पक्षालयन करते हैं। सत्य अणुव्रत का सन्देश उन्होंने अपनी काव्य–पंक्तियों में इस प्रकार अभिव्यक्ति किया :

क्या कभी अहिंसा सत्य बिना जी सकती
सुई धागे के बिना वस्त्र सी सकती
अतएव अहिंसक सत्यनिष्ठ होता है
विश्वस्त स्वस्थ निज पाप–पंक धोता है।

इस प्रकार सत्य अणुव्रत का पालन करने वाला श्रावक पुष्ट आधार के बिना किसी पर दोषारोपण नहीं करता। क्रोध, लोभ, भय और द्वेष के वश किसी को अहितकारी असत्य नहीं बोलता, किसी के गोपनीय रहस्य का उद्घाटन नहीं करता, किसी को गलत पथदर्शन नहीं देता। जो जीवन नैतिकता से शून्य होता है वह वास्तव में शून्य है। इस दृष्टि से अचौर्य अणुव्रत संजीवन है, जो शून्यता को भरने वाला है। आर्थिक घोटाले किसी भी क्षेत्र में हों उनका समावेश चोरी माना जाता है। इस अणुव्रत के अनुसार प्रामाणिकता श्रावक जीवन का सुस्थिर सिद्धांत है।

इस प्रकार अचौर्य अणुव्रत का संदेश है कि कोई भी मनुष्य दूसरे के प्रति क्रूरतापूर्ण व्यवहार न करे। शरीरिक क्रूरता का संबंध हिंसा से व आर्थिक क्रूरता का संबंध अचौर्य अणुव्रत के साथ है। अतः चोरवृत्ति का परित्याग ही इसका मुख्य संदेश है। श्रावक का चौथा अणुव्रत है ब्रह्मचर्य। यह अपने द्वारा अपने जीवन का सुरक्षा है। भोग–लालसा को सीमित करने का सघन प्रशिक्षण इसी में निहित है। इस व्रत के श्रावक संतोषी होते हैं। इस प्रकार ब्रह्मचर्य बल आत्म सुरक्षा का सरल उपाय है और उन्मुक्त भोग की समस्या से बचने का प्रशिक्षण है। जिसका अर्थ है इच्छाओं को सीमित करना। आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है किन्तु आकांक्षाओं की पूर्ति असम्भव है। अतः आकांक्षाओं पर अंकुश इस महाव्रत के माध्यम से लगाया जा सकता है।

इस प्रकार अपरिग्रह अणुव्रत का पालन करने वाला केवल अर्थ के अर्जन और भोग का संयम ही नहीं करता बल्कि वह अर्थ की आसक्ति और अहम् से भी बचता है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत को असाम्प्रदायिक धर्म के रूप में प्रतिष्ठित किया। उनका कथन है इतिहास में ऐसे धर्मों की चर्चा है जिनके कारण मानव जाति विभक्त हो गयी जिन्हें निमित्त बनाकर लडाइयां लड़ी गयी हैं किन्तु विभक्त मानव जाति को जोड़ने वाले अथवा संघर्ष को शान्ति की दिशा देने वाले किसी धर्म की चर्चा नहीं है।

भावना विश्वकर्मा, दसवीं
केन्द्रीय विद्यालय, एन.टी.पी.सी
रामगुंडम, करीमनगर
आंध्र प्रदेश

राष्ट्रीय एकता के पक्षधर

आचार्य तुलसी राष्ट्रीय एकता के पक्षधर थे। उनका व्यक्तित्व पुरुषार्थ का परम पर्याय था। वे सृजनशील चेतना के धनी थे। वे एक महान धर्मगुरु के साथ समाज सुधारक भी थे। मेरी दृष्टि में गांधी के बाद आचार्य तुलसी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने व्यक्तित्व से देश और दुनिया को प्रभावित किया।

सन् 1914 में कार्तिक शुक्ल दूज को चंदेरी (लाडनूं) की धरती पर जन्म लेने वाले आचार्य तुलसी ने 11 वर्ष की उम्र में जैन दीक्षा स्वीकार कर जैन आगमों एवं भारतीय दर्शनों का गहन अध्ययन किया। अपने 11 वर्षीय मुनिकाल में 20 हजार पदों को कंठस्थ कर लेना, 16 वर्ष की उम्र में अध्यापन कौशल में पारंगत हो जाना, 22 वर्ष में तेरापंथ जैसे विशाल धर्म संघ के दायित्व की चादर ओढ़कर 61 वर्षों तक उसे बखूबी से निभाना महान संत आचार्य तुलसी के विलक्षण व्यक्तित्व का परिचायक है।

लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूरी।
चींटी ले शक्कर चली, हाथी के सिर धूरी।

कवि की इन पंक्तियों का जीवन निदर्शन है आचार्य तुलसी का जीवन। लघुता से प्रभुता के पायदानों का स्पर्श करते हुए चिरंतन विराटता के उत्तुंग चैत्य शिखर का आरोहरण कर गणपति से गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के रूप में विख्यात गण गौरीशंकर को नमन जिसने गुरुता का विसर्जन कर वस्तुतः गुरुता के उस गौरव शिखर का आरोहरण कर लिया, जहां पद, मद और कद समस्त सरहदें सिमटकर लघुता से प्रभुता में विलीन हो गईं। सचमुच कितना महान था वह मस्तना फकीर जब नेतृत्व की संपूर्ण क्षमताओं के बावजूद अपने उत्तराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञ में आचार्य पद संक्रांत कर आचार्य तुलसी ने पद विसर्जन का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

18 फरवरी, 1994 सुजानगढ़ का विशाल धर्म प्रांगण। कितना अपूर्व था वह क्षण जब आचार्य श्री तुलसी ने अपने 60 दशक के तेजस्वी प्रशासन को एकाएक अलविदा कहकर उत्कृष्ट आत्म–साधना का निर्णय लिया। उनकी इस उद्घोषणा के साथ मानव समाज चौंक उठा। पद त्याग के इस क्रांतिकारी कदम ने नाम, यश, पद और प्रतिष्ठा की भीषण विभीषिका से त्रस्त राजनीतिक एवं धार्मिक जगत में तहलका मचा दिया।

अपने शिष्य को आचार्य के रूप में स्वीकार कर गुरुता का सर्वाधिकार सौंपना विलक्षण है। अहम् विसर्जन की इस दुर्लभ घटना ने आचार्य श्री तुलसी को अध्यात्म की उस उच्च व्यास पीठ पर अधिष्ठित कर दिया जहां राष्ट्रसंत, लोकरत्न, भारत ज्योति जैसे ढेरों अलंकरण व उपाधियां इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार , हकीम–खांसूर जैसे संबोधन उनकी संतता की निर्मल आभा के सामने स्वयं गरिमा मंडित हो उठे।

20 अक्टूबर, 1914 कार्तिक शुक्ल दूज चंदेरी की धरती पर उगने वाले इस दूज के चांद ने अनुयायियों को ठंडक महसूस कराई वहीं सूरज की तरह तपना भी सिखाया। 22 वर्ष की उम्र में तेरापंथ जैसे विशाल धर्म संघ के दायित्व की चादर ओढ़कर 61 वर्षों तक उसे बखूबी से निभाना तथा इस दौरान स्वयं तरक्की का सफर तय

करते हुए अपने संपूर्ण धर्म संघ को युग की रफ्तार के साथ मोड़ देना उनकी जबरदस्त प्रशासनिक क्षमता, प्रतिभा, सूझबूझ का परिचायक है।

उन्होंने 34 वर्ष की उम्र में जहां अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया, वहीं तनावमुक्ति के लिए प्रेक्षाध्यान, चारित्रिक विकास के लिए शिक्षा में जीवन विज्ञान जैसे व्यापक आयामों का अवदान देकर सच्चे अर्थों में महान युग प्रवर्तक की भूमिका अदा की। ऐसे महान संत को नमन। भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। भारत की मिट्टी के कण–कण में महापुरुषों के उपदेश की प्रतिध्वनियां हैं। चाणक्य, आर्यभट्ट, महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के भारत का इतिहास विश्व में अपना वरेण्य स्थान रखता है। स्वर्णिम इतिहास की इसी पवित्र श्रृंखला में एक नाम है– अनुशास्ता, युग प्रधान आचार्य तुलसी का।

आचार्य तुलसी राष्ट्रसंत थे। देश की महान धरोहर थे। राष्ट्रीय एकता के पक्षधर थे। उनका व्यक्तित्व पुरुषार्थ की परम पर्याय था। वे सृजनशील चेतना के धनी थे। वे एक महान धर्मगुरु के साथ समाज सुधारक भी थे। मेरी दृष्टि में गांधी के बाद आचार्य तुलसी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने व्यक्तित्व से देश और दुनिया को प्रभावित किया। ऐसे अणुव्रत अनुशास्ता, मानवता के मसीहा और साधना के श्लाकापूर्ण महापुरुष को हमारा अन्तहीन नमन।

प्रज्ञा, दसवीं
टीनू पब्लिक स्कूल,
संगम विहार, दिल्ली

अनमोल गुणों के संप्रेषक

अनमोल गुणों के संप्रेषक गुरुदेव ने नैतिक उत्थान में अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को संजोया। यही कारण था कि भारत सरकार ने उन्हें 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार' से नवाजा और राजस्थान यूनिवर्सिटी ने उन्हें 'भारत ज्योति' कहा। गुरुदेव तुलसी इस धरा पर शरीर से चाहों अदृश्य हो गए हो, उनके अवदान अमर हैं, जो मानवता का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

आचार्य तुलसी बीसवीं सदी के आध्यात्मिक क्षितिज के प्रमुख व्यक्ति थे। उनका जन्म 1914 में राजस्थान के चूरू जिले के लाडनूं नामक स्थान में एक धार्मिक जैन व्यापारी के घर हुआ था। उनके पिता का नाम झूमरमल खटेड़ और माता का नाम बदनाजी था। उन्होंने 8 वर्ष की आयु में विद्यालय जाना प्रारम्भ किया। विक्रम संवत् 1982 में, तेरापंथ के आठवें आचार्य कालूगणी का आगमन लाडनूं में हुआ। उन्होंने बालक तुलसी की विलक्षण प्रतिभा से अत्यन्त प्रभावित होकर उन्हें जैन साधु बनाने का निश्चय किया।

आचार्य कालूगणी के सान्निध्य में बालक तुलसी ने ग्यारह वर्ष की अल्पायु में भागवती दीक्षा स्वीकार कर जैन आगमों तथा भारतीय दर्शनों का अध्ययन आरम्भ किया। सोलह वर्ष की आयु में वह अध्यापन कौशल में पारंगत हो गए। बाईस वर्ष की आयु तक उन्होंने बीस हजार पदों को कंठस्थ कर लिया था । मात्र बाइस वर्ष की आयु में वह तेरापंथ के आचार्य पद पर सुशोभित हुए।

सुप्रसिद्ध जैनाचार्य होते हुए भी वह संप्रदाय की सीमा रेखाओं से सदा ऊपर रहे। उनका दृष्टिकोण असाम्प्रदायिक था। जैन, हिन्दू, मुस्लिम, सिख या अन्य सम्प्रदायों को मानने वाले लोग भी उनमें आस्था रखते थे। जैन आचार्य तो वे थे ही, अपने कार्यों से वे जनाचार्य भी बन गये थे।

जब लोग उनका परिचय पूछते तब वे स्वयं अपना परिचय इस तरह से देते थे ''मैं सबसे महले मानव हूं। फिर मैं एक धार्मिक व्यक्ति हूं, फिर मैं एक साधनाशील जैन मुनि हूं और उसके बाद तेरापंथ संप्रदाय का आचार्य हूं।''

आचार्य तुलसी ने संप्रदाय से भी अधिक महत्व मानवता को दिया। मानवता के उत्थान के लिए उन्होंने विविध प्रकार के कार्यक्रम प्रारंभ किए थे। इसलिए वे जैन आचार्य की अपेक्षा एक मानवतावादी संत के रूप में अधिक जाने गये। आचार्य तुलसी ने मानव कल्याण के लिए अनेक अवदान दिए हैं, जिनमें जीवन विज्ञान, प्रेक्षा ध्यान, अणुव्रत, समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति चेतना, भारतीय संस्कृति एवं इतिहास को पोषित करने, महिला शिक्षा एवं महिला चेतना को समाज भुला नहीं पाएगा।

आचार्य श्री तुलसी द्वारा मानवता को दिए गये प्रमुख अवदानों में प्रमुख है अणुव्रत। 2 मार्च, 1949 को आचार्य श्री तुलसी ने देश की जनता के चरित्र के विकास के लिए अणुव्रत आंदोलन का प्रारंभ किया था। अणुव्रत का अर्थ है लघुव्रत। जैन धर्म के अनुसार श्रावक अणुव्रतों का पालन करते हैं, महाव्रत साधुओं के लिए बनाए जाते हैं। यही अणुव्रत और महाव्रत में अंतर है, अन्यथा दोनों समान हैं। अणुव्रत इसलिए कहे जाते है कि साधुओं के महाव्रतों की अपेक्षा वे लघु होते हैं। महाव्रतों में सर्वत्याग की अपेक्षा रखते हुए सूक्ष्मता के साथ व्रतों का पालन

होता है, जबकि अणुव्रतों का स्थूलता से पालन किया जाता है। अणुव्रत पांच होते हैं : अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।

अणुव्रत के आधार पर नैतिकता का मानदंड है संयम। संयम आत्माभिमुखी भी है तथा समाजाभिमुखी भी है। अपनी इन्द्रियों पर संयम करना आत्माभिमुखी कार्य भी है। अपनी इन्द्रियों पर संयम करना आत्मभिमुखी कार्य भी है, वह नैतिकता भी हो सकता है। अणुव्रत का मूल मन्त्र है 'संयमः खलु जीवनम्' अर्थात संयम ही जीवन है। इसका अर्थ है नैतिक कार्य वही है जहां संयम है। इसके अनुसार जिस कार्य के साथ संयम नहीं है, उस कार्य को कभी नैतिक नहीं कहा जा सकता ।

प्रेक्षाध्यान : यह मानव मन की पीड़ा को दूर करने का विज्ञान है। तनाव एवं डिप्रेशन के युग में प्रेक्षाध्यान जैसे अवदान को प्राप्त कर इंसान ने सुख की सांस ली थी। आचार्य तुलसी ने लगभग 70 वर्ष तक संयम और त्याग का जीवन प्रेक्षाध्यान की सहायता से जिया और उसके महत्व को उजागर किया।

जीवन विज्ञान : सही जीवन जीने का विज्ञान है। अमन से जीवन जीने का अद्‌भुत अवदान है। देश के उज्ज्वल भविष्य के निर्माता गुरुदेव तुलसी ने जीवन विज्ञान जैसे अवदान देकर नवनिर्माण की अहम् भमिका प्रस्तुत की।

आचार्य श्री तुलसी देश में नैतिक मूल्यों के तेजी से होते हुए पतन को देखकर बड़े चिंतित थे। उन्होंने यह महसूस किया था कि इस नैतिक पतन को अगर नहीं रोका गया तो राष्ट्र भीतर से खोखला हो जाएगा। अणुव्रत आंदोलन का प्रारंभ कर आचार्य तुलसी ने देश में नैतिक विकास का शंखनाद किया।

अनमोल गुणों के संप्रेषक गुरुदेव ने नैतिक उत्थान में अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को संजोया। यही कारण था कि भारत सरकार ने उन्हे 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार' से नवाजा और राजस्थान यूनिवर्सिटी ने उन्हें 'भारत ज्योति' कहा। गुरुदेव तुलसी इस धरा पर शरीर से चाहे अदृश्य हो गए हों, उनके अवदान अमर हैं, जो मानवता का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

वारिधि चन्द्रा, नौवीं
मोदी पब्लिक स्कूल,
दादाबाड़ी, कोटा, राजस्थान

सच्चे अर्थों में महान युग प्रवर्तक

मानवता के मसीहा गुरु देव तुलसी ने जीवन की अंतिम सांस तक संयम और त्याग को जिया और उसके महत्व को उजागर किया। भौतिकता से लिपटे विश्व की मूर्च्छा को दूर करने हेतु आध्यात्मिक संजीवनी बूटी दे कृतार्थ किया। दिवा–स्वप्नदृष्टा गणाधिपति तुलसी का संपूर्ण जीवन महान अवदानों का प्रदाता रहा। अनैतिकता, भ्रष्टाचार, हिंसा एवं आतंक जैसी विषताओं को दूर करने हेतु उनके अवदान वरदान बने। युगों–युगों तक उनकी यश कीर्ति व अवदान विश्व को नई प्रेरणा देते रहेंगे।

विश्व के मानचित्र पर प्रत्येक व्यक्ति अपना एक सुंदर चित्र देखना चाहता है। अपनी विशेष छवि बनाना चाहता है। अपनी विशेष पहचान बनाना चाहता है। अपनी विशेष पहचान बनाने के लिए व्यक्ति के अस्तित्व में निखार अपेक्षित है। व्यक्तित्व के निखार के तीन आधार हैं– आचार–विचार और व्यवहार में श्रेष्ठता। इनकी श्रेष्ठता व्यक्तित्व को शिखर सी ऊंचाई और समुद्र सी गहराई देती है।

अखिल विश्व में अपने श्रेष्ठ व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़ने वाले ऐसे आचार्य तुलसी ने सन् 1914 में कार्तिक शुक्ल दूज को चंदेरी, लाडनूं की धरती पर जन्म लिया। 11 वर्ष की उम्र में भागवती दीक्षा स्वीकार कर आगमों एवं भारतीय दर्शनों का गहन अध्ययन किया। 22 वर्ष की आयु में तेरापंथ जैसे विशाल धर्म संघ के दायित्व की चादर ओढ़कर 61 वर्षों तक उसे बखूबी से निभाया।

18 फरवरी, 1994 का सुजानगढ़ का विशाल धर्म प्रांगण कितना अपूर्व था जब आचार्य श्री तुलसी ने अपने 60 दशक के तेजस्वी प्रशासन को एकाएक अलविदा कह कर उत्कृष्ट आत्म–साधना का निर्णय लिया। इस उद्घोषणा के साथ मानव समाज चौंक उठा। पद त्याग के इस क्रांतिकारी कदम ने नाम, यश, पद और प्रतिष्ठा की भीषण विभीषिका से त्रस्त राजनैतिक एवं धार्मिक जगत में तहलका मचा दिया।

उन्होंने अपने शिष्य को आचार्य के रूप में स्वीकार कर लिया। अहम् विसर्जन की इस दुर्लभ घटना ने आचार्य श्री तुलसी जी को अध्यात्म की उस उच्च व्यास पीठ पर अधिष्ठित कर दिया जहां राष्ट्रसंत, लोकरत्न, भारत ज्योति जैसे ढेरों अलंकरण व उपाधियां, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, हकीम खांसूरी जैसे संबोधन उनकी संतता की निर्मल आभा के सामने स्वयं गरिमामय हो उठे।

चंदेरी की धरा पर उगने वाले इस दूज के चांद ने अनुयायियों को ठंडक महसूस कराई, वहीं सूरज की तरह तपना भी सिखाया। 22 वर्ष की उम्र में तेरापंथ जैसे विशाल धर्म को युग की रफ्तार के साथ मोड़ देना उनकी जबरदस्त प्रशासनिक क्षमता, प्रतिभा, सूझबूझ का परिचारयक है। उन्होंने जहां अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया वहीं तनाव मुक्त जीवन के लिए प्रेक्षाध्यान, चारित्रिक विकास, शिक्षा में जीवन विज्ञान जैसे व्यापक आयामों का अवदान देकर सच्चे अर्थों में महान युग प्रवर्तक की भूमिका अदा की।

देश की ज्वलंत राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में उनके अप्रतिम योगदान रहे हैं। सुप्रसिद्ध जैनाचार्य होते हुए भी उनके कार्यक्रम संप्रदाय की सीमा रेखाओं से सदा ऊपर रहे। उनका दृष्टिकोण असाम्प्रदायिक था। जैन आचार्य तो वे थे ही, अपने कार्यों से वे जनाचार्य भी बन गये। जैन, हिन्दू, मुस्लिम, सिख या अन्य संप्रदायों को मानने वाले लोग भी उनमें आस्था रखते थे।

उन्होंने एक समय यह महसूस किया था कि अगर समाज में अनैतिकता को नहीं रोका गया तो राष्ट्र भीतर से खोखला हो जायेगा। अणुव्रत आंदोलन का प्रारंभ कर आचार्य तुलसी ने देश में नैतिक विकास का शंखनाद किया।

विद्यार्थी, शिक्षक, राज्य कर्मचारी, व्यापारी राजनीतिज्ञ आदि सभी वर्ग के लोगों के लिए अनिवार्य रूप से पालन करने योग्य एक आचार संहिता का निर्माण कर प्रस्तुत किया गया। असल में यह विशुद्ध रूप से एक मानवीय आचार संहिता है, जिसे किसी भी धर्म–संप्रदाय को मानने वाले लोग अपना सकते हैं और एक अच्छा इंसान बन सकते हैं।

मानवता के मसीहा गुरुदेव तुलसी ने जीवन की अंतिम सांस तक संयम और त्याग को जिया और उसके महत्व को उजागर किया। भौतिकता से लिपटे विश्व की मूर्च्छा को दूर करने हेतु आध्यात्मिक संजीवनी बूटी दे कृतार्थ किया। दिवा–स्वप्नदृष्टा गणाधिपति तुलसी का संपूर्ण जीवन महान अवदानों का प्रदाता रहा। अनैतिकता, भ्रष्टाचार, हिंसा एवं आतंक जैसी विषताओं को दूर करने हेतु उनके अवदान वरदान बने। युगों–युगों तक उनकी यश कीर्ति व अवदान विश्व को नई प्रेरणा देते रहेंगे।

नकुल, नौवीं
लिटिल फेयरी पब्लिक स्कूल,
अशोक विहार, फेज–4, दिल्ली

आचार्य तुलसी की शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक

अहिंसा से ही समाज में प्रेम और करुणा की भावना जन्म लेती है एवं प्रेम ही एक विकसित सभ्यता का आधार है। आचार्य श्री का मत था कि जो व्यक्ति सभी प्रकार के भय से मुक्त हो एवं अहिंसा से ओत–प्रोत हो तो उस व्यक्ति की सभी समस्याओं का निराकरण स्वतः ही हो जाता है। जब तक हम अपने स्वार्थ से ऊपर नहीं उठते तब तक हमारी समस्याओं का निराकरण नहीं हो सकता है।

हमारे देश में समय–समय पर अनेक ऋषि मुनि, महात्मा–संत एवं ज्ञानी पुरुषों का जन्म होता रहा है। हमारा देश जब कभी पतन की राह पर जाने लगता है, चाहे वह पतन नैतिकता का हो या सामाजिक हो, धार्मिक हो चाहे सांस्कृतिक हो, ऐसे समय पर एक महापुरुष का उदय होता है और वह महापुरुष हमें पतन की राह से परे धकेलकर एक ऐसी राह पर ले जाता है जहां उच्च कोटि के जीवन मूल्य, नैतिकता सदाचार, संयम, अहिसा परोपकार आदि कूट–कूट कर भरे हों।

यह हमारे देश का इतिहास रहा है कि यहां समय–समय पर बुराइयों पर विजय प्राप्त करने के लिए किसी न किसी अवतारी पुरुष का जन्म हुआ। हमारे देश में राम का जन्म हुआ जिन्होंने रावण की बुराइयों का अन्त किया। कृष्ण ने जहां कंस का वध करके उसके पापों का अन्त किया। हमारे यहां कई समाज सेवक जैसे राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि का जन्म हुआ जिन्होंने देश में फैली कई कुप्रथाओं का अन्त किया।

इसी तरह से स्वामी विवेकानन्द का उदय हुआ जिन्होंने देश को धार्मिक उन्नति के शिखर पर स्थापित किया। महात्मा गांधी द्वारा देश को आजादी दिलाने एवं देश में नैतिक मूल्यों की स्थापना में उनके योगदान को भला कौन भुला सकता है। हमारे देश में ऐसे और भी कई सैकड़ों महापुरुष हुए जिन्होंने समय–समय पर धरती पर अवतरित होकर हमें एक नई राह दिखाई ।

महापुरुषों की इस कड़ी में एक नाम और है और वह नाम है आचार्य तुलसी का। आचार्य तुलसी द्वारा नैतिकता के उत्थान के संदर्भ में जो शिक्षाएं दी गईं वे निश्चित रूप से किसी भी मनुष्य के चरित्र को उच्च कोटि के शिखर पर स्थापित करने में सक्षम हैं।

जीवन परिचय : आचार्य तुलसी का जन्म 20 अक्टूबर, 1914 को राजस्थान के लाडनूं नामक कस्बे में हुआ। उनके पिता का नाम श्री झूमरमल एवं माता का नाम बदना देवी था। वे जैन धर्म की तेरापंथ शाखा के नौवें आचार्य थे। उन्होंने न केवल तेरापंथ एवं जैन धर्म के विकास हेतु अपितु समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए अनेक कार्य किए।

पूरे देश भर में चलाए गये अणुव्रत आन्दोलन से उन्होंने ख्याति प्राप्त की। आचार्य श्री द्वारा लाडनूं में जैन विश्व भारती संस्थान की भी स्थापना की गई। उन्होंने सौ से भी अधिक पुस्तकें अपने जीवन काल में लिखीं। उन्होंने

अपने जीवन काल में लगभग एक लाख कि.मी. पैदल यात्रा की। अपनी यात्राओं के दौरान उन्होंने लोगों को जागृत करने का कार्य किया।

आचार्य तुलसी लगभग 25 वर्षों तक जैन धर्मावलम्बियों की तेरापंथ शाखा के प्रमुख रहे। इससे पूर्व आचार्य कालूगणी तेरापंथ शाखा के आठवें आचार्य थे एवं आचार्य तुलसी के पारिवारिक गुरु भी थे। आचार्य कालूगणी के प्रभाव से ही उन्होंने दीक्षा प्राप्त की एवं जैन मुनि बन गए। आचार्य कालूगणी ने उनकी योग्यता को बचपन से ही परख लिया एवं इस तरह से वे उनके उत्तराधिकारी बन गए। उस समय उनकी आयु मात्र बीस वर्ष ही थी, इस अल्पायु में ही उन पर देश भर में फैले लाखों जैन धर्म के अनुयायियों के प्रति उनकी जिम्मेदारी का कार्य आ पड़ा। 23 जून, 1997 को आचार्य श्री तुलसी का निधन हुआ। अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से दी गई उनकी शिक्षाएं आज भी उतनी ही प्रासंगिक है।

अणुव्रत के संदर्भ में किये गए कार्य : लोगों में चेतना जागृत करने के उद्देश्य से उन्होंने एक मार्च, सन् 1949 से अणुव्रत आन्दोलन की शुरूआत की। उस समय देश अंग्रेजों की गुलामी से आजाद होकर भौतिकवाद की ओर अग्रसर हो रहा था एवं समाज में भी नैतिकता अपने पतन की ओर जा रही थी।

आचार्य श्री का मानना था कि मनुष्य सुख–सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए एक रोबोट की तरह कार्य कर रहा है जबकि लालच, क्रोध, उत्कंठा, घमण्ड आदि उसे नैतिक पतन की ओर धकेलते जा रहे हैं। समाज में नैतिकता एवं महान धार्मिक परम्पराओं के प्रचार–प्रसार के लिए ही उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन की शुरूआत की। इस हेतु उन्होंने तीन 'अ' शब्दों पर बल दिया अभय, अहिंसा और असंग। उन्होंने संसार को अभय रहने का सन्देश दिया।

उनका कहना था कि यह संसार जिसमें हम रहते हैं, कई प्रकार की चिन्ताओं एवं दुःखों से भरा हुआ है। बीमारी बुढ़ापा, मृत्यु आदि चितांओं को हम प्रभु की उपासना के द्वारा शांत कर सकते हैं। अहिंसा के बारे में उनका विश्वास था क यदि प्रत्येक मनुष्य की यह सोच हो कि उनके भीतर कोई देवीय शक्ति विद्यमान है तो उस व्यक्ति का झुकान निश्चित रूप से दूसरों को चोट पहुंचाने का नहीं हो सकता है।

अहिंसा से ही समाज में प्रेम और करुणा की भावना जन्म लेती है एवं प्रेम ही एक विकसित सभ्यता का आधार है। आचार्य श्री का मत था कि जो व्यक्ति सभी प्रकार के भय से मुक्त हो एवं अहिंसा से ओत–प्रोत हो तो उस व्यक्ति की सभी समस्याओं का निराकरण स्वतः ही हो जाता है। जब तक हम अपने स्वार्थ से ऊपर नहीं उठते तब तक हमारी समस्याओं का निराकरण नहीं हो सकता है।

आचार्य श्री द्वारा सुखी जीवन के पांच सिद्धांत भी बताए गये हैं जो पंचशील के पांच सिद्धांत भी बताए गए हैं जो पंचशील के नाम से जाने जाते हैं। इन पांच सिद्धांतों में अहिंसा, सत्य, आस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह है। आचार्य तुलसी द्वारा अपने अनुयायियों को अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से असंग का सिद्धांत भी दिया गया। उनका मानना था कि जब हम इस संसार में कोई कार्य करते हैं तो उस कार्य के परिणाम से विरक्त रहते है जो कि अनुचित है, हमें कर्म के परिणाम को सदैव दृष्टिगोचर रखना चाहिए।

आचार्य तुलसी द्वारा प्रारम्भ किए गये अणुव्रत आन्दोलन को न केवल देश में अपितु विदेशों में भी प्रसिद्धि प्राप्त हुई। महान नेता स्व. श्री जयप्रकाश नारायण द्वारा एक बार यहां तक कहा गया कि आचार्य तुलसी महात्मा गांधी द्वारा शुरू किये गये कार्यों को आगे ले जा रहे हैं। उन्होंने अपने अणुव्रत आन्दोलन के दौरान लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजग कराया एवं साथ ही लोगों को अपने सामान्य व्यवहार में ईमानदारी एवं पारदर्शिता की शपथ दिलाई। उन्होंने लोगों को चुनाव में गलत तरीके नहीं अपनाने की भी शपथ दिलाई। आचार्य तुलसी का अणुव्रत आन्दोलन सभी अर्थों में आजादी के बाद देश की पुनःस्थापना हेतु उठाया गया आवश्यक कदम बन गया।

आधुनिक समय में आचार्य तुलसी की प्रासंगिकता : आचार्य तुलसी द्वारा दिए गये संदेश मानवता के लिए भी उतने ही उपयोगी हैं जैसे कि पूर्व में थे। आचार्य तुलसी द्वारा दिया गया अहिंसा का संदेश आज के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में जहां चारों और हिंसा, अलगाववाद,आतंकवाद का बोलबाला है, कहीं अधिक प्रासंगिक है। आचार्य तुलसी का यह कथन कि मनुष्य की धार्मिक वृत्ति ही उसकी सुरक्षा करती है, धार्मिक व्यक्ति दुख को सुख में बदलना जानता है। धार्मिक वृत्ति बनाए रखने वाला व्यक्ति कभी दुखी नहीं हो सकता । सच्चे धार्मिक व्यक्ति के दृष्टिकोण में कभी लाभ–हानि वाली संकीर्णता नहीं होती। उनके ये विचार आधुनिक समय में भी बहुत ही प्रासांगिक है। उनके प्रेम एवं करुणा के सन्देश आज भी उपयोगी एवं आवश्यक है।

शिक्षाएं एवं मानवता को योगदान : आचार्य तुलसी की शिक्षाओं एवं मानवता के लिए उनके योगदान को हम निम्न बिन्दुओं द्वारा रेखांकित कर सकते हैं :

- आचार्य तुलसी का मानना था कि लालच, क्रोध, उत्कंठा, घमण्ड आदि हमें नैतिक पतन की ओर ले जाते हैं, अतः मनुष्य को इन सभी बुराइयों से बचना चाहिए।
- आचार्य तुलसी का यह भी मानना था कि हमें कभी किसी भी प्रकार की हिंसा का सहारा नहीं लेना चाहिए। अहिंसा से शान्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।
- आचार्य तुलसी द्वारा मानवता को अभय रहने का सन्देश भी दिया गया। उनका मानना था कि प्रभु की उपासना द्वारा हम अपने मन को शान्त रख सकते हैं।
- अपने असंग सन्देश द्वारा आचार्य श्री ने हमें यह शिक्षा दी कि हमें अपने कर्मों के परिणामों को दृष्टिगोचर रखते हुए कार्य करना चाहिए।
- उन्होंने हमें सत्य के मार्ग पर चलने के साथ ही आस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह के सिद्धांतों पर चलने की शिक्षा दी।
- आचार्य श्री ने सदैव सामाजिक कुप्रथाओं एवं रुढ़ियों को तोड़ने का प्रयास किया। उनका सदैव ही यह मानना था कि अर्थहीन रुढियां विकासशील समाज के विकास की राह में अवरोध उत्पन्न करती हैं।
- आचार्य तुलसी का मानना था कि संयम, शालीनता, समर्पण एवं सहिष्णुता में रहकर ही नारी गौरवशाली इतिहास का सृजन कर सकती है। नारी सजावट और प्रदर्शन की नहीं अपितु श्रद्धा, ममता, स्नेह और पवित्रता का प्रतीक है।

यदि हम आचार्य तुलसी द्वारा हमें प्रदान किये गए ज्ञान, जो कि धार्मिक जीवन, भय से मुक्ति, प्रेम, करुणा एवं अहिंसा के बारे में है, को विश्व के कोने–कोने में फैलाने में सफल होते हैं तो हम निश्चित रूप से लोगों का चरित्र उन्नत करने में मदद कर सकते हैं। आचार्य तुलसी द्वारा स्थापित अणुव्रत संघ वर्तमान में आचार्य श्री की शिक्षाओं के प्रचार–प्रसार हेतु कार्य कर रहा है।

आयुषी काकानी नौवीं
बाल निकेतन सी.सै. स्कूल,
गांधी सेवा सदन, राजसमंद, राजस्थान

क्षमा–करुणा के ज्योति–कलश

वे भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक थे। प्राचीन ऋषि परम्परा के संवाहक थे। तेजो दीप्त मुख मंडल पर ज्ञान की गरिमा और संयम की अपूर्व आभा की झलक, कमल–दल सी खिली आंखों में अदम्य विश्वास की चमक, अन्तःकरण से छलकते करुणा और क्षमा के ज्योति कलश, तेजस्विता और मनस्विता के शिखर थे।

कुछ व्यक्ति इतिहास की रचना करते हैं और कुछ व्यक्तियों द्वारा इतिहास निर्मित होता है। इतिहास रचने की क्षमता बहुत लोगों में होती है। इतिहास पुरुषों की अछूती पांत में जिनका नाम प्रभा स्वर कड़ी के रूप में जुड़ा है, वे हैं अध्यात्म के कल्पवृक्ष आचार्य श्री तुलसी। वे धर्म समन्वय और भावात्मक एकता के प्रतिष्ठाता और स्वयंभू इतिहास पुरुष थे। आचार्य श्री के अवदान से इतिहास समृद्ध बना और परम्पराएं प्रकाशित हो उठीं।

तेरापंथ जैन धर्म के आचार्य श्री तुलसी का जन्म राजस्थान के लाडनूं क्षेत्र में कार्तिक शुक्ल 2 सवंत्, 1971 में हुआ था। बाद में वे तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य बने। उनके व्यक्तित्व, कृतित्व और नेतृत्व को किसी खास फ्रेम में नहीं मढ़ा जा सकता है। वे भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक थे। प्राचीन ऋषि परम्परा के संवाहक थे। तेजो दीप्त मुख मंडल पर ज्ञान की गरिमा और संयम की अपूर्व आभा की झलक, कमल–दल सी खिली आंखों में अदम्य विश्वास की चमक, अन्तःकरण से छलकते करुणा और क्षमा के ज्योति कलश, तेजस्विता और मनस्विता के वे शिखर थे। ऐसे व्यक्ति की जीवन यात्रा एक जीवन्त व्यक्तित्व की ज्योति यात्रा है।

संघर्षों में अपराजेय पराक्रम और धृति, महान, सृजन धर्मिता, किसी भी व्यक्ति में छिपी प्रतिभा की परख, विकास की संभावनाओं को उजागर करने की विलक्षण क्षमता, सही समय पर सही निर्णय लेने और उसे तत्काल क्रियान्वित करने की योग्यता, कठोर आत्म संयम इन सबके सामन्जस्य ने आचार्य तुलसी के रूप में एक सतरंगी एवं फौलादी व्यक्तित्व को निर्मित कर दिया। दृढ़ संकल्प, अप्रतिम नेतृत्व–कौशल और जागरुक पुरुषार्थ के बूते पर उन्होंने अछूती ऊचांइयों को छुआ।

मनुष्य परम सत्य के जितना निकट होता है, वह उतना ही अधिक शक्ति का स्रोत बनता है। तेरापंथ धर्म संघ की शासन प्रणाली संचालित है। आचार्य श्री तुलसी एक अनुशासनप्रिय व्यक्तित्व थे। आचार्य श्री तुलसी उदारवादी धर्म गुरु थे। उनका कार्य क्षेत्र विशाल था और कार्यक्रम व्यापक थे। वे राष्ट्र के चरित्र उन्नयन के पुरोधा थे। नैतिक जागरण के मसीहा थे। अणुव्रत के माध्यम से उन्होंने मानवीय मूल्यों की पुनः स्थापना के लिए वर्षों भगीरथ प्रयत्न किया। आज अणुव्रत विचारधारा अन्धकार से प्रकाश की और ले जाने वाली एक ज्योति है।

भारतीय लोक चेतना में आचार्य श्री तुलसी राष्ट्र संत के रूप में प्रतिष्ठित थे, तथापि उनका कृतित्व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उभरा हुआ है। आज भी आचार्य श्री तुलसी का प्रभाव अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिजों को छू रहा है। अणुविभा संस्थान के माध्यम से आचार्य श्री का संदेश विदेशों तक पहुंचा, है, उसे पश्चिमी विद्वानों ने बहुत ही सराहा और अपनाया है।

आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य में सम्पन्न हुए अन्तर्राष्ट्रीय शांति और अहिंसा सम्मेलनों में विभिन्न देशों के विद्वानों की भारी उपस्थिति उनकी अन्तर्राष्ट्रीय प्रभावशीलता का प्रमाण है। यही कारण है कि जैन विश्व भारती

में समय–समय पर जापान आदि देशों के लोग अपने–अपने दलों में प्रेक्षा–प्रशिक्षण या शोध आदि के उद्देश्य से आते रहते हैं। आचार्य श्री तुलसी के व्यक्तित्व, वाणी और व्यवहारों में उनकी दिव्यता के दर्शन होते थे। जैन धर्म, अणुव्रत दर्शन होते थे।

जैन धर्म, अणुव्रत दर्शन, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान तथा अनेक प्राच्य विद्या शाखाओं में शिक्षित–प्रशिक्षित नए संन्यासी और संन्यासिनी जो समण, समणी कहलाते हैं, आचार्य तुलसी का संदेश लेकर अमरीका, जापान, रुस आदि देशों में जाते हैं और जैन धर्म, तेरापंथ एवं आचार्य श्री तुलसी द्वारा स्थापित लोक मंगलकारी प्रवृत्तियों का परिचय देते हैं।

आज समण–समणियों को विदेशों में अणुव्रत प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण देने एवं जैन दर्शन पर प्रवचन करने के लिए विभिन्न विश्वविद्यालय में निमंत्रित किया जा रहा है। यह सब आचार्य श्री के अलौकिक व्यक्तित्व और परम पुरुषार्थ का ही सुफल है। उन्होंने धर्म और अध्यात्म को नए संदर्भ दिए थे, नई व्याख्या दी। विश्व मानव की सुख–शांति हेतु किए जा रहे उनके लोकोत्तर प्रयत्नों ने ही उन्हें विश्व प्रतिष्ठित किया है। आचार्य श्री तुलसी का व्यक्तित्व न केवल व्यापक है बल्कि कई दृष्टियों से अद्भुत भी है। वे धर्म क्रान्ति के सूत्रधार थे। असाम्प्रदायिक धर्म के प्रवक्ता थे। आचार्य तुलसी समग्र मानव मात्र के कल्याण के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहे।

अणुव्रत को सहज ग्रहणीय, प्रभावी व व्यावहारिक बनाने के लिए उन्होंने उसमें प्रेक्षाध्यान और जीवन–विज्ञान का भी समावेश किया। संक्षेप में कहें तो 'अणुव्रत' मानवीय मूल्यों की वह न्यूनतम आचार्य संहिता है जिसका पालन करके कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी धर्म, जाति या सम्प्रदाय का हो, अणुव्रती बन सकता है।

तेरापंथ संप्रदाय में नौवें पट्टधर एवं अणुव्रत के आंदोलन के प्रर्वतक आचार्य तुलसी विलक्षण प्रतिभा के धनी और प्रखर शक्ति के पुंज थे। आचार्य श्री तुलसी के मन में बचपन से ही धर्म के प्रति आस्था रही है और ग्यारह वर्ष की अल्पायु में उन्होंने मुनि दीक्षा ले ली। बाईस वर्ष की अवस्था में तेरापंथ के अष्टमाचार्य श्री कालूगणी ने उन्हें आचार्य पद सौंपा। जबसे वे अपने धर्मसंघ के आचार्य पद पर आसीन हुए, उन्होंने अनेक क्रांतिकारी कदम उठाए। उन्होंने आजीवन आत्मसाधना तो की ही, साथ ही अपनी संवेदना के पटल को व्यापक किया।

जब तक मनुष्य अच्छा नहीं बनेगा समाज अच्छा हो नहीं सकता। उनकी इसी मान्यता में से अणुव्रत की गंगोत्री का उदय हुआ। अणुव्रत जीवन विज्ञान शिक्षा द्वारा जीवन निर्माण की प्रेरणा देता है जिसमें बाल्य अवस्था से ही मूल्यपरक शिक्षा द्वारा संस्कारों को अंतर की गहराइयों में पहुंचाने की क्षमता है।

आज आचार्य तुलसी हमारे बीच नहीं हैं किंतु उनके सक्षम प्रतिनिधि आचार्य श्री महाश्रमण के सक्षम नेतृत्व में उनका अणुव्रत आंदोलन सतत् गतिमान है। यह आंदोलन के सुनहरे भविष्य का सूचक है।

मोनिका जैन, दसवीं
वर्धमान शिक्षा मन्दिर, दरियागंज, दिल्ली

धर्म क्रांति के सक्षम सूत्रधार

आचार्य तुलसी के जन–जागरण अभियान का एक प्रमुख स्तंभ रहा है– प्रवचन। जलते दीप की लौ की तरह यह बात बहुत स्पष्ट है कि उनक प्रवचनों से संबोध प्राप्त कर हजारों लोगों ने अपने जीवन की दिशा और दशा को बदला है। उन्होंने असंयम से संयम की ओर चरणन्यास किया है। हैवानियत के उजाड़ को छोड़ मानवता का राजपथ पकड़ा है। वे दुर्व्यसनों से मुक्त होकर सात्विक जीवन जीने के लिए संकल्पित हुए हैं।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जिन दो–चार–पांच व्यक्तियों ने युग चेतना और युग चिन्तन को गहराई से प्रभावित किया है, उनमें आचार्य तुलसी का नाम अत्यन्त गौरव के साथ लिया जाता है। एक सम्प्रदाय विशेष की वेशभूषा में रहते हुए, उसकी आचार संहिता को पालते हुए तथा उसके नेतृत्व के दायित्व का निर्वहन करते हुए उन्होंने जिस असाम्प्रदायिक कार्य–शैली से जन–जीवन में मानवीय, नैतिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए सुदीर्घ काल तक एक सघन अभियान के रूप में प्रयत्न किया, उसे इस शताब्दी की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना के रूप में उल्लेखित किया जा सकता है।

अपने इस अभियान के कारण आचार्य तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के कीर्तिधर अनुशास्ता तथा जैन धर्म के विशिष्ट प्रभावक आचार्य से भी बहुत आगे जनधर्म, मानव धर्म के प्रखर प्रवक्ता और धर्मक्रांति के सक्षम सूत्रधार के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। उनके द्वारा प्रवर्तित 'अणुव्रत' को मानवीय, नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों के संरक्षण, जागरण, विकास के अग्रणी आंदोलन के रूप में व्यापक पहचान मिली। आचार्य तुलसी और अणुव्रत राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी चर्चा और जिज्ञासा के विषय बन गए।

आचार्य तुलसी और अणुव्रत दर्शन की यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि ही माननी चाहिए कि आज के शीर्षस्थ राजनेता, प्रमुख समाजशास्त्री, मूर्धन्य साहित्यकार, प्रबुद्ध पत्रकार, उच्च स्तरीय वैज्ञानिक इस बात को बहुत गंभीरता से अनुभव करने लगे हैं कि जब तक मानवीय, नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों की सुरक्षा और जागरण की और ध्यान केन्द्रित नहीं किया जाएगा, तब तक किसी भी समाज और राष्ट्र का समुचित विकास नहीं हो सकेगा।

आचार्य तुलसी के जन–जागरण अभियान का एक प्रमुख स्तंभ रहा है– प्रवचन। जलते दीप की लौ की तरह यह बात बहुत स्पष्ट है कि उनके प्रवचनों से संबोध प्राप्त कर हजारों लोगों ने अपने जीवन की दिशा और दशा को बदला है। उन्होंने असंयम से संयम की ओर चरणन्यास किया है। हैवानियत के उजाड़ को छोड़ मानवता का राजपथ पकड़ा है। वे दुर्व्यसनों से मुक्त होकर सात्विक जीवन जीने के लिए संकल्पित हुए हैं। जातिवाद, वर्णवाद, भाषावाद आदि की संकीर्णताओं एवं कुरुढ़ियों के दूषित वातावरण से निकलकर प्रगतिशीलता के खुले मैदान में आए हैं।

ये सारी स्थितियां यह दर्शाती हैं कि आचार्य तुलसी के प्रवचनों में व्यक्ति–व्यक्ति के जीवन को रूपंतरित करने की एक अद्‌भुत गुणात्मकता थी। उनका प्रवचन–कौशल भी विलक्षण था। वे मात्र मुंह से ही नहीं बोलते थे, अपितु उनका अंग–अंग और रोआं–रोआं बोलता था। कथ्य के भाव के अनुरूप बनने वाली उनकी मुद्रायें देखते ही बनती थीं। उन मुद्राओं के आधार पर उनके भावों को न समझने वाले लोग भी एक सीमा तक उनके भावों को समझने में सफल हो जाते थे।

उनके प्रवचनों में संस्कृति, इतिहास, दर्शन, तत्व, संगीत कथा, दृष्टांत आख्यान प्रेरणा की मिलीजुली जो इन्द्रधनुषी छटा बिखरती थी, वह इतनी चित्ताकर्षक होती थी कि शिक्षित–अशिक्षित, ग्रामीण–शहरी बालक–वृद्ध, महिला–पुरुष, हरिजन–महाजन, आस्तिक–नास्तिक सभी तरह के लोग भित्ति–चित्रित और भाव–विभोर से उनके प्रवचन के एक–एक शब्द को पीते हुए से नजर आते थे। इस सन्दर्भ में सर्वाधिक उल्लेखनीय बात तो यह है कि उनके प्रवचन के वाक्य–वाक्य में उनकी जीवन अनुभूति ध्वनित होती थी, शब्द–शब्द में उनकी साधना रूपयित होती थी, अक्षर–अक्षर में उनकी आत्मा प्रतिबिम्बित होती थी और ऐसी स्थिति में किसी भी प्रवचनकार के प्रवचन में व्यक्ति के अन्तस्थल का स्पर्श करने की शक्ति पैदा हो जाना बहुत स्वाभाविक है।

आचार्य तुलसी प्रायः एक बार तो प्रतिदिन प्रवचन करते ही थे, अनेक बार दो–दो, तीन–तीन बार भी बोलते थे। कभी–कभी तो दिन में चार–चार बार प्रवचन करने का प्रसंग भी बन जाता था। इस क्रम से उन्होंने लगभग साठ वर्षों तक प्रवचन किया। यदि छह दशकों की इस सुदीर्घ अवधि के एक–एक प्रवचन का व्यवस्थित संग्रहण हो पाता तो वह इस शताब्दी की सफल धर्मक्रान्ति के इतिहास का एक दुलर्भ दस्तावेज होता, जन जागरण के पुनीत अभियान का एक प्रेरक आलेख बनता पर अनेक वर्षों तक प्रवचन संग्रह की सुस्पष्ट चेतना एवं समुचित व्यवस्था के अभाव में यह संभव नहीं हो सका। परिणामतः उनके प्रवचनों का बहुतांश अनन्त में विलीन हो गया। निश्चय ही यह एक अपूरणीय क्षति हुई है। पर जो शेषांश बचा है, वह भी अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण है। कहना चाहिए कि वह सन्त–साहित्य की एक अमूल्य निधि है।

उस समय जब देश में जनतंत्र नया ही नया था, देश की आचार–श्रृंखला ढीली पड़ गयी थी। कहना चाहिए, आचार का भयंकर दुष्काल सा पड़ गया था। यह एक स्वाभाविक बात है कि राष्ट्र में जिस समय जिस चीज का ज्यादा अभाव होता है उसकी पूर्ति का विशेष प्रयास किया जाता है। यदि अनाज की कमी होती है तो अनाज का उत्पादन बढ़ाने के लिए विशेष प्रयत्न किया जाता है। इस प्रकार जब देश में आचार की बहुत क्षति हो गई थी इस क्षेत्र में चिंतन करने वाले विचारकों का ध्यान उस और गया। आचार्य तुलसी ने अपनी सीमाओं का ध्यान रखकर आचारात्मक रूपरेखा तैयार की, उसका नाम अणुव्रत आंदोलन रखा। अणुव्रत यह नाम भी आचार पर ही है। व्रत, आचार संयम–ये सब एकार्थक हैं। अणुव्रत अर्थात् छोटे–छोटे व्रत। छोटे–छोटे इसलिए कि वे बहुसंख्यक लोगों के लिए ग्राह्य बन सकें।

अणुव्रत आंदोलन का प्रथम वार्षिक अधिवेशन देश की राजधानी दिल्ली में हुआ था। यह आंदोलन प्रतिवर्ष पर्याप्त गति से आगे बढ़ता रहा है। प्रथम अधिवेशन में समग्र अणुव्रत प्रतिज्ञाओं को ग्रहण करने वालों की संख्या जहां छह सौ इक्कीस थी, वहां इस अधिवेशन में वह संख्या पांच हजार के लगभग हो चली है। फिर वर्गीय नियमों को ग्रहण करने वालों की संख्या तो सहस्त्रों में न रहकर लाखों में पहुंच गई है। इस अभियान के माध्यम से नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा तो कोटि–कोटि लोगों तक पहुंची है, यह तो बिल्कुल स्पष्ट ही है।

अणुव्रत आंदालेन का लक्ष्य है चरित्र विकास। चरित्र का संबंध केवल व्यापार शुद्धि तक ही सीमित नहीं है। उसका संबंध उन सब कार्यों से है, जो मनुष्य को हिंसक बनाते हैं। खाद्य–पदार्थों में मिलावट करने वालों को यदि चरित्रवान नहीं कहा जा सकता तो आणविक अस्त्रों का निर्माण करने वालों को भी चरित्रवान नहीं कहा जा सकता। शोषण, अन्याय, असहिष्णुता, आक्रमण, दूसरों के प्रभुत्व का अपहरण या उसमें हस्तक्षेप और

असामाजिक प्रवृत्तियां– ये सब चरित्र के दोष हैं लगभग सभी लोग इनसे आक्रांत हैं। तुलसी जी ने कहा था– अर्थ व्यवस्था सुधारे बिना चरित्रवान बनने में कठिनाई होती है तो चरित्रवान बने बिना समाजवादी समाज बने।

उनका मानना था कि आचार जीवन की मूल पूंजी है। इस धन से सम्पन्न व्यक्ति वास्तव से सम्पन्न है। वे दहेज प्रथा के भी सख्त खिलाफ थे। वे कहते थे कि हिंसा और अहिंसा के सन्दर्भ में लोगों की समझ बहुत आधी–अधूरी है। उन्होंने कहा– ''किसी भी प्राणी को मत मारो, उसे अधीन मत बनाओ, उस पर हुकुमत मत करो, उसके अधिकारों का अपहरण मत करो।'' उन्होंने अणुव्रत आंदोलन में भी अहिंसा का सक्रिय प्रयोग किया है। वे सभी लोगों को एक समान देखते थे व चाहते थे कि सभी लोग आपस में प्रेम से मिलजुल कर रहें और एक नये समाज का निर्माण करें।

नेहा निर्मल, दसवीं
टी.आई.टी वरिष्ठ मा. विद्यालय
तोशाम रोड, भिवानी, हरियाणा

सूर्य सरीखे प्रखर तेजस्वी

आचार्य तुलसी ने अंहकार–विलय की साधना की थी। उनकी विनम्रता की झोपड़ी में जो आता वह झुककर ही आता और कोई–कोई अहंकार की टोपी पहनकर आता तो जाते समय खुले सिर ही जाता। स्वेच्छाकृत विनम्रता व्यक्ति को महान बनाती है।

आचार्य श्री तुलसी का व्यक्तित्व विरोधी युगलों से जटिल व्यक्तित्व है। उसमें अनेकान्तवाद ने अपनी सार्थकता सिद्ध की है। सूर्य जैसा प्रखर तेजस्वी और चांद से भी अधिक सौम्य दोनों ही कोणों से उसे देखा जा सकता है। धार्मिक जगत के इतिहास में वह इन शताब्दियों का एक दुर्लभ व्यक्तित्व है।

आचार्य श्री की जीवन गाथा भारतीय चेतना का एक अभिनव उन्मेष है। इतना लंबा मुनि–जीवन, इतना लंबा आचार्य पद, इतनी लंबी पद यात्रा, इतना व्यापक जनसंपर्क, इतना जन–जागरण का प्रयत्न, इतना पुरुषार्थ, आध्यात्मिक विकास, इतना साहित्य–सृजन, इतने व्यक्तियों का निर्माण वस्तुतः ये सब अद्‌भुत हैं। आचार्य श्री की जीवन–गाथा आश्चर्यों की वर्णमाला से आलोकित एक महालेख है। उसे पढ़कर मनुष्य नये उच्छवास, नई प्रेरणा और नई प्रकाश–शक्ति का अनुभव करता है।

पुरुषार्थ की इतिहास परम्परा में इतने बड़े पुरुषार्थी पुरुष का उदाहरण कम ही है जो अपनी सुख–सुविधाओं को गौण मानकर जन–कल्याण के लिए जीवन जीए।

आचार्य श्री ने धर्म को एक नया रूप दिया है। इस वैज्ञानिक युग में उस धर्म की अपेक्षा है जो पदार्थवादी दृष्टिकोण से उत्पन्न मानसिक तनाव जैसी भंयकर समस्या का समाधान कर सके। आचार्य श्री ने इस युगीन अपेक्षा को समझा और इसकी संपूर्ति के लिए अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान को प्रस्तुत किया। यह एक धर्मक्रांति के युग में भी अपने अस्तित्व को बनाए रखने में सक्षम है।

सृजनात्मक दृष्टि, सकारात्मक चिन्तन, स्वेच्छा भाव, सर्वोत्तम साध्य, सघन श्रद्धा, शुभंकर संकल्प, शिवंकर शक्ति, सम्यक पुरुषार्थ, श्रेयस अनुशासन, शुचि संयम, सतत ज्ञानोपयोग इन सबके सुललित समुच्चय का नाम था आचार्य श्री तुलसी। वे बीसवीं शताब्दी के अपने विलक्षण व्यक्तित्व, अपरिमेय कर्तव्य एवं क्रांतिकारी दृष्टिकोण से प्रभावित करने वाले युगदृष्टा ऋषि थे। जितनी अलौकिक थी उनकी साधना, उतने ही अलौकिक है उनके अवदान।

नैतिक और चारित्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा उनका जीवन मिशन था। उन्होंने जहां एक ओर तेरापंथ धर्म संघ में विकास के नये क्षितिज उन्मुक्त किए, वहीं दूसरी और अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन कर अभिनव धर्मक्रांति की। उन्होंने धर्म को ग्रंथों, पंथों और धर्मस्थानों से निकाल कर जीवन व्यवहार का अंग बनाने का श्लाघनीय प्रयत्न किया।

आचार्य श्री तुलसी का जीवन विलक्षण विविधताओं का समन्वय था। वे कुशल प्रवचनकार, कवि और सहित्यकार थे। असाम्प्रदायिक धर्म मंत्रदाता और आध्यात्मिक जीवन मूल्यों के अधिष्ठाता थे। व्यक्ति और समष्टि के हित

के लिए वे सर्वतोभावेन समर्पित रहे। उनका कार्य क्षेत्र न केवल वैयक्तिक था और न केवल सामाजिक। उन्होंने व्यक्ति और समाज दोनों की शुद्धि के लिए तीव्र प्रयत्न किये।

भारत की स्वतंत्रता के शैशव में उन्होंने चरित्र विकास की जो प्रेरणा दी, जनमानस में नैतिकता को आधार दिया, बढ़ती हुई अनैतिकता के विरुद्ध जो क्रांति की उसका अपना इतिहास है। उन्होंने धरती का भगवान बनकर मानव मन के ताप, संताप और संत्रास का हरण किया। आचार्य श्री महाप्रज्ञ की इन पंक्तियों में इसी सत्य की प्रतिध्वनि है :

धरती का भगवान वही जो
धरती का उद्धार करेगा।
आंखों का भगवान वही, जो
आंखों का संताप हरेगा।
धरती के भगवान देव तुम
तुमने वह विश्वास जगाया,
धरती ऊंची स्वर्गलोक से
स्वर्ग मात्र धरती की छाया।

धर्मचक्र का प्रवर्तन उस महापुरुष की जीवन गाथा है जिसने धरती पर स्वर्ग के अवतरण की कल्पना की समाजिक कुरुढ़ियों के विरुद्ध जन–चेतना को जागृत किया, धर्म को जाति, वर्ग और सम्प्रदाय के रूप में प्रस्थापित किया, मानव को सौहार्द एवं शांति पूर्ण जीवन जीने की कला सिखाई।

प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान आचार्य श्री तुलसी के शासनकाल की वे उपलब्धियां हैं जो चिरकाल तक अशांत और तनावग्रस्त मनुष्यों के लिए वरदान तुल्य बनी रहेंगी। आगम संपादन का उनके वाचना प्रमुखत्व में जो महत्वपूर्ण कार्य हुआ है, वह प्राच्य विद्या की अनमोल धरोहर बन गया है। 'समण दीक्षा' का आचार्य पद का विसर्जन उनकी अनासक्त और निःस्पृह चेतना का स्वयंभू साक्ष्य है। सत्ता, अधिकार और पद लिप्सा के युग में वह एक आदर्श बोध पाठ बना रहेगा।

आचार्य श्री तुलसी हर स्थिति में सहज थे। वे सहजता में विश्वास रखते थे। उनकी जीवन शैली भी सहजता से ओत–प्रोत थी, सब कुछ सहज ही सहज। सहज भाव से सहज शब्दों में लिखने का प्रत्यत्न किया है। इसलिए मुझे किसी असहज की शरण में जाने की जरुरत नहीं पड़ी। मेरी कठिनाई दूर हो गई और किसी विदग्ध के बैद्धाध्य से आहत होने का अवसर भी नहीं मिला।

अनेक असाधारण व्यक्ति उनके पास सन्निधि में बैठकर साधारण बन गये। असाधारण के पास असाधारण आता है तो अहम् की टकराहट होती है। साधारण के पास असाधारण आता है तो उसका अहं खत्म हो जाता है और वह साधारण बन जाता है। विधान परिषद के अध्यक्ष डा. राजेन्द्र बाबू आए, जय प्रकाश नारायण आए, ऐसा नहीं लगा कि आचार्य श्री तुलसी असाधारण व्यक्ति से बात कर रहे हैं और उन्हें भी ऐसा नहीं लगा कि हम किसी ऊपर के तल पर जाने का प्रयत्न कर रहे हैं। साधारण से साधारण बात करे, तभी तादात्म्य हो सकता है। एक ओर असाधारण दूसरी ओर साधारण होता है तो उनमें तादात्म्य का तार कभी नहीं जुड़ सकता है।

आचार्य तुलसी ने अंहकार–विलय की साधना की थी उनकी विनम्रता की झोपड़ी में जो आता वह झुक कर ही आता और कोई–कोई अहंकार की टोपी पहनकर आता तो जाते समय खुले सिर ही जाता है। स्वेच्छाकृत विनम्रता व्यक्ति को महान बनाती है। आचार्य जहां–जहां गये वहां–वहां सुर–सरिता की धारा बह गई। आचार्य श्री का कहना था जो हमारे सम्पर्क में है उनका दृष्टिकोण बदले, धर्म को केवल उपासना नहीं माने, उसे चरित्र शुद्धि के रूप में स्वीकारे। धार्मिक का जीवन कितना अनुकरणीय है इसका उदाहरण पेश करे।

द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हो गया। शांति के लिए सभी धर्म के लोग आगे आये। आचार्य श्री ने उस अवसर पर एक संदेश दिया, शीर्षक था, ''अशांत विश्व को शान्ति को संदेश' उस विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने वालों ने उसे बहुत महत्वपूर्ण माना।

इस प्रकार आचार्य तुलसी एक युग प्रधान आचार्य के ज्योतिर्मय व्यक्तित्व के धनी रहे जिनका समाज को ही नहीं वरन् समस्त मानव जाति का पूरा सहयोग व अवदान मिलता रहा है, सदैव मिलता रहेगा। जैन समाज सदा उनका ऋणी रहेगा तथा उनके पद चिन्हों पर चलकर सदैव जैनमत उन्नति के पथ पर अग्रसर होता रहेगा।

प्रतीक जैन, दसवीं
महावीर विद्या मंदिर मा. विद्यालय,
गणेश घाटी मार्ग, उदयपुर, राजस्थान

अभिमान से दूर, स्वाभिमान से भरपूर

लगभग साढ़े आठ सौ साधु–साध्वियों, समण–समणियों के विशाल संगठन के संचालक रहे, देश–विदेश में उनकी प्रतिष्ठा थी, लेकिन गोस्वामी तुलसीदास की इस उक्ति को वे चरितार्थ करते हैं कि 'प्रभुता पाय काहि मद नाही'। उनमें मद या अभियान नहीं था पर स्वाभिमान उच्च स्थान पर था। आज आचार्य श्री तुलसी हमारे बीच नहीं किंतु उनके सक्षम प्रतिनिधि आचार्य श्री महाश्रमण जी के सक्षम नेतृत्व में उनका अणुव्रत आंदोलन सत्य पर गतिमान है जिसने मानवीय मूल्यों का मार्ग प्रशस्त किया है।

जैन समुदाय के तेरापंथ संप्रदाय में नौवे पट्टधर एवं अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी विलक्षण प्रतिभा के धनी और प्रखर शक्ति के पुंज थे। आचार्य श्री तुलसी के मन में बचपन से ही धर्म के प्रति आस्था रही और ग्यारह वर्ष की अल्पायु में उन्होंने मुनि दीक्षा ले ली। बाईस वर्ष की अवस्था में तेरापंथ के अष्टमाचार्य श्री कालूगणी ने उन्हें आचार्य पद सौंपा।

जबसे वे अपने धर्म संघ के आचार्य पद पर आसीन हुए, उन्होंने अनेक क्रांतिकारी कदम उठाए। उन्होंने आजीवन आत्मसाधना तो की ही, साथ ही अपनी संवेदना के पटल को व्याकुल किया। समाज की आधार अमुक इकाई मनुष्य है। जब तक मनुष्य अच्छा नहीं बनेगा, समाज अच्छा नहीं हो सकता । उनकी इस मान्यता में से अणुव्रत की गंगोत्री का उदय हुआ।

अणुव्रत में जात–पात, छोटे–बड़े, धनी–निर्धन इत्यादि का कोई भदभाव नहीं है। अणु का अर्थ है छोटा, अर्थात् छोटे–छोटे व्रतों से संकल्प शक्ति के विकास द्वारा क्रमशः जीवन को निर्मल करना। संयम, अनावश्यक हिंसा से विरति आदि व्रतों का पालन करना, शराब तथा मादक द्रव्यों का त्याग करना, दहेज और अन्य सामाजिक बुराइयों को छोड़ना, राजनीति को नितियुक्त बनाना, व्यवसाय में बेईमानी न करना, मिलावट, भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती आदि से बचाव, पर्यावरण की सुरक्षा यह सब अणुव्रत के अभीष्ट हैं।

संक्षेप में कहें तो अणुव्रत मानवीय मूल्यों कि वह न्यूनतम आचार संहिता है जिसका पालन करके कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी धर्म जाति या संप्रदाय का हो, अणुव्रती बन सकता है। लाखों–लाख व्यक्ति अणुव्रती बने भी हैं।

आचार्य श्री तुलसी समग्र मानव मात्र के कल्याण के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहे। अणुव्रत को सहज ग्रहणीय, प्रभावी व व्यावहारिक बनाने के लिए उन्होंने उस में प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान का भी समावेश किया। उनके इंगित पर उनके शिष्य एवं उत्तराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा अनुसंधानिक प्रेक्षाध्यान अतःकरण के परिशोध की एक अत्यंत प्रभावशाली प्रक्रिया है। जीवन विज्ञान द्वारा जीवन निर्माण की प्रेरणा देता, है जिसमें बाल्यावस्था से ही मूल्यपरक शिक्षा द्वारा संस्कारों को अंतर की गहराइयों में पहुंचाने की क्षमता है।

लगभग साढ़े आठ सौ साधु–साध्वियों, समण–समणियों के विशाल संगठन के संचालक रहे, देश–विदेश में उनकी प्रतिष्ठा थी, लेकिन गोस्वामी तुलसीदास की इस उक्ति को वे चरितार्थ करते हैं कि 'प्रभुता पाय काहि मद नाही'।

उनमें मद या अभियान नहीं था पर स्वाभिमान उच्च स्थान पर था। आज आचार्य श्री तुलसी हमारे बीच नहीं किंतु उनके सक्षम प्रतिनिधि आचार्य श्री महाश्रमण जी के सक्षम नेतृत्व में उनका अणुव्रत आंदोलन सत्य पर गतिमान है जिसने मानवीय मूल्यों का मार्ग प्रशस्त किया है।

आचार्य श्री तुलसी ने संप्रदाय से भी अधिक महत्व मानवता को दिया। मानवता के उत्थान के लिए उन्होंने विविध प्रकार के कार्यक्रम प्रारंभ किए थे। इसलिए वे जैन आचार्य की अपेक्षा एक मानवतावादी संत के रूप में अधिक जाने गये। जब लोग उनका परिचय पूछते, वे स्वयं अपना परिचय इस तरह देते, ''मैं सबसे पहले एक मानव हूं। फिर मैं एक धार्मिक व्यक्ति हूं, फिर में एक जैन मुनि हूं और उसके बाद व्यक्ति हूं, फिर तेरापंथ संप्रदाय का आचार्य हूं।''

उन्होंने यह महसूस किया था कि अगर समाज में नैतिक पतन को अगर नहीं रोका गया तो राष्ट्र भीतर से खोखला हो जायेगा। अणुव्रत आंदोलन का प्रारंभ कर आचार्य तुलसी ने देश में नैतिक विकास का शंखनाद किया। विद्यार्थी, शिक्षक, राज्य कर्मचारी, व्यापारी, राजनीतिज्ञ आदि सभी वर्ग के लोगों के लिए अनिवार्य रूप से पालन करने योग्य एक आचार्य संहिता का निर्माण कर सकता है। असल में यह विशुद्ध रूप से एक मानवीय आचार्य संहिता है।

आचार्य श्री तुलसी सर्वधर्म समभाव के प्रतीक पुरुष थे। साम्प्रदायिक कट्टरता को उन्होंने कभी उचित नहीं माना। उनका कहना था कि धर्म का स्थान सम्प्रदाय से ऊपर है। ऐसे महामानव के अवदान समाज में नैतिक जागरण की ज्योति जगाते रहेंगे। उनके जन्म शताब्दी वर्ष में हम सब मिलकर उनके दिखाए रास्ते पर बढ़े यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाभक्ति होगी।

अविष्का, दसवीं
केन्द्रीय विद्यालय, गोल मार्किट,
दिल्ली

आपसी सद्भाव के लिए सतत प्रयत्नशील

आचार्य श्री तुलसी को धर्मसंघ का सर्वश्रेष्ठ पद प्राप्त था जिस पर कई जिम्मेदारियां थीं। आचार्य श्री तुलसी को आचार्य बनने के पश्चात एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ा। केवल ग्यारह वर्ष बीकानेर में व्यतीत किये। इस बीच उन्होंने साधु एवं साध्वियों के अध्ययन पर ध्यान दिया। साधु के शुरूआती जीवन में ही वे पढ़ाने लगे।

आचार्य श्री तुलसी का जन्म सन् 1914 कार्तिक शुक्ल द्वितीया को लाडनूं, राजस्थान में हुआ। उनके पिता का नाम झूमरमलजी खटेड़ एवं माता का नाम बदनाजी था। नौ भाई–बहनों में उनका आठवां स्थान था। प्रारम्भ से ही वे एक होनहार व्यक्तित्व के धनी थे। आठ साल की उम्र में पहली बार विद्यालय गये। ग्यारह वर्ष की अवस्था में पूज्य कालूगणी के करकमलों से उनका दीक्षा–संस्कार सम्पन्न हुआ। ग्यारह वर्ष तक गुरु की पावन सन्निधि में रहकर मुनि तुलसी ने शिक्षा एवं साधना की दृष्टि से अपने व्यक्तित्व को बहुमुखी विकास दिया।

हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत भाषाओं का तथा व्याकरण, कोश, साहित्य, दर्शन एवं जैनागमों का तलस्पर्शी अध्ययन किया। लगभग बीस हजार श्लोक, परिणाम रचनाओं को कण्ठग्र कर लेना उनकी प्रखर प्रतिभा का परिचय है। संयम, जीवन निर्मल साधना, विवेक सौष्ठव, आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन, बहुश्रुतता, सहनशीलता, गंभीरता, धीरता, अप्रमादता, अनुशासन निष्ठा आदि विविध विशेषताओं से प्रभावित होकर अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी ने वि.सं. 1993 भाद्रपद शुक्ल तृतीया को गंगापुर में उन्हें अपने उत्तराधिकारी के पद में मनोनीत किया। आज साध्वी समाज में शिक्षा की दृष्टि से विकास हुआ है इसका एकमात्र श्रेयोभागी थे आचार्य श्री तुलसी।

तेरापंथ के आठवें आचार्य और आचार्य श्री तुलसी के परिवारिक गुरु आचार्य कालूगणी आचार्य श्री तुलसी से अत्यन्त प्रभावित थे। आचार्य श्री तुलसी को देखने के बाद आचार्य कालूगणी के शब्द कुछ इस प्रकार थे– ''उनके सुन्दर चेहरे ने मेरा ह्रदय मोह लिया था। जैसे मैं कुछ समय के लिए उनकी ओर सम्मोहित हो गया।''

आचार्य कालूगणी सन् 1925 में लाडनूं आए जब तुलसी ग्यारह वर्ष के थे। आचार्य कालूगणी से भेंट ने तुलसी के मन में जैन साधु बनने की आसक्ति पैदा कर दी। एक महीने से भी कम समय में आचार्य कालूगणी ने तुलसी को तेरापंथ संघ का सदस्य बनाया। कालूगणी ने कम उम्र में ही आचार्य श्री तुलसी में निर्भीकता, साहस, अत्यन्त गरिमा के बीज देखे। आचार्य श्री तुलसी के ज्येष्ठ भ्राता मुनि चम्पा लाई एक वर्ष पूर्व ही साधु बने और उन्हीं की देख–रेख में तुलसी का विद्या अध्ययन प्रारम्भ हुआ। सात वर्षों में वे संस्कृत के ज्ञाता बने।

संस्कृत भाषा के बीस हजार पद्य मुखाग्र करके उन्होंने जैन आगमों में खुद को श्रेष्ठ सिद्ध किया। आचार्य श्री तुलसी ने इसी के साथ राजस्थानी भाषा में कविताएं लिखनी भी आरम्भ कीं। भीलवाड़ा, राजस्थान के करीब गंगापुर गांव 1936 में आचार्य कालूगणी अत्यधिक बीमार पड़ गये एवं आचार्य श्री तुलसी को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। उस समय आचार्य श्री तुलसी सिर्फ 20 वर्ष के थे। आचार्य कालूगणी की मृत्यु से चार दिन पूर्व ही आचार्य श्री तुलसी को एक विश्वासपूर्ण धर्मसंघ, जिसमें 500 साधु–साध्वी एवं अनेक सेवक, सेविकायें थीं, को निर्देश देना एवं साथ में लेकर चलना था।

धर्मक्रान्ति और साम्प्रदायिक सद्भाव आचार्य श्री के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में एक है। उनके अभिमत में धर्म का सबसे बड़ा पवित्र स्थान मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि धर्मस्थान नहीं बल्कि मनुष्य का अपना अन्तःकरण है। वे रुढ़ धर्म के नहीं, जीवन धर्म के परिपोषक रहे।

वे कहते थे– मुझे ऐसा धर्म नहीं चाहिए जो धर्मस्थान में बैठकर भक्त प्रहलाद और मीरा की भक्ति प्रदर्शित करे और घर, दुकान एवं आफिस में बैठकर राक्षसी वृत्तियां प्रकट करें। उनके इन क्रांतिकारी विचारों ने आज बौद्धिक मानस में भी धार्मिकता का संचार किया है। नास्तिक चेतना में भी आस्तिकता की लौ जलाई है।

आचार्य श्री तुलसी को धर्मसंघ का सर्वश्रेष्ठ पद प्राप्त था जिस पर कई जिम्मेदारियां थीं। आचार्य श्री तुलसी को आचार्य बनने के पश्चात् एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ा। केवल ग्यारह वर्ष बीकानेर में व्यतीत किये। इस बीच उन्होंने साधु एवं साध्वियों के अध्ययन पर ध्यान दिया। साधु के शुरूआती जीवन में ही वे पढ़ाने लगे।

नैतिक क्रांति, मानसिक शांति और व्यक्तित्व निर्माण की पृष्ठभूमि पर आचार्य श्री तुलसी ने तीन अभियान चलाए– अणुव्रत आंदोलन, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान। ये तीनों ही अभियान अनुपम है, अपूर्व है और अपेक्षित हैं। अणुव्रत जाति, लिंग, रंग, सम्प्रदाय आदि के भेदों से ऊपर उठकर मानव मात्र को चारित्रिक मूल्यों के संकट से उबारने का उपक्रम है। प्रेक्षाध्यान मानसिक एवं शारीरिक तनावों से मानवीय चेतना को शक्ति के पथ पर अग्रसर कर रहा है। जीवन विज्ञान के प्रयोग व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है एवं शैक्षिक जगत की समस्याओं का समीचीन समाधान है।

आचार्य श्री तुलसी के मत अनुसार भारत की स्वाधीनता निरर्थक है जब तक राष्ट्र भक्ति नहीं उत्पन्न होती। इस कारण उन्होंने स्वयं ही पहले स्वाधीनता दिवस पर कविता लिखी जिसका शीर्षक ''चलो अब सच्ची स्वाधीनता पायें'' था। सच्ची स्वाधीनता उनके अनुसार स्वाधीनता को सही अर्थ में समझना है। 2 मार्च, 1949 में उन्होंने इस आंदोलन की घोषणा की। इस आंदोलन से वे लोगों में राष्ट्रीयता का भाव समझना चाहते थे। इसके द्वारा वे अहिंसा, सत्य जैसी चीजों को भाव समझना चाहते थे। इस कदम का पूरे देश में सम्मान किया गया। हजारों लोग इसमें सम्मिलित हुए। जैन तेरापंथ साधु एवं साध्वियों ने एक गांव से दूसरे गांव तक अणुव्रत का संदेश देने हेतु यात्राएं तय कीं।

आचार्य तुलसी ने आदर्श साहित्य संघ की स्थापना की। परमार्थिक शिक्षण संस्थान की स्थापना उन लोगों के लिए हुई जो जैन साधुओं के बारे में जानना चाहते हैं एवं यहां साधना की जा सकती है। संघ की स्थापना 1980 में जैन धर्म को विश्व स्तर पर श्रेष्ठ बनाने के लिए हुई। इसके अन्तर्गत जैन साधु, साध्वियां वाहन का उपयोग कर सकते हैं। वे उस भोजन का सेवन कर सकते हैं जो उनके लिए बनाया गया है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद आदि ऐसे प्रमुख संस्थान उन्होंने प्रारम्भ किए जो धार्मिक कार्यों में अग्रसर हो सके।

आचार्य श्री तुलसी को दिए गये पुरस्कार एवं सम्मान अनेक हैं जिनमें तत्कालीन राष्ट्रपति वी. वी. गिरि द्वारा युग प्रधान 1971, भारत ज्योति पुरस्कार, इन्दिरा गांधी शांति पुरस्कार प्रमुख हैं। सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन ने अपनी पुस्तक 'उद्देश्य के लिए जीना' में आचार्य श्री तुलसी का नाम पंद्रह महान व्यक्तियों में शामिल किया।

अतः साम्प्रदायिक सद्भाव की दिशा में वे सतत् प्रयत्नशील रहे। साम्प्रदायिकता उनके विचारों पर कभी हावी नहीं हुई। आचार्य श्री तुलसी अपने परिचय में कहते हैं, ''मैं सबसे पहले मानव हूं, उसके बाद धार्मिक हूं, उसके बाद जैन हूं और उसके बाद तेरापंथ का आचार्य हूं।'' आचार्य श्री तुलसी के इन्हीं क्रांतिकारी विचारों का परिणाम हूं कि जो तेरापंथ एक संघीय सीमा में आबद्ध था, वह आज न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुका है। आचार्य श्री तुलसी के अवदानों के सुपरिणाम भविष्य को आलोकित करते रहेंगे।

विपुल गहलोत, ग्यारहवीं
इटमा विद्या निकेतन, इंदौर
मध्य प्रदेश

साहित्य के क्षेत्र में आचार्य श्री तुलसी ने अपने संघ को जागृत किया। स्वयं आचार्य श्री ने हिन्दी, राजस्थानी, संस्कृत आदि विभिन्न भाषाओं में साहित्य सृजन किया है। राजस्थानी में लिखे उनके अनेक काव्य लोकप्रिय हुए। हिन्दी और राजस्थानी में उनके गीत लोकगीतों की तरह जन–जन के अधरों पर थिरकते रहते हैं। जैन आगमों के सम्पादन का सबसे कठिन कार्य आचार्य श्री ने अपने हाथ में स्वयं लिया।

बीसवीं सदी के आध्यात्मिक परिदृश्य पर प्रमुखता से उभरने वाला जो नाम है, वही है आचार्य तुलसी। भारत की संत परम्परा को अपनी तेजस्विता से प्रभावित करने वाले इस आचार्य ने भारत को जो दिया, वह इस देश की अनुपम थाती है। अपने त्याग और तपोबल के द्वारा राष्ट्र की अस्मिता को हर कीमत पर बचाये रखना जैसे उनका जीवन संकल्प था। जब राष्ट्र के जन–जीवन में गिरावट आई, उन्हें चोट लगी, उस गिरावट को देखना उन्हें कभी स्वीकार नहीं हुआ। राष्ट्रीय चरित्र को जब–जब आघात लगा, लोगों को उन्होंने झकझोरा।

समस्या का संबंध आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक या धार्मिक किसी भी क्षेत्र में क्यों न हो, उनसे ऊपर उठने की हर सम्भव कोशिश आचार्य तुलसी ने की और समाज को उसकी गरिमा का अहसास करवाया। 1947 को लम्बे संघर्ष के पश्चात भारत को आजादी मिली थी, तब राष्ट्र के कर्णधार माने जाने वाले लोग उस समय आर्थिक, औद्योगिक, शैक्षणिक आदि विभिन्न प्रकार की विकास योजनाओं में व्यस्त थे। तब उसी समय आचार्य तुलसी ने राष्ट्र के चारित्रिक एवं भौतिक विकास के लिए अणुव्रत आन्दोलन का शुभारम्भ सरदारशहर से किया।

इसके अतिरिक्त उन्होंनेराजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त बुराइयों के प्रति आगाह किया और उन्हें लोकतंत्र के लिए विनाशकारी माना। राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए उन्होंने अपने जीवन को समर्पित कर दिया और समाज में विद्यमान सभी विभेदों से ऊपर उठने का आग्रह किया। अध्यात्म की अकूत और अपूर्व सम्पदा इस माटी को जब विरासत में मिली है, फिर अशांति को हम न्योता दें, आचार्य श्री तुलसी की दृष्टि में इससे बड़ी नासमझी हो ही नहीं सकती।

आचार्य श्री तुलसी का जन्म 20 अक्टूबर, 1914 को लाडनूं में हुआ तथा 23 जून, 1997 को उन्होंने गंगाशहर कस्बे में अंतिम सांस ली। 15 दिसंबर, 1925 को 12 वर्ष की अल्पायु में उन्होंने तेरापंथ के आचार्य कालूगणी के हाथों दीक्षा ग्रहण की व 22 वर्ष की उम्र में वे तेरापंथ के आचार्य के रूप में अधिष्ठित हुए।

34 वर्ष की उम्र में आचार्य तलुसी ने 1 मार्च, 1949 को अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आज न केवल देश और समाज में नैतिक चेतना की अलख जगा रहा है बल्कि मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना का सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ है।

आचार्य तुलसी ने जैन आगमों का अध्ययन कर प्राच्य विधाओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 18 फरवरी, 1994 को उन्होंने आचार्य पद का विसर्जन कर तेरापंथ धर्मसंघ में एक नये इतिहास का सृजन किया।

मानवता की सेवा उनके जीवन का परम लक्ष्य था। उनके कार्यों और अवदानों के लिए उन्हें 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार' सहित अगणित पुरस्कार व सम्मानों से नवाजा गया।

आचार्य तुलसी ने अपने गीतों के माध्यम से भी लोगों को अणुव्रत का संदेश देकर उनके जीवन में उजाला भरने का कार्य किया। मानवीय मूल्य की अनुगूंज उनके गीतों में सुनाई देती है। आचार्य तुलसी कहते थे– निज पर शासन, फिर अनुशासन यानि व्यक्ति यदि अपने जीवन में अणुव्रत के नियमों का पालन करे तो देश व समाज में अणुव्रत का प्रसार स्वतः होने लगेगा। आचार्य तुलसी ने शिक्षकों, छात्रों, व्यापारियों, सरकारी कर्मचारियों, राजनेताओं आदि के लिए अणुव्रत के नियम प्रस्तुत कर उन्हें अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करने की प्रेरणा दी। सांप्रदायिक सौहार्द व नशा मुक्ति के लिए भी उन्होंने अनेक प्रयत्न किये।

अणुव्रत अनुशास्ता ने समाज के सभी वर्गों को लक्ष्य करते हुए गीतों की रचना की। विद्यार्थी व शिक्षक वर्ग राष्ट्र के भाग्य विधाता और समाज के नव निर्माता होते हैं। राष्ट्र का भविष्य उन्हीं पर निर्भर करता है। अनुशासन और लक्ष्यशीलता की ओर इशारा करते हुए उन्होंने लिखा–

कहां रही वह गुरुकुल विद्या, कहां विनय व्यवहार,
तुम भावी संपत्ति राष्ट्र की, आशा के आधार।

व्यापारी वर्ग का समाज में वही स्थान है जो शरीर में पेट का है। जैसे पेट की विकृति शरीर को रुग्ण बना देती है, वैसे ही व्यापार की विकृति पूरे समाज और राष्ट्र को विकृत कर देती है। नशा नाश का द्वार है। लोग अशिक्षा और संस्कारहीनता के कारण व्यसनग्रस्त हो जाते हैं, जिसके कारण इतना श्रम करते हुए भी उन्हें अभाव का जीवन जीना पड़ता है।

चंद चांदी के टुकड़ों के वशीभूत होकर सरकारी कर्मचारी भ्रष्ट आचरण व रिश्वतखोरी में पड़कर स्वयं का तथा दूसरों का अहित करते हैं। यदि कर्मचारी संकल्पपूर्वक सत्यनिष्टा से कार्य करें तो पूरा देश स्वास्थता की अनुभूति कर सकता है।

साहित्य के क्षेत्र में आचार्य श्री तुलसी ने अपने संघ को जागृत किया। स्वयं आचार्य श्री ने हिन्दी, राजस्थानी, संस्कृत आदि विभिन्न भाषाओं में साहित्य सृजन किया है। राजस्थानी में लिखे उनके अनेक काव्य लोकप्रिय हुए। हिन्दी और राजस्थानी में उनके गीत लोकगीतों की तरह जन–जन के अधरों पर थिरकते रहते हैं। जैन आगमों के सम्पादन का सबसे कठिन कार्य आचार्य श्री ने अपने हाथ में स्वयं लिया। मुनि श्री नथमल (तत्कालीन युवाचार्य महाप्रज्ञ) के संपादन में पचास साधु–साध्वियां आगम–सम्पादन के इस महायज्ञ में अपने श्रम की आहूतियां देने में निरन्तर संलग्न हुए।

अणुव्रत को जन–जन तक पहुंचाने के लिए स्वयं आचार्य श्री तुलसी एवं उनके शिष्यों ने प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन किया। अणुव्रत के बारे में आज यह धारणा बन गयी है कि यह देश को नई दिशा दे सकता है। अणुव्रत के माध्यम से जन–जन में मानवता की भावना पैदा करने के लिए उन्होंने एक लाख किलोमीटर लम्बी पैदल

यात्रा की। उनकी इस यात्रा का व्यापक स्वागत हुआ, हजारों लोगों को अणुव्रत की भावना से अवगत करवाया गया लेकिन दुर्भाग्यववश इस यात्रा का विरोध भी हुआ फिर भी आचार्य जी ने विरोध का मुकाबला विरोध से नहीं किया।

अहिंसा और शांति के संदेश को विदेशों में जन–जन तक फैलाने के लिए आचार्य श्री तुलसी ने गृहस्थ और साधु के मध्य समण श्रेणी की पृथक स्थापना कर धार्मिक जगत में एक जबरदस्त क्रांति की। यह समण श्रेणी विदेशों में अणुव्रत प्रेक्षा ध्यान के माध्यम से अहिंसा व विश्व शांति के क्षेत्र में प्रभावी कार्य कर रही है।

अहिंसा और शांति की स्थापना आचार्य श्री का प्रमुख लक्ष्य रहा है। इसी लक्ष्य को सामने रखकर अहिंसा प्रशिक्षण के कार्यक्रम प्रारम्भ किये गये। सन् 1988 में लाडनूं में और 1991 में राजसंमद में अहिंसा प्रशिक्षण पर आचार्य श्री के नेतृत्व में बड़े अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किये गये जिनमें विभिन्न देशों के सैकड़ों प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

अहिंसा की शक्ति में आचार्य श्री की गहरी आस्था रही है। आतंकवाद से ग्रस्त पंजाब में डर का माहौल जब अत्याधिक था उस समय उन्होंने अपने शिष्य–शिष्याओं को वहां भेजा। आचार्य श्री जानते थे कि आतंकवाद के डर से सैकड़ों परिवार पंजाब छोड़कर भागे जा रहे हैं। ऐसे समय में उनके मनोबल और आत्मविश्वास को बढ़ाने की जरूरत है। यह काम प्रशासन एवं सरकार से भी कहीं बेहतर ढंग से उनके साधु–साध्वियां कर सकते हैं। लोगों ने आचार्य श्री से आग्रह किया कि आप साधु–साध्वियों को पंजाब न भेजें क्योंकि वहां उनकी जान को खतरा है लेकिन उन्होंने भेजे।

आचार्य तुलसी स्वतन्त्रता को प्रमुख आधार स्तम्भों में से एक महत्वपूर्ण स्तम्भ मानते थे। उनका मानना था कि स्वतन्त्रता का सही उपयोग होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता है तो लोकतंत्र की पवित्रता समाप्त हो जायेगी। लेकिन आज लोकतंत्र के नाम पर बोलने की स्वतंत्रता का उपयोग गाली–गलौज के रूप में हो रहा है। लिखने की स्वतंत्रता का उपयोग किसी के मर्मोद्घाटन और किसी पर आरोपों की वर्षा से किया जा रहा है। चिन्तन और आचरण की स्वतंत्रता ने लोगों को अपनी संस्कृति, सभ्यता और नैतिक मूल्यों से दूर धकेल दिया है। लोकतांत्रिक प्रणाली में जनता को लिखने, बोलने, सोचने और कार्य करने की स्वतन्त्रता होती है। जनता की स्वतन्त्रता का हनन करने वाले शासकों का आचार्य तुलसी विरोध करते थे और ऐसे कदम को लोकतंत्र के लिए घातक मानते थे।

सारांश में यही कहा जा सकता है कि आचार्य श्री तुलसी एक धर्माचार्य होने के साथ–साथ आधुनिक भारत के महान चिन्तक थे। उन्होंने अध्यात्म तथा राष्ट्रवाद में अपूर्व समन्वय करके राष्ट्रीय समस्याओं पर सार्थक चिन्तन प्रस्तुत किये। उनके अवदानों के माध्यम से हर क्षेत्र में भारत की उन्नति संभव हो सकती है।

प्रतिभा भूतोडिया, बारहवीं
श्री लाड मनोहर बाल निकेतन उच्च माध्य. विद्यालय
लाडनूं, राजस्थान

जैनाचार्य ही नहीं, मानवतावादी संत

आचार्य तुलसी ने संप्रदाय से भी अधिक महत्व मानवता को दिया। मानवता के उत्थान के लिए उन्होंने विविध प्रकार के कार्यक्रम प्रारंभ किये थे। इसलिए वे जैन आचार्य की अपेक्षा एक मानवतावादी संत के रूप में अधिक जाने गए। जैन आचार्य तो वे थे ही, अपने कार्यों से वे जनाचार्य भी बन गए थे। जैन, हिन्दू, मुस्लिम, सिख या अन्य संप्रदायों को मानने वाले लोग भी उनमें आस्था रखते थे।

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। भारत की मिट्टी के कण–कण में महापुरुषों के उपदेश की प्रतिध्वनियां हैं। चाणक्य, आर्यभट्ट, महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगौर के भारत का इतिहास विश्व में अपना वरेण्य स्थान रखता है। स्वर्णिम इतिहास की इसी पवित्र श्रृंखला में एक नाम है अहिंसा के अग्रदूत, मानवता के मसीहा, अणुव्रत अनुशास्ता, युग प्रधान आचार्य श्री तुलसी का ।

आचार्य तुलसी राष्ट्रसंत थे। देश की महान धरोहर थे। राष्ट्रीय एकता के पक्षधर थे। उनका प्रकाण्ड पांडित्य उन्हें अबू सीना, स्वामी विवेकानन्द और डॉ. राधाकृष्णन के समान स्तर पर प्रतिष्ठित करता है। आचार्य तुलसी का जन्म 20 अक्टूबर, 1914 को लाडनूं में हुआ। मात्र ग्यारह वर्ष की अल्पावस्था में वे तेरापंथ के अष्टम आचार्य कालूगणी के पास दीक्षित हुए, अर्थात् जैन मुनि बने। 11 वर्षों तक मेधावी छात्र के रूप में अध्ययन कर गुरु कालूगणी द्वारा 22 वर्षों की उभरती जवानी में आचार्य पद को प्राप्त हुए।

प्रथम स्वतन्त्रता दिवस 15 अगस्त, 1947 को उन्होंने 'असली आजादी अपनाओ' का शंखनाद किया। 2 मार्च, 1949 को आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। हरित क्रांति, सत्याग्रह, भूदान की तरह अणुव्रत आंदोलन में लोकतंत्र की उज्ज्वल कल्पना निहित है। अणुव्रत दर्शन व्यक्ति को नैतिक बनाने की आचार–संहिता है। आचार्य तुलसी के अणुव्रत की आवाज राष्ट्रपति भवन से लेकर गरीब की झोपड़ी तक गूंजी। इस नैतिक क्रांति को निरंतर प्रज्ज्वलित रखने के लिए उन्होंने पूरे देश में कन्याकुमारी तक लगभग एक लाख कि.मी. की पदयात्रा की।

उनका व्यक्तित्व पुरुषार्थ का परम पर्याय था। वे सृजनशील चेतना के धनी थे। पद और सम्मान की आसक्ति से ऊपर उठ उन्होंने 18 फरवरी, 1994 को अपने आचार्य पद का विसर्जन कर विश्व के इतिहास में एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया, जो वर्तमान युग के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। वे एक महान धर्मगुरु के साथ समाज सुधारक भी थे। मेरी दृष्टि में गांधी के बाद आचार्य तुलसी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन से समूचे देश और दुनिया को प्रभावित किया।

18 फरवरी, 1994 सुजानगढ़ का विशाल धर्म प्रांगण। कितना अपूर्व था वह क्षण जब आचार्य श्री तुलसी ने अपने तेजस्वी प्रशासन को एकाएक अलविदा कहकर उत्कृष्ट आत्म–साधना का निर्णय लिया। उनकी इस उद्घोषणा के साथ मानव समाज चौंक उठा। पद त्याग के इस क्रांतिकारी कदम ने नाम, यश, पद और प्रतिष्ठा की भीषण विभीषिका से त्रस्त राजनीतिक एवं धार्मिक जगत में तहलका मचा दिया। अपने शिष्य को आचार्य के रूप में स्वीकार कर गुरुता का सर्वाधिकार सौंपना विलक्षण है। अहम् विसर्जन की इस दुर्लभ घटना ने आचार्य श्री तुलसी को अध्यात्म की उस उच्च व्यास पीठ पर अधिष्ठित कर दिया जहां राष्ट्रसंत, लोकरत्न,

भारत ज्योति जैसे ढेरों अलंकरण व उपाधियां, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, हकीम खांसूर जैसे संबोधन उनकी संतता की निर्मल आभा के सामने स्वयं गरिमा मंडित हो उठे।

आचार्य तुलसी ने संप्रदाय से भी अधिक महत्व मानवता को दिया। मानवता के उत्थान के लिए उन्होंने विविध प्रकार के कार्यक्रम प्रारंभ किये थे। इसलिए वे जैन आचार्य की अपेक्षा एक मानववादी संत के रूप में अधिक जाने गए। जैन आचार्य तो वे थे ही, अपने कार्यों से वे जनाचार्य भी बन गए थे। जैन, हिन्दू,मुस्लिम, सिख या अन्य संप्रदायों की मानने वाले लोग भी उनमें आस्था रखते थे। आचार्य श्री तुलसी सर्वधर्म सम्भाव के प्रतीक पुरुष थे। साम्प्रदायिक कट्टरता को उन्होंने कभी उचित नहीं माना। उनका कहना था कि धर्म का स्थान सम्प्रदाय से ऊपर है। ऐसे महान व्यक्तित्व के महान अवदानों को भला कौन भुला सकता है ?

रोहन खुराना नौवीं
बाल बाड़ी पब्लिक स्कूल,
मोदीनगर, उत्तर प्रदेश

सृजन के साक्षात् बिम्ब

वर्तमान में जैन धर्म में मूल रूप से दो सम्प्रदाय श्वेताम्बर और दिगम्बर विद्यमान हैं। जैन धर्म के श्वेताम्बर सम्प्रदाय के अन्तर्गत तेरापंथ के नवम् आचार्य श्री तुलसी हुए। उन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा में प्रचुर मात्रा में साहित्य लिखा। केवल हिन्दी साहित्य में गद्य एवं पद्य की विविध विधाओं में शताधिक ग्रंथों की रचना कर उन्होंने अपना अद्वितीय योगदान हिन्दी संसार को प्रदान कर दिया।

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। भारत की मिट्टी के कण–कण में महापुरुषों के उपदेश की प्रतिध्वनियां हैं। चाणक्य, आर्यभट्ट, महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के भारत का इतिहास विश्व में अपना वरेण्य स्थान रखता है। स्वर्णिम इतिहास की इसी पवित्र श्रृंखला में एक नाम है– अंहिसा के अग्रदूत, मानवता के मसीहा, अणुव्रत अनुशास्ता, युग प्रधान आचार्य तुलसी का।

आचार्य तुलसी राष्ट्रसंत थे। देश की महान धरोहर थे। राष्ट्रीय एकता के पक्षधर थे। उनका प्रकाण्ड पांडित्य उन्हें अबू सीन, स्वामी विवेकानंद और डॉ. राधाकृष्णन के समान स्तर पर प्रतिष्ठित करता है। उनका स्वयं का परिचय उन्हीं के शब्दों में इस विराटता के साथ मुखर हुआ। उनका कहना था, ''मैं सबसे पहले मनुष्य हूं, फिर जैन हूं, फिर तेरापंथ का आचार्य हूं।''

आचार्य तुलसी का जन्म बीसवीं शताब्दी में 20 अक्टूबर, 1914 में हुआ। मात्र ग्यारह वर्ष की अल्पावस्था में वे तेरापंथ के अष्टम् आचार्य कालूगणी के पास दीक्षित हुए अर्थात् जैन मुनि बने। 11 वर्षों तक मेधावी छात्र के रूप में अध्ययन कर गुरु कालूगणी द्वारा 22 वर्षों की उभरती जवानी में आचार्य पद को प्राप्त हुए। उनके आचार्य काल के दूसरे दशक का प्रारम्भ नवनिर्माण की कल्पना के साथ हुआ।

प्रथम स्वतंत्रता दिवस, 15 अगस्त, 1947 को उन्होंने 'असली आजादी अपनाओ' का शंखनाद किया। 2 मार्च, 1949 को उन्होंने 34 वर्ष की आयु में अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत आंदोलन में हरित क्रांति, सत्याग्रह व भूदान की तरह लोकतंत्र की उज्ज्वल कल्पना निहित है। आचार्य तुलसी के अणुव्रत की आवाज राष्ट्रपति से लेकर गरीब की झोपड़ी तक गूंजी। नैतिक क्रान्ति को निरन्तर प्रज्ज्वलित रखने के लिए उन्होंने पूरे देश में कन्याकुमारी तक लगभग एक लाख कि.मी. की पदयात्राएं कीं।

उनका व्यक्तित्व पुरुषार्थ का परम पयार्य था। वे सृजनशील चेतना के धनी थे। पद और सम्मान की आसक्ति से ऊपर उठ उन्होंने 18 फरवरी, 1994 को अपने आचार्य पद का विसर्जन कर विश्व के इतिहास में एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया, जो वर्तमान युग के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है।

वे एक महान धर्मगुरु के साथ–साथ समाज सुधारक भी थे। 23 जून, 1997 को उनका देहांत हो गया। मेरी दृष्टि में गांधी के बाद आचार्य तुलसी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन से समूचे देश और दुनिया को प्रभावित किया।

वर्तमान में जैन धर्म में मूल रूप से दो सम्प्रदाय श्वेताम्बर और दिगम्बर विद्यमान हैं। जैन धर्म के श्वेताम्बर सम्प्रदाय के अन्तर्गत तेरापंथ के नवम् आचार्य श्री तुलसी हुए। उन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, हिन्दी एवं

राजस्थानी भाषा में प्रचुर मात्रा में साहित्य लिखा। केवल हिन्दी साहित्य में गद्य एवं पद्य की विविध विधाओं में शताधिक ग्रंथों की रचना कर उन्होंने अपना अद्वितीय योगदान हिन्दी संसार को प्रदान कर दिया।

आचार्य तुलसी इस दृष्टि से सृजन के साक्षात् बिम्ब थे। उनका काव्य प्रतिभा, निपुणता और अभ्यास से ओतप्रोत है, जिसमें वास्तव में हृदय मुक्त होकर इस दशा को प्राप्त करना प्रतीत होता है। आचार्य तुलसी भारतीय संस्कृति के गौरव से अभिभूत थे। उनका मानना था कि जिस राष्ट्र ने अपनी संस्कृति को भुला दिया वह राष्ट्र जीवित या जाग्रत राष्ट्र नहीं हो सकता । देशवासियों को उन्होंने सदैव विराट सांस्कृतिक मूल्यों से अवगत कराया तथा उसके संरक्षण पर जोर दिया। वे सांस्कृतिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों के विकास पर जोर देते थे।

भारतीय संस्कृति के गौरव को व्यक्त करने वाली आचार्य तुलसी की उक्त पंक्तियां द्रष्टव्य हैं, ''जो लोग पदार्थ में विश्वास करते हैं, वे असहिष्णु हो सकते हैं। जो लोग शस्त्र शक्ति में विश्वास करते हैं, वे निरपेक्ष हो सकते हैं। जो लोग अपने लिए दूसरे के अनिष्ट को क्षम्य मानते हैं, वे अनुदार हो सकते हैं।''

आचार्य तुलसी ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय जनता में सोए आत्म विश्वास एवं अध्यात्म शक्ति को जगाने का उपक्रम किया। वे पाश्चात्य संस्कृति की अच्छाई ग्रहण करने के विरोधी नहीं थे परन्तु सभी बातों में उनका अनुकरण राष्ट्र के हित में नहीं मानते थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति को विदेशी लोगों में उतारना खतरा नहीं बताया जितना इस संस्कृति में रहने वालों से है।

आचार्य तुलसी की यह टिप्पणी महत्वपूर्ण है निज शिक्षा के साथ अनुशासन, धैर्य, सहअस्तित्व आदि जीवन मूल्यों का विकास नहीं होता, उस शिक्षा की जीवन दृष्टि के आगे प्रश्न चिन्ह उभर जाता है। अतः शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है जीवन मूल्यों को समझना, यथार्थ को जानना तथा उसे पाने की योग्यता हासिल करना।

आचार्य तुलसी ने आदर्श जीवन शैली को अपनाने पर बल दिया, जिसमें सांस्कृतिक मूल्य विद्यमान रहें, आस्था और विश्वास में कमी न आए और नागरिक श्रद्धावान, सहनशील, विचारशील, कर्मशील व चरित्रवान हों।

आचार्य तुलसी साहित्य में नवीनता और प्राचीनता का, आस्था और तर्क का, धर्म और विज्ञान का, जीवन मूल्य और सामयिक का समन्वय हुआ है। उनका स्पष्ट कथन है, ''प्राचीनता में अनुभव, उपयोगिता, दृढ़ता और धैर्य का एक लम्बा इतिहास छिपा है। तो नवनीता में उत्साह, आकांक्षा, क्रियाशक्ति और प्रगति की प्रचुरता है। अतः अनावश्यक प्राचीनता को समेटते हुए आवश्यक नवीनता को पचाते जाना विकास का मार्ग है।''

आचार्य तुलसी के काव्य में संस्कृति के संरक्षण, प्रसार और सामयिक दृष्टि का विशेष प्रयास हुआ है, जिसमें सांस्कृतिक चेतना लोगों में जागृत हुई और राष्ट्र की सांस्कृतिक गरिमा में वृद्धि हुई। इसका प्रमाण है सैकड़ों जैनों–अजैनों का अणुव्रत आन्दोलन से जुड़ना और उसका जीवन में रूपन्तरण करना।

प्रतीक जैन, नौवीं
हिलवुड अकादमी, जी–ब्लाक,
प्रीत विहार, दिल्ली

साधना के शलाका पुरुष

अनमोल गुणों के संप्रेषक गुरुदेव तुलसी ने नैतिक उत्थान में अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को सर्जा। यही कारण था कि भारत सरकार ने उन्हें 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार' से नवाजा और राजस्थान यूनिवर्सिटी ने उन्हें 'भारत ज्योति' कहा। गुरुदेव तुलसी इस धरा पर शरीर से चाहे अदृश्य हो गए हों, उनके अवदान अमर हैं जो मानवता का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

आचार्य तुलसी राष्ट्रसंत थे। देश की महान धरोहर थे। राष्ट्रीय एकता के पक्षधर थे। उनका प्रकाण्ड पांडित्य उन्हें अबू सीना, स्वामी विवेकानंद और डॉ. राधाकृष्णन के समान स्तर पर प्रतिष्ठित करता है। वे एक जैन आचार्य तथा तपस्वी थे। वे अणुव्रत के और जैन विश्व भारती के संस्थापक और एक सौ से अधिक पुस्तकों के लेखक थे।

प्रारंभिक जीवन : आचार्य तुलसी का जन्म बीसवीं शताब्दी में 20 अक्टूबर, 1914 को हुआ। मात्र ग्यारह वर्ष की अल्पावस्था में वे तेरापंथ के अष्टम् आचार्य कालूगणी के पास दीक्षित हुए अर्थात् जैन मुनि बने। ग्यारह वर्षों तक मेधावी छात्र के रूप में अध्ययन कर गुरु कालूगणी द्वारा 22 वर्ष की उभरती जवानी में आचार्य पद को प्राप्त हुए । उनका स्वयं का परिचय उन्हीं के शब्दों में इस विराटता के साथ मुखर हुआ, '' मैं सबसे पहले मनुष्य हूं, फिर जैन हूं, फिर तेरापंथ का आचार्य हूं।'' उनके आचार्य काल के दूसरे दशक का प्रारंभ नवनिर्माण की कल्पना के साथ हुआ।

उन्होंने सात साल में संस्कृत भाषा पर महारत हासिल की। इस के दौरान उन्होंने दिल से बीस हजार संस्कृत के श्लोक सीखने के द्वारा स्मृति का एक अद्‌भुत करतब का प्रदर्शन किया। उनमें प्रवचन की कला का कौशल बेजोड़ था। उन्होंने राजस्थानी भाषा में कविता लिखना शुरू किया।

आचार्य के रूप में जीवन : धर्मसंघ के प्रमुख के रूप में जिम्मेदारी संभालने के बाद आचार्य तुलसी अगले ग्यारह साल के लिए बीकानेर के विभिन्न भागों में एक स्थान से दूसरे स्थान में भ्रमण करते रहे। इस अवधि के दौरान उन्होंने शिक्षा और भिक्षुओं और भिक्षुणियों के प्रशिक्षण पर ध्यान केंन्द्रित किया। वे पहले से ही भिक्षुओं की एक बड़ी संख्या को दीक्षा दे रहे थे। उनके शिष्यों के बीच प्रमुख मुनि नथमल (बाद में आचार्य महाप्रज्ञ) थे। वे उनके द्वारा सिखाये शिष्यों में संस्कृत की तरह ज्ञान की विभिन्न धाराओं, प्राकृत दर्शन, तुलनात्मक अध्ययन आदि में बहुश्रुत विद्वान के रूप में उभरे।

अणुव्रत आंदोलन : अणुव्रत सचमुच अणु–छोटे, व्रत–संकल्प प्रतिज्ञा का मतलब है। अणुव्रत आंदोलन के साथ व्यक्ति के चरित्र और नैतिकता को विकसित करने के उद्‌देश्य से आचार संहिता तैयार की गई थी और लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया। पांच सिद्धांत (सत्य, अहिंसा, गैर कब्जे, गैर चोरी और ब्रह्मचर्य) आचरण के इस कोड की नींव है। हजारों लोगों ने इसे अपनाने के लिए अपना समर्थन दिया। इस आंदोलन को नैतिक जागृति के उद्‌देश्य के प्रति समर्पित और राष्ट्रीय चरित्र के विकास के रूप में लोगों ने स्वीकार कर लिया।

1950 में आचार्य तुलसी एक गांव में रह रहे थे। उन्होंने अपने शिष्य मुनि नथमल से सलाह ली और जैन आगम के अनुसंधान अनुवाद और एनोटेशन के इस विशाल कार्य के साथ आगे बढ़ने का फैसला किया।

जीवन विज्ञान : यह सही जीवन जीने का विज्ञान है। अमन से जीने का अद्‌भुत अवदान है। देश के उज्ज्वल भविष्य के निर्माता गुरुदेव तुलसी ने जीवन विज्ञान जैस अवदान देकर नवनिर्माण की अहम् भूमिका प्रस्तुत की। अनमोल गुणों के संप्रेषक गुरुदेव ने नैतिक उत्थान में अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को सर्जा। यही कारण था कि भारत सरकार ने उन्हें 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार' से नवाजा और राजस्थान यूनिवर्सिटी ने उन्हें 'भारत ज्योति' कहा। गुरुदेव तुलसी इस धरा पर शरीर से चाहे अदृश्य हो गए हों, उनके अवदान अमर हैं जो मानवता का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय : एक संगठन के उद्‌देश्य से 1971 में राजस्थान में आचार्य तुलसी के मार्गदर्शन में एक संस्थान स्थापित किया गया। उसके रूप में जैन विश्व भारती जैन परंपरा में और सामान्य में प्राचीन भारतीय पंरपराओं में छिपे हुए सत्य और मूल्यों को पुनर्जीवित करने के लिए है। इस विश्वविद्यालय के मुख्य उद्‌देश्यों में अहिंसा और शांति, संस्कृत, योग, ध्यान और साहित्य जैसे विषयों में साक्षरता का प्रसार करने के लिए है। यह विभिन्न विषयों में शोध करने के लिए और अनुसरण के लिए प्लेटफार्म और ढांचा प्रदान करता है। विश्वविद्यालय जैन तेरापंथ आदेश के आचार्य से मार्गदर्शन प्राप्त कर लेते हैं।

अन्य संस्थाएं : आदर्श साहित्य संघ यह रचनात्मक साहित्य के प्रकाशन का कार्य शुरू करने के लिए तुलसी के मार्गदर्शन में 1948 में स्थापित किया गया था। जैन भिक्षुओं द्वारा अधिकतर साहित्य का प्रकाशन इस संगठन की स्थापना के साथ आयोजित किया गया।

महिलाओं को शामिल करने की दृष्टि से आचार्य तुलसी द्वारा 1966 में स्थापित किया गया 37000 सदस्यों अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल महिलाओं की समस्याओं को हल करने के लिए, दूसरों की मदद करके एक सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सक्रिय हुआ। असल में 74 केन्द्र पूरे भारत में और विदेशों में 334 शाखाओं के साथ आध्यात्मिक प्रेरणा दे रहे हैं।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद युवाओं को धार्मिक और नैतिक गतिविधियों में शामिल युवा शक्ति को लामबंद करने के लिए स्थापित किया गया था जो आज बड़ी भूमिका में है।

आचार्य तुलसी ने अपनी पद यात्राओं के दौरान असंख्य लोगों को अपने चार संकल्प कराए :

- मैं मानवीय एकता में विश्वास रखता हूं।
- मैं जाति सम्प्रदाय के आधार पर लड़ाई–झगड़ा नहीं करूंगा, घर में भी झगड़ा नहीं करूंगा, शांति से रहूंगा।
- मैं जीवन व्यवहार में यथासंभव ईमानदारी का पालन करूंगा।
- मैं नशामुक्त रहते का अभ्यास करूंगा।

उनका व्यक्तित्व पुरुषार्थ का परम पर्याय था। वे सृजनशील चेतना के धनी थे। पद और सम्मान की आसक्ति से ऊपर उठ उन्होंने 18 फरवरी, 1994 को अपने आचार्य पद का विसर्जन कर विश्व के इतिहास में एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया जो वर्तमान युग के लिए बहुत बड़ी चुनौती है।

वे एक महान धर्मगुरु के साथ समाज सुधारक भी थे। मेरी दृष्टि में गांधी के बाद आचार्य तुलसी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन से पूरे देश और दुनिया को प्रभावित किया। उनके जन्म शताब्दी वर्ष में अणुव्रत अनुशास्ता, मानवता के मसीहा और साधना के श्लाका पुरुष को हमारा शत् शत् नमन।

संगीता. के ग्यारहवीं
श्री के.एस.एस.डी गर्ल्स हायर
सेकेंडरी स्कूल, सोवियरपेट,
चेन्नई, तमिलनाडु

साहसिक गाथाओं से परिपूर्ण जीवन

गुरुदेव आचार्य तुलसी के भीतर आनंद का अक्षय तुलसी भंडार था। उनमें अनुकंपा की चेतना जागृत थी, उनके भीतर प्रेम का दरिया प्रवाहित था। इसी कारण उनके निकट आने वाला व्यक्ति आत्मीयता की अनुभूति करता था। उनका आभामंडल शक्ति संपन्न था, मन और वाणी पवित्र थी। पवित्र मन, पवित्र वाणी और शक्तिशाली आभा मंडल वाला व्यक्ति ही दूसरों को कुछ प्रदान कर सकता है।

परमाराध्य गुरुदेव तुलसी का सम्पूर्ण जीवन साहसिक गाथाओं से भरा पड़ा है। वे एक आग्नेय पुरुष थे। अपने जीवन में उन्होंने जो स्वप्न देखे उन्हें साकार करने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़े। उनकी अन्तर्दृष्टि प्रखर थी, यही कारण था कि विरोधों के वातावरण में भी किए गये उनके निर्णय युगीन सिद्ध हुए। उनके रोम–रोम में साहस समाया हुआ था।

आचार्य तुलसी युग प्रवर्तक आचार्य थे। उन्होंने एक नए युग का प्रवर्तन किया। धर्मसंघ में उन्होंने नये–नये उन्मेष स्थापित किये। वे एक महान समाज सुधारक थे। उन्होंने मानवता को समृद्ध बनाया। वे दृढ़संकल्पी व्यक्तित्व के धनी थे। सभी कार्यों को करते हुए उनके भीतर श्रमणत्व का भाव निरंतर विद्यमान रहता था। वे अपनी साधना के प्रति पूर्णतया जागरूक थे। तेरापंथ के ज्योतिर्धर नवमाधिशास्ता के आदर्श हमारे कण–कण में समाहित हैं।

गुरुदेव आचार्य तुलसी के भीतर आनंद का अक्षय तुलसी भंडार था। उनमें अनुकंपा की चेतना जागृत थी, अन्तकरण ज्ञान–दर्शन से ओत–प्रोत था। उनके भीतर प्रेम का दरिया प्रवाहित था। इसी कारण उनके निकट आने वाला व्यक्ति आत्मीयता की अनुभूति करता था। उनका आभा मंडल शक्ति संपन्न था, मन और वाणी पवित्र थी। पवित्र मन, पवित्र वाणी और शक्तिशाली आभा मंडल वाला व्यक्ति ही दूसरों को कुछ प्रदान कर सकता है।

आचार्य श्री तुलसी एक ज्योतिर्मय साधक थे, उन्होंने मानवता की रक्षा के लिए अनेक कार्य किए जिसको मैं इस प्रकार व्यक्त कर सकती हूं:

गुरु और गुरुत्व : मुनि होना जीवन की एक बहुत बड़ी घटना है। और कुछ होने में आदमी संचित करता है, मुनि होने वाला विसर्जन करता है– शरीर का विसर्जन, इच्छा का विसर्जन और अहं का विसर्जन। तुलसी एक दिन मुनि बने, शिष्य बने। महामना कालूगणी को अपना गुरु चुना। अहं से इतने खाली हुए कि गुरु ने भर दिया। इतना भरा कि बाईस वर्ष की छोटी–सी अवस्था में गुरु बन गये। तेरापंथ की परंपरा में गुरु ही किसी को गुरु बनाता है, किन्तु गुरुत्व प्रदत्त नहीं हो सकता। आचार्य तुलसी ने अपने गुरुत्व को विकसित किया और इतना किया कि जिससे यह अनुभव नहीं हुआ कि वह गुरु प्रदत्त हैं।

नैतिकता और धर्म : ज्ञान तभी कृतार्थ होता है जब उसकी निष्पत्ति आचार में होती है। ग्यारह वर्ष तक ज्ञान की अजस्र धारा प्रवाहित कर आचार्य श्री ने आचार की प्रतिष्ठा की। क्रियाकाण्ड से आवृत्त धर्म अनावृत्त किया।

नैतिकता का स्वर मुखर हो गया है। लगा, जैसे कोई मसीहा आया है– सचाई, ईमानदारी और प्रामाणिकता के पराग–कणों को बिखेरने के लिए। उसके कण इतने विकीर्य हो गए हैं कि आज नैतिकता शून्य धर्म की कोई प्रतिष्ठा नहीं है। कोई श्रेय दे या न दे, किन्तु इतिहासकार यह श्रेय देने में कृपणता नहीं करेगा कि नैतिकता विहीन धर्म की धारणा को आचार्य श्री तुलसी ने बदला है।

नेतृत्व की निष्पत्ति : उन्होंने कहा, ''मैं नहीं मानता कि कोई आदमी सबका हृदय बदल दे और सबको ईमानदार बना दे किन्तु जो आदमी जनता को इसकी अनुभूति करा दे कि वह धर्म, व्यक्ति और समाज का भला नहीं कर सकता, जिसकी पहली निष्पत्ति नैतिकता का विकास न हो, वहीं वास्तव में धर्म का नेता होता है।'' आचार्य तुलसी ने इस युग में धर्म का नेतृत्व किया है, साथ–साथ समन्वय का नेतृत्व किया है। धर्म के मंच पर संगठन और एकता को प्राणवान बनाया है। उन्होंने और भी बहुत कुछ किया है किन्तु जीवन का यह एक ही पहलू ऐसा है जिसमें बहुत कुछ समा जाता है। यह मुनित्व की निष्पत्ति है, गुरुत्व की निष्पत्ति है और धर्म के नेतृत्व की निष्पत्ति है।

साधना का जीवन : आचार्य तुलसी केवल मुनि नहीं थे जो अपने में लीन रहे। वे केवल गुरु नहीं थे जो अपने संप्रदाय का नेतृत्व करे। वे धर्म की उस महान परम्परा के नेता थे जिसमें समूची मानव जाति और प्राणी–जगत का हित सन्निहित है। उनका कार्य है सबके लिए प्रकाश की रश्मियों को प्रसारित करना।

आचार्य श्री तुलसी का लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में प्रस्थान :

जाने वाले को अलविदा कहना और आने वाले का स्वागत करना संसार की रीत है। व्यक्ति जाता है तो गम का सैलाब छोड़ जाता है और आता है तो खुशियों का सैलाब लेकर आता है। व्यक्ति की तरह वक्त भी मनुष्य के मान को प्रभावित करता है। वक्त शब्द काल का वाचक है। उसका सबसे छोटा हिस्सा समय कहलाता है। पर सामान्य काम के लिए भी समय शब्द का प्रयोग होता आया है। समय गतिशील है। वह कभी ठहरता नहीं है। ठहरना तो दूर, ठिठकता भी नहीं और पीछे मुड़कर देखना तो उसने सीखा ही नहीं है। वह नदी के प्रवाह की तहर बहता रहता है। नदी के उसी जल में कोई व्यक्ति दूसरी बार हाथ नहीं धो सकता। इसी प्रकार समय का उपयोग भी एक ही बार होता है।

मार्ग बनाने के लिए भी विशिष्ट समय की अपेक्षा रहती है। प्राप्त समय का सदुपयोग न करने वाला उस पर अपना पदचिन्ह नहीं छोड़ सकता । इणमेव खणं वियाणिया – उपलब्धियों का क्षण यही है। इसे पकड़ कर नहीं रखा जा सकता है। करणीय को कर लेना ही, इसका मूल्यांकन करना है। जो पीछे आने वालों को सही दिशा का बोध दे सके। ऐसा वे ही कर पायेंगे :

- जो जैन जीवन शैली और व्यवहार के दर्पण में अनेकांत के प्रतिबिम्ब उभार पाएंगे।
- जो सह–अस्तित्व के सिद्धांत को स्वीकार कर विरोधी विचार वाले लोगों के साथ भी शांति से रह सकेंगे।
- जो व्यक्तिगत स्वार्थ या महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए किसी निरपराध की हत्या नहीं करेंगे।

- जो अपनी भावी पीढ़ी के संस्कार–निर्माण के लिए कोई रचनात्मक उपक्रम शुरू कर सकेंगे।
- जो अर्थहीन सामाजिक कुरुढ़ियों को छोड़ने में संकोच नहीं करेंगे।
- जो युवा पीढ़ी में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति को नियंत्रित कर उसे नशामुक्त कर सकेंगे।

ये कुछ संकेत हैं जो नए संकेतों को जन्म दे सकते हैं। नए संकेतों का जन्म तभी संभव है जब सामने से भागते हुए समय का हाथ थाम कर कुछ कर दिया जाए या करवा लिया जाए।

समय किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। वर्ष के महीने, महीने के दिन, दिन के घण्टे और घण्टे के मिनट या सैकेंड सबको बराबर मिलते हैं। महत्वपूर्ण काम करने वालों का वर्ष बीस महीनों का नहीं होता और दिन तीस घण्टों का नहीं होता। वे समय का समुचित नियोजन कर उससे लाभ उठा लेते हैं।

यह सब आचार्य श्री तुलसी का मानवता को महान अवदान रहा है। मैं यह कोशिश करुंगी कि यह सब बातें मैं अपने जीवन में ला सकूं। आचार्य श्री को शत् शत् नमन!

प्रिया सिंह, आठवीं
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी विद्यालय
एस एन सहा सराय
कोलकाता, प. बंगाल

गुरुता के गौरव–शिखर

आचार्य पद का दायित्व संभालने के बाद आचार्य श्री तुलसी का ग्यारह वर्ष का समय धर्मसंघ के आन्तरिक निमार्ण का समय था। निर्माण की इस श्रृंखला में उन्होंने सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया साध्वी समाज में शिक्षा के प्रसार का । आज साध्वी समाज में शिक्षा की दृष्टि से बहुमुखी विकास हुआ है। इसके एकमात्र श्रेयभागी थे आचार्य श्री तुलसी।

युगप्रधान, आचार्य श्री तुलसी इस युग के क्रन्तिकारी आचार्यों में एक थे। जैन धर्म को जन धर्म के रूप में व्यापकता प्रदान करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। वे तेरापंथ धर्मसंघ के नौवें आचार्य थे। आचार्य श्री तुलसी का जन्म सन् 1914 में कार्तिक द्वितीया को लाडनूं, राजस्थान में हुआ। उनके पिता का नाम झूमरमल जी खटेड़ एवं माता का नाथ बदनाजी था। नौ भाई–बहनों में उनका आठवां स्थान था। प्रारम्भ से ही वे एक होनहार व्यक्तित्व के धनी थे। पौष कृष्णा पंचमी को कालूगणी के कर कमलों से उनका दीक्षा संस्कार सम्पन्न हुआ। ग्यारह वर्षीय मुनिकाल में 20 हजार पदों को कंठस्थ कर लेना, 16 वर्ष की उम्र में अध्यापन कौशल में पारंगत हो जाना, 22 वर्ष में तेरापंथ जैसे विशाल धर्म संघ के दायित्व की चादर ओढ़कर 61 वर्षों तक उसे बखूबी से निभाना यह किसी चमत्कार से कम नहीं।

'लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूरी,
चीटीं ले शक्कर चली, हाथी के सिर धूरी'

कवि की इन पंक्तियों की जीवन निदर्शन है आचार्य तुलसी का जीवन। लघुता से प्रभुता के पायदानों का स्पर्श करते हुए चिरंतन विराटता के अतुंग चैत्य शिखर का आरोहरण कर गणपति से गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के रूप में विख्यात नमन उस गण गौरी शंकर को, जिने गुरुता का विसर्जन कर वस्तुतः गुरुता के उस गौरव, शिखर का आरोहण कर लिया, जहां पद, मद और कद की समस्त सरहदें सिमटकर लघुता से प्रभुता में विलीन हो गईं।

संयम जीवन का निर्मल साधना, विवेक–सौष्ठव, आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन, बहुश्रुतता, सहनशीलता, गंभीरता, धीरता, अनुशासन, निष्ठा आदि विविध विशेषताओं से प्रभावित होकर अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी ने गंगापुर में उन्हें अपने उत्तराधिकारी के रूप में मनोनीत किया। युवाचार्य पद पर रहने का सौभाग्य आचार्य श्री तुलसी को मात्र चार दिन का ही मिला। भाद्रपद शुक्ला की षष्ठी को पूज्य कालूगणी दिवंगत हो गए। बाईस वर्षीय मुनि तुलसी के युवा कन्धों पर विशाल धर्मसंघ का दायित्व आ गया। वे भाद्रपद शुक्ला नवमी को आचार्य पद पर आसीन हुए। उस समय तेरापंथ संघ में 139 से 333 साध्वियां थीं।

आचार्य पद का दायित्व संभालने के बाद आचार्य श्री तुलसी का ग्यारह वर्ष का समय धर्मसंघ के आन्तरिक निमार्ण का समय था। निमार्ण की इस श्रृंखला में उन्होंने सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया साध्वी समाज में शिक्षा के प्रसार का । आज साध्वी समाज में शिक्षा की दृष्टि से बहुमुखी विकास हुआ है। इसके एक मात्र श्रेयभागी थे आचार्य श्री तुलसी।

18 फरवरी, 1994 सुजानगढ़ का विशाल धर्म प्रांगण। कितना अपूर्व था वह क्षण जब आचार्य श्री तुलसी ने अपने 60 दशक से तेजस्वी प्रशासन को एकाएक अलविदा कहकर उत्कृष्ट आत्म–साधना का निर्णय लिया।

उनकी इस उद्घोषणा के साथ मानव समाज चौंक उठा। पद त्याग के इस क्रांतिकारी कदम ने नाम, यश और पद, प्रतिष्ठा की भीषण विभिषिका से त्रस्त राजनीतिक एवं धार्मिक जगत में तहलका मचा दिया।

अपने शिष्य को आचार्य के रूप में स्वीकार कर गुरुता का सर्वाधिकार सौंपना विलक्षण है। विसर्जन की इस अहम् दुर्लभ घटना ने आचार्य श्री तुलसी को अध्यात्म की उस उच्च व्यास पीठ पर अधिष्ठित कर दिया।

वे एक महान पद यात्री थे। लगभग साठ हजार कि.मी. की पदयात्रा कर पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण भारत के अधिकांश भूभाग में उन्होंने नैतिकता की लौ प्रज्ज्वलित की है। उनके युग में तेरापंथ का क्षेत्र–विस्तार बहुत व्यापक स्तर पर हुआ। भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में तथा भारत के बाहर भूटान, नेपाल में भी साधु–साध्वियों ने जाकर अणुव्रत के संदेश को पहुंचाया है।

आचार्य श्री तुलसी के जीवन का हर कोण उपलब्धियों से भरा–पूरा प्रतीत होता है। उनके कार्य स्त्रोत विविध दिशागामी हैं। वे एक कुशल अनुशास्ता, समाज सुधारक, नारी–उद्धारक, धर्मक्रांति के सूत्रधार, मानवता के मसीहा, जैन दर्शन के मर्मज्ञ एवं महान् विचारक, चिन्तक व साहित्यकार थे। उनके साहित्य की भाषा, हिन्दी, राजस्थानी और संस्कृत रही है। गद्य और पद्य की विधाओं में उनके द्वारा लिखित पचासों साहित्यिक कृतियों से न केवल साहित्य ही समृद्ध हुआ है अपितु दर्शन, ज्ञान–विज्ञान का क्षेत्र कृतकृत हुआ है।

आचार्य तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ के सर्वोन्मुखी विकास करने के साथ–साथ मानवता की सेवा और मानवीय मूल्यों की प्रस्थापना को अपना एक प्रमुख कार्य माना। उनकी मानवीय सेवाओं के मूल्यांकन स्वरूप युग प्रधान के रूप में उनका अभिनन्दन यूनेस्को के डायरेक्टर लूथर इवेन्स, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ वेकन आदि विदेशी व्यक्तियों द्वारा उनकी नीति का समर्थन, जर्मन विद्वान होमयोराउ द्वारा विदेश आने का निमंत्रण, राष्ट्रीय एकता परिषद में सदस्य के रूप में मनोनयन, राजस्थान उदयपुर यूनिवर्सिटी द्वारा भारत ज्योति अलंकरण, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ वाराणसी द्वारा वाचस्पति मानद अंलकरण, राष्ट्रीय एकता के विकास में उल्लेखनीय भूमिका के लिए सन् 1992 में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित, महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन द्वरा हकीम खां सूर सम्मान आदि तेरापथ धर्मसंघ के इतिहास के ऐसे स्वर्णिम पृष्ठ हैं जो काल के भाल पर सदा अंकित रहेंगे।

आचार्य श्री तुलसी के जीवन का एक दुर्लभ दस्तावेज है 18 फरवरी, 1994 सुजानगढ़ में होने वाले मर्यादा महोत्सव का विराट आयोजन। उस दिन उन्होंने अपने उर्जस्वल महिमामंडित आचार्य पद का विसर्जन कर अपनी सक्रिय और समर्थ उपस्थिति में युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। नाना उपाधियों, अलंकरणों और सम्बोधनों से वह विराट व्यक्त्वि सचमुच निरूपधि बनकर मानवता की सेवा अटल प्रण लिए उन जन नेताओं और धर्म नेताओं के सामने चुनौती रहा जो सत्ता, पद और प्रतिष्ठा के पीछे पागल बन रहा है।

आचार्य श्री तुलसी का शासनकाल तेरापंथ का स्वर्णयुग रहा उन्होंने अतीत के गौरव को उजाला है। वर्तमान को संवारा है और भविष्य उनसे संवरेगा। उनके अवदान युग का भविष्य हैं, राष्ट्र का भविष्य है और समग्र मानव जाति का भविष्य हैं।

हिमानी सचदेव दसवीं
सेंट मारग्रेट सी. सै. स्कूल,
प्रशांत विहार, दिल्ली

सत्य–साधक, अहिंसा उपासक

वे गुणों के भंडार थे। वे उपासक श्रेणी को ऊंचा उठाने के लिए यथा संभव प्रयास करते थे। वे जनता को संयममय जीवन जीने की कला का उपदेश देते थे। वे आचार–संयमित उनके अनुसार भावनाओं पर नियंत्रण होना चाहिए। अहंकार नहीं करना चाहिए। बौद्धिक विकास का भी बहुत महत्व है।

आचार्य श्री तुलसी का जन्म 20 अक्टूबर सन् 2014 को लाडनूं (राजस्थान) में हुआ। उनके पिता जी का नाम झूमरमल जी खटेड़ व माता जी का नाम बदनाजी था। उनकी प्रेरणा स्वरूप उनके मन में बचपन से ही सत्संग व साधु–चर्चा के प्रति अनुराग था।

अष्टम आचार्य श्री कालूगणी के दिव्य प्रवचन तथा व्यक्तित्व ने उनके पूर्व अर्जित संस्कारों को जागृत कर दिया। वे बचपन से ही वैरागी और अपने विचारों पर स्थिर थे। आचार्य श्री कालूगणी के कर कमलों से उनका दीक्षा संस्कार सम्पन्न हुआ। आचार्य कालूगणी का शरीर रोग से पीड़ित हो गया, इसलिए उन्होंने उन्हें युवाचार्य घोषित कर दिया। उनके युवाचार्य बनने के चार दिन बाद ही आचार्य श्री कालूगणी का स्वर्गवास हो गया। उस समय आचार्य तुलसी की आयु मात्र 22 वर्ष की थी।

आचार्य पद का गुरुतर भार आते ही उन्होंने संघ में शिक्षा का अत्यधिक प्रसार किया, जिसका परिणाम है कि आज संघ में अनेक विद्वान साधु–साध्वियां विद्यमान हैं। अध्यापन का कार्य स्वयं आचार्य श्री व साधु–साध्वियां कराते थे।

आचार्य तुलसी ने जनता के नैतिक उत्थान के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। आचार्य श्री तुलसी का कृतित्व बहुमुखी था। अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से उन्होंने एक सफल धर्म क्रांति की, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा के लिए भगीरथ प्रयत्न किया। पदयात्राओं के द्वारा जन–जागरण का सघन अभियान चलाया। शिक्षा के क्षेत्र में जैन विश्व भारती संस्थान उनका महान अवदान है।

आचार्य तुलसी युगदृष्टा और युग सृष्टा दोनों थे। उन्होंने युग को देखा और नवयुग का सृजन किया। नैतिकता और अध्यात्म–इन दोनों विषयों को उनकी प्रकाश–रश्मियों ने आलोकित किया। आचार्य तुलसी सिद्ध पुरुष थे। उनकी सिद्धि अनेक दिशाओं में ज्योति विकिरण करती थी। उस ज्योति का हर कण दूसरों के लिए ज्योतिपुंज जैसा होता था। उनका चिंतन और अनुभव उनकी वाणी में अति मात्रा में प्रस्फुटित हुआ है। उनकी वाणी में भी सिद्धि थी। उनका हर वाक्य एक शिक्षा–पद था।

आचार्य श्री तुलसी संयम पर बल देते थे। वे अपने प्रवचन में कहते थे कि मोक्ष–साधना का आधारभूत तत्व है–संयम। संयम ही सच्चा जीवन है। भोग में सच्चा सुख और शांति कहां ? असंयमी जीवन सुरक्षित नहीं कहा जा सकता। वह सदा दुःखों से आक्रांत रहता है। संयम जीवन की मर्यादा है। संयम के बिना नीतियां निरंकुश हो जाएंगी, जीवन–क्रम अस्त–व्यस्त हो जाएगा, राजनीति दूषित बन जाएगी।

आचार्य श्री तुलसी आमतौर पर अपने प्रवचन में कहा करते थे कि देश में चरित्र हीनता की बाढ़ आने से नैतिक दुर्भिक्ष हो गया है। अनाज का दुर्भिक्ष होने पर दूसरे देशों से आयात करके उसकी पूर्ति की जा सकती है,

परन्तु नैतिकता का आयात नहीं होता। आज अनैतिकता एक छोर से दूसरे छोर तक व्याप्त है। इसे मिटाने के लिए भगीरथ प्रयत्न करना होगा। याद रखें, इसको मिटाने के लिए कोई देवता या परमात्मा नहीं आएगा।

अणुव्रत आंदोलन को घर–घर में पहुंचाने के लिए आचार्य श्री ने दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, पंजाब आदि प्रान्तों की यात्राएं कीं, धर्म संघ को जानने का भी लोगों को अवसर मिला। हजारों व्यक्तियों ने अणुव्रत को अपने जीवन में उतारा जिससे राष्ट्र में एक नैतिक वातावरण बना। इस वातावरण को अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए आचार्य श्री ने दक्षिण भारत की यात्राएं कीं। आचार्य श्री ने सभी प्रान्तों की यात्रा की एवं मुख्य नगरों में अणुव्रत आन्दोलन एवं जैन धर्म का भव्य स्वागत हुआ।

इतिहास की यह विरल घटना है कि आचार्य पद का त्याग कर अपनी उपस्थिति में ही किसी व्यक्ति को आचार्य पद प्रदान किया। आचार्य श्री ने अपने आचार्य पद का त्याग इसलिए किया क्योंकि वे अपना पूरा समय साधना में लगाना चाहते थे। वे अपना समय मानवता की सेवा में भी व्यतीत करते थे। वे ईश्वर की भक्ति व उपासना में अपना ध्यान लगाना चाहते थे। वे कहते थे कि मैं देख रहा हूं, आज चारों ओर शिक्षा के विकास की चर्चा है। हालांकि मैं शिक्षा का विराधी नहीं, तथापि सार्थकता उसी शिक्षा की मानता हूं जो जीवन निर्माण करने में सक्षम हो। जो शिक्षा जीवन का सही निर्माण न कर सके, ऐसी शिक्षा की कोई विशेष उपयोगिता मैं नहीं देखता, बल्कि कहना चाहिए कि वह मात्र भार है। प्रश्न होगा कि जीवन निर्माण से क्या तात्पर्य है। कहा भी गया है–

शान्तं तुष्टं पवित्रं च, सानन्दमिति तत्वतः।
जीवनं जीवनं प्राहुः, भारतीय सुसंस्कृतो।।

आचार्य श्री तुलसी प्रायः कहा करते थेः

जो करे हुकुमत लाखों पर, पर नहीं निज कानों पर ।
भौं पर विकार की रेख खीची,रे!सच्चा वहीं अनाथ।
नाथ–अनाथ अर्थ बिन समझे व्यर्थ करे क्यों बात ?

बहुत गहरी बात है यह। लाखों व्यक्तियों पर अनुशासन करना फिर भी सरल है, पर अपने इन दो कानों पर अनुशासन करना कठिन है। करोड़ों व्यक्तियों को जीतना फिर भी सरल है, पर अपने एक मन को जीतना कठिन है। करोड़ों–अरबों की धन संपत्ति का स्वामी होना उतना कठिन नहीं है, जितना संयम से संपन्न होना है, चरित्र से संपन्न होना। दूसरे शब्दों में करोड़पति–अरबपति होकर भी वह महादरिद्र है जिसका जीवन संयम और चरित्र से रीता है।

आचार्य तुलसी का मानना यह था कि माता–पिता की तरह अध्यापकों पर भी बच्चों के सुधारने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है। यह कहकर इस बात को टाल नहीं सकते कि उनके पास तो बच्चा पांच छह घंटे रहता है। मैं पूछना चाहता हूं, पांच–छह घंटे कोई कम हैं ? संत तुलसीदास जी ने कहा हैः–

एक घड़ी, आधी घड़ी, आधी में पुनि आध।
तुलसी संगत साधु की, कटे कोटि अपराध।

आचार्य तुलसी अहिंसा के पुजारी थे। वे सत्य की साधना को सबसे बड़ी शक्ति मानने वाले, तत्वज्ञानी, संघर्षशील, कर्तव्यपरायण, व्यक्ति से ज्यादा व्यक्ति के गुणों को महत्व देने वाले, स्वावलम्बी और उपदेश देने को अपना कर्तव्य समझने वाले तथा कुशाग्र बुद्धि के मालिक थे। एक आचार्य में जो गुण होने चाहिए, वे सभी गुण आचार्य तुलसी में थे। वे गुणों के भंडार थे। वे उपासक श्रेणी को ऊंचा उठाने के लिए यथा संभव प्रयास करते थे। वे जनता को संयममय जीवन जीने की कला का उपदेश देते थे। वे आचार–संयमित थे। उनके अनुसार भावनाओं पर नियंत्रण होना चाहिए। अहंकार नहीं करना चाहिए। बौद्धिक विकास का भी बहुत महत्व है।

आचार्य श्री कहते थे कि जो नीति को न छोड़े, वह सज्जन होता है। कुछ लोग महान व्यवहार के मालिक होते हैं, भाग्य की चिंता नहीं करनी चाहिए। देवी–देवताओं की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। सांसारिक इच्छाओं के लिए स्वयं संघर्ष करना चाहिए, उनका सहारा नहीं लेना चाहिए।

गुरुदेव तुलसी जी ने चातुर्मास के लिए अपना अन्तिम प्रवास बीकानेर में किया, स्वास्थ्य लाभ के लिए गुरुदेव लगभग 25 दिन बोथरा भवन में रहे। 23 जून, 1997 को लगभग साढ़े दस बजे पुनः तेरापंथ भवन लौट आए। अचानक दिन का दौरा पड़ने के कारण 83 वर्ष की आयु में हमेशा के लिए इस संसार से वे विदा ले गये। उनका मानवता के प्रति अवदान, उनका व्यक्तित्व और कृतित्व की विशद रेखाएं आज भी जन समुदाय को प्रभावित कर रही हैं।

सिमरन, नौवीं
श्रीमती उत्तमीबाई आर्य कन्या
व. मा. विद्यालय, नया बाजार,
भिवानी, हरियाणा

अहिंसा के सबसे प्रभावी व्याख्याता

वर्तमान की शासन–पद्धतियां नियंत्रण की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। वैयक्तिक स्वतंत्रता की सीमा सिमटती जा रही है। यह हिंसा की प्रतिक्रिया है। वैयक्तिक स्वार्थ की पूर्ति बहुत प्रिय लगने लगती है। वह जैसे–जैसे बढ़ती रहेगी, वैसे–वैसे नियंत्रण को निमंत्रण मिलता जाता रहेगा।

गगन की काली घटाएं अपने भीतर दिवाकर एवं चंद्रमा को छुपाकर अहम् की आभा में आकर दिन–रात को समाप्त करने की सोच रही थी, शांत नीरव अभ्रमंडल सितारों की चमक को भी विछिन्न कर स्वयं दुनिया के ऊपर छत्र–चावर डालने की सोच रही थी, इसी बीच 20वीं सदी का एक क्षण अपनी सदी को ऐतिहासिक एवं सुरक्षित बनाने के लिए किसी महान आत्मा की खोज करने लगा क्योंकि दिवाकर केवल दिन में एवं चंद्रमा मात्र रात्रि में प्रकाश की किरणों को बिछा सकता है, जबकि महापुरुष तो दिन एवं रात में भेद नहीं करते हुए अथक परिश्रम से हर समय अपनी चांदनी बिखरते ही रहते हैं। इसलिए जब–जब भी धरा अपनी शक्ति से परास्त होने लगती है तभी महापुरुषों का जन्म पुनः सकल जहान में नव प्रकाश फैला देता है।

20वीं सदी में भी गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी का जन्म अनेक अलौकिकताओं को धारण किए था। पंचम आरा अपना प्रभाव जमाकर कलयुग के दरबार में सबको प्रवेश करा रहा था। उस समय सिंह लग्न में जन्मे तुलसी के सिंहनाद ने धरती के चप्पे–चप्पे को जगाकर, अपना पसीना बहाकर हर शख्स को अहिंसा की भीनी–भीनी पवन में बहा लिया। बुद्धि के शिकंजे ने पुण्याई के पुरोधा तुलसी को बुद्धि से ऊपर उठाकर प्रज्ञा का साक्षात्कार करवा दिया, इसलिए अपनी प्रज्ञा से उत्तराधिकारी के रूप में महाप्रज्ञ रूपी प्रज्ञापुंज को खोज निकाला।

जहां प्रज्ञा व परिश्रम का समवाय सज्जित होता है वहां पर श्रेष्ठता व महानता के स्वतः ही दर्शन हो जाते हैं। ज्योतिष शास्त्र में बताया जाता है कि सूर्य व शनि दोनों शत्रु हैं परन्तु गुरुदेव में सूर्य एवं शनि दोनों विराजमान थे। यह विरोधाभास महापुरुष में ही देखने को मिल सकता है। क्योंकि वहां शत्रु भी मित्र बन जाते हैं जैसे भगवान महावीर के समवसरण में शत्रुता का भाव रखने वाले सूर्य व शनि मित्र बनकर उस महापुरुष के व्यक्तित्व को आकर्षक बना रहे थे।

तुलसी के भीतर भी शत्रुता का भाव रखने वाले सूर्य व शनि मित्र बनकर उस महापुरुष के व्यक्तित्व को आकर्षक बना रहे थे। शत्रु बनकर अपना निकृष्ट प्रयोग करने वाला व्यक्ति भी उस तेजपुंज के सामने जाते ही अपने आपको संभाल नहीं पाता था, क्योंकि जहां सच्चाई, पवित्रता एवं निःस्वार्थता का साम्राज्य होता है वहां कोई भी शक्ति पछाड़ नहीं पाती है। सत्यनिष्ठा की बलिवेदी पर विचारों की पवित्रता से आने वाले राहगीर को उन्होंने अपना बना लिया। गणाधिपति गुरुदेव स्वार्थ की भावना से ऊपर उठकर वर्तमान क्षणों को निःस्वार्थमय बनाया, इसलिए केवल महापुरुष का ही भविष्य शुभ नहीं बना अपितु सम्पूर्ण संघ का भविष्य उज्ज्वल बन गया।

सोच के सागर में डूबते हैं तो पाते हैं कि गुरुदेव बार–बार अपने मुख से शुभ भविष्य की कामना करते रहते थे। उन्होंने अपने जीवन में ऐसे–ऐसे कार्य किए, हर गरीब से लेकर राष्ट्रपति को अपना बनाकर भारत भूमि पर सूर्य की भांति चमक कर संग में महाप्रज्ञ रूपी चन्द्रमा को भी चमका दिया। ऐसे महापुरुष विकलित भूमि पर

उदित होते ही नवसृजन का द्वार खोलकर बुराइयों के द्वार पर दस्तक देना प्रारंभ कर देते हैं तभी जनता शताब्दी सहस्त्राब्दी बीतने के बाद भी उन्हें नहीं भूल पाती है।

आचार्य तुलसी का दबंग एवं निर्भय व्यक्तित्व काव्य में भी झलकता है। उनका आत्म विश्वास काव्य में अनेक रूपें में अभिव्यक्त हुआ है। उनका अदम्य आत्मविश्वास और संकल्प शक्ति उनके काव्य में झलकती थी। जैसे :
''प्राणों की परवाह नहीं, प्रण को अटल निभाएंगे,
नहीं अपेक्षा है और की, स्वयं लक्ष्य को पाएंगे''।
आचार्य तुलसी प्रगतिशील विचारों के धनी थे। उन्होंने किसी रुढ़ परंपरा या मान्यता को स्वीकृति नहीं दी। युगीन परिस्थितियों के अनुसार न केवल उन्होंने अपने जीवन और विचारों में परिवर्तन किया, बल्कि संघ में भी मौलिकता की सुरक्षा करते हुए प्रगति के नए–नए उन्मेष उद्घाटित किए। उनके युगीन चिंतन की झलक इन पंक्तियों में दिखाई पड़ती है :

''नया मोड़ हो उसी दिशा में, नई चेतना फिर जागे,
तोड़ गिराएं जीर्ण–शीर्ण जो, अंधरुढ़ियों के धागे''।

आचार्य तुलसी एक व्यक्ति नहीं वरन गौरवान्वित संस्कृति थे। उनका जीवन प्राच्य और प्रतीच्य दोनों संस्कृतियों का अद्भुत समन्वय था। वे अग्रणी संवाहक थे और हिंदी भाषा की अभिव्यक्ति भी। वे उच्चकोटि के संत, आध्यात्मिक गुरु, कुशल धार्मिक नेता और मंजे जुए साहित्यकार थे। इसी कारण उनके काव्य में उसी स्तर की प्रतिभा और विविधता दिखाई पड़ती है।

उनकी प्रतिभा, विविधता, वचन आदि सत्य और अहिंसा का बोध कराते हैं। उनका मानना था कि जीवन में सुख प्राप्ति होने पर पेट भर जाता है, अर्थात् उल्लास, प्रसन्नता का परिणाम हमारे मन में उभरने लगता है। परन्तु दुःख, सुख नहीं है ? फिर आचार्य तुलसी जी के आध्यात्मिक विचार आते हैं जो कि एक ऐसा विचित्र चित्र प्रदान करते हैं जिससे दुख, सुख हैं। दुख के समय यदि सत्य की सापेक्षता के साथ जुड़ जाए, तो वह दुख, दुख ही क्या ? अर्थात् दृष्टि से समझ लिया जाए तो आत्मा के सर्वांगीण स्वरूप का बोध हो सकता है और सापेक्षता के आधार पर ही सत्य का प्रतिपादक बन सकता है।

आचार्य तुलसी ने मानवता को योगदान वर्तमान समस्याओं का निराकरण करके भी दिया। अधिकांश समस्याएं हिंसा की भावना से उत्पन्न होती हैं तो हम यह कह सकते हैं 'समस्या के बीज : हिंसा की माटी'। बिजली जैसे उमड़ते हुए बादलों की सूचना देती है, वैसे ही भय हिंसा के अवतरण की सूचना देता है। जैसे एक आदमी ने दूसरे आदमी को सताया है, ठगा है, तिरस्कृत किया है और मारा है, इसलिए मनुष्य के मन में भय की सृष्टि हुई है। वह भय से प्रेरित होकर ही शस्त्र–निर्माण की दिशा में आगे बढ़ा है। प्रस्तर आयुधों से अणुव्रत–आयुधों तक के विकास की पृष्ठभूमि में भय ही सबसे बड़ा प्रेरक तत्व है। हिंसा और भय से बचने के लिए ही मनुष्य ने समाज का निर्माण किया था। जीवन की हर समस्या और दुर्बलता के लिए आश्वासन दे सके ऐसी समाज–व्यवस्था में ही अहिंसा के बीज अंकुरित हो सकते हैं।
'अहिंसा परमो धर्मः' कुछ विशेष मनुष्यों ने अहिंसा को धर्म के समान माना है और अहिंसा को पानी का स्वरूप देकर कहा है कि : *जीवन लगे मनुष्य का, पानी की प्राचीर*
पलक झपकते बह चले, तोड़ देह से तीर।

अर्थात् मनुष्य का जीवन अहिंसा के अंकुरित बीज अथवा पानी की बूंद की तरह है, यदि हिंसा रूप अपना लिया, पलक झपकते ही सब कुछ नष्ट हो जाएगा और देह के टुकड़े–टुकड़े होने पर , समस्या सुलझाने का प्रशिक्षण नहीं हो पाएगा। इसी कारणवश अहिंसा समाजशास्त्रीय अध्ययन का अनिवार्य अंग है।

वर्तमान की शासन–पद्धतियां नियंत्रण की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। वैयक्तिक स्वतंत्रता की सीमा सिमटती जा रही है। यह हिंसा की प्रतिक्रिया है। वैयक्तिक स्वार्थ की पूर्ति बहुत प्रिय लगने लगती है। वह जैसे–जैसे बढ़ती रहेगी, वैसे–वैसे नियंत्रण को निमंत्रण मिलता जाता रहेगा। आचार्य तुलसी अहिंसा के सर्वाधिक प्रभावशाली व्याख्याता थे। इस अनुभूति के सन्दर्भ में वर्तमान समस्याओं की आत्मा प्रस्फुट होती हैं।

भारत ऐसा देश है जहां आध्यात्मिक और धार्मिक मूल्यों की प्रतिष्ठा है। एक अभिमत के अनुसार सज्जन वह होता है जो समाज सेवा और सहयोग के लिए सदा तत्पर रहता है। यहां व्यक्ति का अंकन उसके चरित्र के आधार पर किया जाता है। चरित्र की उज्ज्वलता का मानदण्ड होता है व्यक्ति का व्यवहार। जाति, सम्प्रदाय आदि भेद रेखाओं से ऊपर एक अणुव्रती का चरित्र मानव समाज के लिए आदर्श चरित्र हो सकता है। उन्हें अणुव्रती बनकर देश का गौरव बढ़ाना है और युगीन समस्याओं से निपटना है। अंत में आचार्य तुलसी की इन पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है :

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा,
तुलसी अणुव्रत सिंहनाद सारे जग में प्रसरेगा,
मानवीय आचार संहिता में अर्पित तन–मन हो,
संयममय जीवन हो।

शिवम मंगला दसवीं
जैन भारती मृगावती विद्यालय,
जैन मंदिर कांप्लैक्स,
जी.टी. करनाल रोड़, दिल्ली

नारी जागरण के उन्नायक

नैतिक क्रांति, मानसिक शांति और व्यक्तित्व निर्माण की पृष्ठभूमि पर आचार्य श्री ने तीन अभियान चलाए– अणुव्रत आन्दोलन, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान। ये तीनों ही अभियान अनुपम हैं, अपूर्व हैं और अपेक्षित हैं। अणुव्रत मानव को चारित्रिक मूल्यों के संकट से उबारने का उपक्रम है। प्रेक्षाध्यान मानसिक एवं शारीरिक तनावों से ग्रसित मानवीय चेतना को शक्ति के पथ पर अग्रसर कर रहा है।

आचार्य श्री तुलसी का जन्म वि.सं. 1971 कार्तिक शुक्ला द्वितीया को राजस्थान में हुआ। उनके पिता का नाम झूमरमल जी एवं माता का नाम बदनाजी था। प्रारम्भ से ही वे एक होनहार व्यक्तित्व के धनी थे।

वि.सं. 1982 पोष कृष्णा पंचमी को लाडनूं में ग्यारह वर्ष की अवस्था में पूज्य काणूगणी के करकमलों से उनका दीक्षा–संस्कार सम्पन्न हुआ। उन्होंने हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत भाषाओं तथा व्याकरण, कोश, साहित्य, दर्शन एवं जैनागमों का तलस्पर्शी अध्ययन किया। लगभग बीस हजार श्लोक परिणाम रचनाओं को कंठस्थ कर लेना उनकी प्रखर प्रतिभा का परिचय है।

संयम जीवन, निर्मल साधना, विवेक बहुश्रुतता, सहनशीलता, गंभीरता, धीरता, अनुशासननिष्ठा आदि विविध विशेषताओं से प्रभावित होकर अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी ने वि.सं. 1993 भाद्रपद शुक्ला तृतीया को गंगापुर में उन्हें अपने उत्तराधिकारी के रूप में मनोनीत किया।

आचार्य पद का दायित्व संभालने के बाद आचार्य श्री तुलसी का ग्यारह वर्ष का समय धर्मसंघ के आन्तरिक निर्माण का समय था। निर्माण की इस श्रृंखला में उन्होंने सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया। साध्वी समाज में शिक्षा के प्रसार का। आज साध्वी समाज में शिक्षा की दृष्टि से बहुमुखी विकास हुआ है। इसके एकमात्र श्रेय भागी हैं आचार्य श्री तुलसी।

नैतिक क्रांति, मानसिक शांति और व्यक्तित्व निर्माण की पृष्ठभूमि पर आचार्य श्री ने तीन अभियान चलाए– अणुव्रत आन्दोलन, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान। ये तीनों ही अभियान अनुपम हैं, अपूर्व हैं, और अपेक्षित हैं। अणुव्रत मानव को चारित्रिक मूल्यों के संकट से उबारने का उपक्रम है। प्रेक्षाध्यान मानसिक एवं शारीरिक तनावों से ग्रसित मानवीय चेतना को शक्ति के पथ पर अग्रसर कर रहा है। जीवन विज्ञान के प्रयोग व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया है।

धर्म क्रान्ति और साम्प्रदायिक सद्भाव आचार्य श्री के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में एक है। उनके अभिमत में धर्म का सबसे बड़ा पवित्र स्थान मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि धर्म स्थान नहीं बल्कि मनुष्य का अपना अन्तकरण है। वे कहते हैं– मुझे ऐसा धर्म नहीं चाहिए जो धर्मस्थान में बैठकर भक्त प्रहलाद और मीरा की भक्ति प्रदशित करे और घर, दुकान एवं ऑफिस में बैठकर राक्षसी वृत्तियां प्रकट करे।

नारी–जागरण, संस्कार–निर्माण, रुढ़ि–उन्मूलन एवं सामाजिक बुराइयों के बहिष्कार हेतु वे सतत प्रयत्नशील रहे। नये और प्राचीन मूल्यों में समन्वय स्थापित कर उन्होंने नयी और पुरानी पीढ़ी के बीच एक सेतु का काम

किया। वे एक महान पदयात्री थे। उन्होंने भारत के सभी प्रान्तों तथा भारत के बाहर भूटान, नेपाल में भी जाकर अणुव्रत संदेश को पहुंचाया।

आचार्य श्री तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ के सर्वोन्मुखी विकास करने के साथ–साथ मानवता की सेवा और मानवीय मूल्यों की प्रस्थापना को अपना एक प्रमुख कार्य माना। उनकी मानवीय सेवाओं के मूल्यांकन स्वरूप युगप्रधान के रूप में उनका अभिनन्दन, युनेस्को के डायरेक्टर लूयरइवेन्स, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ वेकन आदि विदेशी व्यक्तियों द्वारा उनकी नीति का समर्थन, जर्मन विद्वान होमयोराऊ द्वारा विदेश आने का निमंत्रण, राष्ट्रीय एकता परिषद में सदस्य के रूप में मनोनयन, राजस्थान उदयपुर यूनिवर्सिटी द्वारा भारत ज्योति अंलकरण, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ वाराणसी द्वारा वाचस्पति मानद अलंकरण, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित आदि सम्मान हैं जो काल के भाल पर सदा अंकित रहेंगे।

आचार्य श्री अपने परिचय में कहते हैं– ''मैं सबसे पहले मानव हूं, उसके बाद धार्मिक हूं, उसके बाद जैन हूं और उसके बाद तेरापंथ का आचार्य हूं।'' उनके इन्हीं क्रांतिकारी विचारों का परिणाम तेरापंथ आज न केवल राष्ट्रीय बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुका है। तेरापंथ के सिद्धांतों को युग की भाषा में रखकर उसे जन–जन की आस्था का केन्द्र बनाना आचार्य श्री के युग की महान उपलब्धि है।

18 फरवरी, 1994 सुजानगढ़ में होने वाले मर्यादा महोत्सव के विराट आयोजन में उन्होंने आचार्य पद का विसर्जन कर अपनी सक्रिय और समर्थ उपस्थिति में युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। ऐसी नाना उपाधियों, अलंकरणों से सुशोभित विराट व्यक्तित्व सचमुच निरूपधि बनकर मानवता की सेवा अटल प्रण लिए उन जननेताओं के सामने चुनौती है जो सत्ता, पद और प्रतिष्ठा के पीछे पागल बन रहे हैं।

ऐसे आचार्य श्री तुलसी जी ने वर्तमान को संवारा है और उनका भविष्य युग का भविष्य है, राष्ट्र का भविष्य है और समग्र मानव जाति का भविष्य है।

अवंती संतोष वाणी, छठी
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल,
तुलसीधाम, ठाणे, महाराष्ट्र

भाव–विभोर करने वाला व्यक्तित्व

आचार्य तुलसी ने कल्पना की कि 21 वीं सदी के भारत का निर्माता मानव होगा और वह अणुव्रती होगा। अणुव्रती गृह संन्यासी नहीं होगा, वह भारत का आम आदमी होगा और एक नए जीवन दर्शन को लेकर भविष्य का मार्गदर्शन तय करेगा। आचार्य तुलसी ने पांच अणुव्रतों की कल्पना को समाज के समक्ष रखा, वे हैं–अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।

भारतीय संस्कृति की साहित्यिक परम्परा में सन्त साहित्य का विशिष्ट स्थान है। आचार्य तुलसी बीसवीं सदी की सन्त परंपरा के महान साहित्य स्रष्टा युग पुरुष थे। उनका साहित्य परिमाण की दृष्टि से ही विशाल नहीं अपितु गुणवत्ता एवं जीवन मूल्यों को लोक जीवन में संचारित करने की दृष्टि से भी विशिष्ट है।

आचार्य तुलसी ने सत्यम् शिवमं और सौन्दर्य की युगपत उपासना की है। इसीलिए उनका साहित्य मनोरंजन एवं व्यावसायिकता से ऊपर सृजनात्मकता को पैदा करने वाला है। उनके विचार सीमा को लांघकर असीम की और गति करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व किसी भी सहृदय को भाव विभोर करने में सक्षम है। उनके विराट व्यक्तित्व की उपमा नहीं की जा सकती।

बालवय से संन्यास के पथ पर प्रस्थित होकर क्रमशः आचार्य अणुव्रत अनुशास्ता, राष्ट्रसंत एवं मानव कल्याण के पुरोधा के रूप में विख्यात हुए हैं। काल के अनन्त प्रवाह हमें 80 वर्षों का मूल्य बहुत नगण्य होता है पर आचार्य तुलसी ने उद्देश्यपूर्ण जीवन जीकर जो ऊँचाइयां एवं उपलब्धियां हासिल की हैं वे किसी कल्पना की उड़ान से भी अधिक है।

जैन धर्म एवं तेरापंथ संप्रदाय से प्रतिबद्ध होने पर भी आचार्य तुलसी का दृष्टिकोण असांप्रदायिक रहा है। वे कहते हैं '' जैन धर्म मेरी रग–रग, नस –नस में रमा हुआ है किन्तु साम्प्रदायिक दृष्टि से नहीं व्यापक दृष्टि से। क्योंकि मैं साम्प्रदाय में रहता हूं पर सम्प्रदाय मेरे दिमाग में नहीं रहता। मैं सोचता हूं मानव जाति को कुछ नया देना है तो साम्प्रदायिक दृष्टि से नहीं दिया जा सकता। यही कारण है कि मैंने सम्प्रदाय की सीमा को अलग रखा और धर्म की सीमा को अलग।''

इसी व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर आचार्य तुलसी ने असाम्प्रदायिक धर्म का आन्दोलन चलाया, जो जाति, वर्ण, वर्ग, भाषा, प्रान्त एवं धर्मगत संकीर्णतों से ऊपर उठकर मानव जाति को जीवन मूल्यों के प्रति आकृष्ट कर सके। इस असाम्प्रदायिक मानव धर्म का नाम है अणुव्रत आन्दोलन।

आचार्य तुलसी ने कल्पना की कि 21वीं सदी के भारत का निर्माता मानव होगा और वह अणुव्रती होगा। अणुव्रती गृह संन्यासी नहीं होगा, वह भारत का आम आदमी होगा और एक नए जीवन दर्शन को लेकर भविष्य का मार्गदर्शन तय करेगा। आचार्य तुलसी ने पांच अणुव्रतों की कल्पना को समाज के समक्ष रखा, वे हैं–अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। वस्तुतः जैन धर्म में जिन पांच महाव्रतों की कल्पना साधु जीवन के लिए है। उन्हीं को व्यावहारिक रूप देकर सामाजिक व्यक्ति के लिए अणुव्रत का नाम दिया। जिसे कोई भी सामाजिक व्यक्ति अपने जीवन में उतार कर अपने जीवन को उन्नत बना सकता है।

अणुव्रत की व्यावहारिकता ही इनकी लोकप्रियता का कारण रही है। इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है– अहिंसा अणुव्रत की मान्यता के अनुसार कम से कम निरपराध जीव जैसे–चलने–फिरने वाले प्राणियों का हनन नहीं होना चाहिए। एक सामाजिक व्यक्ति के लिए स्थावर जीवों की हिंसा से सर्वथा बच पाना कठिन है, परन्तु उसकी सीमा की जा सकती है। अपनी काव्यमय पंक्तियों में आचार्य तुलसी ने अहिंसा अणुव्रत का परिचय इस प्रकार दिया है :

पांच अणुव्रत प्रथम अंहिसा वाणी,
हन्तव्य न इसमें निरपराध त्रस प्राणी।
स्थावर की सीमा, व्रत व्यापक बन जाए,
आतंकवाद का अन्त स्वयं आ जाए।

इस प्रकार कवि ने अहिंसा अणुव्रत के पालन से यह लाभ बताया कि इससे आतंकवाद की समस्या का समाधान अपने आप हो सकता है क्योंकि इस व्रत की स्वीकृति के फलस्वरूप निरपराध मनुष्यों की हत्या सहज रूप में प्रतिबन्धित हो जाती है। अहिंसा हो और सत्य न हो तो अहिंसा जीवित नहीं रह पाती, इसीलिए अहिंसक श्रावक सत्य के प्रति निष्ठावान होते हैं। विश्व स्तर और आत्मस्थ रहते हुए भी अपने पाप रूपी कीचड़ का प्रक्षालन करते हैं। सत्य अणुव्रत का सन्देश उन्होंने अपनी काव्य–पंक्तियों में इस प्रकार अभिव्यक्त किया।

क्या कभी अहिंसा सत्य बिना जी सकती ?
सुई धागे के बिना वस्त्र सी सकती?
अतएव अहिंसक सत्यनिष्ठ होता है,
विश्वस्त स्वस्थ निज पाप–पंक धोता है।

इस प्रकार सत्य अणुव्रत का पालन करने वाला श्रावक पुष्ट आधार के बिना किसी पर दोषारोपण नहीं करता। क्रोध, लोभ, भय और हास्य के वश किसी को अहितकारी असत्य नहीं बोलता, किसी के गोपनीय रहस्य का उद्घाटन नहीं करता, किसी को गलत पथदर्शन नहीं देता। झूठी साक्षी नहीं देता और झूठा लेख भी नहीं लिखता। इनमें से एक भी आचरण को करने वाला सत्य अणुव्रत भंग का अपराधी होता है।

जो जीवन में नैतिकता से शून्य होता है, वह वास्तव में शून्य हैं। इस दृष्टि से अचौर्य अणुव्रत संजीवन है जो शून्यता को भरने वालाल है। आर्थिक घोटाले किसी भी क्षेत्र में हो, उनका समावेश चोरी माना जाता है। इस अणुव्रत के अनुसार प्रमाधिकता श्रावक जीवन का सुस्थिर सिद्धांत है। आचार्य तुलसी की पंक्तियां हैं–

जो नैतिकता से शून्य, शून्य जीवन है
इसीलिए अचौर्य अणुव्रत संजीवन है,
आर्थिक अपराधीकरण स्वयं चोरी है,
प्रामाणिकता श्रावक की स्थिर थ्योरी है।

इस प्रकार अचौर्य अणुव्रत का सन्देश है कि कोई भी मनुष्य दूसरों के प्रति क्रूरतापूर्ण व्यवहार न करे। शारीरिक क्रूरता का संबंध हिंसा से व आर्थिक क्रूरता का संबंध अचौर्य अणुव्रत के साथ है। अतः चोरवृत्ति का परित्याग

ही इसका मुख्य सन्देश है। जीवन की सुरक्षा है। भोग लालसा को सीमित करने का सघन प्रशिक्षण इसी में निहित है। इस व्रत के श्रावक स्वयं संतोषी होते हैं।

आचार्य तुलसी के शब्द हैं – *है ब्रह्मचर्य अपने से अपना रक्षण।*
भोगेच्छा–परिसीमन का सघन प्रशिक्षण।

इस प्रकार ब्रह्मचर्य व्रत आत्म सुरक्षा का सहज उपाय है और उन्मुक्त भोग की समस्या से बचने का प्रशिक्षण है। पांचवां अपरिग्रह अणुव्रत है जिसका आशय है–इच्छाओं को सीमित करना। इससे आर्थिक झंझट अपने आप समाप्त हो जाते हैं। आवश्यकता और आकांक्षा में भिन्नता हैं। आवश्यकता की पूर्ति हो सकती है किन्तु आकांक्षाओं की पूर्ति असम्भव है। अतः आकांक्षाओं पर अंकुश इस अणुव्रत के माध्यम से लगाया जा सकता है। आचार्य तुलसी की पंक्तियां इसी सन्देश को व्यक्त कर रही हैं :–

इच्छा परिमाण अणुव्रत अपरिग्रह का,
हो जाता स्वयं शमन आर्थिक विग्रह का।
आवश्यकता आकांक्षा एक नहीं है,
आकांक्षाओं पर अंकुश हो यही सही है।

इस प्रकार अपरिग्रह अणुव्रत का पालन करने वाला केवल अर्थ के अर्जन और भोग का संयम ही नहीं करता है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत को असाम्प्रदायिक धर्म के रूप में प्रतिष्ठित किया। उनका कथन है– इतिहास में ऐसे धर्मों की चर्चा है, जिनके कारण मानव जाति विभक्त हो गयी है। जिन्हें निमित्त बनाकर लड़ाइयां लड़ी गई हैं किन्तु विभक्त मानव जाति को जोड़ने वाले अथवा संघर्ष को शान्ति की दिशा देने वाले किसी धर्म की चर्चा नहीं है। क्यों ? क्या कोई ऐसा धर्म नहीं हो सकता , जो संसार के सब मनुष्यों को एक सूत्र में बांध सके। अणुव्रत को मैं एक धर्म के रूप में देखता हूं पर किसी सम्प्रदाय के साथ इसका गठबन्धन नहीं है। इस दृष्टि से मुझे स्वीकार करने में कोई अपत्ति नहीं है कि अणुव्रत धर्म है पर यह किसी वर्ग विशेष का नहीं।

अतः अणुव्रत जीवन को अखण्ड बनाने की बात करता है। अणुव्रत के अनुसार ऐसा नहीं हो सकता कि व्यक्ति मन्दिर में जाकर भक्त बन जाए और दुकान पर बैठकर क्रूर अन्यायी। वे मानते थे, धर्म स्थान है, धर्मोपदेशक है फिर भी चारित्रिक दुर्बलता का अनुत्तरित प्रश्न क्यों हमारे समक्ष आज भी आक्रान्त मुद्रा में खड़ा है। इस प्रश्न का उत्तर आचार्य तुलसी के अवदानों में छुपा है, उसे खोजें तो सही।

शिवानी, नौवीं
नवयुग स्कूल, मोती बाग–1,
दिल्ली

तेरापंथ–पथ के विस्तारक

आचार्य तुलसी एक महान आगम पुरुष थे। नाना उपाधियों, अलंकरणों और सम्बोधनों से अलंकृत वह विराट व्यक्तित्व सचमुच निरूपधि बनकर मानवता की सेवा अटल प्रण लिए उन जन नेताओं और धर्म नेताओं के सामने चुनौती रहे जो सत्ता, पद और प्रतिष्ठा के पीछे पागल बने रहे। उनका भविष्य युग का भविष्य है, राष्ट्र का भविष्य है और समग्र मानव जाति का भविष्य है।

आचार्य वे होते हैं जो वय का अवलोकन नहीं करते, ज्ञान का, जातपात का , शरीर का अवलोकन नहीं करते, वे केवल अपनी कृपा का दर्शन देते हैं। इन्हीं आदर्शों को लेकर बीसवीं सदी के आध्यात्मिक क्षितिज पर प्रमुखता से उभरने वाला जो नाम है, वह है आचार्य तुलसी। जैन धर्म को जन धर्म के रूप में व्यापकता प्रदान करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वे तेरापंथ धर्मसंघ के नौवें आचार्य थे। देश की ज्वलंत राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में उनके अप्रतिम योगदान रहे हैं। युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी इस युग के क्रान्तिकारी आचार्यों में एक थे।

विक्रम संवत् 1971 में जन्म लेने वाले इस होनहार व्यक्तित्व के धनी महापुरुष ने पूज्य कालूगणी से दीक्षा–संस्कार सम्पन्न किया और बाइस वर्षीय तुलसी ने युवा कन्धों पर विशाल धर्मसंघ के आचार्य पद को प्राप्त किया।

आचार्य पद संभालने के बाद श्री तुलसी ने आन्तरिक विकास धर्मसंघ की श्रृंखला में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने साध्वी समाज में शिक्षा के प्रसार में सर्वाधिक योगदान दिया। नैतिक क्रांति, मानसिक क्रांति, व्यक्तित्व निर्माण की पृष्ठभूमि पर तीन अभियान चलाए–अणुव्रत आन्दोलन, प्रेक्षाध्यान और जीवन–विज्ञान।

जब लोग उनका परिचय पूछते तब वे स्वयं अपना परिचय इस तरह देते, ''मैं पहले एक मानव हूं, फिर मैं एक धार्मिक व्यक्ति हूं, फिर एक साधनाशील जैन मुनि हूं और उसके बाद तेरापंथ संप्रदाय का आचार्य हूं।''

सुप्रसिद्ध जैनाचार्य होते हुए भी उनके कार्यक्रम संप्रदाय की सीमा रेखाओं से सदा ऊपर रहे। उनका दृष्टिकोण असाम्प्रदायिक था। तेरापंथ के सिद्धांतों को युग की भाषा में रखकर उसे जन–जन की आस्था का केन्द्र बनाना आचार्य श्री तुलसी के युग की महान उपलब्धि है। इन्हीं क्रांतिकारी विचारों का परिणाम है कि जो तेरापंथ एक संघीय सीमा में आबद्ध था, वह आज न केवल राष्ट्रीय बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुका है।

आचार्य तुलसी ने संप्रदाय से अधिक महत्व मानवता को दिया। मानवता के उत्थान के लिए उन्होंने विविध प्रकार के कार्यक्रम प्रारंभ किये थे। इसलिए वे जैन आचार्य की अपेक्षा एक मानवतावादी संत के रूप में अधिक जाने गये। वे रुढ़ धर्म के नहीं, जीवंत धर्म के परिपोषक थे। उनके अभिमत में धर्म का सबसे बड़ा पवित्र स्थान मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि न होकर बल्कि मनुष्य का अपना अन्तःकरण है। उनके इन क्रांतिकारी विचारों ने आज बौद्धिक मानव में भी धार्मिकता का संचार किया। नारी–जागरण, संस्कार–निर्माण, रूढ़ि उन्मूलन एवं सामाजिक बुराइयों के बहिष्कार हेतु वे सतत् प्रयत्नशील रहे। नये और प्राचीन मूल्यों में समन्वय स्थापित कर

उन्होंने नई और पुरानी पीढ़ी के बीच एक सेतु का काम किया है। आचार्य तुलसी ने अहिंसा के मार्ग को अपनाया। उन्होंने कहा अहिंसा का आदर्श समता का आदर्श है। किसी के प्रति तिरस्कार और अनादर की वृत्ति वहां स्वीकार्य नहीं है। अहिंसा तो सौजन्य, शांति, सद्भावना और मैत्री से ओत–प्रोत है। जहां इन पर व्याघात होता है वह अहिंसा नहीं हिंसा है। हिंसा का अर्थ है पतन। उससे बचाना, उत्थान की ओर अग्रसर होना अहिंसा का धर्म है।

वे एक महान पदयात्री थे। लगभग साठ हजार कि.मी. की पदयात्रा कर पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक भारत के अधिकांश भूभाग में उन्होंने नैतिकता की लौ प्रज्ज्वलित की। उनके युग में तेरापंथ का क्षेत्र–विस्तार बहुत व्यापक स्तर पर हुआ है। भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में तथा भारत के बाहर भूटान, नेपाल में भी साधु–साध्वियों ने जाकर अणुव्रत के संदेश को पहुंचाया है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था एवं जैन विश्व भारती की आध्यात्मिक प्रवृत्तियों का विकास आचार्यवर के जीवन काल की विशिष्ट उपलब्धि हैं।

जैन विश्व भारती विद्वानों, शिक्षाविदों, दार्शनिकों एवं योग साधकों की जिज्ञासा का केन्द्र बना हुआ है। आचार्य श्री के सद्प्रयत्नों से जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्व विद्यालय के रूप में कार्यरत है। समण श्रेणी की स्थापना आचार्य श्री तुलसी का एक ऐतिहासिक, दूरदर्शीतापूर्ण और साहस भरा कदम था।

आचार्य तुलसी एक महान आगम–पुरुष थे। नाना उपाधियों, अलंकरणों और सम्बोधनों से अलंकृत वह विराट व्यक्तित्व सचमुच निरूपधि बनकर मानवता की सेवा अटल प्रण लिए उन जननेताओं और धर्मनेताओं के सामने चुनौती है जो सत्ता, पद और प्रतिष्ठा के पीछे पागल बने रहे। उनका भविष्य युग का भविष्य है राष्ट्र का भविष्य है और समग्र मानव जाति का भविष्य है।

आर्य पुरोहित, ग्यारहवीं
टैगोर पब्लिक स्कूल,
शास्त्री नगर, जयपुर, राजस्थान

अनेकान्त के विरल व्याख्याता

आचार्य तुलसी के प्रशिक्षण शिविरों में संस्कृत की तरह विभिन्न धाराओं प्राकृत, दर्शन, तुलनात्मक अध्ययन द्वारा भिक्षु व भिक्षुणियां बहुश्रुत विद्वान के रूप में विकसित हुए व समर्थ सेनानियों की भांति देश के कोने– कोने में जाकर आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त गूढ़ चरित्र–परक स्वच्छ विचारों के प्रचार–प्रसार का माध्यम बने।

आचार्य तुलसी नाम के अनुरूप तप सुगन्ध से भरे दिव्य व्यक्तित्व थे जिनका स्मरण भी मन को शीतलता प्रदान करता है। 20 वीं सदी, जिसमें मानवता ने विकल कर देने वाली अनेक घटनाएं देखीं, जहां मानव मनुजता से गिर कर दानवों की श्रेणी में जा बैठा। जब समाज में चहुं और निकृष्टता, अकर्मण्यता, झूठ, हिंसा, भ्रष्टाचार, चोरी, ठगी एवं नैतिक पतन व्याप्त था, वहां जैन धर्म के आचार्य तुलसी इस धरा–धुरी को संबल प्रदान करने वाली ऋषि–चेतना के अग्रज बन, उत्कृष्टता की ध्वजा पताका को अपने पुरुषार्थ से असीम ऊंचाई तक फहराने वाले तपस्वी के रूप में अवतरित हुए।

आचार्य तुलसी का जन्म 20 अक्टूबर 1914 को लाडनूं, राजस्थान में एक जैन व्यापारिक घराने में हुआ। आचार्य तुलसी बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। सात वर्ष की अवधि में ही आचार्य काणूगणी की छत्र–छाया में संस्कृत भाषा पर महारत हासिल की व 20000 श्लोकों को स्मरण कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। 11 वर्ष की आयु में जैन दीक्षा लेने वाले इस किशोर की आध्यात्मिक रुचि व मानसिक गंभीरता का अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है।

22 वर्ष की युवावस्था में वे तेरापंथ के आचार्य पद पर सुशोभित हुए। तेरापंथ के प्रमुख के रूप में उन्होंने भिक्षुओं एवं भिक्षुणिंयो के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया व उन्हें लिखने, बोलने में अपने कौशल को निखारने व प्रशिक्षण के दौरान अनुशासन आदि को एक समाज सेवी व सच्चे संन्यासी में ढलने के लिए प्रारम्भिक आवश्यकता बताया।

आचार्य तुलसी के प्रशिक्षण शिविरों में संस्कृत की तरह विभिन्न धाराओं प्राकृत, दर्शन, तुलनात्मक अध्ययन द्वारा भिक्षु व भिक्षुण्यिों बहुश्रुत विद्वान के रूप में विकसित हुए व समर्थ सेनानियों की भांति देश के कोने–कोने में जाकर आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त गूढ़ चरित्र–परक स्वच्छ विचारों के प्रचार–प्रसार का माध्यम बने।

आचार्य तुलसी की आध्यात्मिक सोच व्यक्ति के चरित्र–परिष्कार को ही धर्म का सच्चा स्वरूप मानने की थी, धर्म से जुड़े कर्मकाण्डों को वे अधिक महत्व नहीं देते थे। उनके उपदेश किसी धर्म विशेष के न होकर समस्त मानव जाति के कल्याण को पोषित करने वाले थे। वे धर्म व राजनीति को काफी अलग मानते थे परन्तु धर्म को राजनीति का पथ–प्रदर्शक कहते थे।

एक बार शेयर घोटाले पर संसदीय समिति की रिपोर्ट पर विरोध के कारण जब विपक्ष ने संसदीय कार्यवाही ठप कर दी तब उन्होंने जैन धर्म के अनेकान्तवाद सिद्धांत की अद्‌भुत व्याख्या से विपक्ष के अनेकों सदस्यों की सोच परिवर्तित कर संसदीय कार्यवाही शुरू की।

अनेकान्तवाद की अवधारणा की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि कोई भी बात पूर्ण रूप से व हर परिप्रेक्ष्य में सही नहीं हो सकती, परिस्थितियों व व्यक्तियों के साथ ही बदलाव संभव है। जैसे मेरी घड़ी बहुत सी घड़ियों से अच्छी परन्तु बहुत अन्यों से खराब है। इसलिए हमें किसी बात को सुनकर तुरन्त प्रतिक्रिया देने की अपेक्षा उसके प्रत्येक पक्ष पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

आचार्य तुलसी ने 100 से अधिक पुस्तकों का लेखन किया व अपनी तीन मूल अवधारणाओं – अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान को आधार बना भारत वर्ष में लगभग एक लाख कि. मी. की पदयात्रा की व लाखों व्यक्तियों के चिन्तन को आन्दोलित कर सही दिशा दी।

आचार्य तुलसी जी की अणुव्रत साधना को व्यापक जन सर्मथन मिला। अणु–छोटा, व्रत–प्रतिज्ञा, वे कहते थे कि हम छोटे–छोटे व्रत लेकर उन्हें पूर्ण करें व मनुष्य में सत्य, अहिंसा, निर्भयता व ब्रह्मचर्य जैसे दिव्य गुणों को अपने भीतर प्रतिष्ठित करें।

प्रेक्षाध्यान से अपने भीतर गहरे तक उतरें व विवेकपूर्ण मनन द्वारा जीवन की वास्तविकता को जानने का प्रयास करें। प्रेक्षाध्यान मन की विकलता को शान्त कर उसे ढीला छोड़ देने जैसी क्रिया है जो हमें भीतरी सामर्थ्य प्रदान कर अविचल व्यक्तित्व का निर्माण करने में सहायक है।

आचार्य जी ने जन–जन तक पहुंच उन तक जीवन जीने का विज्ञान पहुंचाया। उन्होंने निजी जीवन में पवित्रता और आत्म अनुशासन का अभ्यास करने के लिए प्रेरित किया। वे छुआछूत, दहेज आदि सामाजिक बुराइयों को जीवन से बाहर फेंकने के पक्षधर थे।

23 जून, 1997 को निर्वाण प्राप्त करने से पूर्व तक जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं से विश्व को दिशा–धारा प्रेषित कर अनुग्रहित करते रहने वाले उस तपस्वी को हमारा नमन है।

प्रखर सोम, नौवीं
बाल भवन पब्लिक स्कूल,
मयूर विहार फेस–2, दिल्ली

नैतिक क्रांति के संवाहक

उनका व्यक्तित्व पुरुषार्थ का परम पर्याय था। वे सृजनशील चेतना के धनी थे। पद और सम्मान की आसक्ति से ऊपर उठ उन्होंने 18 फरवरी, 1994 को अपने आचार्य पद का विसर्जन कर विश्व के इतिहास में एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया जो वर्तमान युग के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है।

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। भारत की मिट्टी के कण–कण में महापुरुषों के उपदेश की प्रतिध्वनियां हैं। चाणक्य, आर्यभट्ट, महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर से भारत का इतिहास विश्व में अपना विशेष स्थान रखता है। स्वर्णिम इतिहास की इसी पवित्र श्रृंखला में एक नाम है– अहिंसा के अग्रदूत, मानवता के मसीहा, अणुव्रत अनुशास्ता, युग प्रधान आचार्य तुलसी का।

आचार्य तुलसी राष्ट्रसंत थे। वे राष्ट्रीय एकता के पक्षधर थे। उनका प्रकांड पांडित्य उन्हें अबू सीना, स्वामी विवेकानन्द व डॉ. राधाकृष्णन के समान स्तर पर प्रतिष्ठित करता है। उनका स्वयं का परिचय उन्हीं के शब्दों में इस विराटता के साथ मुखर है, ''मैं सबसे पहले मनुष्य हूं, फिर जैन हूं, फिर तेरापंथ का आचार्य हूं।''

आचार्य तुलसी का जन्म बीसवीं शताब्दी में 20 अक्टूबर, 1914 में हुआ। मात्र ग्यारह वर्ष की अल्पावस्था में वे तेरापंथ के अष्टम् आचार्य कालूगणी के पास शिक्षित हुए अर्थात् जैन मुनि बने। 11 वर्षों तक मेधावी छात्र के रूप में अध्ययन कर गुरु कालूगणी द्वारा 22 वर्षों की उभरती जवानी में आचार्य पद को प्राप्त हुए। उनके आचार्य काल के दूसरे दशक का प्रारम्भ नवनिर्माण की कल्पना के साथ हुआ।

आचार्य तुलसी के सूत्र : समाज का निर्माण मूल्यों के परिवर्तन से ही होता है। स्वार्थ और संग्रह, ये दोनों मूल्य जब विकसित होते है तब व्यक्ति पुष्ट होता है और समाज क्षीण। क्षीण समाज में समर्थ विकसित नहीं हो पाते हैं।

• शक्ति के दो स्रोत हैं–मानसिक विकास और संगठन। मानसिक विकास के लिए धर्म का अभ्यास और प्रयोग करना जरुरी है। संगठन की शक्ति का विस्फोट इतना हुआ है कि अब इसमें कोई विवाद ही नहीं है।

• कुछ स्थितियां देशकालातीत होती हैं। उन्हें बदलने की जरुरत नहीं है, किंतु देशकाल सापेक्ष स्थितियों का देश काल के साथ न बदलना असफलता का मुख्य हेतु है।

प्रथम स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त, 1947 पर उन्होंने 'असली आजादी अपनाओ' का शंखनाद किया। 2 मार्च, 1949 को उन्होंने 34 वर्ष की आयु में अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। हरित क्रांति, सत्याग्रह, भूदान की तरह अणुव्रत में लोकतंत्र की उज्ज्वल कल्पना निहित है। अणुव्रत दर्शन व्यक्ति को नैतिक बनाने की आचार्य संहिता है। आचार्य तुलसी के अणुव्रत की आवाज राष्ट्रपति भवन से लेकर गरीब की झोपड़ी तक गूंजी। इस नैतिक क्रांति को निरंतर प्रज्ज्वलित रखने के लिए उन्होंने पूरे देश में कन्याकुमारी तक लगभग एक लाख कि. मी. की पदयात्राएं कीं।

उनका व्यक्तित्व पुरुषार्थ का परम पयार्य था। वे सृजनशील चेतना के धनी थे। पद और सम्मान की आसक्ति से ऊपर उठ उन्होंने 18 फरवरी, 1994 को अपने आचार्य पद का विसर्जन कर विश्व के इतिहास में एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया जो वर्तमान युग के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। वे एक महान धर्मगुरु के साथ समाज सुधारक भी थे। गांधी के बाद आचार्य तुलसी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन से समूचे देश और दुनिया को प्रभावित किया।

आचार्य तुलसी का मानना था कि नयी पीढ़ी से निर्धारित होता है युग का भविष्य। जीवन की समग्रता के लिए संस्कृति, परम्परा, अनुशासन, विनय, धैर्य, सच्चाई, सेवा भावना आदि अनेक मूल्यों को जीना सिखाने की जरुरत है। युग का भविष्य उसकी नशी पीढ़ी पर निर्भर करता है। जिस युग की नयी पीढ़ी जितनी अधिक शालीन, संस्कृत, सुघड़ और शिक्षित होती है, उस युग के विकास की संभावनाएं उतनी ही प्रगाढ़ रहती है।

राष्ट्र, समाज और परिवार के साथ भी यह सिद्धान्त घटित होता है। इसके आधार पर यह बात स्पष्ट होती है कि आज सर्वाधिक महत्वपूर्ण काम है बच्चों का संस्कार–निर्माण। कुछ लोगों का अभिमत है कि बच्चे का जीवन सफेद कागज जैसा होता है। उस पर व्यक्ति जैसे चाहे, वैसे चित्र उकेर सकता है।

सामाजिक वातावरण भी उसके व्यक्तित्व का एक घटक है। इसका अर्थ यह हुआ कि संस्कार–निर्माण के बीज हर बच्चा अपने साथ लाता है। सामाजिक या पारिवारिक वातावरण में उसे ऐसे निमित्त मिलते हैं जिनके आधार पर उसके संस्कार विकसित होते हैं। प्रायः देखा जाता है कि माता–पिता अपनी संतान के लिए भौतिक सुख–सुविधाओं के साधन जुटा देते हैं, शिक्षा एवं चिकित्सा की व्यवस्था कर देते हैं पर उसके लिए सर्वांगीण विकास के अवसर कम खोजते हैं।

प्राइवेट स्कूलों में भी जहां संस्कार पक्ष गौण होता है और बौद्धिक विकास प्रमुख होता है, बच्चों का समग्र विकास नहीं हो सकता है। धार्मिक लोगों को तो इस बिन्दु पर गंभीरता से सोचना चाहिए। कान्वेंट्स और पब्लिक स्कूल आधुनिक कहलाने वाले अभिभावकों के लिए आकषर्ण के केन्द्र हैं। वे मानते हैं कि स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों आधुनिक रूप में विकसित होते हैं, समाज में जीने के तौर–तरीके बहुत अच्छे ढंग से सीखते हैं। कुछ अंशों में यह बात सही हो सकती है पर सामाजिक तौर–तरीके ही जीवन नहीं है।

जीवन की समग्रता के लिए संस्कृति, परंपरा, अनुशासन, विनय, धैर्य, सच्चाई, सेवा भावना आदि अनेक मूल्यों को जीवन में उतारने की जरूरत है। भविष्यदृष्टा आचार्य तुलसी के अवदान सचमुच अतुलनीय हैं।

आर्ची सोनी, बारहवीं
ओ.पी.जिन्दल स्कूल,
रायगढ़ छत्तीसगढ

अजस्र अवदान अतुलनीय

आचार्य तुलसी को भारतवर्ष के आम नागरिक ही नहीं अपितु यहां के राष्ट्रपति एवं विभिन्न प्रधानमंत्रियों ने भी एक सच्चे आध्यात्मिक गुरु व राष्ट्रीय अभिवावक के रूप में सम्मान दिया है। जनसाधारण से लेकर विशिष्ट वर्ग, यहां तक कि सरकारी तन्त्र भी उनके अमूल्य सुझावों, दिशा निर्देशों व अवदानों का पात्र रहा है।

आचार्य तुलसी का जन्म 20 अक्टूबर, 1914 को हुआ। आचार्य तुलसी जैन सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य थे। वे तेरापंथ के नौवें आचार्य थे। आचार्य तुलसी ने जैन मत के मानवतावादी दृष्टिकोण के प्रचार–प्रसार व समाज में व्याप्त अज्ञानता व जड़ता और भटकाव को दूर करने के लिए सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में लगभग एक लाख किलो मीटर की पदयात्रा की। अपनी इन पदयात्राओं में आचार्य तुलसी ने अहिंसा, शांति और भाईचारे का संदेश प्रसारित किया।

आचार्य कहते थे, '' एक आदमी पहले एक इंसान है और उसके बाद एक हिंदू, जैन, सिख, मुस्लिम, ईसाई या कोई और। मनुष्य जीवन में सबसे बड़ी साधना आत्मसंयम है, उसके बाद अनुशासन।''

आचार्य तुलसी को भारतवर्ष के आम नागरिक ही नहीं अपितु यहां के राष्ट्रपति एवं विभिन्न प्रधानमंत्रियों ने भी एक सच्चे आध्यात्मिक गुरु व राष्ट्रीय अभिवावक के रूप में सम्मान दिया है। जनसाधारण से लेकर विशिष्ट वर्ग, यहां तक कि सरकारी तन्त्र भी उनके अमूल्य सुझावों, दिशा निर्देशों व अवदानों का पात्र रहा है। यद्यपि वह जैन धर्म के अकेले ऐसे व्यक्ति नहीं थे जिन्होंने राष्ट्रीय सेवा की हो परन्तु मानवता को उनके अजस्र अवदान अतुलनीय व अविस्मरणीय हैं।

समाज को उनके प्रमुख अवदानों में से एक है अणुव्रत अर्थात् अणु–छोटा, व्रत–प्रतिज्ञा। वे कहते थे, ''हमें छोटे–छोटे व्रत लेकर उनका प्राण प्रण से पालन करना चाहिए।'' वह लोगों को एक भ्रष्टाचार मुक्त शुद्ध और ईमानदार जीवन का महत्व बताते हैं। आचार्य तुलसी ने लाडनूं, राजस्थान में अपना आश्रम लगभग 125 एकड़ जमीन पर बनाया व वहां जैन विश्व भारती संस्थान की स्थापना की।

आचार्य तुलसी ने अपने जीवनकाल में 100 से अधिक पुस्तकों का लेखन किया। भारत के तत्कालीन सम्मानित राष्ट्रपति डॉ.राधाकृष्णन ने उन्हें अपनी प्रतिपादित पुस्तक Living with purpose में विश्व के 15 सबसे महान व्यक्तियों में शामिल किया है। 1971 में आयोजित एक कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी.वी. गिरि ने आचार्य तुलसी को 'युग प्रधान' के सम्मान से सम्मानित किया।

कुछ वर्ष पूर्व भारतीय संसद में शेयर घोटाले पर संयुक्त संसदीय समिति की रिपोर्ट का विरोध करते हुए प्रमुख विपक्षी दलों द्वारा सदन का बहिष्कार कर दिया गया। संसदीय कार्यवाही ठप हो जाने से कई महत्वपूर्ण कार्य भी रुक गए। उस समय आचार्य तुलसी जी ने सभी लोगों से मिलकर जैनमत के अनेकान्तवाद सिद्धांत की व्याख्या कर एक अपूर्व ढंग से उनके विचारों को प्रभावित कर संसदीय कार्य बहाल करने में अविस्मरणीय भूमिका निभाई।

पूछे जाने पर अनेकान्तवाद की व्याख्या करते हुए उन्होंने साधारण शब्दों में समझाया कि जैसे मेरी घड़ी अच्छी होते हुए भी बहुत सी घड़ियों से कम व बहुत सी घड़ियों से ज्यादा अच्छी है। इसी तरह कोई भी विचार सिर्फ एक रूप में ही नहीं हो सकता उसके बहुत से पहलू हो सकते हैं। इसलिए हमें किसी एक विचार या मन पर दृढ़ धारणा नहीं कर लेनी चाहिए, अपितु अन्य संभावनाओं पर भी विचार कर लेना चाहिए।

आचार्य तुलसी जैन धर्म के अहिंसा सिद्धान्त की आज के युग में प्रासंगिकता पर गहन चिन्तन रखते थे। वे कहते थे कि बेशक आज तीसरे विश्वयुद्ध की सम्भावना कुछ क्षीण नजर आती है परन्तु मनुष्य की लालची प्रवृत्ति व प्राकृतिक और अन्य संसाधनों पर एकल स्वामित्व की इच्छा निश्चित ही भविष्य में पुनः युद्ध की व हिंसा की विभीषिका प्रस्तुत कर सकती है।

सन् 1995 में लाडनूं के अपने आश्रम में आयोजित शान्ति व अहिंसा पर विश्व सेमिनार के समय उन्होंने कहा था कि शान्ति व युद्ध दोनों मनुष्य के मस्तिष्क में जन्म लेते हैं। उन्होंने कहा कि हमने व्यक्ति के मन को उसकी भावनाओं को बदलने के बारे में बहुत कम या न के बराबर सोचा है। परन्तु यदि एक विषय है जिस पर सर्वाधिक कार्य करने की आवश्यकता है तो वह यही है।

उन्होंने इसी कड़ी में अपनी देखरेख में प्रेक्षाध्यान (अपने भीतर झांकना) जीवन जीने का विज्ञान अणुव्रत आदि के शिक्षण के कार्यक्रम लाडनूं व अनेक स्थानों पर चलाए। आचार्य श्री ने कहा कि धर्म में दो बातें प्रमुख हैं, पूजा की पद्धति व व्यवहार के नियम और मैंने अपने लिए चरित्र व व्यवहार के परिष्कार को ही धर्म का सही–सही स्वरूप माना है।''

उन्होंने गूढ़ जैन सिद्धान्तों को सरल व्यावहारिक रूप में व्यक्त करते हुए तीन साधारण प्रतिज्ञा एक आम नागरिक के लिए रखीं।

1. मैं अपनी तरफ से प्रदूषण न फैलाने का पूर्ण प्रयास करूंगा/ करुंगी।
2. मैं अपने व्यापारिक व साधारण व्यवहार को परिष्कृत करूंगा/करुंगी।
3. मैं चुनाव में कोई भी अनैतिक या गैर कानूनी कार्य नहीं करूंगा/करुंगी।

इसमें से तीसरी प्रतिज्ञा पर प्रतिक्रिया करते हुए तत्कालीन चुनाव आयुक्त श्री टी.एन. शेषन ने कहा था कि मैं चाहता था कि दिल्ली में आचार्य जी कुछ अधिक समय तक रुकें क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि उनकी उपस्थिति मात्र से चुनाव शुद्ध व शान्त वातावरण में हो सकेंगे। ऐसा था उनका व्यक्तित्व व उसका प्रभाव।

आचार्य तुलसी एक व्यक्ति न होकर अपने आप में एक पूर्ण संस्था थे। बचपन से ही मेधावी, 11 वर्ष की आयु में ही सांसारिक भोगों से नाता तोड़ स्वाध्याय व साधना में लग जाने वाले उस कर्मठ योगी ने स्पष्ट कहा कि ''जैन बनो न बनो पर अच्छे व्यक्ति बनो''।

श्वेताम्बर व दिगम्बर मतों के दो जैन उप सम्प्रदायों के मध्य वार्ता व मध्यस्थता कर उन्होंने आपसी मतभेदों को दूर करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने पूरे भारत वर्ष में ही नहीं अपितु विश्व भर के जैन अनुयायियों को एक सूत्र में बांधा।

आज भी उनकी शिक्षाएं हमारा मार्ग प्रशस्त करती हैं। लाखों नौजवानों को राष्ट्रहित में अपना सर्वस्व लगा देने को प्रेरित करती हैं। आचार्य श्री तुलसी ने मानवता को जो अनेक अवदान दिए हैं वे कभी भुलाए नहीं जा सकेंगे। ऐसे युग सन्त, महापुरुष व महायोगी को हम शत् शत् नमन करते हैं।

मनन सोम आठवीं
बाल भवन पब्लिक स्कूल,
फेज–2, दिल्ली

शताब्दियों के दुलर्भ व्यक्तित्व

अणुव्रत के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी की इस जन्म शताब्दी को अणुव्रत आंदोलन के लिए ऐतिहासिक बनाने के लिए सभी संस्थाएं पुरजोर कार्य कर रही हैं। उनके अवदान की अलख हर गांव व हर घर में जगे ताकि गुरुदेव का सपना था कि समाज में फैल रही ऊंच–नीच, छुआछूत आदि समस्याओं को पनपने न दें, हिंसा को जन्म न दें।

पुरुष होना सामान्य बात है और महापुरुष होना विशिष्ट बात है, जीवन जीना एक बात है और कलापूर्ण, उपयोगितापूर्ण और परोपकारी परायण जीवन जीना विशिष्ट बात है। यह वैशिष्ट्य जिस व्यक्ति में उभरता है, वह व्यक्तित्व पुरुष से महापुरुष बन जाता है।

इस अर्थ में बीसवीं सदी सौभाग्यशालिनी है कि उसे गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के रूप में इस कोटि के व्यक्तित्व का सान्निध्य एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इक्कीसवीं सदी पलक–पांवड़े बिछाए उनकी अगवानी करने के लिए आतुर खड़ी थी। पर काल नियति ने 23 जून, 1997 को सहसा उस असाधारण व्यक्तित्व को बीसवीं सदी ने अपनी गोद में ले लिया।

धार्मिक जगत के इतिहास में आचार्य तुलसी इन शताब्दियों के एक दुर्लभ व्यक्तित्व थे। अणुव्रत आचार्य तुलसी की मानवता को देन है। अणुव्रत के माध्यम से नैतिकता की अलख जगाई। वे चाहते थे अणुव्रत के माध्यम से बच्चों के संपूर्ण व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो तथा भविष्य में वे ईमानदार, आदर्श, सुसंस्कारवान, विवेकशील, नम्र व परिश्रमी बने ताकि आने वाला भविष्य सबका सुरक्षित और अच्छा बन सके।

अणुव्रत के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी की इस जन्म शताब्दी को अणुव्रत आंदोलन के लिए ऐतिहासिक बनाने के लिए सभी संस्थाएं पुरजोर कार्य कर रही हैं। उनके अवदान की अलख हर गांव व हर घर में जगे। गुरुदेव का सपना था कि समाज में फैल रही ऊंच–नीच, छुआछूत आदि समस्याओं को पनपने न दें, हिंसा को जन्म न दें। अणुव्रत अनुशासन के माध्यम से सही बनाने के लिए अणुव्रत के छोटे–छोटे व्रतों को अपनाना है ताकि सभी में संयम व अहिंसा की भावना जागृत हो। एक बार डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने आचार्य श्री तुलसी से कहा, '' आप मुझे यदि कोई पद देना चाहे तो मैं अणुव्रत का पद लेना चाहता हूं''।

जो पदार्थवादी दृष्टिकोण से उत्पन्न मानसिक तनाव जैसी भयंकर समस्या का समाधान कर सके, पदार्थ से न मिलने वाली सुखानुभूति करा सके, नैतिकता की चेतना जगा सके, गणाधिपति ने इस युगीन अपेक्षा को समझा व इसकी संपूर्ति के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। वह दिन था 2 मार्च, 1949 का। आशा और निराशा की तैरती तरंगों से अणुव्रत के प्रति आशावादी लोग प्रसन्न ही रहे पर निराशावादी व्यक्तियों ने सोचा पांच–दस व्यक्ति भी अणुव्रत के लिए समर्पित नहीं होंगे। लेकिन आचार्य श्री तुलसी कभी कल्पना नहीं कर सकते कि प्रथम बार में ही इतने अणुव्रती बन सकते हैं। फिर तो अणुव्रत के विकास ने गांव–गांव जाकर अणुव्रत की अलख जगाई और आचार्य श्री की पदयात्राओं ने उसे और अधिक शक्तिशाली बना दिया।

अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से पूरे देश में नैतिक विकास की गूंज हुई और सबने इसको एक राष्ट्रीय चरित्र विकास के आंदोलन के रूप में स्वीकार किया। जाति धर्म, रंग, स्त्री, पुरुष सभी अणुव्रती बन सकते हैं। सभी धर्मों के मानने वालों के लिए खुला है अणुव्रत। आचार्य श्री ने चरित्र विकास के लिए जितना तप तपा, उतना कम लोग ही तप सकते हैं। उन्होंने मानवता के लिए पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

आचार्य श्री का जीवन भारतीय चेतना का अभिनव उन्मेष है। चाहे मुनि जीवन, आचार्य पद इतनी लम्बी पदयात्रा, इतना व्यापक जनसम्पर्क, पुरुषार्थ, आध्यात्मिक विकास, साहित्य सृजन आदि सभी प्रेरणा पाथेय व मानवता को नई दिशा प्रदान करते हैं। पुरुषार्थ की इतिहास परम्परा में इतने बड़े पुरुषार्थी पुरुष का उदाहरण कम ही है जो अपनी सुख–सुविधाओं को गौण मानकर मानवता का कल्याण कर अपना जीवन जीये।

आचार्य श्री का उदय संघर्षों की वेदी पर हुआ पर उनकी गति ने कसौटी पर चलते–चलते प्रगति का रूप लिया। उन्होंने धरती पर स्वर्ग के अवतरण की कल्पना की, सामाजिक कुरुढ़ियों के विरुद्ध जन–चेतना को जागृत किया, धर्म को जाति, वर्ग और सम्प्रदाय के घेरे से मुक्त किया। मानव को सौहार्द एवं शांतिपूर्ण जीवन जीने की कला सिखाई।

जो विरोधाभास इस युग में मानव जाति के समक्ष उत्पन्न हुए हैं, वैसे पूर्व में सम्भवतः कभी नहीं हुए। एक ओर विज्ञान और प्रौद्योगिकी का आशातीत विकास एवं सफलताएं तो दूसरी ओर भयंकर विश्वयुद्ध। इन विषम परिस्थितियों में युग प्रधान आचार्य श्री तुलसी ने जिस रूप में तेरापथ धर्मसंघ को ही नहीं, जैन धर्म को तथा समग्र अध्यात्म–तत्व को जन–जन प्रिय बनाने में कामयाबी प्राप्त की। 60 वर्ष के नेतृत्व काल में जो कुछ प्रयत्न किए और जिन अप्रतिम, अकल्पनीय अप्रत्याशित, आशा से अधिक उपलब्धियों से अपनी झोली भरी, वे सचमुच किसी तटस्थ मूल्यांकनकर्ता के द्वारा उन्हें दूसरे महावीर की अभिधा से सम्बोधित करने को बाध्य करने वाली है। आचार्य श्री तुलसी के चिन्तन और दर्शन को अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर कम से कम सिद्धांतः तो सही माना जा रहा है कि अध्यात्म के बिना कोरा विज्ञान मनुष्य का त्राण नहीं बन सकता है।

मानव पहले मानव बने, फिर धार्मिक। कोरी उपासना से नहीं, साथ में नैतिक आचरण से ही कोई धार्मिक कहलाने का अधिकारी होगा। आचार्य तुलसी एक ऐसा व्यक्तित्व जिसमें सारा जीवन मानवता का मसीहा बन कर जिया, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अहिंसा–प्रशिक्षण आदि अवदान मानव के आध्यात्मिक चारित्रिक विकास की नींव रखी, उनका आभामंडल आज भी अपनी आभा विकरण कर रहा है।

आचार्य श्री तुलसी एक दार्शनिक, साहित्यकार, महामनस्वी, ओजस्वी, तेजस्वी व सक्षम आचार्य के रूप में पहचान बनी। प्रेक्षाध्यान के अनुसंधान, जीवन विज्ञान के मंत्रदाता, अणुव्रत के अनुशास्ता, अहिंसा समवाय, नया मोड़ के ज्ञाता, आदि अवदान बने। इन अवदानों के द्वारा संसार सदा आपको याद करता है, करता रहेगा।

आचार्य श्री तुलसी देश के क्षितिज पर सूरज बन कर चमके। उन्होंने मनुष्य के मन में अंधेरा हरने वाला प्रकाश फैलाया। वे अब नही रहे। अंधेरा फिर भी सघन है लेकिन दीया बनकर अंधकार से संघर्ष जारी रखने का

संकल्प वे हमें देकर गये हैं। जन्म शताब्दी वर्ष पर सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि हम उनके बताये मार्ग पर चलें और एक राष्ट्रसंत के अवदानों से मानवता को त्राण मिलता रहे, इसी भावना के साथ शत्–शत् नमन।

मीनल चपलोत, बारहवीं
लक्ष्मीपत सिंघानिया स्कूल,
जे.के. ग्राम, कांकरोली, राजस्थान

अवदानों से उपकृत हुई मानवता

आचार्य तुलसी से बड़े–बड़े राजनीतिज्ञ सलाह लेने आते थे। डॉ. राधाकृष्णन ने अपनी किताब में 14 महान लोगों का वर्णन किया है, उनमें आचार्य तुलसी एक हैं। 1971 में राष्ट्रपति वी.वी. गिरी ने उन्हें 'युग प्रधान' की उपाधि से सम्मानित किया। 1986 में आचार्य पद के 50 वर्ष पूरे होने पर राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने उन्हें 'भारत ज्योति' की उपाधि दी ।

आचार्य तुलसी एक ऐसा नाम जो जैन समाज में किसी परिचय का मोहताज नहीं है। आचार्य श्री का जन्म 20 अक्टूबर,1914 में राजस्थान में कार्तिक शुक्ल दूज को हुआ। इनकी माता का नाम बदना देवी व पिता का नाम झूमरमल था। आठ वर्ष की आयु में वह स्कूल गये। मात्र 11 वर्ष की आयु में आचार्य कालूगणी जी से दीक्षा ली। 16 वर्ष की आयु में युवा मुनियों को शिक्षा देते थे। 7 साल के कठिन परिश्रम से वह संस्कृत व प्राकृत भाषा में पारंगत हो गए। जैन दर्शन और आगम का अध्ययन शुरू कर दिया। इस अवधि में उन्होंने 20 हजार संस्कृत श्लोक याद करने का अद्‌भुत करतब प्रदर्शित किया।

उन्होंने हिन्दी व राजस्थानी भाषा में भी कविताएं लिखना आरम्भ कर दिया। 22 वर्ष की आयु में आचार्य कालूगणी ने अपने अंत समय में उन्हें अपना उत्तराधिकारी चुना। 1936 में आचार्य तुलसी को युवा आचार्य की पदवी दी गई। उन्होंने 2 मार्च, 1949 में अणुव्रत आन्दोलन का आरम्भ किया जो पांच सिद्धांतों के आचरण पर आधारित था। ये सिद्धांत प्रकार हैं– सत्य, अहिंसा, बह्मचर्य, चोरी न करना, परिग्रह।'' अपने इसी अणुवत आन्दोलन के सार को प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने एक अणुव्रत गीत की रचना की जिसकी कुछ पक्तियां यहां प्रस्तुत है :

अपने से अपना अनुशासन अणुव्रत की परिभाषा।
छोटे–छोटे संकल्पों से मानव परिवर्तन हो।
मैत्री भाव हमारा सबसे प्रतिदिन बढ़ता जाए,
समता, सह–अस्तित्व समन्वयनीति सफलता पाए।
प्रभु बनकर के ही हमप्रभु की पूजा कर सकते हैं,
प्रामाणिक बनकर ही संकट सागर तर सकते हैं।

तेरापंथी साधु–साध्वियों ने अणुव्रत का संदेश गांव–गांव फैलाया। अणुव्रत का प्रमुख उद्‌देश्य इंसानियत, भाईचारा, बिना किसी लिंग भेद, भाषा भेद, धर्म भेद के साम्प्रदायिक सद्‌भाव फैलाना है। अणुव्रत के प्रचार के लिए एक ऐतिहासिक जुलूस निकाला गया। जो पश्चिम में कच्छ से शुरू होकर पूर्व में कोलकाता तक, उत्तर में पंजाब से लेकर दक्षिण में केप कैमोरियन तक चला। इसलिए लोग इन्हें इंसानियत का मसीहा कहते हैं।

तमिलनाडु में हिन्दी भाषियों का विरोध हुआ और इसी संदर्भ में कुछ विद्याथियों ने अपने जीवन का अंत कर दिया। तब स्थितियों को संभालने के लिए श्री तुलसी को बुलाया गया। उन्होंने मानवता के लिए एक नारा दिया 'सबसे पहले इंसान, बाद में हिन्दू या मुसलमान'। उनका यह नारा गरीब आदमी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक ही नही बल्कि विदेशों में भी गूंजा। उन्होंने अपने अणुव्रत की वाचना मंदिरों, बोध मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों व गिरजाघरों में समान रूप से की। उनके द्वारा दिए गये अणुव्रत और प्रेक्षा ध्यान से लोगों को अहिंसा व शांति

के लिए बहुत कार्य किए। पंजाब में बढ़ते आतंकवाद को रोकने के लिए आचार्य तुलसी ने संत लोंगोवाल को संदेश भेजकर राजस्थान बुलाया। उस समय के प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी व संत लोंगोवाल के बीच समझौता करवाया व पंजाब में आतंकवाद को मिटाने के लिए कड़े कदम उठाए।

आचार्य तुलसी से बड़े–बड़े राजनीतिज्ञ सलाह लेने आते थे। डॉ. राधाकृष्णन ने अपनी किताब में 14 महान लोगों का वर्णन किया है, उनमें आचार्य तुलसी एक है। 1971 में राष्ट्रपति वी.वी. गिरी ने उन्हें 'युग प्रधान' की उपाधि से सम्मानित किया। 1986 में आचार्य पद के 50 वर्ष पूरे होने पर राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने उन्हें 'भारत ज्योति' की उपाधि दी । 1993 में राष्ट्रीय एकता के लिए 'इंदिरा गांधी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

आचार्य तुलसी के कारण तेरांपथी समाज की एक अलग पहचान बनी। उन्होंने बहुत सारे शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की। उन्होंने अखिल भारतीय अणव्रत न्यास, अखिल भारतीय अणुव्रत समिति, तेरापंथी सभा, तुलसी फाउंडेशन सहित अनेक संस्थाओं की स्थापना की। आचार्य तुलसी द्वारा स्थापित 'जैन विश्व भारती संस्थान को भारत सरकार द्वारा विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया।

उन्होंने राजस्थानी व हिन्दी में बहुत सारी पुस्तकें लिखीं–जैन सिद्धांत दीपिका, लघुता से प्रभुता मिले, राजपथ की खोज, अमृत संदेश आदि। 23 जून, 1997 को ऐसा दुखद समय आया जब आचार्य भगवंत हमें इस संसार में अकेला छोड़कर देव लोक को चले गए। आचार्य श्री की याद में 20 अक्टूबर, 1998 को एक डाक टिकट जारी की गई। तुलसी के उपदेशों को अमर रखने के लिए उनके अनुयायियों ने गांव में स्मारक बनवाया। उनके अनेक अवदानों से मानवता का कल्याण सर्वविदित है।

संयम जैन तीसरी
महावीर सीनियर मॉडल स्कूल,
संगम पार्क एक्स.,जीटी करनाल रोड़,
दिल्ली

अवदान नहीं, वरदान

आचार्य श्री तुलसी का अणुव्रत के माध्यम से उद्घोष 'सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा लोगों को ईमानदार रहने की सीख देता है। ऐसे ईमानदार लोग हमेशा सुखी रहते हैं और उन पर भरोसा व विश्वास किया जा सकता है। अणुव्रत से हमारी सभी प्रकार की समस्याएं दूर हो जाती हैं जिससे हम खुश एवं स्वस्थ रह सकते हैं।

आचार्य श्री तुलसी जैन समुदाय के आचार्य थे। आचार्य तुलसी मानव की विचार धरा को बदलना चाहते थे और अच्छाई एवं सच्चाई की राह पर चलाना चाहते थे। वे चाहते थे कि हमें मांस–मदिरा इत्यादि बुरी आदतों को त्याग देना चाहिए ताकि हम सुखी एवं स्वस्थ रह सकें।

अणुव्रत आंदोलन आचार्य श्री तुलसी द्वारा चलाया गया आंदोलन है। आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन नैतिकता की आचार संहिता है। इस नैतिकता को हम व्यावहारिक सत्य के रूप में परिभाषित करते हैं। व्यक्ति के चरित्र निर्माण का प्रयत्न बुनियादी सच्चाई है। अणुव्रत इस सच्चाई को सामने रखकर चल रहा है। व्यक्ति निर्माण के लिए आवश्यक है समाज निर्माण, समाज निर्माण के लिए आवश्यक है व्यक्ति निर्माण। अणुव्रत के माध्यम से आचार्य श्री तुलसी ने जीवन का नया दर्शन दिया है।

अणुव्रत आंदोलन चरित्र निर्माण का आंदोलन है। अणुव्रत एक जीवन है। वह अपने आप में ही एक ब्रह्मांड है। अणुव्रत शांति है, अणुव्रत खुशी है, इस तरह अणुव्रत वह सब है जो मनुष्य की अच्छाई के लिए है। अणुव्रत प्रवर्तक राष्ट्रीय संत आचार्य श्री तुलसी ने मानवीय मूल्य की प्रतिष्ठा में अपने जीवन के मूल्यवान क्षणों का नियोजन किया है। अणुव्रत का अर्थ नैतिकता है जो तमाम युगीन समस्याओं का एक मात्र समाधान है। अणुव्रत के कारण बच्चों में पहले से ही संस्कार पड़ जाते हैं, और बुरे मार्गों पर नहीं जाते हैं। अणुव्रत आंदोलन वर्तमान परिवेश में अनैतिकता के आधार पर भटके मानव के लिए प्रकाशवान दीपक का कार्य करता है। युगीन समस्याओं के सिद्धांतों का पालन है। अणुव्रत का अर्थ है सुचमा और संकल्प। यह शब्द जैन साहित्य में आया है। अणुव्रत के कारण समाज में बदलाव आ सकता है, छोटे–छोटे संकल्प से ही तो बड़ा बदलाव आयेगा।

आचार्य श्री तुलसी का अणुव्रत के माध्यम से उद्घोष 'सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा' लोगों को ईमानदार रहने की सीख देता है। ऐसे ईमानदार लोग हमेशा सुखी रहते हैं और उन पर भरोसा व विश्वास किया जा सकता है। अणुव्रत से हमारी सभी प्रकार की समस्याएं दूर हो जाती हैं जिससे हम खुश एवं स्वस्थ रह सकते हैं।

अणुव्रत आंदोलन जीवन की एक नवीन शैली है जो मानव को हिंसा, घृणा और विद्वेष आदि अनेक बुराइयों से छुटकारा दिलाती है। अणुव्रत आंदोलन आचार्य श्री तुलसी जी ने शुरू किया क्योंकि उनका मानना था कि आत्म संयम के बिना मनुष्य का कल्याण संभव नहीं है। अणुव्रत की विचारधारा अलग है। अणुव्रत का दर्शन भगवान महावीर के हजार वर्ष पुराने चिंतन पर आधारित है। उनके अनुसार जीवन का आधार है अहिंसा, प्रेम, करुणा, मैत्री।

अणुव्रत एक ऐसा आंदोलन है जो अनेक समस्याओं का समाधान निकाल सकता है जैसे–भ्रष्टाचार, दहेज प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, जनसंख्या वृद्धि आदि। अणुव्रत के सिद्धांत का पालन कर निश्चित ही अन्धकार रूपी युगीन समस्याओं का काला साया दूर हो सकेगा। अणुव्रत इसमें सहायक होगा। अणुव्रत सिद्धांत का पालन करके ही व्यक्ति के सुचरित्र का निर्माण होगा और हमारी आने वाली पीढ़ी को एक नई सोच मिलेगी जिससे वह अपना जीवन सरलता एवं संयम से जी सके।

आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रशस्त अणुव्रत अवदानों को यदि आज समाज अपनाए तो उपरोक्त कई समस्याओं के निवारण में अवश्य मदद मिलेगी। हमारी समस्याएं अधिक हैं परन्तु उसके निवारण भी हैं। ये अवदान नहीं, वरदान हैं।

सपना सिंह, ग्यारहवीं
आदर्श शासकीय कन्या उ.मा.शाला,
खैरागढ़, राजनाद गांव, छत्तीसगढ़

नई व पुरानी पीढ़ी के बीच सेतु

नैतिक क्रांति, मानसिक शांति और व्यक्तित्व निर्माण की पृष्ठभूमि पर आचार्य श्री तुलसी ने तीन अभियान चलाए। अणुव्रत आन्दोलन, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान। ये तीनों ही अभियान अनुपम हैं, अपूर्व हैं और अपेक्षित हैं। अणुव्रत जाति, लिंग, रंग, सम्प्रदाय आदि के भेदों से ऊपर उठकर मानव मात्र को चारित्रिक मूल्यों के संकट से उबारने का उपक्रम है।

युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी इस युग के क्रान्तिकारी आचार्यों में से एक थे। जैन धर्म को जन धर्म के रूप में व्यापकता प्रदान करने में उनकी महत्वपूर्ण भमिका रही है। वे तेरापंथ धर्म संघ के नौवें आचार्य थे।

आचार्य श्री तुलसी का जन्म वि.स. 1971 कार्तिक शुक्त द्वितीया को लाडनूं, राजस्थान में हुआ। उनके पिता का नाम झूमरमल जी खटेड़ एवं माता का नाम बदनाजी था। नौ भाई–बहनों में उनका आठवां स्थान है। प्रारंभ से ही वे एक होनहार व्यक्तित्व के धनी थे।

वि.स. 1982 पौष कृष्णा पंचमी को लाडनूं में ग्यारह वर्ष की अवस्था में पूज्य कालूगणी के करकमलों से उनका दीक्षा–संस्कार सम्पन्न हुआ। ग्यारह वर्ष तक गुरु की पावन सन्निधि में रहकर मुनि तुलसी ने शिक्षा एवं साधना की दृष्टि से अपने व्यक्तित्व को बहुमुखी विकास दिया। हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत भाषाओं का तथा व्याकरण, कोश, साहित्य, दर्शन एवं जैनागमों का तलस्पर्शी अध्ययन किया। लगभग बीस हजार श्लोक परिणाम रचनाओं को कण्ठग्र कर लेना उनकी प्रखर प्रतिभा का परिचय है।

संयम जीवन की निर्मल साधना, विवेक सौष्ठव, आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन, बहुश्रुतता, सहनशीलता, गंभीरता, धीरता, अप्रमादता, अनुशासन, निष्ठा आदि विविध विशेषताओं से प्रभावित होकर अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी ने वि.स. 1993 भाद्रपद शुक्ला तृतीया को गंगापुर में उन्हें अपने उत्तराधिकारी के रूप में मनोनीत किया।

युवाचार्य पद पर रहने का सौभाग्य आचार्य श्री तुलसी को मात्र चार दिन का ही मिला। भाद्रपद शुक्ला षष्ठी को पूज्य कालूगणी दिवंगत हो गए। बाईस वर्षीय मुनि तुलसी के युवा कन्धों पर विशाल धर्मसंध का दायित्व आ गया। वे भाद्रपद शुक्ला नवमी को आचार्य पद पर आसीन हुए। उस समय तेरापंथ संघ में 139 साधु व 333 साध्वियां थीं।

आचार्य पद का दायित्व संभालने के बाद आचार्य श्री तुलसी का ग्यारह वर्ष का समय धर्मसंघ के आन्तरिक निर्माण का समय था। निमार्ण की इस श्रृंखला में उन्होंने सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया साध्वी समाज में शिक्षा के प्रसार का। आज साध्वी समाज में शिक्षा की दृष्टि से बहुमुखी विकास हुआ है। इसके एकमात्र श्रेयभागी रहे आचार्य श्री तुलसी।

नैतिक क्रांति, मानसिक शांति और व्यक्तित्व निर्माण की पृष्ठभूमि पर आचार्य श्री ने तीन अभियान चलाए। अणुव्रत आन्दोलन, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान। ये तीनों ही अभियान अनुपम हैं, अपूर्व हैं और अपेक्षित हैं। अणुव्रत जाति, लिंग, रंग, सम्प्रदाय आदि के भेदों से ऊपर उठकर मानव मात्र को चारित्रिक मूल्यों के संकट से

उबारने का उपक्रम है। प्रेक्षाध्यान मानसिक एवं शारीरिक तनावों से ग्रसित मानवीय चेतना को शक्ति के पथ पर अग्रसर कर रहा है। जीवन विज्ञान के प्रयोग व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है एवं शैक्षिक जगत की समस्याओं का समीचीन समाधान है।

धर्म क्रान्ति और साम्प्रदायिक सद्भाव आचार्य श्री के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में एक है। उनके अभिमत में धर्म का सबसे बड़ा पवित्र स्थान मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि धर्म स्थान नहीं बल्कि मनुष्य का अपना अन्तःकरण है। वे रुढ़ धर्म के नहीं, जीवंत धर्म के परिपोषक थे। वे कहते हैं– मुझे ऐसा धर्म नहीं चाहिए जो धर्मस्थान में बैठकर भक्त प्रहलाद और मीरा की भक्ति प्रदशित करे और घर, दुकान एवं आफिस में बैठकर राक्षसी वृत्तियां प्रकट करे। उनकी इन क्रांतिकारी विचारों ने आज बौद्धिक मानस में भी धार्मिकता का संचार किया है। उन्होंने नास्तिक चेतना में भी आस्तिकता की लौ जलाई।

साम्प्रदायिक सद्भाव की दिशा में वे सतत् प्रयत्नशील रहे। यद्यपि वे एक सम्प्रदाय के आचार्य थे पर साम्प्रदायिकता उनके विचारों पर कभी हावी नहीं हुई। आचार्य श्री अपने परिचय में कहते हैं– ''मैं सबसे पहले मानव हूं, उसके बाद धार्मिक हूं, उसके बाद जैन हूं और उसके बाद तेरापंथ का आचार्य हूं।''आचार्य श्री तुलसी के इन्ही क्रांतिकारी विचारों का परिणाम है कि जो तेरापंथ एक संघीय सीमा में आबद्ध था, वह आज न केवल राष्ट्रीय बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुका है। तेरापंथ के सिद्धांतों को युग की भाषा में रखकर उसे जन–जन की आस्था का केन्द्र बनाना आचार्यश्री के युग की महान उपलब्धि है।

नारी–जागरण, संस्कार–निर्माण, रुढ़ि–उन्मूलन एवं सामाजिक बुराईयों के बहिष्कार हेतु वे सतत प्रयत्नशील रहे। नये और प्राचीन मूल्यों में समन्वय स्थापित कर उन्होंने नयी और पुरानी पीढ़ी के बीच एक सेतु का काम किया है।

आचार्य श्री तुलसी एक क्रांतिकारी युग पुरुष थे। क्रांति के साथ प्रायः विरोध का सह–अस्तित्व देखा जाता है। आचार्य श्री तुलसी के क्रान्तिकारी कदमों के साथ भी विरोधों की एक लंबी श्रृंखला जुड़ी है। उनके जीवन में विरोध और अभिनन्दन दोनों की पराकाष्ठा रही है। एक तरफ उन्हें विश्वव्यापी सम्मान मिला तो विरोध भी कम नहीं मिला। पर वे सम्मान और विरोध दोनों में सदाबहार फूल की भांति एकरूप रहे।

वे एक महान पदयात्री थे। लगभग एक लाख कि.मी. की पदयात्रा करके पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण भारत के अधिकांश भूभाग में उन्होंने नैतिकता की लौ प्रज्ज्वलित की है। उनके युग में तेरापंथ का क्षेत्र–विस्तार बहुत व्यापक स्तर पर हुआ है।

अनाहिता अग्रवाल, आठवीं
सरस्वती विद्यालय, दरियागंज,
दिल्ली

सांस्कृतिक मूल्यों के रत्नमणि

धर्म निर्विशेषण होता है, उसके पीछे कोई विशेषण जोड़ना ही हो तो वह मानव धर्म हो सकता है। लोग विश्व धर्म की कल्पना करते हैं। आचार्य तुलसी के अनुसार, ''मेरी दृष्टि में विश्वधर्म के रूप में मान्यता पाने वाला कोई धर्म है तो वह मानव धर्म है। राष्ट्र का उन्नयन तब तक नहीं हो सकता जब तक अविश्वास का अन्त नहीं होता है। विश्वास और प्रेम प्राप्त होने पर व्यक्ति की मनोवृत्ति से बुराई के भाव निकल जाते हैं।

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। भारत की मिट्टी के कण–कण में महापुरुषों के उपदेश की प्रतिध्वनिया हैं। स्वर्णिम इतिहास की इसी पवित्र श्रृंखला में एक नाम है अहिंसा के अग्रदूत, मानवता के मसीहा, अणुव्रत अनुशास्ता, युग प्रधान आचार्य तुलसी का।

आचार्य तुलसी का जन्म बीसवीं शताब्दी (सन् 1914 अक्टूबर 20) में हुआ। मात्र ग्यारह वर्ष की अल्पावस्था में वे तेरापंथ के अष्टम् आचार्य कालूगणी के पास दीक्षित हुए, अर्थात् जैन मुनि बने। 11 वर्षों तक मेधावी छात्र के रूप में अध्ययन कर गुरु कालूगणी द्वारा 22 वर्षों की उभरती जवानी में आचार्य पद को प्राप्त हुए। उनके आचार्य काल में दूसरे दशक का प्रारंभ नव निर्माण की कल्पना के साथ हुआ।

प्रथम स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त, 1947 पर उन्होंने 'असली आजादी अपनाओ' का शंखनाद किया। सन् 1949 मार्च 2, में उन्होंने 34 वर्ष की आयु में अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया, हरित क्रांति, सत्याग्रह, भूदान की तरह अणुव्रत आंदोलन में लोकतंत्र की उज्ज्वल कल्पना निहित है। अणुव्रत दर्शन व्यक्ति को नैतिक बनाने की आचार संहिता है। आचार्य तुलसी के अणुव्रत की आवाज राष्ट्रपति भवन से लेकर गरीब की झोपड़ी तक गूंजी। इस नैतिक क्रांति को निरंतर प्रज्ज्वलित रखने के लिए उन्होंने पूरे देश में कन्याकुमारी तक लगभग एक लाख किमी. की पद्यात्राएं कीं।

वे एक महान धर्मगुरु के साथ समाज सुधारक भी थे। गांधी के बाद आचार्य तुलसी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन से समूचे देश और दुनिया को प्रभावित किया। उन्होंने अपने इस काल में मानवता को अवदान दिया। इस अवदान के रूप में उन्होंने ऐसे विचार प्रकट किये है जिनसे मानव जाति का कल्याण हो।

धर्म सबसे पहले यदि कुछ देता है तो मानव को मानवता देता है। मानवता के बिना कोई मानव मानव नहीं बन सकता है। मनुष्य दिन–प्रतिदिन मानवता को भूलता जा रहा है। जिस दिन वह मानवता को प्राप्त कर लेगा, उसकी सारी समस्याएं स्वयं समाहित हो जाएंगी।

मानव ने संसार में रहकर जाति, वर्ग, धर्म, सम्प्रदाय, गुरु–पीर–पैगम्बरों में विभाजन कर दिया परन्तु वह यह भूल गया है कि हम सब आत्मा हैं जो परमात्मा की ही रूप हैं। कहने का भाव है कि भगवान और अपने सद्गुरु पर आस्था, श्रद्धा और विश्वास रखने वाला व्यक्ति ही उन्नति की ओर अग्रसर होता है। जीवन में वह कभी भी परेशानी का अनुभव नहीं करता।

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। अणुव्रत मानवीय मूल्यों को पुनः प्रस्थापित करने वाला है। इसकी आचार–संहिता के अनुसार धर्म से वैभव और स्वर्ग मिलने की बात गौण है। इसका उद्देश्य है मनुष्य मात्र में पवित्र मानवता का विकास करना। मानवता का विकास करने वाला धर्म किसी सम्प्रदाय या कठघरे में बंधा हुआ नहीं होता।

धर्म निर्विशेषण होता है, उसके पीछे कोई विशेषण जोड़ना ही हो तो वह मानव धर्म हो सकता है। लोग विश्व धर्म की कल्पना करते हैं। आचार्य तुलसी के अनुसार, मेरी दृष्टि में विश्व धर्म के रूप में मान्यता पाने वाला कोई धर्म है तो वह मानव धर्म है। राष्ट्र का उन्नयन तब तक नहीं हो सकता जब तक अविश्वास का अन्त नहीं होता है। विश्वास और प्रेम प्राप्त होने पर व्यक्ति की मनोवृत्ति से बुराई के भाव निकल जाते हैं।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी इस युग के ऐसे जान–पहचाने व्यक्तित्व का नाम है जिनके बहुआयामी व्यक्तित्व ने शैक्षणिक, सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में कीर्तिमान गढ़े हैं। उन्होंने अपने गहन ज्ञान, दूरदर्शी दृष्टि एवं प्रज्ञा से पूरे विश्व को आलोकित किया है।

श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन–मुंबई के तत्वावधान में उनके शैक्षणिक, धार्मिक, चिकित्सकीय, राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों का संचालन किया जाता है। साथ ही ट्रस्ट द्वारा कई स्वयंसेवी संस्थाओं को मदद की जाती है। फाउंडेशन के सहयोगी से भवन में जीवन विज्ञान अकादमी–मुंबई, जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय), श्री तुलसी महाप्रज्ञ कम्प्यूटर सेन्टर, पुस्तकालय, होम्योपैथिक क्लीनिक, प्रेक्षाध्यान, ज्ञानशाला, योगा एवं मेडिटेशन आदि का संचालन तेरापंथ भवन में किया जाता है। इसके साथ फाउंडेशन साध्वी वृंद के सान्निध्य में विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन, सत्संग एवं प्रवचन, तपस्या एवं धम्म जागरण, विशेष त्यौहारों पर होने धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन, जनता दरबार का आयोजन, जागरुकता कार्यक्रमों एवं संघीय कार्यक्रमों के आयोजन एवं संपादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मानवता के क्षेत्र में आचार्य तुलसी की अनगिनत एवं उल्लेखनीय सेवाओं व अवदानों के संदर्भ में उनको अनेक अलंकरणों से विभूषित किया गया। विनम्रता, दया, समझ, विवेक, धैर्य और भार्तृत्व उनके दिव्य गुण थे। प्रज्ञा व ज्ञान के स्त्रोत आचार्य तुलसी प्रतिदिन अपने मौलिक व नवीन विचारों से ज्ञान पिपासुओं की प्यास बुझाते रहे। वे एक ऐसे रत्नमणि थे जो समस्त संसार में भारत के सांस्कृतिक एवं पारंपरिक मूल्यों को वृद्धिगत करते रहे।

आचार्य तुलसी ने धर्म के अर्थ को पुनः परिभाषित किया तथा व्यक्ति की जीवन शैली में इसके महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने शांतिपूर्ण एवं सोद्देश्पूर्ण जीवन जीने हेतु आम आदमी के लिए एक मौलिक आचार संहिता प्रस्तुत की।

आचार्य तुलसी के चिंतन एवं स्वप्न को साकार करने में आचार्य महाप्रज्ञ का पूरा योगदान रहा। आचार्य तुलसी जो मार्गदर्शन देते, आचार्य महाप्रज्ञ उसकी क्रियान्विति में संलग्न हो जाते। दोनों आचार्यों का आपसी संबंध गजब का था। ऐसा लगता मानो शरीर दो हैं पर आत्मा एक।

आचार्य तुलसी ने अपने आचार्य पद को स्वेच्छा से त्यागा और युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। इतिहास का यह पहला प्रसंग है कि एक आचार्य अपने शासन काल में युवाचार्य को आचार्य पद पर अभिषिक्त करे और अपने पद का विसर्जन करे। आचार्य जैसे गरिमापूर्ण पद पर आने पर भी उनकी भक्ति में कोई न्यूनता नहीं आई। ऐसी सहजता एवं सरलता को किसी व्यक्ति में खोजना अत्यन्त कठिन है। उनकी शक्ति एवं आस्था न केवल उनके कार्यों में परिलक्षित होती है अपितु उनके विचारों एवं वक्तव्यों में भी दृष्टिगोचर होती है। आचार्य तुलसी के अवदान अविस्मरणीय हैं।

सरिता उत्तम जाधव, बारहवीं
ध.ना. चौधरी कनिष्ठ महाविद्यालय,
डोंबिवली पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र

मानव कल्याण के अविश्रांत पथिक

आचार्य श्री की आकांक्षाएं तब तक पूर्ण नहीं हुई थीं। जब तक जीवित रहे, मानवता के लिए समर्पित रहकर जीए और अविश्रांत भाव से काम करते रहे। यह उनकी बड़ी आकांक्षाथी। वह जानते थे कि समय को किसी लॉकर में बंद करके रखा नहीं जा सकता। समय अपनी गति से बहता रहेगा। आचार्य श्री की जीवन यात्रा के इस बहाव में किसी भी मोड़ पर ऐसा ठहराव नहीं आया, जहां वह मानवता की सेवा से वंचित रह गये।

पुराना युग अवतारों और भगवानों का युग था। आज मानवता का युग है। किन्तु आज भी अनेक धर्म नेता भगवान बनने की धुन में अपने आपको खोते जा रहे हैं। वे भगवान बनने के लिए इतने लालायित हैं कि येन–केन प्रकारेण वे अपने आपको भगवान कहलाना चाहते हैं। किन्तु आचार्य श्री कहते थे ''मैं सबसे पहले मानव हूं और मानवता की सेवा करना हमारा धर्म है।'' इसीलिए उनके लिए कहा गया है–

तुम्हें भगवान बनना पसन्द नहीं है,
भगवानों को इन्सान रहना पसन्द नहीं है।
तुमने इन्सान रहना पसन्द किया।
हमने इन्सान को ही सम्मान देना पसन्द किया,
तुम हमें पसन्द हो,
हम तुम्हें पसन्द हैं
इसीलिए यह युग तुम्हारे लिए भी अच्छा है,
हमारे लिए भी अच्छा है।

आचार्य श्री ने जब से तेरापंथ की बागडोर संभाली, तब से उनका मन निष्प्राण परम्पराओं के प्रति विद्रोह करता रहा। आचार्य श्री तुलसी जैसे महापुरुष शताब्दियों के बाद कहीं जन्म लेते हैं। सचमुच उन्होंने संघ और समाज को अपरिमित ऊंचाइयां दीं और चिन्तन का खुला आसमां दिया। उनकी सन्तता का हर शब्द, हर संवाद, हर सोच, हर संकेत सूक्त बना। इसलिए हम उन्हें शत्–शत् प्रणाम करते हैं।

आचार्य श्री तुलसी ने मानवता के लिए महान कार्य किये। जिस समय आचार्य श्री का जन्म हुआ, उस समय आम जनता अंग्रेजी शासन में दुखी महसूस कर रही थी। शताब्दियों की राजनीति दासता के कारण न्याय, स्वतंत्रता और समानता के स्वर मंद हो चुके थे। उन्नीसवीं सदी में कुछ व्यक्तियों ने साहस करके आवाज उठाई थी, पर तब तक जनमत जागृत नहीं हुआ था। लोकतंत्र और समाजवाद के संदर्भ में कभी जोरदार बहस नहीं हुई थी, इसलिए न तो किसी की आंखों में भारत की स्वतंत्रता का सपना था और न ही उस सपनों साकार करने की बेचैनी थी।

राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना सन् 1885 में हो चुकी थी किंतु बीसवीं शताब्दी में प्रवेश करने के बाद राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में गहरी खामोशी छा गई थी। शायद वह आपने वाले तूफान से पहले की खामोशी थी। सन् 1914 –1918 के बीच दो महत्वपूर्ण घटनाएं घटीं–प्रथम विश्वयुद्ध तथा भारत की राजनीति में महात्मा गांधी का उदय। उस समय की राजनीति, सामाजिक एवं राष्ट्रीय गतिविधियों में आचार्य श्री तुलसी की कोई साझेदारी नहीं थी। फिर भी वह जानते थे कि यह सब उनके जमाने में घटित हो रहा था।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद भारतीय लोगों में राष्ट्रप्रेम की एक नई लहर आई। गांधी जी कांग्रेस के साथ जुड़े और एक व्यापक जन आन्दोलन शुरू हो गया जो सन् 1929 में सामने आया। देश की युवा पीढ़ी आंदोलन के साथ जुड़ी। हजारों लोग जेलों में गये। वहां उन्हें शारीरिक एवं मानसिक यातनाएं झेलनी पड़ीं। फिर पूरे देश में आजादी की चेतना जागृत हो चुकी थी। ये सब घटनाएं आचार्य के देखते–देखते घटित हुइ। इनमें उनकी भागीदारी का जहां तक सवाल है, उस समय तक वह उम्र के उस मोड़ तक नहीं पहुंचे थे जहां से छलांग भरकर कुछ कर पाते, किन्तु भीतर ही भीतर ऐसी भावनाएं जन्म ले चुकी थीं जो उन्हें व्यक्ति और परिवार की सीमाओं से ऊपर उठकर राष्ट्र के बारे में सोचने के लिए सचेत कर रही थी।

एक ओर अंग्रेजों का स्थापित वर्चस्व, दूसरी ओर आंतरिक वर्चस्व के आधार पर स्वतंत्रता की लड़ाई करने के लिए उद्यत सेनानी। गांधी जी ने असहयोग आंदोलन को तीव्र किया, सत्याग्रह आंदोलन शुरू किया। भारत छोड़ो आंदोलन में उन्होंने अपनी संपूर्ण शक्ति का नियोजन कर दिया। बड़ी–बड़ी सभाएं आयोजित होने लगी। छोटे–छोटे बच्चे भी अपने संगठन बनाकर आजादी की लड़ाई लड़ने के लिए उतावले हो उठे थे। उन दिनों राजनैतिक उथल–पुथल ने तुलसी जी के मन में एक दूसरी प्रकार की उथल–पुथल मचा दी। इसका उन पर इतना प्रभाव हुआ कि घर और परिवार छोड़कर साधु बन गये।

राजनीतिक हलचल के उस माहौल में उन्होंने एक नया दायित्व ओढ़ा। वह भीतर ही भीतर अत्यंत सक्रिय होने पर भी ऊपर से बिल्कुल शांत थे। सन् 1914–1987 तक उन्होंने जो कुछ देखा, समझा, अनुभव किया और काम किया, वह एक–एक कर उनकी आंखों के सामने आ रहा था।

कहां वह छोटा–सा दायरा और कहां यह व्यापकता। कहां जीवन के रास्ते में आने वाले आरोह–अवरोह और कहां यह जीवंत आंदोलन। कहां वह कल्पनाओं की खूबसूरती और कहां कष्ट–संघर्ष व आशा–निराशा के सम्मिश्रण से जन्मी हुई कठोरता। इन सबको देखते–देखते संवेदनाओं का एक अथाह सागर उनके सामने लहरा रहा था। उस समय जो कुछ वह देख रहे थे, कर पा रहे थे, उसके पीछे गहरी तपस्या और साधना थी। कितनी कठिनाइयों को पाकर वह इस स्थिति में पहुंचे। उस समय अगर वह कठिनाइयों में उलझ जोते जो आगे नहीं बढ़ पाते, काम नहीं कर पाते। वर्तमान की उलझन भविष्य को संवार जाती है, ऐसा उन्हें दृढ़ विश्वास हो गया था।

उलझनें तब भी आती थीं पर उस समय स्थिति दूसरी थी। आचार्य श्री की आकांक्षाएं तब तक पूर्ण नहीं हुई थीं जब तक जीवित रहे, मानवता के लिए समर्पित रहकर जिए और अविश्रांत भाव से काम करते रहे। यह उनकी बड़ी आकांक्षा थी। वह जानते थे कि समय को किसी लॉकर में बंद करके रखा नहीं जा सकता। समय अपनी गति से बहता रहेगा। आचार्य श्री की जीवन यात्रा के इस बहाव में किसी भी मोड़ पर ऐसा ठहराव नहीं आया जहां वह मानवता की सेवा से वंचित रह गये। अपनी पूरी जिंदगी को मानवता के लिए समर्पित कर वह निश्चिंत हो गए।

उन्होंने मानवता की सेवा के लिए स्वयं के लिए आचार संहिता का स्वरूप निर्धारित किया–

- मैं किसी भी निरपराध प्राणी की हत्या नहीं करूंगा।

- मैं किसी पर आक्रमण नहीं करूंगा। आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूंगा। विश्व शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूंगा।
- मैं हिसात्मक उपद्रवों एवं तोड़फोड़ मूलक प्रवत्तियों में भाग नहीं लूंगा।
- मैं मानवीय एकता में विश्वास करूंगा–जाति रंग आदि के आधार पर किसी को ऊंच–नीच नहीं मानूंगा, अस्पृश्य नहीं मानूंगा।
- मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूंगा।
- मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूंगा।
- मैं ब्रह्मचर्य तथा इंद्रिय–संयम का क्रमिक विकास करूंगा।
- मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूंगा।
- मैं सामाजिक कुरुढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूंगा।
- मैं मादक तथा नशीले पदार्थों–शराब, गांजा, चरस, हेरोइन आदि का सेवन नहीं करूंगा।
- मैं व्यसन–मुक्त जीवन जीऊंगा।

आचार्य श्री तुलसी के शब्दों में :
ऐ मानव! मानव–जीवन में कुछ तो करके दिखलाओ
अद्‌भूत मनन–शक्ति जो तुमने, अब तो उसका लाभ उठाओ।
नहीं पीटने से, अंधेरा तो प्रकाश से जायेगा,
'तुलसी' संयम के द्वारा, चित्त शांत बन पायेगा।
जागो स्वयं जगाओ जग को, आओ! अणुव्रत–पथ पर आओ,
ऐ मानव! मानव–जीवन में कुछ तो करके दिखलाओ।

मैं परम पूज्य गुरुदेव के अवदानों के प्रति नत मस्तक होकर उन्हें आजीवन हृदय की गहराइयों में उतार कर रखूंगी।

कोमल सिंह, नौवीं
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी विद्यालय
3, पी सी (सेंट एस.एन साह सारणी)
कोलकाता–1, पं. बंगाल

धर्म संघ की परम्परा के पोषक

वे धर्मसंघ की मौलिक परंपराओं के जितने संपोषक थे, उनमें उतनी ही प्रयोगधर्मिता भी थी। ग्यारह वर्ष की अपरिणत वय में जीवन भर साधना का संकल्प स्वीकार करने वाले किशोर का मन कितना फौलादी रहा होगा। उनका तारुण्य समय की परतों से कभी आच्छादित नहीं हुआ। उनकी साधना में प्रौढ़ता का निखार पग–पग पर परिलक्षित होता रहा और वे साधना के सलाहकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

अणुव्रत के प्रणेता आचार्य श्री तुलसी का जन्म 20 अक्टूबर, 1914 में लाडनूं, राजस्थान में हुआ था। उनकी समसामयिक शिक्षाओं में अणुव्रत का प्रर्वतन एवं प्रसार सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज के उत्कर्ष के लिए समर्पित कर दिया। उनके अवदानों को समय–समय पर विभिन्न उपाधियों एवं सम्मानों यथा युग प्रधान, भारत ज्योति, वाक्पति, गणाधिपति, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

गुरुदेव तुलसी के जीवन का गुंफन अनेक तत्वों से हुआ। वे ज्ञानी थे, साधक थे, योगी थे, शास्ता थे और सिद्ध पुरुष थे। उनमें सहिष्णुता, विनम्रता, कृतज्ञता आदि सर्वोत्तम गुण सहज विकसित थे। आचार्य तुलसी के जीवन का आयाम था अध्यात्म। वे महान उपदेष्टा और प्रखर प्रयोक्ता थे। उनकी अनुशासन शैली के अंग थे– वात्सल्य भाव और कठोरता। वे इन दोनों का प्रयोग करते थे। उनसे शिक्षित होकर उनके शिष्यों एवं अनुयायियों ने अपने जीवन में परम ऊंचाईयों को प्राप्त किया एवं आज हमारे लिए भी उस शिक्षा को सहज सुलभ बनाया। वे धर्मसंघ की मौलिक परंपराओं के जितने संपोषक थे, उनमें उतनी ही प्रयोगधर्मिता भी थी। ग्यारह वर्ष की अपरिणत वय में जीवन भर साधना का संकल्प स्वीकार करने वाले किशोर का मन कितना फौलादी रहा होगा।

उनका तारुण्य समय की परतों से कभी आच्छादित नहीं हुआ। उनकी साधना में प्रौढ़ता का निखार पग–पग पर परिलक्षित होता रहा और वे साधना के सलाहकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए। यही कारण है उन्होंने आध्यात्मिक विकास के नए–नए प्रयोग किए। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जैसे उपक्रमों के साथ–साथ अनेक संस्थाएं एवं रचनात्मक उपक्रम प्रारंभ किये, जिनमें जैन विश्व भारती, अणुव्रत विश्व भारती, अणुव्रत महासमिति आदि सार्वजनिक संस्थान हैं। इनमें से सर्वाधिक लोकोपयोगी व समाज को परिवर्तित कर एक स्वस्थ शब्द की कल्पना को साकार करने वाला सर्वाधिक कारगर उपाय है– अणुव्रत।

आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत का प्रर्वतन 1949 से किया। तत्पश्चात् अणुव्रत ने एक आंदोलन का रूप ले लिया। अणुव्रत का पालन यद्यपि अभ्यास का विषय है तथापि इसे समझना बहुत सरल है। अणु का अर्थ है छोटा और व्रत का अर्थ है नियम। अणुव्रत अर्थात् छोटे–छोटे नियम। शब्द की सीमाओं से ऊपर उठकर उसे परिभाषित किया जाए तो कहा जा सकता है कि अणुव्रत मानव जीवन की न्यूनतम आचार संहिता है। वास्तव में अणुव्रत जीवन का मार्गदर्शन करता है। अणुव्रत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह एक व्यापक तत्व है।

अणुव्रत आंदोलन का लक्ष्य है– जाति, वर्ण, देश और धर्म का भेदभाव न रखते हुए, मनुष्य मात्र को आत्मसंयम की ओर प्रेरित करना। अहिंसा और विश्व शांति की भावना का प्रसार करना। इस लक्ष्य की पूर्ति के साधन स्वरूप मनुष्य को इन पांच अणुव्रतों का बनाना। पहला अणुव्रत है– अहिंसा, दूसरा–सत्य, तीसरा– अचौर्य, चौथा–ब्रह्मचर्य, पांचवा–अपरिग्रह। अणुव्रत चरित्र और नैतिक मूल्यों के विकास का अभियान है। इसलिए वह

उतना ग्राह्य नहीं होता जितना आर्थिक विकास का आंदोलन होता है। पदार्थ–निरपेक्ष और अर्थ–निरपेक्ष होने के बावजूद भी इसमें व्यापकता की संभावनाए हैं।

इसका स्वरूप असाम्प्रदायिक है। यह सब धर्मों के सर्व मान्य मौलिक आदर्शों का समन्वय है। किसी भी धर्म का अनुयायी इसे अपना धर्म मानकर स्वीकार कर सकता है। इसके पीछे कोई मनवाद या विचार का आग्रह नहीं है। यह चरित्र विकास या शुद्धि का प्रतीक है। इसमें कर्तव्य का मतभेद नहीं है, इसमें सिर्फ मनुष्य के लिए अकर्तव्य विधियों का निषेध है।

पूर्व प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह आचार्यवर के विचारों एवं दर्शन से परिचित रहे हैं। उनके अनुसार आदर्श और व्यवहार दोनों दृष्टियों से अणुव्रत महत्वपूर्ण है। अणुव्रत एक ऐसा सोपान है जिसके माध्यम से व्यक्ति नैतिकता के ऊंचे–से ऊंचे शिखर तक पहुंच सकता है।

आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन नैतिकता की आचार–संहिता है। इस नैतिकता को हम व्यावहारिकता के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। एक आदमी दूसरे आदमी के साथ प्रमाणित व्यवहार करता है, वह नैतिकता है। अप्रामाणिकता और प्रवंचानापूर्ण व्यवहार अनैतिकता है। नैतिक शून्यता ने तत्कालीन परिस्थितियों में धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा दे दिया था। धर्म गौण हो गया था और सम्प्रदाय मुख्य हो गया था। इस संदर्भ में अणुव्रत ने नया दृष्टिकोण दिया। उसने सम्प्रदायमुक्त धर्म की अवधारणा की।

अणुव्रत का दृष्टिकोण मुख्य रूप से व्यक्ति निर्माण अथवा व्यक्ति के चरित्र निर्माण का है। अणुव्रत की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण है उसकी असाम्प्रदायिकता। अणुव्रत आंदोलन संयम की ओर बढ़ने की दिशा नहीं है। वह संयम के स्वतंत्र मूल्यांकन और विकास की दिशा है। आत्म संयम, नैतिक मूल्यों की स्थापना, शोषण–विहीन और स्वतंत्र समाज की रचना है। ऐसा वातावरण बनाना है जिससे प्रभावित होकर स्वस्थ समाज के लिए उपजाऊ भूमि तैयार करने लिए आंदोलन की रचना हो। आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अवदानों एवं मार्ग दर्शन के लिए समाज सदैव उनका ऋणी एवं कृतज्ञ रहेगा।

हर्षिता दूबे ग्यारहवीं
बाल निकेतन हायर सैकेंडरी स्कूल,
इंदौर, मध्य प्रदेश

अवदान, आगामी पीढ़ियां करेंगी गुणगान

उनके अहिंसक व्यक्तित्व के संदर्भ में प्रसिद्ध साहित्यकार यशपाल जैन का कहना था – '' आचार्य तुलसी के पास कोई भौतिक बल नहीं, फिर भी वे प्रेम, करुणा एवं सद्भावना के द्वारा अहिंसक क्रांति का सिंहनाद कर रहे हैं। उनकी अहिंसक साधना अविराम गति से लोगों को सही इंसान बनाने का कार्य कर रही है।''

अणुव्रत के अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी एक स्वप्नदृष्टा आचार्य थे। वे नए–नए सपने देखते, उन्हें आकार देने की योजना बनाते, योजना की क्रियान्विति के लिए पुरुषार्थ करने और अपने पुरुषार्थ के साथ नये–नये व्यक्तियों को जोड़ते रहते थे। जैन आगमों में आचार्य को दीपक से उपमित किया गया। एक दीपक से हजारों दीपक प्रज्ज्वलित हो सकते हैं। इसी प्रकार आचार्य अपनी ज्ञान–ज्योति से स्वयं दीप्तिमान होते हैं और दूसरों को दीप्तिमान करते हैं।

आचार्य श्री ने देश की आजादी के साथ–साथ अणुव्रत का सपना देखा। इसका उद्देश्य था–लोक जीवन को चरित्र के साथ संयोजित करना। सन् 1950 के प्रांरभ में 26 जनवरी को स्वतंत्र भारत का संविधान लागू हुआ था और उससे पूर्व दो मार्च, 1949 में अणुव्रत की घोषणा हो गई।

आचार्य श्री के व्यापक या राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों में पहला अणुव्रत कार्यक्रम था। अणुव्रत मिशन को लेकर आचार्य श्री ने अपने कार्यक्षेत्र को विस्तार दिया। इससे पहले उनका विहार क्षेत्र राजस्थान तक सीमित था। सन् 1950 में आचार्य श्री पहली बार दिल्ली गए। वहां अणुव्रत का पहला अधिवेशन क्या हुआ, एक धमाका हो गया। लगभग 500 व्यापारियों ने एक साथ खड़े होकर व्यापार में हाने वाली अनैतिकताओं जैसे–मिलावट करना प्रवृत्तियों को छोड़ने का संकल्प स्वीकार किया तो हजारों–हजार आंखें विस्फारित ही रह गईं। समाचार पत्रों ने उस संवाद को पूरे महत्व के साथ प्रकाशित किया। लोगों में जिज्ञासा जागी, उत्सुकता बढ़ी और आशंका का स्थान कुछ नई संभावनाओं ने ले लिया।

आज आचार्य श्री की पहचान तेरापंथ और जैनधर्म के आचार्य से अधिक मानवधर्म के प्रवक्ता के रूप में है। अणुव्रत को ही यह श्रेय है कि उसने आचार्य भिक्षु द्वारा स्वीकृत सार्वभौम धर्म की बात को पूरी तरह से व्यावहारिक बना दिया। यह श्रेय भी अणुव्रत को ही मिलेगा कि उसने लाखों–लाख लोगों को मादक व नशीले पदार्थों की गिरफ्त से मुक्त कर स्वस्थ जीवन जीने का रास्ता दिखलाया।

अणुव्रत के अन्तर्गत आचार्य श्री ने नया मोड़ का कार्यक्रम किया। इस कार्यक्रम ने सामाजिक कुरुढ़ियों के उन्मूलन के कीर्तिमान स्थापित कर दिये। बाल विवाह, वृद्ध विवाह, मृत्युभोज आदि उनके प्रसंग ऐसे थे जो सामाजिक विकास के दरवाजों को बंद किये हुए थे। अणुव्रत ने लोगों को नई दृष्टि दी। भावी समस्याओं की और इंगित किया और एक बदलाव का दौर शुरू कर दिया। आज लोग अनुभव कर रहे हैं कि आचार्य श्री उनको सही रास्ता नहीं दिखलाते तो आज न जाने वे कहां होते ? कैसे खुलते ये विकास के दरवाजे ?

आचार्य तुलसी मानते थे कि यदि लोकतंत्र से अहिंसा निकल गई तो वह केवल अस्थिपंजर मात्र बचेगा। आचार्य तुलसी एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम है, जिनकी अहिंसा विषयक नई सोच ने समूची भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया। आचार्य तुलसी के निकट आने वाला हिंसक व्यक्ति भी भावधारा से अनुप्राणित हो जाता था। उनके जीवन के सैकड़ों ऐसे प्रसंग हैं, जब तीव्र हिंसात्मक वातावरण में भी वे समता और सहिष्णुता से विचलित नहीं हुए।

उनके अहिंसक व्यक्तित्व के संदर्भ में प्रसिद्ध साहित्यकार यशपाल जैन का कहना था– '' आचार्य तुलसी के पास कोई भौतिक बल नहीं, फिर भी वे प्रेम, करुणा एवं सद्भावना के द्वारा अहिंसक क्रांति का सिंहनाद कर रहे हैं। उनकी अहिंसक साधना अविराम गति से लोगों को सही इंसान बनाने का कार्य कर रही है।''

आचार्य तुलसी एवं महाप्रज्ञ की सन्निधि में अहिंसा विषयक अनेक अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेन्सों का आयोजन हो चुका है जिनमें ऐसे प्रस्ताव पारित किए गये जिससे मनुष्य की शक्ति ध्वंस में नहीं अपितु रचनात्मक शक्तियों के विकास में लगे तथा अहिंसा की सामूहिक शक्ति का प्रदर्शन किया जा सके। आचार्य महाप्रज्ञ जी के निर्देशन में अहिंसा समवाय के माध्यम से अहिंसक शक्तियों के संगठन एवं अहिंसा प्रशिक्षण का कार्यक्रम चला जो अब भी जारी है।

अहिंसा के प्रायोगिक प्रशिक्षण के लिए आचार्य तुलसी एक शक्तिशाली अहिंसक सेना का निर्माण करना चाहते थे। उनकी दृष्टि में अहिंसक सेना के पांच प्रमुख तत्व ये हैं–
• समर्पण : अपने कर्तव्य के लिए अपने प्राणों की आहूति देनी पड़े तो भी तैयार रहें।
• शक्ति : परस्पर एकता हो।
• संगठन : संगठन में इतनी दृढ़ता हो कि एक ही आह्वान पर हजारों व्यक्ति तैयार हों।
• सेवा : एक दूसरे के प्रति निरपेक्ष न रहें।
• अनुशासन : परेड में सैनिकों की भांति चुस्त अनुशासन हो।

आचार्य तुलसी ने अहिंसा को समाज के साथ जोड़कर उसे जन आंदोलन और क्रांति का रूप देने का प्रयत्न किया। आचार्य तुलसी मानते थे कि यदि लोगतंत्र से अहिंसा निकल गई तो वह केवल अस्थि पंजर मात्र बचेगा। उन्होंने अहिंसक जनतंत्र की कल्पना प्रस्तुत की जिसके मुख्य बिंदु हैं–
• व्यक्ति स्वातंत्र्य का विकास।
• मानवीय एकता का समर्थन।
• शांतिपूर्ण सहअस्तित्व।
• शोषणमुक्त नैतिक समाज की रचना।
• मैत्री व शांति संगठनों की सार्वदेशिक एकसूत्रता।

अणुव्रत आचार्य श्री तुलसी का वह अवदान है जो केवल आज को ही आलोकित नहीं कर रहा है। इसका आलोक आनेवाली कई पीढ़ियों तक पहुंचता रहेगा। अणुव्रत उपासना की पगडंडियां नहीं हैं, यह चरित्र का राजमार्ग है। इस पर जो भी चलेगा, निश्चित भाव से मंजिल तक पहुंच सकेगा। यह मानवता का दर्शन है और मानव मात्र के लिए है। जाति, रंग, लिग, धर्म आदि की सीमाएं इसमें कहीं भी बाधक नहीं हैं। इसके माध्यम से

आचार्य श्री ने मनुष्य मात्र को आमंत्रण दिया है चारित्रिक मूल्यों की पुनः स्थापना के लिए अणुव्रत के मंच से एक ऐसा सामूहिक प्रयत्न हो जो मनुष्य को मनुष्य बना सके और मनुष्य को मनुष्य से जोड़ सके।

बुशरा नाज, ग्यारहवीं
सरस्वती विद्यालय, दरियागंज,
दिल्ली